(M.A.B) World
यूरोप

Renaissance (रैनेसाँ *
* पुनर्जागरण *

विश्व का इतिहास

- प्राचीन
- मध्य युग
- आधुनिक युग

प्राचीन
(1) मेसोपोटामिया की सभ्यता
(2) मिस्र की सभ्यता
(3) सिंधु घाटी
(4) चीन की सभ्यता
= यह ताम्र सभ्यता है।

* विश्व की प्राचीनतम सभ्यता ताम्र पाषाणीक सभ्यता है/ तथा इन्हे कांस्य युगीन सभ्यता भी कहा जाता है

* * लौह युगीन सभ्यता *
(1) ग्रीक की सभ्यता (यूनान की सभ्यता)
(2) रोम की सभ्यता
(3) वैदिक सभ्यता
(4) ईरान की सभ्यता

आद्य इतिहास

0 — Pre History | -5,000 History — Proto History

* मेसोपोटामिया की सभ्यता को पृथ्वी पर सभ्यताओ का जन्म स्थल कहते है/
⇒ लेखन कला का ज्ञान सर्वप्रथम सुमेरियन (मैसोपोटामिया) ने किया/
* विश्व की प्राचीनतम सभ्यता एशिया व अफ्रीका मे हुआ/
* लौह युगीन सभ्यता - एशिया, अफ्रीका व यूरोप मे हुआ/

* यूरोप * ⟶ (ग्रीस) - यूनान (एथेंस) ⇒ यूनान का साम्राज्य

* प्राचीन यूनान ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की जिसे रोमन साम्राज्य / यूनानी साम्राज्य कहा
* इस साम्राज्य मे अनेक दार्शनिको को जन्म दिया/ इन दार्शनिको को Sophists कहा गया/
(का अर्थ है - बुद्धिमान पुरुष (Man of wisdom) कहा जाता है)
* सुकरात ने इन दार्शनिको को "सत्य की वैश्या" बताया/ क्योकि यह ज्ञान के बदले पैसा लेते थे

⇒ सुकरात :- सुकरात, बुद्ध कंफ्यूशियस व ... का समकालिन था।
⇒ इसने नैतिकता की नींव डाली (इन्होंने पहली बार कहा मानव में वह क्षमता है जो गलत व सही का निर्णय कर सकता है)
* सुकरात ने कहा राज्य का न्याय सर्वोच्च है।

* ~~प्लेटो~~ :
* प्लेटो (Plato)
= पुस्तक "रिपब्लिक" (इसने सुकरात के सिद्धान्तों का वर्णन किया)
— यह गणतंत्र का समर्थक था, जिसका आधार संविधान होना चाहिए।
⇒ राजनैतिक न्याय (पुस्तक)

* अरस्तु :-
⇒ इन्होंने 158 नगर राज्यों के संविधान का अध्ययन किया।
⇒ man is a Political animals (मानव एक राजनैतिक पशु है)
— ~~इसे~~

* Father of medicine :- HipPo Crates (हिप्पोक्रेटिस)
* इसी यूनान का ने ~~लिखो~~ हेरोडोटस (इतिहास के जनक)
= ~~इतिहास~~ History is Records
⇒ होमर :- ⇒ Iliad (महाकाव्य) इलियड व "ओडिसी"
— इसे स्कूल मास्टर ऑफ यूनान
* नाटक कार (1) Euripedes
(2) Sophocles
= ओपन एयर के थियेटर की शुरुआत
* इसवी शताब्दी में इटली के रोमनों ने यूनानियों को पराजित किया व यूरोप में एक विशाल रोमन साम्राज्य की स्थापना की।
रोमनों के माध्यम से ग्रीको-रोमन संस्कृति का विकास हुआ।
⇒ प्राचीन रोमन साम्राज्य की देन
(1) लैटिन भाषा (Latin) ⇒ यह उत्तरी इटली में स्थान लैटियम नामक स्थान है जहाँ के लोग भाषा बोलते है उसे लैटिन भाषा कहा जाता है।
* ग्रीक व लैटिन भाषा को यूरोप की क्लासिकल भाषा मानते है।

30 AD में जिसस - सूली पर चढ़ा दिया, जेरूसलम में जिसस - यहूदी थे

यूरोप की अन्य भाषाओं की उत्पत्ति ग्रीक व लैटिन से मानी जाती थी

⇒ रोम द्वारा विज्ञान

= ब्रजील वर्जिल होरेस सिसरो सिजर प्लिनी प्लूटार्क लिवी आदि विद्वान

* चिकित्सा का विकास

⇒ सिजर- पहला व्यक्ति जो सिजेरियन से पैदा हुआ। (Caesarean)

* राजनैतिक (180 AD — 476 AD तक ⓢ 60 शासक हुये।

= प्रमुख शासक - Constantine - (306 - 337 AD) कोंस्टेंटाइन

= इसने 330 ई॰ में रोमन साम्राज्य की राजधानी को स्थानान्तरण किया तथा इसने पूर्व में बेजेंटियम को राजधानी बनाया (Byzantium) यह Bosphorus नदी पर बसाया।

* रोम टाइबर नदी पर स्थित है।

* कोंसे बेजेंटाइन का नाम बदलकर कुस्तुनुनिया रख दिया। आज इसका नाम इस्तांबुल- यह एशिया व यूरोप को जोड़ता है

* कोंस्टेंटाइन ने 331 AD में ईसाई धर्म को स्वतंत्र धर्म के रूप में मान्यता दी (शांति)

* थियोडोसियस महान (Theodosius great) (376 - 395 AD)

– इसने ईसाई धर्म को राजधर्म के रूप में घोषित किया।

⇒ थियोडोसियस के दो पुत्र थे — (1) Honorius
(2) Arcadius

- इसने अंतिम समय में रोमन साम्राज्य का विभाजन दो पुत्रों में कर दिया।

⇒ (1) पश्चिमी रोम साम्राज्य ⇒ रोम राजधानी

(2) पूर्वी रोमन साम्राज्य ⇒ कुस्तुनुनिया (राजधानी) / इसे बाइजेंटाइन साम्राज्य भी कहा

* कुस्तुनुनिया को नया रोम कहा गया।

* रोमन साम्राज्य की एकता समाप्त हो गयी।

* दोनों के बीच धर्म की लड़ाई शुरू। (किस चर्च को प्रमुख माना जाए)

* जिसस के दो अनुयायी - पीटर व पॉल

– पीटर ने जिसस के कहने पर रोम में चर्च बनाया। जो पहला चर्च है

⇒ 451 AD में Chalcedon नामक स्थान पर एक धर्मसभा का आयोजन हुआ।

* प॰ रोमन साम्राज्य के चर्च ने पूर्वी रोमन साम्राज्य को बराबर का दर्जा देने से मना कर दिया।

* इसे ईसाई चर्च का विभाजन हुआ ① प॰ चर्च ② पूर्वी चर्च

① प॰ चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च भी कहते हैं। ② पूर्वी चर्च को ग्रीक चर्च भी कहते हैं (ऑरथोडॉक्स चर्च)

① प. चर्च व पूर्वी चर्च में अन्तर - प. चर्च में जिसस को प्राथमिकता दी जाती थी जबकि पूर्वी चर्च में 'मॉमेरी' Meether Marri को प्राथमिकता दी जाती थी

* 476 AD में रोमन साम्राज्य का पतन हो गया।

* रोमन साम्राज्य के पतन को विश्व इतिहास का मोड़ बिन्दु माना जाता है यहाँ प्राचीन विश्व इतिहास का अंत हो जाता है

22/06/2012

* रोमन साम्राज्य के पतन के बाद ~~रोम~~ यूरोप छोटे 2 राज्यों में बदल गया तथा साथ ही सामन्तवाद का उदय हुआ।

* सामन्तवाद :- 5वी शताब्दी से 14वी शताब्दी तक बनी रही। इस काल को मध्य युग कहा जाता है / इस युग को विश्व इतिहास का अंधकार का युग कहा जाता है / (1.) सामन्तवाद का प्रभाव (2) सामन्तवाद में शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया (जिससे बौद्धिक विकास में रुकावट आ गई) (3) ग्रीको-रोमन संस्कृति को भुला दिया गया / (4) धर्म का प्रभाव बढ़ गया (चर्च व पोप) (5) चर्च ने शिक्षा पर ध्यान दिया जिसका उद्देश्य - धर्म की शिक्षा व चर्च को सर्वोच्च माना जाने लगा /

* चर्च - जीवन दुःख है दुःख दायी है इसका कोई महत्व नहीं है इसलिए आपको अपने अगले जन्म को सुधारना चाहिए इसलिए आपको चर्च के शरण में आना चाहिए क्योंकि स्वर्ग के साम्राज्य की चाबी जीसस ने पीटर को सौंपी थी।

* चर्च को मनुष्य के शरीर व आत्मा का संरक्षक माना गया / तथा चर्च आध्यात्मिक शान्ति प्रदान करता थी। इसके बदले उन्हें टैक्स आदि देना होता थी।

(6.) मेनर व्यवस्था (Manor System) ⇒ एक ग्राम का कृषि फार्म

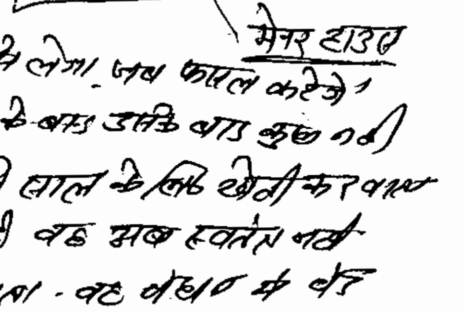

* इसमें एक किसान को एक पट्टी देगा तथा पैसा वह सामन्त से लेगा, जब फसल कटेगी उस समय वह कर्ज सामन्त को देगा, उसके कर्ज चुकाने के बाद उसके बाद कुछ नहीं बचता, तब सामन्त उसे कुछ जमीन और देकर उसे अगले साल के लिए खेती करवाता इस प्रकार किसान वह सामन्त के जाल में फस जाता है वह अब स्वतंत्र नहीं रह सकता वह उसकी सोच पर सामन्त अधिकार हो जाता - वह बंधन में बंध जाता है इस काल को वह यह अंधकार का युग था।

* **श्रेणी (गिल्ड व्यवस्था)**: जब समाज में एक समूह विशेष एक ही व्यवसाय को विकसित करता है, तो श्रेणीयाँ स्थापित होती हैं।

⇒ जिस व्यवस्था में इच्छा व योग्यता के आधार पर व्यवसाय चुनने का अधिकार न हो ऐसा युग अंधकार का युग था।

* 12 वी शताब्दी में सामन्तवाद का पतन शुरू हुआ। तथा धनाढ्य व्यक्तियों ने अनेक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की। ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, पेरिस, वियाना, कलोन (जर्मनी) (Cologne) आदि शिक्षण संस्थानो की स्थापना हुई।

(इतिहास काल)

(1) * इससे बौद्धिक रुकावट का स्थान, बौद्धिक चिन्तन ने ले लिया। (बौद्धिक क्रांति) व सामन्त वाद की पकड़ कमजोर हो रही है।

(2) चर्च की मान्यता का अत्यधिक प्रभाव था जिसको बौद्धिक चिन्तन ने प्रभावित किया। ~~इस~~ बौद्धिक चिन्तन से चर्च में करवट लिया।

* मार्टिन लूथर व इनके अनुयायी ने (सुधारक) चर्च पर बाइबिल की सर्वोच्चता स्थापित करने का प्रयास किया।

* पोप ~~शब्द~~ PAPA से बना है।

* पोप ने चर्च से कहता है कि मनुष्य का पृथ्वी पर जन्म लेना ही पाप है, लेकिन

(3.) <u>मेनर व्यवस्था</u> - सामन्तवाद के पतन के साथ ही मेनर व्यवस्था का प्रभाव भी समाप्त हो गया। अब किसान अपनी इच्छा के अनुसार विचरण करने व भूमि बदल सकता था। तथा अन्य स्थान पर कार्य कर सकता था। अब वह मेनर व्यवस्था के चुंगल से निकल गया।

(4.) <u>श्रेणी व्यवस्था</u> - बौद्धिक चिन्तन के कारण अब मनुष्य अपनी इच्छा व योग्यता के अनुसार ~~विद्~~ व्यवसाय चुनने लगा।

* 13वी शताब्दी आते-2 मानव का दृष्टिकोण व सोच बदल रही है। वह अब अगले जन्म को बदलने की जगह इस जन्म को सुधारने की सोचने लगा। तथा वह इस जन्म को ही सुखी बनाने में लग गया।

⇒ धार्मिक समस्याओ को सुलझाने के बदले वह सामाजिक समस्याओ को सुलझाने में जुट गया है। अब उसका नया दृष्टिकोण बदल गया।

— अब मानव का मानव के प्रति नया दृष्टिकोण ही पुनर्जागरण है।

* रैनेसाँ से ही ~~से~~ आधुनिक विश्व की शुरुआत ~~मानी~~ माना गया। (14वी शताब्दी)

* रैनेसाँ / पुनर्जागरण - ग्रीको-रोमन संस्कृति का पुन: उत्थान था।

* रैनेसाँ एक सेतु है जो मध्य युग ~~से~~ एवं आधुनिक युग को जोड़ रहा है।

* विश्व ~~की~~ के इतिहास में तीन ऐसी घटनाएँ जिसे आधुनिक कहा जा सकता है।

(1) पुनर्जागरण (2.) धर्म सुधार (3.) भौगोलिक खोजें।

इन तीनों घटनाओं आधुनिक विश्व की शुरूआत माना जाता है।

* **रैनेसाँ** – शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एक इटालियन विद्वान Giorgio (वेसारी) Vasari ने "Ranecita" इटालियन शब्द कहा। वेसारी ने रैनेसाँ शब्द का प्रयोग केवल स्थापत्य कला व मूर्तिकला के लिए किया इसने रैनेसाँ शब्द को सीमित रखा।
* परन्तु 18 वीं शताब्दी फ्रांसीसी विद्वान/दार्शनिक "दिदरो" ने रैनेसाँ शब्द को व्यापक रूप दिया।
* 18 वीं शताब्दी में ज्ञानकोष (इनसाइक्लोपीडिया) लिखे गये। 18 अध्याय में लिखा। इस ज्ञान कोष में दिदरो ने रैनेसाँ शब्द को व्यापक रूप दिया।

(Diderot) दिदरो के अनुसार – रैनेसाँ का अर्थ – साहित्य, कला, विज्ञान व भौगोलिक खोजों से था।

* **पुनर्जागरण का अर्थ**: रैनेसाँ एक फ्रांसीसी शब्द है जिसका अर्थ है नवीन जीवन या पुनर्जन्म।
→ रैनेसाँ - 14 वीं शताब्दी इटली में प्रारम्भ हुआ एवं 16 वीं शताब्दी तक पूरे यूरोप को प्रभावित किया।
* पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप - साहित्य, कला, विज्ञान एवं भौगोलिक खोजों के विकास हुआ।
* यह एक सांस्कृतिक चेतना थी जो साहित्य कला, विज्ञान एवं भौगोलिक खोजों में देखी जाती है।
* रैनेसाँ शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इटालियन विद्वान जोर्जियो वेसारी ने किया। इसका संदर्भ स्थापत्य कला व मूर्तिकला से था।
* 18 वीं शताब्दी में फ्रांसीसी दार्शनिक दिदरो ने इस शब्द को एक व्यापक अर्थ दिया। इसने साहित्य, कला, चित्रकला, विज्ञान व भौगोलिक खोजों के विकास के साथ जोड़ा।

⇒ यह बौद्धिक चेतना का अनुसंधान का काल था।

23/6/12

रैनेसाँ का काल : 13 वी शताब्दी के अन्त मे परिवर्तन प्रारम्भ होता है एवं यह 14वी शताब्दी मे यह उजागर हो जाता है। 13 वी शताब्दी मे परिवर्तन इटली में दिखाई देता है और 16वी शताब्दी तक पुरे यूरोप को प्रभावित करता है।

* रैनेसाँ का काल 14 वी शताब्दी से 16 वी शताब्दी तक माना जा सकता है।

⇒ इसे तीन भागों मे विभाजित (1) Trecento - 1300 - 1400
(2) Quattrocento - 1400 - 1500
3. Cinquecento - 1500 - 1600

* **रैनेसाँ / पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ** (उ०सा०)

(1) **स्वतंत्र चिन्तन का विकास** : (1) चर्च का प्रभाव कम होरहा एवं मानव अब स्वतंत्र चिन्तन करने लगा। (मानव चर्च की विचारो / विचार धारा से ऊपर उठकर अपनी विवेक स्वतंत्र बुद्धि का प्रयोग करने लगा

⇒ Peter Abelard - हमें

(2.) **मानववाद** : मानववाद शब्द लैटिन के शब्द Humanities से बना है जिसका अर्थ है "उच्च ज्ञान" है, मानव की मानव जीवन मे रुचि मानववाद है। मानववादी विचारधारा के पोष एवं चर्च के स्थान पर व्यक्ति एवं समाज महत्व पूर्ण हो गया है। (यह मानववाद चित्रकला, साहित्य, विज्ञान, भूगोल भौगोलिक खोजो मे दिखाई देता है।

3. **देशज भाषा का प्रयोग** : मध्य युग मे केवल ग्रीक एवं लैटिन भाषा का प्रयोग होता था परन्तु पुनर्जागरण काल मे देशज भाषा को प्रतिष्ठा, गरिमा, सम्मान प्राप्त हुआ। (लैटिन चर्च की सार्वभौमिक भाषा थी) फ्रांस मे फ्रेंच भाषा, स्पेन मे स्पेनिश का प्रयोग होने लगा।

4. **कला के क्षेत्र मे विकास** : मध्य युग की कला काल्पनिक व धर्म से प्रभावित थी परन्तु रैनेसाँ काल की कला यथार्थवादी एवं प्राकृतिक सौन्दर्य पर आधारित थी।

5. **साहित्य का विकास** : इस काल का साहित्य 13 वी शताब्दी के दाँते (इटली) के साहित्य से प्रारम्भ हुआ एवं 16 वी शताब्दी मे शेक्सपियर के साहित्य तक अपने चरम सीमा पर पहुँच गया।

(6) **विज्ञान के क्षेत्र मे विकास** : मध्य युग का विज्ञान चर्च व धर्म पर आधारित था रैनेसाँ काल का विज्ञान, निरीक्षण, अनुसंधान, एवं सोच पर आधारित था।

(7) **भौगोलिक खोजें** :- इस युग में प्रिंस हेनरी, कैब्रिन, डेयॉज, कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने भौगोलिक खोजों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

* **पुनर्जागरण के कारण** :- (1) **Crusades (धर्मयुद्ध)** ⇒ 1076 AD में सेल्जुक तुर्कों ने जेरूसलम पर अधिकार कर लिया। जेरूसलम ईसाईयों का प्रमुख तीर्थ स्थल था यहाँ ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया। (Friday 7th April 30 AD) तुर्कों ने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाई।
⇒ पूर्वी रोमन साम्राज्य के शासक Alexius II ने पोप से शिकायत की। ईसाईयों के अत्याचार हो रहे थे तो पोप अरबन - II ने 1095 में क्रुसेड की शुरुआत की।
* जेरूसलम को पुनः प्राप्त करने के लिए ईसाईयों एवं मुसलमानों के बीच जो युद्ध हुआ वह क्रुसेड कहा गया।
* 1095 ई से 1270 ई. के बीच कुल 8 धर्मयुद्ध हुये।
* 1212 का 5 वाँ क्रुसेड इसे बालयुद्ध क्रुसेड, यह सबसे दर्दनाक था। स्टीवन नोवियो ने 30 हजार बच्चो को इकट्ठा कर दिया, व स्टीवन यूरोप ले चला व उत्तरी अफ्रीका तट पर ले जाकर बेच दिया गया था।
(हेमलिन की कहानी पाइड पाइपर की कहानी 5 वे धर्मयुद्ध पर आधारित था।
⇒ धर्मयुद्ध के परिणाम स्वरूप पश्चिम-पूर्व के सम्पर्क में आया। जिसके कारण पूर्व के तर्क, दर्शन, शिक्षा व ~~भौगोलिक~~ वैज्ञानिक खोजों की जानकारी प्राप्त हुये जिससे पश्चिम मे नई चेतना का विकास हुआ जिससे उनकी सोच में परिवर्तन आया यही सोच पुनर्जागरण कहा। (पश्चिम को समृद्ध बनाने का काम पूर्व ने किया)
* पोप के तमाम आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप जेरूसलम ईसाभूमि को प्राप्त न हो सका। (जेरूसलम को 1917 प्रथम विश्व में इंग्लैंड ने प्राप्त किया) इससे चर्च व पोप की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा। ~~जिससे~~ अब धर्म के प्रति सोच बदल रही थी यही पुनर्जागरण थी।
(2) **व्यापार के क्षेत्र में विकास** :- क्रुसेड ने यूरोप को धनी बना दिया। क्योंकि क्रुसेड वापस यूरोप नहीं गए व वे जेरूसलम ही रुक गये। तथा विशेषतः इटली में कई व्यापारिक केन्द्रो की स्थापना हुई। जैसे लुइका, ~~सिएना~~, मिलान, सियना, वेनिस, लोरेंस यह व्यापारिक केन्द्र सांस्कृतिक केन्द्र बनगये। इनमें से फ्लोरेन्स रैनेसाँ काल का प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र बना गया। (व्यापारियों ने कला, साहित्य को संरक्षण दिया)

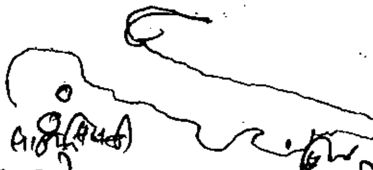

(अकुशिपल)
= ब्याज लेना चर्च व पोप उसे पाप मानता है क्योंकि जीवन सुक्ष्म है इसीलिए
* जब व्यापार का स्तर बढ़ा, तो व्यापारियों का चर्च के प्रति दृष्टिकोण बदला व. व्यापारियों ने चर्च में सुधार की मांग की।

*** अरब मंगोल सम्पर्क** :- कई अरबी व्यापारियों द्वारा यूरोप में स्थायी रूप से बस गये, उन्होंने स्पेन, साइसिलिया, सिसली, फ्रांस आदि में शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। यह शिक्षण संस्थाएँ धर्मनिरपेक्ष थीं जहाँ अरस्तु, प्लेटो आदि दार्शनिकों के अध्ययन केन्द्र स्थापित किए। तथा ग्रीको-रोमन संस्कृति का अरबी व्यापारियों द्वारा अपने दर्शन के प्रति जागृति प्राप्त करवाई। एवं सोच में परिवर्तन

* 13वीं शताब्दी में मध्य एशिया में मंगोल शासक (चंगेज़ खाँ के पौत्र) कुबलाईखान, जिसका उद्देश्य यूरोप व एशिया को एक सूत्र में बांधना चाहता था। उसने अपने दरबार में कई यूरोपीय विद्वानों, धर्म राजदूतों व कलाकारों आमंत्रित किया। मार्कोपोलो (1275-1292) नामक इटालियन यात्री (वेनिस) 1273/75 ई. में कुबलाईखान के दरबार में पहुँचा लगभग 18 वर्ष तक उसके दरबार में रहा। इसने अपनी यात्रा के रोचक वृतांत लिखे, इन वृतांतों को पढ़कर, कोलम्बस व अन्य अन्वेषक प्रभावित हुये जिससे व्यापारिक खोजें सम्भव हुयीं।

* अरब-मंगोल सम्पर्क के परिणाम स्वरूप परिचय को अरबी गिनती, बीजगणित, दिशा-सूचक (कुतुबनुमा), कागज, प्रेस-मुद्रण, बारूद आदि की जानकारी मिली।

*** कुस्तुन्तुनिया का पतन** :- (पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाइजेन्टाइन साम्राज्य) की राजधानी) 1453 ई. में मुहम्मद-II (मोहम्मद II) नामक उस्मानी तुर्क ने कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार कर लिया। पिछले 200 वर्षों से कुस्तुन्तुनिया ग्रीको-रोमन संस्कृति का केन्द्र बन चुका था। यहाँ अनेक हस्तलिखित ग्रंथ थे। तुर्कों ने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनायी थी। अनेक विद्वान कुस्तुन्तुनिया छोड़कर इटली में जाकर बस गये। (Giovanni Aurispa नामक विद्वान तर्क, दर्शन एवं इतिहास की लगभग 250 पाण्डुलिपियाँ लेकर इटली पहुँचा।

* कार्डिनल बैसारियन नामक विद्वान 800 पाण्डुलिपियाँ लेकर इटली पहुँचा।

* क्राइसोलोरस सैन्य सहायता के लिए इटली पहुँचा, फ्लोरेन्स विश्वविद्यालय में यूनानी केन्द्र अध्ययन केन्द्र का प्रमुख नियुक्त हुआ।

* इन पाण्डुलिपियों का पुनः मुद्रण हुआ, प्रिंटिंग प्रेस के कारण, देशज भाषा में अनुवाद होने लगा, तथा यह आम जनता को प्राप्त होने लगी जिससे लोगों का बौद्धिक चेतना का विकास।

* कुस्तुन्तुनियाँ पूर्व-पश्चिम को जोड़ता था। अब कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार होने के बाद थल-मार्ग बंद हो गया, जिसने अब भौगोलिक खोजों को जन्म दिया।

(बाएँ हाशिये पर:) कुस्तुन्तुनिया पूर्वी दुनिया के अध्ययन का केन्द्र था… मध्यकालीन विद्वानों… * कुस्तुन्तुनियाँ यूरोप एवं पूर्वी देशों के मध्य व्यापार का मुख्य केन्द्र था…

Manuscript – हस्तलिखित ग्रंथ के अलग-अलग लिखा विशेष…

टॉलमी - 2वी शताब्दी भूगोलविद/ खगोलशास्त्री- पृथ्वी स्थिर है

* कुस्तुनतुनियाँ के पतन ने भौगोलिक खोजो को प्रभावित किया/

* **सामन्तवाद का पतन** :- (1) क्रुसेड प्रमुख कारण था - सामन्त अपनी जागीर बेच कर क्रुसेड के लिए रवाना हुये

* **नगरो का विकास** :- कई गाँव कस्बो मे तब्दील हो गये. और कई कस्बे नगरो मे बदल गए, तथा यह व्यापारिक नगरो का विकास. (मेनर हाउस के स्थान पे नये नगर सांस्कृतिक नगर बने/

* **कागज एवं मुद्रण का विकास** :- 105 ई. मे चीनियो ने सर्वप्रथम कागज का प्रयोग किया/ 751 ई. मे मध्य एशिया मे एक युद्ध के पश्चात अरबो ने चीनी कागज निर्माताओ को बंदी बनाया और अरब ले गये/ इन्ही अरबी व्यापारियो द्वारा यूरोप ले गयी/

* अद्भुत/ सर्वश्रेष्ठ किस्म का कागज इटली मे प्रयोग हुआ/

* 1450 में जॉन गुटनबर्ग ने जर्मनी के मेन्ज मे आविष्कार किया/

* सबसे पहले 1456 ई. मे लैटिन मे बाइबिल का मुद्रण किया/

⇒ 1500 ई. के लगभग 183 नगरो मे 200 अधिक मुद्रणालय की स्थापना हुयी

* अब बाइबिल हर ईसाई के घर पहुँच गयी वह भी क्षेत्रीय भाषा मे.

* अब रहस्यमयी चिन्तन का बौद्धिक चिन्तन ने स्थान ले लिया/ यही नई सोच पुनर्जागरण है/

(दि डाउनलोड्स ऑफ निकोलस फिलिप / 1477 में कैक्सटन ने वेस्ट मिनिस्टर में इंग्लैंड में प्रथम छापेखाने की स्थापना की)

(परिणाम कारण इतिहास परिणाम) * **भौगोलिक खोजे** :- (1) दो राष्ट्रो की महत्वपूर्ण भूमिका रही. (1) पुर्तगाल (2) स्पेन

इसके अन्तर्गत प्रिंस हेनरी, कैप्टन डेयाज, वास्कोडिगामा आदि प्रमुख थे

- भौगोलिक खोजे के परिणाम स्वरूप प. की सभ्यता व संस्कृति का पूर्व की संस्कृति के साथ ~~सम्मेला~~ समन्वय हुआ/

* विज्ञान के क्षेत्र मे विकास :- पुनर्जागरण का काल विज्ञान, अन्वेषण, निरीक्षण, खोज पर आधारित था

* **शिक्षा के क्षेत्र मे विकास** :- मध्य काल के अन्त मे यूरोप मे कई शिक्षण संस्थाएं एवं विश्वविद्यालय स्थापित थी - ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, पेरिस, वियाना, प्राग, हलवर्ड आदि, ये शिक्षण संस्थाएँ बौद्धिक क्रांति का केन्द्र बन गये/

* **मानववाद** :- मानव की मान मानव के जीवन के प्रति रूचि मानववाद (उच्च ज्ञान) - मानव वादी विचार धारा के अन्तर्गत पोप एवं चर्च

1454 मे 31 पंक्तियो की पुस्तक Indulgence of Nicholas V की प्रथम मुद्रण

के स्थान पर व्यक्ति एवं समाज महत्वपूर्ण हो गया। पैट्रार्क को मानववाद का जनक कहा जाता है।

(15) मानववाद - लैटिन के Humanities से बना मानव की मानव के प्रति रुचि मानववाद। इसके अन्तर्गत, पोप व चर्च के स्थान पर मानव व समाज महत्वपूर्ण हो गया। पैट्रार्क मानववाद का जनक कहा गया।

* ~~स्कॉलेस्टिक विचार धारा~~

* स्कॉलिस्टिक विचार धारा (स्कॉलिस्टिसिज्म) :- 12 वी व 13 वी शताब्दी में एक नई विचार धारा का प्रसार हुआ जिसे विद्वानों ने स्कॉलिस्टिक विचार धारा नाम दिया। इसके अन्तर्गत अरस्तु के तर्क, और सेंट ऑगस्टाइन के धर्म शास्त्र का समन्वय हुआ। इस प्रकार धर्म एवं तर्क का समन्वय हुआ। 13 वी शताब्दी का विद्रोही विचारक रोजर बेकन इसने चर्च की मान्यताओं का विरोध किया। तथा वैज्ञानिक शोध करता था इसलिए इन्हें Curia (धार्मिक न्यायालय) में दण्ड दिया गया। * एबेलार्ड - तर्क बुद्धि से ही, न कि दबाव से, ईसाई धर्म के प्रति लोगों का विश्वास जगाया जा सकता है

* रैनेसां इटली में ही क्यों आरम्भ हुआ। (5) रोम (4) विभिन्न मान्यताओं ...

इटली को पुनर्जागरण का जन्म स्थल एवं प्रवेशद्वार कहा जाता है।

(1) इटली ग्रीको-रोमन संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था - प्राचीन रोमन साम्राज्य के कारण ग्रीको-रोमन संस्कृति का विकास हुआ जिसका मध्य युग में महत्व समाप्त हो गया। ग्रीको-रोमन संस्कृति का पुनः उत्थान केवल इटली में सम्भव था। इस युग के कई पोप ने भी कला एवं संस्कृति को संरक्षण दिया। जैसे - पोप निकोलस-पंचम, पोप अलेक्जेंडर-II, पोप जूलियस-II, पोप लियो-दशम इन्होंने कला एवं साहित्य को संरक्षण दिया।

(2) इटली ईसाई धर्म का प्रमुख केन्द्र था।
(6) नवीन नगरों का विकास

3. इटली की भौगोलिक स्थिति:- फ्लोरेंस के बैंकिंग परिवार ... मेडिची ...

(4) आर्थिक सम्पन्नता:- नई नगर व्यापारिक केन्द्र बने जिससे इटली में नई आर्थिक सम्पन्नता विकसित हुई।

* इस नई आर्थिक सम्पन्नता का पहला लाभ इटली के व्यापारियों को मिला।
* इटली में एक नवीन धनाढ्य वर्ग उत्पन्न हुआ जो अपनी सम्पन्नता के बल बूते पर ... का अनुगामी हो गया और उसने चर्च के ...

Vanguished in Politics Italy was a victor in Arts.
राजनैतिक दृष्टि से इटली का पतन हुआ, लेकिन परन्तु कला में इटली विजय सिद्ध रहा।

रोजर बेकन - इनकी मृत्यु को बौद्धिक मृत्यु ... कहा गया।

(6) कांस्टेंटिनोपुल का पतन व विद्वानों का द्वारा इटली में शरण लेना।

Peter Abelard : इन्होंने कहा कि हमें धर्म किसी भी सिद्धान्त में विश्वास नहीं करना चाहिए ...

की विशिष्ट सामाजिक स्थिति - ① इटली में सामन्तवादी व्यवस्था कभी भी मजबूत नहीं हो पाई ② मध्य युग में आलगाव की रेखाएं कट्टरता से नहीं खिंची हुई थी बल्कि उनमें एक स्वतन्त्र चेतना (एक चेतना) के संकेत मिलते हैं ③ इटली के नगर राज्य - फ्लोरेंस, वेनिस आदि स्वतंत्र व जनतंत्रवादी प्रवृत्तियों का विकास हुआ पर सम्राट व पोप का नियंत्रण अपेक्षाकृत बहुत शिथिल था

* पुनर्जागरण का साहित्य पर प्रभाव :- ① मानववादी चेतना ② देशज भाषाओं का उत्कर्ष ③ भाषा विज्ञान का अध्ययन व विकास (...)

- मध्य युग का साहित्य ग्रीक एवं लैटिन भाषा में लिखा जाता था, तथा साहित्य पर चर्च का प्रभाव था। इस साहित्य का उद्देश्य धर्मप्रचार करना था। परन्तु पुनर्जागरण का साहित्य देशज भाषा में लिखा गया। तथा यह साहित्य जन जीवन पर आधारित था। इस काल में संख्या की दृष्टि से जितने साहित्यकार हुये व अन्य काल में नहीं हुये। (दाँते से लेकर शेक्सपियर तक)

* इटली का साहित्य व साहित्यकार

इटालियन भाषा की पहली कृति इसलिए इटालवी भाषा का पिता'

(1) दाँते :- 13वी शताब्दी का इटालियन विद्वान (फ्लोरेन्स निवासी) उसने दो प्रमुख ग्रंथ लिखे (1) डिवाइन कामेडी (इटालियन भाषा) (2) दि मोनार्की है।

डिवाइन कॉमेडी में मृत्यु के पश्चात आत्मा की स्वर्ग एवं नरक की यात्रा का काल्पनिक यात्रा का वर्णन किया गया। इस ग्रंथ में प्रेम, देश भक्ति और इटली के एकीकरण पर प्रकाश डाला गया।

दि मोनार्की :- में गैर धार्मिक विषयों पर राजा या सम्राट की सर्वोच्चता स्थापित करने पर बल दिया गया (धर्म निरपेक्ष विषयों में सबसे महत्वपूर्ण ...) (चर्च एवं राज्य को पृथक करने की बात)

* दाँते की तुलना होमर से की जाती है इसे इटालियन कविता का जनक कहा जाता है।

* **फ्रांसिस्को पैट्रार्क** - 14वी शताब्दी का इटालियन विद्वान, उसके पिता दाँते के घनिष्ठ मित्र थे। पैट्रार्क को द्वारा लिखित प्रमुख ग्रंथ - "अफ्रीका" नायक लम्बा गीत लिखा, जिसमें सीपियो के अद्भुत जीवन का वर्णन किया। पैट्रार्क ने 14 पंक्तियों की विशेष कविता की नई शैली विकसित की जिसे "Sonnets" (सॉनेट) कहा जाता है। उसने। 'Sonnets to Lora' (सोनेट्स टू लोरा) कविता लिखी। उसकी अन्य ग्रंथो / पुस्तको में फेमिलियर लेटर्स है - जिसमें प्राचीन विद्वानो को सम्बोधित किया गया है। जैसे - सिसरो, वर्जिल, होमर, प्लेटो होरेस आदि। अन्य पुस्तको में Illustrious men इस पुस्तक में प्राचीन साम्राज्य के 30 शासको का वर्णन किया। (Lives of Illustrious men (लाइव्स ऑफ इलस्ट्रियस मैन))। पैट्रार्क को मानववाद का जनक कहा जाता है। इसे पुनर्जागरण का पिता भी कहा जाता है। आधुनिक पुस्तकालय का जनक (प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रह किया)

इनकी कविता व गीतिकाओं में - प्रकृति का नैसर्गिक सौन्दर्य, इटली के प्रति देशप्रेम की भावना।

पारम्परिक धार्मिक चिन्तन के स्थान पर लौकिक विषयों को आधार बनाया (मनुष्य) ... मानवीय ...

* लोरेंजो वाला - लौकिक जीवन की मानवीय ... स्वतंत्रता का समर्थक

* बोकासियो *

इतावली गद्य काव्य

*गियोवेनिन बोकोसियो (Giovanni Boccaccio) - इसे लैटिन गद्य काव्य का पिता कहा जाता है, उसने डिकेमेरॉन ग्रंथ लिखा, यह ग्रंथ 100 हास्य कहानियों का संग्रह है जो उस समय के समाज का वर्णन करता है। (जैसे - प्लेग के कारण कुलीन वर्ग का समाज लेकिन छोड़कर... करता है एवं उन कुलीन वर्ग की आपसी बातचीत का वर्णन)

(डिके मेरॉन में धार्मिक आडम्बर, विलासिता मध्यकालीन जीवन का वर्णन...)

पहली ... इटली का प्रथम ...

* निकोलो मैक्यावली - 16 वी शताब्दी का राजनीतिक विचारक था। इसने "दा प्रिंस" नामक लोकप्रिय ग्रंथ लिखा जिसकी तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जाती है। अन्य ग्रंथो में "दि आर्ट ऑफ वार" इस पुस्तक में युद्ध सम्बन्धी कलाओं एवं उसकी व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया। (2) मैनरागोला (नामक एक इटालियन नाटक लिखा। (3) हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेन्टाइन रिपब्लिक" (4) रोमन साहित्य एवं इतिहास लिखा। (5) डिस्कोर्सेस ऑन लिवी - इस पुस्तक में मैक्यावली ने प्राचीन रोमन गणराज्य को आदर्श माना।

(हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेंस)

(राजनीतिक आधुनिक चाणक्य कहा जाता है)

* लौरेंजो वाला - 16 वी शताब्दी का इटालियन विद्वान इसे ऐतिहासिक आलोचना का जनक कहा जाता है, उसने डोनेशन ऑफ कांस्टेंटाइन नामक ग्रंथ की आलोचना की (Donation of Constantine)।

* फ्रांस के साहित्य व साहित्यकार

= Francois Rebelaies (फ्रेंकोइस रेबेला - 15 वी शताब्दी का विचारक था इसने गद्य साहित्य की उपन्यास शैली में लिखना प्रारम्भ किया। उसकी प्रमुख कृति का नाम: *गारगन्तुआ* Gargantua and Panta Gruel (पेंटेग्रुएल) - यह फ्रांस के दो नायकों पर लिखा हुआ ग्रंथ है, रेबेला ने समकालिन शिक्षा पद्धति की कड़ी आलोचना की तथा समकालिन समाज का वर्णन किया

(रेबेला ने ... के प्रतिपादन में जीवन के प्रति आनंदमय एवं धर्मनिरपेक्ष पर जोर दिया तथा इस आडंबर व परम्पराएं ... अंधविश्वास का विरोध किया)

* मोंटेम तथा (मोंत्ये): विवेकशील चिन्तन के कारण मोंटेग को पूर्वगामी माना यह फ्रांस के दो प्रमुख निबंधकार थे, इन्होने विभिन्न विषय पर लेख लिखे उदाहरण के लिए - प्रेम रोमांच, देश भक्ति राजनीति युद्ध आदि इसमें मानवजीवन की समस्याओं एवं उनके समाधान के प्रति लेखक की गहरी अंतर्दृष्टि है

* इंग्लैंड का साहित्य व साहित्यकार

(1) ज्योफ्री चौसर : 15 वी शताब्दी का ब्रिटिश साहित्यकार, प्रमुख कृति कैंटरबरी टेल्स इस पुस्तक में केंटरबरी नामक स्थान पर सेंट टॉमस नामक तीर्थ स्थल की यात्रा करने वाले 30 यात्रियों का वर्णन

मैक्यावली - राजा में शेर व लोमड़ी के गुण दोनों होने चाहिये, व राजा को आदर्श को मानना ...

जो सामान्य के लगभग सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे द्वारा सुनाई गई कहानियों का संकलन है इनमें तत्कालीन समाज की मानसिकता एवं जीवन का चित्रण मिलता

किया गया। चौसर बोकेचियो से प्रभावित था। चौसर को अंग्रेजी कविता का जनक कहा जाता है। अंग्रेजी साहित्य का होमर कहा जाता है।

***टॉमस मूर** :- यूटोपिया नामक एक काल्पनिक ग्रंथ लिखा, जिसमें आदर्श राज्य एवं समाज की कल्पना (कहानी कथा) की गई। यह पुस्तक मूलतः लैटिन में लिखी गई लेकिन तुरन्त अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया गया। उसके अन्य ग्रंथो में - डायलॉग, अपोलॉजी आदि।

* इसमें तत्कालीन ब्रिटिश समाज एवं राज्य की बुराइयों को बड़ी खूबसूरती से उभारा है

***एडमण्ड स्पेन्सर** :- एडमण्ड स्पेन्सर ने "फेयरी क्वीन" नामक पुस्तक लिखी जिसमें कहानी के नायक प्रिंस आर्थर के गुण दोषों का वर्णन किया गया। इसमें मानवीय मूल्यों की ...

* इनकी कृतियों में धार्मिक एवं मानववादी विचारों का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है

***फ्रांसिस बेकन** :- 16 वीं शताब्दी का अंग्रेजी साहित्यकार, प्रमुख ग्रंथों में दी एडवांसमेंट ऑफ लर्निंग एवं (2) दा न्यू अटलांटिस - प्रमुख दी एडवांसमेंट में पुस्तक में प्रकृति के अध्ययन पर तथा दा न्यू अटलांटिस में विज्ञान पर बल दिया। इसीलिए इसे आधुनिक विज्ञान का पिता कहा जाता है। प्रमुख निबंधों में "ऑफ स्टडी" (पुस्तकें तीन प्रकार की - 1. टेस्ट (2) चबाना (3) चबाना व पाचन करना - फ्रांसिस बेकन) (4) of Convalescence आदि निबंध लिखे।

***विलियम शेक्सपियर** :- 16 वीं शताब्दी का महान साहित्यकार व नाटककार था। इन्होंने लगभग 40 नाटक लिखे व कई कविताएँ लिखी। प्रमुख नाटकों में "मैकबेथ" दा टेम्पेस्ट, much Ado (ओथेलो), About Nothing, Midsummer Night Dream (मैकबेथ), Hamlet (हेमलेट), Romeo and Juliet (किंग लियर), जूलियस सीजर, मर्चेन्ट ऑफ वेनिस आदि नाटक लिखे जिसमें हर प्रत्येक क्षेत्र धार्मिक, सामाजिक व्यापारिक आदि विषयों पर नाटक लिखे जो आज भी प्रासंगिक है।

(Left margin, written vertically:) नायक का महत्व, सामाजिक, जीवन व हृदय स्पर्शी चित्रण किया। शेक्सपियर ने सुखान्त व दुखान्त दोनों प्रकार के नाटक लिखे। ... इसके ट्रेजेडी नाटक

~~हेमलेट - इसमें सबसे लम्बी - to be not to be - काम करें या न करें~~

be not to be that is question.

फ्रांसिस बेकन :- इतिहास मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है।

स्वगत कथन - लम्बी - एकांकी - एक ही व्यक्ति नाटक के मंच पर अभिनय करता है।

यह कहा जाता है कि लूथर के अंडों को इरैस्मस ने सेया(?) ... इरैस्मस के प्रक्रिया के परिणाम ने पोप कीतह ... इरैस्मस पहुँचाए

अन्य साहित्यकार :

*** हॉलैण्ड/डच :**

डेसीडेरियस इरैस्मस :- इरैस्मस हॉलैण्ड निवासी उसने इटली फ्रांस इंग्लैण्ड आदि स्थानों की यात्रा की। उसे विश्व नागरिक भी कहा जाता है/ एक महान यूरोपियन व्यक्तित्व। उसने अपने साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग किया, उसने समकालीन चर्च पर व्यंग्य व कटाक्ष किये। प्रमुख कृति का नाम - इन दा प्रेज ऑफ फॉली. ~~मूर्खता पर व्यंग्य~~ (मूर्खता की प्रशंसा)। ② न्यू टेस्टामेन्ट (आधुनिक ईसाईयों की बाइबिल) इस पुस्तक की ~~नायिका~~ नायिका फॉली मानव की सहज प्रवृत्तियों का प्रतीक और उसके माध्यम इरैस्मस ने जीवन की कठोर, धार्मिक, तापसिक, आडम्बरपूर्ण शैली के स्थान पर सहज, स्वाभाविक, उल्लास एवं आनन्द से परिपूर्ण जीवन शैली के महत्व को उजागर किया।

*** जर्मनी :**

*** मार्टिन लूथर** - ~~जर्मनी~~ 16वी शताब्दी में जर्मन साहित्यकार एवं समाज सुधारक उनकी प्रमुख कृतियों में "95 थीसिस" ② दे बेबीलोनियन कैप्टिविटी ऑफ द चर्च ③ फ्रीडम ऑफ क्रिश्चियन मैन ④ 'Against The Thieving and The murderous Gangs of Peasants.' तथा साथ ही बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया जिसे धार्मिक साहित्य की उत्कृष्ट कृति माना जाता है।

स्पेन

⇒ Cervantes :- * सर्वेन्टीज * ~~सर्वेन्टीज~~ ने "डान क्विक्जोट" 'Don Quixote' ग्रंथ लिखा।
(यह नायक योद्धा की वेशभूषा पहनकर समाज सुधारने का प्रयास जिसमें उसकी बुरी गत होती है। व काल्पनिक युद्ध करता है) इसमें अनेक कहावतें हैं जिसका आज भी बातचीत करते हैं।
* इसमें स्पेन की मध्यकालीन पारम्परिक एवं सामंती मान्यताओं पर एक सटीक व्यंग्य है

* कला के क्षेत्र में पुनर्जागरण का प्रभाव

मध्य काल की कला पर धर्म का प्रभाव था। कला का उद्देश्य धर्म का प्रचार करना था। मध्य युग की कला काल्पनिक थी। यहाँ तक कि रंगों के मिश्रण पर भी कला का प्रभाव था।
* पुनर्जागरण कालीन कला प्राकृतिक सौन्दर्य पर आधारित थी। पुनर्जागरण कला मध्य कालीन नियमों एवं परम्पराओं के बंधन के विरुद्ध विद्रोह था।

स्थापत्य कला :-

मध्य युग की स्थापत्य कला को गोथिक शैली कहा जाता है जिस पर धर्म का प्रभाव था। पुनर्जागरण कालीन स्थापत्य कला को ग्रीको-रोमन शैली कहा जाता है। ग्रीको-रोमन शैली की प्रमुख विशेषताएं

एक ही रोम में निर्मित मध्य(?) ... रहती थी। ... कुल ... डिजाइन(?) ही
[illegible]

ग्रीको-रोमन संस्कृति की विशेषता (50) क्लासिकी शैली के मेहराब

(1) इस शैली में सजा डिजाइन, श्रृंगार आदि पर बल दिया।
(2) पत्थर के ~~अति~~ अतिरिक्त लकड़ी का अत्यधिक हुआ।
(3) क्लासिकल पद्धति पर आधारित खिड़की, दरवाजे एवं पैनल का प्रयोग किया गया।
(4) नुकीले मेहराब के स्थान पर गोल मेहराब का प्रयोग किया
(5) इस शैली में मेहराब गुम्बद एवं स्तम्भों पर अत्यधिक महत्व दिया।

फिलिप्पो ब्रुनेलेस्की
* Fillipo Brunlleschi :- रैनेसाँ स्थापत्य कला का प्रथम प्रवर्तक था। उसने फ्लोरेंस में सेंटा मारिया चर्च (कैथेड्रल) का गुम्बद डिजाइन किया। इसके अतिरिक्त फ्लोरेंस में पिटी पैलेस (पलाज़ो पिट्टी) का डिजाइन किया।

* रोम में सेंटपीटर चर्च रैनेसाँ कालीन स्थापत्य कला का सबसे सुन्दर कृति है। इस चर्च के निर्माण के प्रमुख वास्तुकार - Bramante (ब्रैमेंटे (प्रारम्भ)), माइकल एंजेलो, राफेल व पैलीडियो थे।

का निर्माण करवाया जिसमें स्तम्भ, गुम्बद, मेहराब का प्रयोग
* स्थापत्य में - मानववाद की भावना से प्रेरित यूरोपवासियों की सौन्दर्य मूलक भावनाओं को पुनर्जागरण युग की नवीन स्थापत्य कला, मूर्ति व ~~*~~ हर्ष प्रदान करती थी।

चर्च के अध्याय, Church. Chapel.

* रोम मे संत पीटर का गिरजाघर - जिसका निर्माण प्रारम्भ - ब्रेमेन्टे)
यह गिरजाघर ईसाई धर्म का भव्य स्मारक है इसमें गुम्बद अनुपात वाली विशाल व शानदार गुम्बद बनी हुई है (योजना माइकल) गिरजाघर के अन्तर्वर्ती हिस्सों मे बड़ा प्रभाव मूर्ति शिल्प व अलंकरण है

* ब्रेमेन्टे - का नया नाम कई मान्टे (पोप जुलियस -II

⇒ माइकल एंजेलो 40 वर्ष तक इस चर्च को बनाने मे लगा रहा। उसके बाद, राफेल को यह कार्य दिया गया

* फ्रांस के सम्राट फ्रांसिस-I एवं स्पेन के शासक फिलिप -II ने भी रैनेसाँ कला को संरक्षण दिया। हाइडलबर्ग का किला (Hiddelberg) का किला व इग्लैंड मे वाइट हॉल नामक भवन/इमारतें रैनेसाँ शैली से प्रभावित थी

चित्रकला :- चित्रकला मे प्रथम पेन्टर जियोटो रैनेसाँ कालिन चित्रकला का प्रथम चित्रकार था। उसने प्राकृतिक सौन्दर्य एवं जनसाधारण से सम्बंधित चित्र बनाये। पहला चित्रकार जिसने कैनवास (कपड़े का) का प्रयोग एवं तैलचित्र मे दक्षता प्राप्त की।

* लियोनार्डो दा विंची (1452-1519) :- फ्लोरेंस निवासी, उसे फ्लोरेंस मे Medici परिवार का संरक्षण प्राप्त था। उसकी प्रमुख कृतियो मे - "मोनालिसा" (2) लास्ट सपर (अन्तिम रात्रि भोज) (3) वर्जिन ऑफ दी रॉक्स (4) वर्जिन एण्ड चाइल्ड विद सेंट एन.। लियोनार्डो की अन्तिम

ci (चौ) (इतिहास)

फ्रांसिस-1 के द्वारा उन्हे पेंशन प्राप्त हुई। इनकी मृत्यु फ्रांस मे हुई।

एक व्यक्ति चित्र (पोर्ट्रेट)

* मोनालिसा :- इस पेंटिंग का अन्य नाम - ला जियोकोंडा की पत्नी जिसका नाम लिसा गिरार्दीनी था। यह पेंटिंग मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान के लिए प्रसिद्ध है। यह पेंटिंग 3' X 2' ..." की। यह वर्तमान में पेरिस में म्युजियम लुव्रे (Louvre) है। (संग्रहालय में ही)

* लास्ट सपर (अन्तिम रात्री भोज) - यह मिलान मे एक चर्च के डाइनिंग हॉल की दीवार पर बनाई गई। इसमें जिसस के बारह शिष्य (प्रमुख पीटर व पॉल) है। जिसमें जिसस घोषणा करता है कि उनमें से एक व्यक्ति विश्वासघात करेगा. इस घोषणा के साथ ही सभी के चेहरे का रहस्यमयी चित्रण किया गया। तथा इस पेंटिंग को जीवित लिविंग ड्रामा कहा जाता है।

* धोखा देने वाले अनुयायी का नाम 'जुडस' (Judas) था।

* वर्जिन ऑफ द रॉक्स - इसमें वर्जिन मेरी (माता मेरी को) को बालक ईसा एवं अन्य के साथ चट्टानों के बीच खेलते हुए दिखाया गया है।

* वर्जिन ऑफ दी चाइल्ड विद सेन्ट एनी - मैरी द्वारा अपने पुत्र ईसा को संत ऐन के साथ खेलते हुए दिखाया गया है।

* माइकल एंजेलो :- एक वास्तुकार, चित्रकार, दार्शनिक वैज्ञानिक आदि था। इन्होंने लगभग 145 चित्र बनाये।
प्रमुख कृतियों में - 1. दा लास्ट जजमेंट 2. फॉल ऑफ मैन (fall of...)
- दा लास्ट जजमेंट नामक चित्र को "सिस्टाइन चैपल" नामक चर्च की छत पर बनाया गया। (यह वेटिकन में स्थित है।) इसमें 394 आकृतियाँ है। (बनाने में 20 वर्ष लगे) इस चित्र में मानव को भयभीत और आतंकित होते दिखाया गया जहाँ उन्हें ईश्वर से कोई दया की आशा नहीं रही है।
* फॉल ऑफ मैन में - ईसा के जन्म से प्रलय तक की कहानी का चित्रण है। इसी चित्र को बनाते-बनाते माइकल अंधा हो गया था।

(हाशिये पर:) परिप्रेक्ष्य की शोभा बढ़ाना... ...उसकी पृष्ठभूमि ...

(हाशिये पर:) उसको गतिमान अवस्था मे, खड़ा है... सजीव चित्र

लडिरिया विरोचियो : लियोनार्डो के समय प्रसिद्ध चित्रकार — * 1911 में लूव्र के म्यूज़ियम से चोरी हुई।

* मैसेन्जियम ऑफ कारपस
* कला को संरक्षण देने मे मेडिसी परिवार का पूर्ण सहयोग रहा।
* नेपोलियन - इटली अभियान के समय (आस्ट्रिया युद्ध) के समय वह इटली से पेंटिंग ले आया

अलब्रेख्ट ड्यूरेर - जर्मनी में पुनर्जागरण युग की भावना का प्रतिनिधित्व, क्रिश्चियन(पोट्रेट्स)
पीटर ब्रुगेल - हॉलैण्ड निवासी। इसने कृषक एवं जनसामान्य के बीच जीवन के विविध पक्षों का यथार्थ अंकन

राफेल (Rafhel)

उसकी प्रमुख कृतियों में 'सिस्टाइन मेडोना'(माँ मेरी) व स्कूल ऑफ एथेंस।

राफेल ने पोप को एक पत्र लिखकर यह अनुरोध किया कि प्राचीन रोम के सांस्कृतिक धरोहर को बचाने का उपाय किया जाना चाहिए। राफेल पोप का सरकारी चित्रकार था।

*'सिस्टाइन मेडोना' - यह चित्र ईसामसीह की माता मेरी का है, इस चित्र में माँ का वात्सल्य प्रेम एवं मातृत्व दर्शाने का प्रयास है।

* स्कूल ऑफ एथेंस में राफेल ने प्राचीन ग्रीक दार्शनिक अरस्तू प्लेटो आदि को शास्त्रार्थ करते हुए दिखाया गया है।

* राफेल कला की बारीकियों की दृष्टि से द. विंची एवं एंजेलो से बेहतर था।

* केवल 37 वर्ष की उम्र मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु उसके जन्म दिन के समय ही हुई।

मूर्तिकला :-

फ्लोरेंस के गिरजाघर में एक प्रमुख ताख में रखी गई पाषाण प्रतिमा जो अपनी सुन्दरता व विचार सम्पन्न मुखाभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

दोनेतेलो / डोनातेल्लो - रैनेसां काल का मूर्तिकला का प्रथम प्रवर्तक था, इसकी प्रमुख कृतियों में सेंट मार्क और इरेजमो दा नार्मी प्रमुख है।

* सेंट मार्क की यह मूर्ति वेनिस के एक चर्च के लिए बनाई गई।

* इरेजमो दा नार्मी - कांसे में ढली एक योद्धा की मूर्ति है इसे गेटामेलाटा भी कहा जाता है। इस मूर्ति को रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात कांसे में ढली पहली मूर्ति कहा जाता है। ③ फ्लोरेंस के कैथेड्रल में शिल्पित गायनरत व नृत्यरत युवाओं का इस विशिष्ट मोहर जो अपने अद्भुत सौन्दर्य के लिए

* लॉरेन्जो घिबर्टी - इन्होंने फ्लोरेंस के "बैपटिस्ट्री" (बपतिस्मा कक्ष) चर्च के प्रमुख प्रवेश द्वार पर नक्काशी कर सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित की। माइकल एंजेलो ने इस द्वार को स्वर्ग का द्वार कहा।(सेंटमेरिया गिरजाघर के पूर्वी द्वार पर मूर्तिशिल्पांकन है घिबर्टी का अपनी सत्यवादी प्रकृति, नाटकीय अभिव्यक्ति एवं सूक्ष्म चारुता के लिए विख्यात है)

* माइकल एंजेलो :- प्रमुख मूर्तियों में लगभग 400 मूर्तियाँ बनाई उसकी प्रमुख कृतियों में बाउण्ड स्लेव, मोजेज, डेविड, एवं पियेता प्रमुख है। पियेता - जो एक सुन्दर युवा कुंवारी (गुलाम) कन्या(ईसा) (कुमारी) की मूर्ति है जो गोद में मृत कन्या का पुत्र अपने जीवन का उत्सर्ग है जिसके हाथ की प्रभात अंजली का निरूपण है, इसका निरूपण है

* बाउण्ड स्लेव - उस समय के गुलामों को बेड़ियों में बंधे दिखाया गया।

* मोजेज/मूसा - यह वेनिस के एक चर्च के लिए मूर्ति बनाई गई। पोप जूलियस II के मकबरे के लिए निर्मित, यह क्रोध पूर्ण मुद्रा में है।

* डेविड/दाउत - यह बाइबिल की कथा में गोलियत के युद्ध का नायक था। यह ओल्ड टेस्टामेंट के समय का योद्धा है। एक विशाल प्रतिमा फ्लोरेंस में स्थित, इसमें बलवान युवा का प्रदर्शन है।

* पियेता :- इसमें माँ मेरी को अपने मृत पुत्र ईसा को अपनी गोद में लिए हुए दिखाया गया है। इसमें माँ मेरी को युवा दिखाया (दिखा) जिसकी और आलोचना की जाती है यह 16 फीट लम्बी ऊँची, सेंट पीटर चर्च के बाहर रखी।

* "Jack of all trades and masterer of all" - माइकल एंजेलो।

[illegible]

लूथर ने लैटिन छंदो की मेसो एवं मेरिवियन धार्मिक गीतो की तथा स्व रचित पद्यो का संकलन
1524 में प्रकाशित की जो इतिहास की पहली लोकप्रिय धार्मिक गीतों की पुस्तक थी

संगीतकला :- मध्य काल में चर्च में संगीत वर्जित था। (प्रतिबंध)
इसे अशुभ माना जाता था परन्तु रैनेसा काल में सेंट
सेंट एमरोज नामक विद्वान ने चर्च में संगीत को संरक्षण दिया।
मार्टिन लूथर ने भी चर्च में संगीत का समर्थन किया 1554 में
गिरजाघरों में धार्मिक मेसो व गीतों के सामूहिक गान की परम्परा की शुरुआत की
गियोवेनी पैलेस्ट्रीना ने "Masses" नामक सामूहिक गीतों की एक
पुस्तक लिखी - यह ग्रंथ वर्तमान में भी चर्च संगीत का आधार माना
(मास ऑफ पोप मार्सिलस)
जाता है
डीबोरो वाद्ययंत्रो (सबसे पहला ऑपेरा 1594 में प्रस्तुत)
* पियानो एवं वॉयलिन वाद्ययंत्र रैनेसा काल की देन है।
* आर्केस्ट्रा संगीत को विकसित किया व इस हालीवुड आर्केस्ट्रा की नींव का पुनर्जागरण

* रैनेसाँ का विज्ञान पर प्रभाव :-

रैनेसाँ काल का विज्ञान निरीक्षण अनुसंधान एवं जाँच पर आधारित था रैनेसाँ काल में किसी भी सिद्धान्त को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इस काल में प्रकृति शक्तियो का प्रयोग मानव जीवन को खुशहाल बनाने के लिए किया गया।

* इस काल में वैज्ञानिक एवं खगोल शास्त्रियो में प्रमुख है-

(1) कॉपरनिकस :- यह पोलेण्ड का एक संत था। लगभग 10 वर्षो के लिए इटली में रहा, उसने प्राचीन यूनानी खगोलशास्त्र का अध्ययन किया। उसने टॉलमी के सिद्धान्त (जियो सेंट्रिक सिद्धान्त) को चुनौती व दी। (पृथ्वी स्थिर है को) वह कहता है पृथ्वी स्थिर नहीं है वह घूर्णन करती है उसके चारों ओर ग्रह परिक्रमा करते हैं
* उसने 1543 ई. में पुस्तक - ऑन दि रिवोल्यूशन ऑफ सेलेस्टियल बॉडीज "On the Revolution of the Celestial Bodies" यह पुस्तक को पोप पॉल-III को समर्पित की इस पुस्तक को। सिद्धान्त को कॉपरनिकस सिद्धान्त कहते हैं। चर्च ने उसके विचारों को प्रचार करने पर प्रतिबंध लगा दिया।

(प्रसिद्ध पुस्तक - डी रिवॉल्यूशनिबस)

(नाकोपरनिकस सूर्यकेन्द्रवाद के सिद्धान्त को निश्चयपूर्वक / पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण परिधि पर ... और सूर्य के चारों ओर / व पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है)

* केपलर :- जर्मन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था उसने गणित के आधार पर कॉपरनिकस प्रणाली को सिद्ध किया।
उसने एक सिद्धान्त दिया जिसे Law of Planetary motions (ग्रहो की गति का नियम) कहा जाता।
* ग्रहो का घूर्णन गोल है (पहले कॉपरनिकस ने) केपलर ने इसे अण्डाकार बताया। वृत्ताकार (परिधि में) में नहीं घूमते बल्कि दीर्घ वृत्तीय (इलिप्टिकल) पथ में घूमते हैं

क्रिसमिस के समय गीत गाए जाते हैं उसको क्रिसमिस कैरल कहा जाता है

मर्केटर - भूगोल वेत्ता (हॉलैण्ड निवासी) ने विश्व के सही नक्शे का निर्माण किया इसी ने महत्व पूर्ण प्रयोग भक्ति द्वारा कार्य ग्रह 6टलेख लगा 1595 में

* **ब्रूनो** : यह इटालियन खगोल शास्त्री था इसने भी कॉपरनिकस सिद्धान्त का समर्थन किया। और उसका प्रचार किया। चर्च ने उसे जिंदा जलाने के आदेश दिये, ब्रूनो 7 वर्ष तक वह अपने देश से बाहर रहा। इटली पहुँचने पर उसे जिंदा जला दिया गया।

* **गैलिलियो** : इटली का खगोल शास्त्री था व उत्तरी इटली के Padua विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था उन्होंने दूरबीन टेलीस्कोप का आविष्कार किया एवं ग्रहों का अध्ययन किया तथा कॉपरनिकस सिद्धान्त का समर्थन किया। (आधुनिक विज्ञान के पिता)
* गैलिलियो पर चर्च के न्यायलय (इन्क्वायरियों) में मुकदमा चला - (अंतरिक्ष और चौथाई बत्ती) (अंतरिक्ष उपस्थिति)

* **ग्रिगेरियन कलेण्डर** - पोप ग्रिगेरियन XIII (ग्रेगरी त्रियोदश) ने 1582 ई. में लागू किया आज की तारीख इसी पर आधारित है। इससे पहले जूलियन कलेण्डर चलता था।

* **अन्य वैज्ञानिको में** :- आइजिक न्यूटन :- एक ब्रिटिश वैज्ञानिक था। उसने दो सिद्धान्त दिये - गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त एवं गति का नियम दो सिद्धान्त।

* **Rene Descartes** (   ) एक दार्शनिक एवं गणितज्ञ था। (कोल) उसने बीजगणित का प्रयोग ज्योमिति गणित करना बताया।

* **Tartaglia** - यह एक इटालियन गणितज्ञ था। इसने कई गणित के नियम व सिद्धान्त दिये।

* **स्टीविनेस** - हॉलेण्ड का वैज्ञानिक था। इसने दशमलव प्रणाली का प्रयोग मुद्रा, नापतौल आदि में प्रयोग करना सिखाया।

* **विलियम गिलबर्ट** (गिलबर्ट) - ब्रिटिश वैज्ञानिक था इसने चुम्बक का सिद्धान्त दिया।

* **जे. बी. हेलमोंट** (हेल्मोन्ट) - हॉलेण्ड का वैज्ञानिक था। उसने "Gas" गैस शब्द का प्रयोग किया, उसने CO_2 (कार्बन डाइ ऑक्साइड) की खोज की।

* **वेसेलियस** - हॉलेण्ड निवासी, उसने मानव शरीर संरचना का अध्ययन किया

* **विलियम हार्वे** - यह इंग्लैण्ड का वैज्ञानिक था उसने रुधिर परिसंचरण तंत्र का सिद्धान्त दिया। पुस्तक - मोशन ऑफ़ हार्ट (क्लास) ...

⇒ **जॉन नेपियर** : स्कॉटलैण्ड का वैज्ञानिक था। उसने Log tables (लघुगुणक) दिया।

* **गणित के चिह्न** - + - × ÷ √ (   ) इनका यह रैनेसा काल में लोकप्रिय हुये।

* गैलिलियो के सिद्धान्त के आधार पर ही पैण्डुलम का सिद्धान्त आया। इससे दीवार घड़ियों का आविष्कार आया। यह रैनेसा काल की देन थी।

चर्च के न्यायलय को इन्क्वायरियाँ कहा जाता थी।

(हाशिये पर:) *डी बोर्ड लिपास (हॉलैण्ड निवासी) - शरीर (चीरफाड़) विज्ञान पुस्तक प्रकाशित की जिसका शीर्षक सेवनडम्स ऑन दी स्ट्रक्चर ऑफ ह्यूमन बॉडी इस पुस्तक में पहली बार मानवीय शरीर के अंगों का सचित्र व विस्तृत वर्णन
* **[illegible]** - [illegible] व अल्कोहॉल [illegible]

(अ) नवीन वैज्ञानिक चेतना के सैद्धान्तिक प्रवर्तक-

यूरोप में स्कॉलेस्टिक विचारकों में एबेलार्ड व टॉमस ... एक्विनास ने पहली बार अंध श्रद्धा के स्थान पर ... तर्क बुद्धि के महत्त्व को आधार उजागर किया

* रोजर बेकन - पहली बार, बहुत स्पष्ट शब्दों में व्यक्ति की विवेकशील एवं तर्क बुद्धि प्रयात्र मनःस्थिति: के स्वतंत्र उपयोग की महत्ता का प्रतिपादन किया उसके कथनों में वैज्ञानिक चेतना के स्पष्ट सूत्र विद्यमान थे "प्रयोग से ही प्राकृतिक, रासायनिक, भेषजिक वस्तुएं स्वर्गों और पृथ्वी पर अवस्थित सब वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है उसने कुछ ऐसे वैज्ञानिक विचार प्रतिपादित किये जैसे मोटर, हवाई जहाज व वाष्पचालित जहाज के आविष्कार की संभावनायें व्यक्त की

* फ्रांसिस बेकन - वैज्ञानिक चेतना के महत्त्व को पुष्ट किया उसके अनुसार "ज्ञान की प्राप्ति के लिए कार्य-कारण सम्बंध को परीक्षण व प्रयोग द्वारा जानना बहुत अनिवार्य है अपनी पुस्तक दि एडवांसमेंट ऑफ लर्निंग" में उसने प्राकृतिक तथा भौतिक विज्ञानों के अध्ययन की आवश्यकता पर जोर दिया

* डेकार्ट - किसी भी बात पर हमें आसानी से विश्वास नहीं कर लेना चाहिए, पहले हमें संदेह की दृष्टि से देखना चाहिए, संदेह की मनःस्थिति वैज्ञानिक चेतना के ... के विकास के लिए आवश्यक है

* भौगोलिक खोजें :-

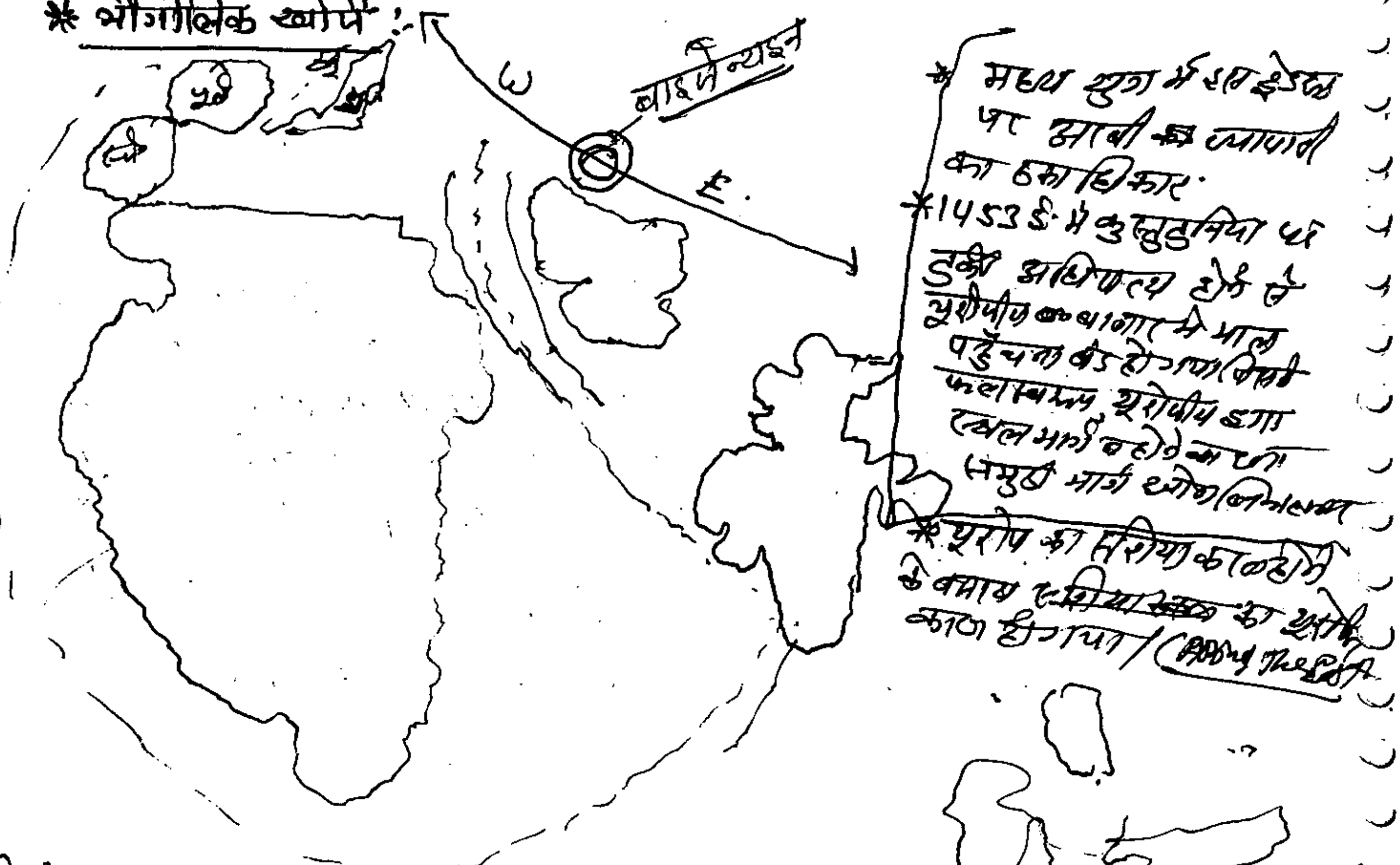

* मध्य युग में इस क्षेत्र पर अरबों का व्यापार का एकाधिकार.

* 1453 ई. में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों आधिपत्य होने से यूरोपीय बाजार में माल पहुँचना बंद हो गया जिसके फलस्वरूप यूरोपीय द्वारा स्थल मार्ग बन्द होने पर समुद्री मार्ग खोज निकाला

* यूरोप का ... के बजाय ... का ... हो गया / (Rowing The ...)

जिन लोगों के पास श्रेष्ठ हथियार थे उन्होंने श्रेष्ठ सभ्यताओं पर आधिपत्य स्थापित
इसी हथियार ...

वेस्पुची (इटालियन) इस यात्री के द्वारा नाविकों की खोज (वेस्पुची)

कारण : पूर्वी देशों की वस्तुओं के प्रति जबरदस्त आकर्षण (2) इटली के व्यापारिक एकाधिकार को तोड़ना (3) भौगोलिक ज्ञान, समुद्री यात्रा व नए यात्रा उपकरणों का विकास।

* भौगोलिक खोजों में यू० का योगदान कारण :
=) यूरोप विश्व को विश्व के अन्य देशों की अधिक आवश्यकता थी। विश्व के अन्य देशों को यूरोप की आवश्यकता नहीं थी।
* आवश्यकता → (1) आर्थिक (2) धार्मिक
* आर्थिक आवश्यकता → यूरोप में न उपलब्ध सामग्री – गरम मसाले, सुगन्ध, कपास आदि। कुछ कम मात्रा में उपलब्ध – सिल्क, कीमती पत्थर, सोना, चाँदी आदि कम उपलब्ध थी।
(2) धार्मिक आवश्यकता : ये चौथी शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक ग्रीको-रोमन से यूरोप का ईसाईकरण हुआ इस कारण ईसाई धर्म का प्रचार यूरोप का प्रचार करना था। जो नाविक थे समुद्री मार्ग खोजने निकले उनके साथ धर्म प्रचारक भी साथ निकले (क्रिश्चियन मिशनरी)
* भौगोलिक खोजों की कठिनाईयाँ – (1) नक्शों की खोज नहीं थी (2) लम्बी समुद्री यात्राओं को अशुभ माना जाता था। क्योंकि अब तक पृथ्वी को फ्लैट माना तथा उसका अन्तिम छोर आयेगा और उसमें गिर...
* कोलम्बस ने पश्चिम दिशा की ओर प्रयाण कर भारत पहुँचना चाहता था लेकिन वह नई दुनिया में पहुँच गया।
* भौगोलिक खोजों में दो देशों में महत्वपूर्ण भूमिका रही (1) स्पेन (2) पुर्तगाल
* पुर्तगाल की भूमिका :- पुर्तगालियों को श्रेय दिलाने का कार्य प्रिंस हेनरी ने (समुद्रविज्ञान के अध्ययन के लिए केन्द्र/Institute) उसने नाविक स्कूल स्थापित किया उसे नाविक राजकुमार कहा जाता है। प्रिंस हेनरी 1452 में उत्तरी अफ्रीका के तटों के लिए नये समुद्री मार्ग खोज निकालने के लिए नाविकों को भेजा। लेकिन अफ्रीका का आधा तट ही खोज निकाल पाये तो उस समय हेनरी की मृत्यु हो गई। (मदीरा द्वीप)
(2.) कैप्टन बार्थोलोम्यू डियाज :- इन्होंने 1488 अफ्रीका के पश्चिमी तट के सहारे अफ्रीका के अंतिम छोर तक यात्रा की। डियाज की योजना भारत तक खोज करना था। लेकिन डियाज के साथियों ने आगे बढ़ने से मना कर दिया तो वह अपनी मूलयोजना को छोड़कर पुनः पुर्तगाल चला गया। तथा अन्तिम छोर का नाम "Cape of Storm" (तूफानी अंतरीप) दिया परन्तु पुर्तगाली शासक जॉन-II ने इस छोर का नाम केप ऑफ गुड होप नाम रखा।
* वास्कोडिगामा : 1498 वास्कोडिगामा की भारत यात्रा काल में 10 माह 14 दिन लगे। वापस लौट कर गया, तब खर्चे का 60 गुणा अधिक माल ले गया। 1498 1498 को भारत के द. पश्चिमी किनारे कालीकट पहुँचा। 1509 द्वीव के युद्ध में पुर्तगालियों की निर्णायक विजय।

अटलांटिक महाद्वीप लेकिन आर्थिक उद्देश्य - ... थी

केब्राल

→ केब्राल - जो कि 1500 ई में भारत की यात्रा के लिए निकला, यह केब्राल तूफान में फँस गया, तो तूफानी हवा के कारण पश्चिम की ओर धकेल दिये जाने से वह ब्राजील पहुँच गया। उसे ब्राजील की खोज का श्रेय दिया जाता है।

क्रिस्टोफर कोलम्बस

* स्पेन :- स्पेन की भौगोलिक खोजों में योगदान देने का कार्य कोलम्बस ने किया। यह मूलतः इटली का निवासी था। (जिनेवा का)
* उसने मार्कोपोलो के यात्रा वृतांतों को पढ़कर उससे प्रभावित हुआ। इटली के राजाओं ने उसे सहयोग नहीं दिया (क्योंकि उसने पश्चिम से यात्रा शुरू की थी) तब वह स्पेन चला गया। स्पेन की महारानी ईसा बेला ने सहयोग प्रदान किया। अन्ततः 3 Ag 1492 को तीन जहाजों के साथ स्पेन से रवाना (पिंटा, नीना, सेंटा मारिया नाम थे)
दिशा → सबसे पहले दक्षिण - दक्षिण की दिशा की व कैनरी द्वीप पर पहुँचा, कैनरी आइलैंड से वह पश्चिम दिशा की ओर घूमा अगले पाँच सप्ताह तक जमीन नहीं दिखी, 12 Ag. oct को कोलम्बस के जहाज Inelieg वेस्ट इंडिज पहुँच गया। तथा वहाँ के लोगों का 'इंडियन' नाम दिया
* 1501 में अमेरिगो वेस्पुची (जिसे लैटिन में अमेरिकस कहते हैं) यह इटालियन था लेकिन स्पेन की सेवा में था। 1501 में अमरीका के प्रमुख भू-भाग पहुँचा। उसने अपनी यात्रा के रोचक वृतांत लिखे व लोकप्रिय हो गया। इस महाद्वीप का नाम उसी के नाम से अमेरिका पड़ गया।
* फर्डीनन मैगलैन - मैगलेन पुर्तगाली था। स्पेन शासक फर्डिनन्ड-II ने उसे गर्म मसाले पैदा करने वाले राज्यों या प्रदेशों के लिए नये समुद्री मार्ग खोजने के लिए नये समुद्री मार्ग खोजने के लिए भेजा।
* 1509 ई- मैगलेन स्पेन से रवाना हुआ। वह दक्षिण दिशा में यात्रा शुरू की वह द. अमरीका

प्रशांत महासागर

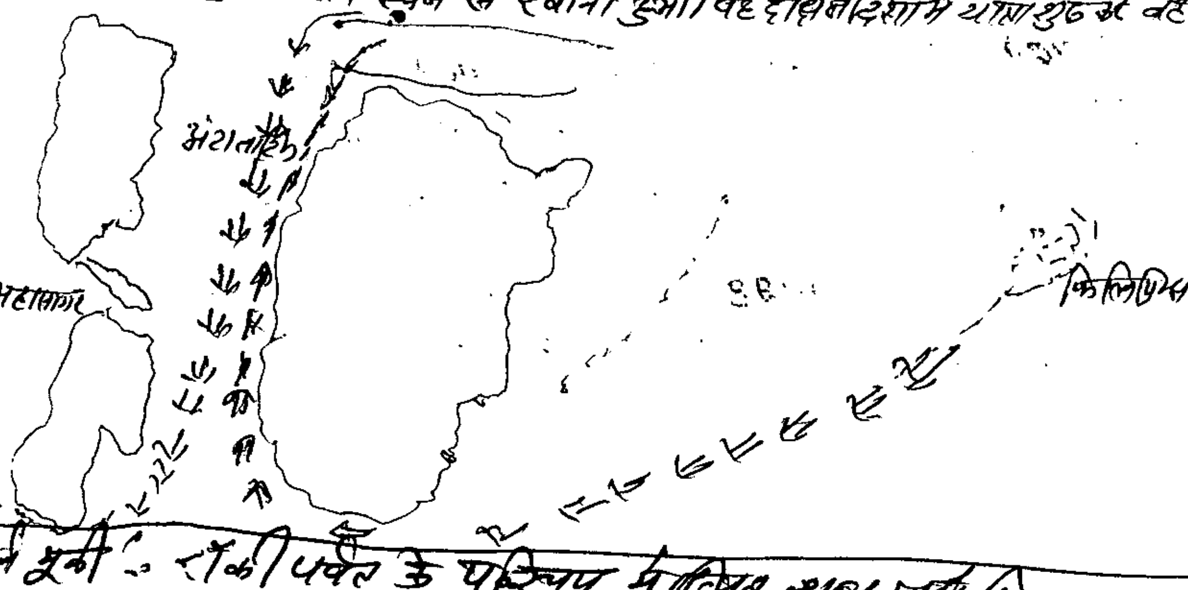

नेवडा दुर्ग :- रॉकी पर्वत के पश्चिम में स्थित शहर जहाँ सोना मिला ...

के मैगलैन स्ट्रेट से प्रशांत महासागर में पहुँचा। वहां से वह न्यूफाउंडलैण्ड पहुँचा, मैगलैन का फिलिपिन्स के स्थानीय कबीलों के साथ झगड़ा हुआ। उसमें मैगलैन मारा गया। एक उसका जहाज बचा "विक्टोरिया" वह 18 अधमरे यूरोपियन्स को लेकर अफ्रीका के चक्कर लगाते हुए वापस स्पेन पहुँचा। मैगलैन को विश्व के चारों ओर चक्कर लगाने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है।

* **पुनर्जागरण के परिणाम** :- (1) राष्ट्रीय राज्यों का उदय
(2) सामन्तवाद का अंत
(3.) मानव वाद का विकास
(4.) देशज भाषा का विकास
(5.) साहित्य के क्षेत्र में विकास
(6) कला के क्षेत्र में विकास
(7.) स्वतंत्र चिन्तन का विकास
8. विज्ञान के क्षेत्र में विकास
(9) चर्च की प्रतिष्ठा को आघात
(10) भौगोलिक खोजें
(11) व्यापार के क्षेत्र में विकास
(12) धर्म सुधार आंदोलन पर प्रभाव

* **राष्ट्रीय राज्यों का उदय** :- सामन्तवाद कमजोर हुआ हुई तो शासक / सम्राट की शक्तियों का पुनः उत्थान हुआ / केन्द्रीय सत्ता मजबूत हुई / तथा -

(2.) * धर्मसुधार आंदोलन *

* पुनर्जागरण व धर्म सुधार आंदोलन दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव डाल रहे एवं प्रभावित कर रहे थे।
* ईसा मसीह के जन्म से पहले यहूदी परिवार में धर्म की दृष्टि से अव्यवस्था बनी हुई थी। ये यहूदी परिवार ग्रीक देवता, मिस्र के देवता तथा अनेक कर्मकाण्डों में विश्वास करते थे।
* जॉन बैप्टिस्ट:- यह उस समय का लोकप्रिय प्रचारक था। वह कहता था एक दिन एक मसीहा का जन्म होगा तथा जो धर्म में अव्यवस्था है वह उसे दूर कर देगा। जब जिसस का जन्म हुआ, तो यह घोषणा की गई कि उस मसीहा का जन्म हो गया। यह सूचना फरिश्तों ने गडरियों को दी।
* जिसस का जन्म बैथलेहिम में हुआ, उसके पिता जोसफ एवं माता मेरी थी।
* बैथलेहिम के पास नैजरेथ में जिसस ने 28 वर्ष वहाँ एक बढ़ई के रूप में कार्य किया।
* जिसस एक प्रचारक के रूप में कार्य ढाई वर्ष तक किया।
* जिसस जॉन दी बैपटिस्ट के शिष्य बन गये।
* जूडिया व गैलिली नामक स्थान पर जिसस ने प्रचार किया। उसके बाद जिसस जेरूसलम पहुँचे। जेरूसलम में जिसस इतने लोकप्रिय हो गये, कि उसे यहूदियों का राजा माना जाने लगा।
* जेरूसलम के प्रांतीय शासक Pontius Pilate ने जिसस को शांति भंग करने के आरोप में उसे गिरफ्तार किया, तथा उसे सूली पर लटकाने के आदेश दिये।
* शुक्रवार, 7 अप्रैल, 30 A.D को सूली पर चढ़ाया गया।
* सूली पर चढ़ाते समय अंतिम शब्द भगवान उन्हें माफ करना क्योंकि यह इस बात से नहीं जानते है वह क्या कर रहे है।
* जिसस लोगों की भलाई के लिए जिसस सूली पर चढ़ गये। जिसस की मृत्यु के बाद उनके अनुयायी जेरूसलम छोड़कर गैलिली गये, उन्होंने वहाँ घोषणा कि उन्होंने जिसस को जिंदा देखा है।
* Good Friday के बाद जो Sunday आता है वह Easter Sunday के रूप में मनाया जाता है। (जब जिसस का Resurrection - कब्र से पुनः उठना)
* एंटियोक नामक स्थान पर जिसस के अनुयायी "ईसाई" कहलाये।
* यह क्रिश्चियन शब्द ग्रीक के Christo क्रिस्टोस (अर्थ मसीहा) से बना है।
* Christ - शब्द - मसीहा
* 45 ई. में जेरूसलम में एक धर्म सभा का आयोजन हुआ। जहाँ जिसस के अनुयायियों ने यह घोषणा कि "ईसा" के सिद्धान्तों का प्रचार किया जाए।
* पोप बाइबिल के प्रमाणिक व्याख्याकार तथा चर्च द्वारा ईसाईयों के लिए निर्धारित सात अनुष्ठानिक कर्मों (सेक्रामेंट्स) के सम्पादक माने जाते है।

* जिसस के दो कट्टर अनुयायी थे. पीटर और पॉल !
* पीटर ने रोम मे प्रथम चर्च की स्थापना की। इस प्रकार इटली ईसाई धर्म का एक प्रमुख केन्द्र बन गया।
* सेंट पीटर को प्रथम पोप माना जाता है।
* यह मान्यता थी कि जिसस द्वारा स्वर्ग की चाबी पीटर को सौंपा गया थी।
* यह मान्यता दी गई कि जिसस स्वयं द्वारा चर्च की स्थापना की गई।
* जिसस के अनुयायियों एवं रोमनो के बीच गृह-युद्ध की स्थिति पैदा हो गई तथा उनके बीच लम्बे समय तक युद्ध चला।
* रोमन शासक कॉन्सटेंटाइन (Constantine) ने 313 A.D. मे ईसाई धर्म को मान्यता स्वतंत्र धर्म के रुप मे मान्यता दी गई।
* थियोडोसियस ने ईसाई धर्म को राजधर्म घोषित किया।
* ईसाइयों का पवित्र ग्रंथ बाइबिल है. यह मूलतः यहुदियों की भाषा "हिब्रू" मे लिखा गया। बाइबिल किसी एक ग्रंथ का नाम नही है। बाइबिल यहुदी धार्मिक साहित्य और ईसाईयो के धार्मिक साहित्य का संग्रह है। बाइबिल को दो भागो विभाजित किया जाता है
(1) ओल्ड टेस्टामेंट
(2) न्यू टेस्टामेंट

* ओल्ड टेस्टामेंट मे जिसस के जन्म से पूर्व यहुदी इतिहास का वर्णन मिलता है।
* न्यू टेस्टामेंट मे जिसस व उसकी शिक्षाओ व सिद्धांतो का वर्णन किया।
* आधुनिक ईसाई के लिए न्यू टेस्टामेंट महत्वपूर्ण है यह उनके लिए बाइबिल है
* इरैस्मस ने न्यू टेस्टामेंट को लिखा।
* 4 शताब्दी मे संत जेरोम ने बाइबिल का लैटिन मे अनुवाद किया। इसे वलगेट (vulgate) संस्करण कहा जाता है।
* जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक संख्या ईसाइयों की है व ईसाई धर्म को मानने की विश्व मे सर्वाधिक संख्या है
* चर्च – ईश्वर की कृति माना गया। चर्च के जितने भी संत थे उन्हे बिशप कहा जाता है परन्तु रोम के बिशप को प्रमुख माना जाता था।
* मध्य युग मे बिशप का चुनाव सामन्तों के द्वारा किया जाता था। तथा इन्ही सामन्तो मे से बिशप चुन लिया जाता था।

* 1059 ई० में पोप निकोलस-II ने पोप की चुनाव प्रक्रिया में परिवर्तन किया।
* इस समय तक सभी बिशप को पोप कहा जाने लगा था।
* पोप शब्द (संरक्षक) पापा से बना।
* पोप निकोलस-II ने पोप चुनाव का अधिकार कुछ विशेष पादरियों को अधिकार दिया जिसे "कार्डिनल्स" कहा जाता था। तथा यह निश्चय किया कि पोप / बिशप शब्द का केवल रोम के पोप के लिए ही किया जायेगा।
* कार्डिनल्स के ग्रुप कॉलेज ऑफ कार्डिनल्स समूह कहा जाता है।
* 1073 में पोप ग्रेगरी-VII (सातम) ने पोप के अधिकारों पर एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक को Dictatus (   ) कहा जाता है।
* प्रमुख अधिकार (1) पोप को Infallible (अर्थ- one who has "never erred, nor is likely to err!"
यह बताया गया कि पोप कभी गलती नहीं कि न कभी गलती करता है वह सार्वभौमिक है।
* इस Dictatus पुस्तक मे ग्रेगरी सातम ने कहा कि इस पृथ्वी पर दो शक्तियाँ है (1) पोप की शक्तियाँ (Papal Powers)
(2.) राजा की शक्तियाँ (Kingly Power)
- यह अंतरिक्ष मे दो शक्तियों के समान है (1) सूर्य एवं चन्द्रमा के समान है।
⇒ बताया गया कि जिस प्रकार सूर्य चन्द्रमा से बड़ा है इस प्रकार पोप की शक्तियाँ राजा की शक्तियों से श्रेष्ठ है इसीलिए राजा को पोप के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।
* इस प्रकार चर्च विश्व की सबसे शक्तिशाली संस्था बन गई।
* पोप राज्य का ~~सर्वोच्च~~ राजनैतिक व धार्मिक दृष्टि से सर्वोसर्वा बन गया।
- शक्तियाँ -(1) ईसाई राज्यों ~~के~~ मे राजाओं की नियुक्तियाँ पोप के द्वारा की जाती थीं (2) किसी भी ईसाई राज्य मे कानून बनाने का अधिकार पोप के पास था। (3) राज्य की आय का एक हिस्सा चर्च को भेंट किया जाता था।
(4) राजा को चर्च द्वारा बहिष्कृत करने का Ex communication अधिकार था। (5) धार्मिक या आध्यात्मिक सेवाओं के बदले चर्च ईसाईयों से "कर" वसूल करता था। (मनुष्य की आत्मा व बुद्धि का संरक्षक है)
(6.) राज्य का नियम ~~चर्च अधिकारी~~ पोप व धर्माधिकारियों पर लागू नहीं (7) चर्च के अपने न्यायलय थे तथा चर्च के फैसले को किसी भी न्यायलय मे चुनौती नहीं दी जाती थी।
(8) उत्तराधिकार, विवाह, तलाक, सम्पत्ति आदि के निर्णय चर्च द्वारा ~~किये~~ निर्णय किया जाता था।

Papal तथा Papacy. शब्द का प्रयोग- Vicar, Pontiff. पोप के लिए

18 [illegible] धार्मिक
[illegible] के विरुद्ध
ने [illegible]
ऑन बाइबिल
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] के चर्च
[illegible]
पोप द्वारा
[illegible]
[illegible]
1517 ई० पोप
[illegible]
लूथर के विरुद्ध
[illegible] फिकेशन
[illegible]"
कालविन की पुस्तक
"दी इंस्टीट्यूट ऑफ दि क्रिश्चियन रिलीजन
(इन्स्टीट्यूट ऑफ कालविनिज्म)
[illegible]

* लूथर का जन्म - ऐसफेल्ड (?) क्षेत्र मे हुआ (ताम्र खनन क्षेत्र)
इंडल जेन्सस - (क्षमा पत्र) [illegible]
31 Act. 1517 ई० को विटनबर्ग के कैसल चर्च के द्वार पर लटकाये
बुल ऑफ एक्सकम्युनिकेशन →

* 16वीं शताब्दी मे चर्च के भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन हु मार्टिन लूथर के नेतृत्व मे हुआ।

* ~~प्रथम~~ धर्म सुधार आंदोलन - पोप के पद की सांसारिकता तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध नैतिक विरुद्ध विद्रोह था

* मार्टिन लूथर एवं उनके अनुयायी ने चर्च के विरुद्ध "प्रोटेस्ट" किया इसलिए उसके अनुयायी "प्रोटेस्टेन्ट" कहलाये।

* ~~यह एक~~ पुनर्जागरण एक सांस्कृतिक चेतना थी तो ~~धार्मिक~~ धर्म सुधार - धार्मिक चेतना थी। तथा जो कार्य रैनेसाँ से प्रारम्भ हुआ वह कार्य धर्म सुधार ने पूर्ण किया।

* **धर्म सुधार आंदोलन के कारण** - (1) रैनेसाँ / पुनर्जागरण का प्रभाव -
(1) राष्ट्रीय भावना का विकास ① राष्ट्र राज्यों का उदय ② देशज भाषा का विकास (3.) स्वतंत्र चिन्तन का विकास (4) मानववादी विचार धारा का प्रभाव (5) भौगोलिक खोजे के फलस्वरूप - पश्चिम व पूर्वी देशो की संस्कृति का समन्वय हुआ।
(6) कागज एवं मुद्रण का आविष्कार - पेपर एवं प्रेस के कारण रहस्यमय चिन्तन का स्थान, बौद्धिक चिन्तन ने ले लिया। - ② बाइबिल हर ईसाई के घर पहुँच गयी ③ सभी धर्म सुधारकों, लूथर सहित सभी ने चर्च की ऊपर सत्ता पर बाइबिल की सर्वोच्च (प्राप्त मानी)

~~रैनेसा~~ ?
* रैनेसाँ ने धर्म सुधार को किस प्रकार प्रभावित किया। 15/20

(2) **धार्मिक कारण** :- उस समय चर्च मे जो बुराईयाँ थी ~~वही~~ कारण बनी आए,
(1) चर्च की सांसारिकता एवं भ्रष्टाचार - पोप सांसारिक एवं राजनैतिक बन गया (चर्च की सम्पत्ति ईश्वर की ~~सम्पत्ति~~ सम्पत्ति है उस पर राज्य को कर लगाने का अधिकार नहीं

① एन ओपन लेटर टू द क्रिश्चियन नोबिलिटी ऑफ दि जर्मन नेशन कंसर्निंग दि रिफार्म ऑफ क्रिश्चियन एस्टेट
(ईसाई राज्य के सुधार के सम्बंध मे जर्मन राष्ट्र के सामन्तों के नाम खुला पत्र)
② दि बेबीलोनियन कैप्टिविटी ऑफ दि चर्च (चर्च की बेबीलोनियाई कैद)
③ द ट्रीटाइज ऑफ क्रिश्चियन ④ मन की नास्तिक खोज

(3) पादरी विवाह नहीं कर सकते, (जार्ज सप्तम - की अनेक अवैध संतानें थीं)

(4) धर्माधिकारियों का अशिक्षित होना (मध्य काल में धर्माधिकारी सामन्त थे।
चर्च की साधारण भाषा लैटिन थी।

(5) धर्माधिकारियों का कर्तव्य विमुख होना :- (1) नियुक्तियाँ - पोप द्वारा (2) इनमें से अधिकांश
* ये धर्माधिकारी सभी इटालियन थे परन्तु ये
य रोम के थे
धर्माधिकारी अपनी नियुक्ति के स्थान पर नहीं जाकर जाते वे इसलिये इनके
इनके स्थान पर इनके प्रतिनिधि सेवा धार्मिक सेवा देते थे तथा कर वसूल
भी प्रतिनिधि करते थे

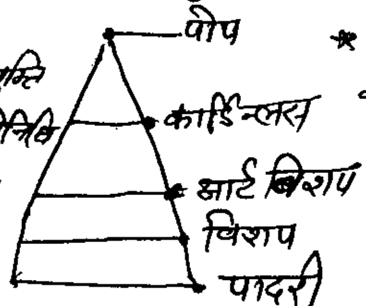

* **चर्च की नियुक्तियाँ योग्यता के आधार पर न होना** :- (चर्च के पद बेचे जाते थे)

* **Simony** : साइमन मैगस - इसने आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए पीटर को धन दिया।

* **रोम के वैभव का विरोध** : रोम यूरोप की कीमत पर धनी बना (क्योंकि कर से)
(राष्ट्रीय चर्च का उदय)

* **चर्च की आन्तरिक दुर्बलता** :- 15 वीं शताब्दी में पोप अरबन-VI के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगे, उसने पोप के पद को त्याग दिया और फ्रांस चला गया, जहाँ उसे पोप के रूप में मान्यता मिली।

* अरबन-VI के स्थान पर पोप क्लैमेन्ट VII को नियुक्त किया, जिसे इटली में मान्यता मिली (पद के लिए लड़ाई, मत की दृष्टि विभाजन)। तथा मान्यता देने वाले अधिकारी अलग हो जावें)

* **आर्थिक शोषण** :- (1) प्रत्येक ईसाई परिवार को प्रति वर्ष चर्च को 1 डालर देना होता था इसे पीटर पेन्स कहा जाता है, इसके अतिरिक्त ईसाई परिवारों को भेंट, कर, आदि देना होता था जिसे "टिथ" कहते थे जोकि आय का लगभग 1/10 भाग होता था। (2) चर्च में ईसाई संस्कारों को सम्पन्न कराने के लिए चर्च को कर देना होता था। (सेक्रेमिन्ट्स - सात संस्कार - (1) बैप्टिज्म - जन्म के समय (2) कैन्फर्मेशन (ईसाई के रूप में मान्यता) (3) यूकेरिस्ट (बच्चों को Bread and वाइन दिया जाता है) (4) पैनेन्स (पश्चाताप) (5) एक्स्ट्रीम अनपेस (अन्तिम समय की तैयारी) (6) पिपवृक (संत बनाने का संस्कार) (7) विवाह संस्कार ये संस्कार सम्पन्न के लिए चर्च जाना व पैसा देना होता था।

* उत्तराधिकार, तलाक, विवाह, व सम्पत्ति सम्बन्धी न्याय चर्च द्वारा किया जाता था बदले में चर्च पैसे वसूल करते थे

* यदि चर्च को एक ड्यूकट (सोने की मुद्रा) दे जायें तो भाई - बहिन के बीच शादी सम्भव थी जो चर्च के विरुद्ध था।

पीटर पेन्स
Eucharist
7 सैक्रामेन्ट
Baptism
Confirmation
Ukerist
Papenud

राजस्थान में बिशप की संख्या - (3) है (1) अजमेर (2) जयपुर (3) उदयपुर

ईसाई
* यदि कोई व्यक्ति धर्म के नियमों का विरोध व तोड़ना चाहता, उल्लंघन करना चाहता था तो उसे "सेल ऑफ डिसटेरान" देकर परम्परा का उल्लंघन कर सकता था।

*** धर्म सुधारकों का प्रभाव :**

(1) आर्लिवग ने 12वीं शताब्दी में द० फ्रांस में चर्च में सुधारों की माँग की उसने चर्च की सांसारिकता का विरोध किया। चर्च ने उसे धर्म विरोधी घोषित किया (2) वाल्डीज बाल्डेंस ने भी 12वीं शताब्दी में चर्च में सुधारों की माँग उसने चर्च पर बाइबिल की सर्वोच्चता पर बल दिया। चर्च ने उसे जिंदा जला देने के आदेश दिये।

आर्लिवग

बाल्डेंस

* **जॉन वाइक्लिफ** : 15वीं शताब्दी का धर्म सुधारक, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का प्रोफेसर था उसने ईसाईयों के लिए बाइबिल को पवित्र ग्रंथ माना उसने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया उसने ईसा धर्म में तीर्थ यात्रा जैसी परम्पराओं का विरोध किया। वाइक्लिफ की मृत्यु के पश्चात जला देने के आदेश चर्च द्वारा जारी।

John Viclif

* वाइक्लिफ के अनुयायी "लोलार्डस" (Lollards) कहते थे
- इसे "मार्निंग स्टार ऑफ रिफॉर्मेशन" कहा जाता है

* **जॉन हस** - यह बोहेमिया निवासी, प्राग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था जॉन वाइक्लिफ का अनुयायी था। चर्च ने उसे जला देने के आदेश दे दिये गये।

John Huss

* **सेवोनरोला** (फ्लोरेंस) इटालियन धर्म सुधारक था उसने पोप अलेक्जेण्डर VI की कटु आलोचना की। चर्च ने उसे जिंदा जला देने के आदेश दे दिये।

Erasmus

* **इरेस्मस** : हॉलैण्ड के रॉटरडम का निवासी, इन द प्रेज ऑफ फॉली पुस्तक लिखी, तात्कालिन चर्च पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया (लकड़ियाँ व हड्डियाँ बिकती थी), " मार्टिन लूथर के क्रोध से अधिक यदि चर्च को नुकसान पहुँचाया वह इरेस्मस का व्यंग्यात्मक कटाक्ष थे
* इसे मानववाद का राजकुमार कहा गया।

*** राजनैतिक कारण** :- (1) चर्च का राज्य में हस्तक्षेप - (1) पोप सर्वोच्च सर्वोच्च राजनैतिक अधिकारी था। सर्वोच्च राजनैतिक शक्तियाँ पोप में निहित थी। (2) ईसाई राज्यों में राजा की नियुक्ति पोप द्वारा की जाती थी (4) राज्य की आय का एक हिस्सा चर्च को

* yan विरवयुद ड्रेवाट - बच्चे बोहेमिया, प्राग — मीरहोपको हलोवाकिया कहा।

को दिया जाता था (7) राज्य मे कानून एवं अधिनियम बनाने का अधिकार पोप के पास था/ इसतरह राज्य मे कानून को अवैध करने का अधिकार पोप को था/

(8) पोप राजा को धर्म से निष्कासित बहिष्कृत करने का अधिकार था/ उसे समय कम्युनिकेशन कहा जाता था/ (9) राज्य के चर्च मे धर्माधिकारियो की नियुक्ति पोप द्वारा किया की जाती थी (10) राज्य का कानुन पोप एवं धर्माधिकारीयो पर लागू नही होता था (11) उतराधिकार, विवाह तलाक, सम्पति आदि विवादो का न्याय चर्च के न्यायलय मे होता था (12) पोप के निर्णय को किसी भी न्यायलय मे चुनौती नही दी जा सकती थी/

एक्स कम्युनिकेशन

*** राष्ट्रीय राज्यों का उदय :-** (1) राजा कि शक्तियो मे वृद्धि

*** धार्मिक न्यायलय :-** चर्च के अलग न्यायलय (2) राज्य के स्वंय के न्यायलय - मान्यताओ को लेकर विवाद - राज्य के न्यायलय के विरुध धार्मिक न्यायलय मे चुनौती दे सकते थे तथा चर्च उसके विरुध न्याय कर सकता है आदि के कारण शासक यह चाहता था कि धार्मिक एवं लौकिक शक्तियाँ प्राप्त हो

* धर्म सुधार आंदोलन राज्य एवं चर्च के बीच संघर्ष था/

*** आर्थिक कारन-** (1) **आर्थिक शोषन** (2) व्यापारियो मे असंतोष - व्यापार का अनुपात बढ़ रहा है चर्च व्यापारियो को ब्याज लेना प्रतिबंध माना गया/ बिना ब्याज लिए व्यापार नही हो सकता इसीलिए व्यापारी मे असंतोष बढ़ा/

*** तात्कालिक कारण :-** (1) पाप मोचन पत्रो की बिक्री (Sale of letters of Indulgence)

(पाप विमोचन न तो पाप करने की सलाह देता है न ही यह पापो से मुक्ति दिलाता है). यह इण्डलिजेंस आंशिक रूप से या पूर्ण रूप जो इस जन्म मे पृथ्वी पर जो पाप किये वह (परलोक जन्म मे) उस इण्डलिजेंस धार्मिक कार्य हेतु

• उस पाप के कारण ईश्वर के द्वारा जो दण्ड मिलेगा वह उसके लिए पाश्चाताप करने, तथा पाश्चाताप करने के लिए चर्च आपको सहयोग करेगा, तथा दण्ड से मुक्ति दिलायेगा। (प्रार्थना)

* 1513 मे पोपलियो दशम (X) पोप बने, इन्होने सेल ऑफ लेटर ऑफ इण्डलजेंस की बिक्री शुरु की (इसे एक व्यापारिक वस्तु बना दिया)

* पोपलियो दशम ने इण्डलजेंस बिक्री की जिम्मेदारी आर्कबिशप एल्बर्ट (जर्मनी) को दिया/ एल्बर्ट ने यह काम जॉन टेटजेल को सौंप दिया/

* 1517 मे जॉन टेटजेल विटनबर्ग पहुँचा तथा • टेटजेल ने इन क्षमा पत्रो की बिक्री के लिए मार्टिन लुथर से सहयोग मांगा / मार्टिन लुथर ने सहयोग करने से मना कर दिया/ क्यो यह बात धर्म विरोध था/ धर्म ग्रंथो मे नही है/ इसमे तो धर्मशास्त्र मे नही था। (वह धर्मशास्त्र प्राध्यापक था)

दांते - "दा मोनार्की" - 326 ई कॉन्सटेनटाइन ने पहला चर्च पीटर ... नाम मे ... चर्च ... पोप निकोलस-V ने ... के रूप मे देख रहे है उनको लाटेन ...

* सहयोग करने से इंकार किया तो यह धर्मसुधार आंदोलन का तात्कालिक कारण बन गया।

*** धर्म सुधार आंदोलन मे मार्टिन लुथर की भूमिका (200):-** लुथर का जन्म 10th Nov 1483 में सेक्सनी प्रांत के आईबेन मे हुआ। इनके पिता खान मजदूर थे। उसके पिता उसे वकील बनाना चाहते थे परन्तु इसके विपरीत मार्टिन लुथर ने 1505 ई में एरफर्ट विश्वविद्यालय से धर्म शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। 1508 ई. में वह विटनबर्ग विश्वविद्यालय मे धर्मशास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त हुआ। यहा उसने प्लेटो, अरस्तु, संत आगस्टाइन आदि के दर्शन के सिद्धान्त का अध्ययन किया। मार्टिन लुथर बाइबिल के अध्ययन मे दक्षता प्राप्त की। प्रारम्भ मे लुथर रोमन कैथोलिक चर्च का कट्टर अनुयायी था

* 1511 ई. मे मार्टिन लुथर रोम की यात्रा की, यहाँ चर्च की विलासिता ~~एवं की देखकर~~ सांसारिकता देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया। (~~कहाँ~~ वह वहाँ पवित्र तीर्थ यात्रा के लिए गया था) इसके पश्चात उसने प्राचीन धर्म शास्त्रों का गहन अध्ययन किया।

* 1517 ई- मे जान टेटजेल विटनबर्ग पहुँचा तथा मार्टिन लुथर से जॉन टेटजेल से पाप क्षमा मोचन बिक्री की सहयोग मांगा। लुथर ने ~~मना~~ सहयोग से मना कर दिया।

* 31 अक्टू, 1517 ई- मे मार्टिन लुथर विटनबर्ग के चर्च के द्वार पर 95 थि. थीसिस (95 प्रतिवाक्यमक्षी) को लगा दिया। (इसे आस्था के लिखित वक्तव्य) यह एक बौद्धिक चिन्तन था न कि रोम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा न थी। 95 थीसिस मूलतः लैटिन भाषा मे लिखी गई।

* परन्तु तुरन्त 95 थीसिस का जर्मन भाषा का अनुवाद करवा दिया और उसका बड़े पैमाने पर प्रचार किया गया। मार्टिन लुथर व लोकप्रिय हो गया। तथा ~~उसकी संख्या बढ़ गयी~~ इसके अनुयायियों की संख्या बहुत बढ़ गयी।

* 1520 मे मार्टिन लुथर ने ईसाई राज्यों की खुला पत्र लिखा, जिसमे उसने राजाओं को अपने 2 राज्यों के चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च से पृथक 2 करने के लिए कहा। और राज्य के चर्च को अपने स्वयं के राज्य के अधीन करने के लिए कहा गया। मार्टिन लुथर ने राजाओं से अनुरोध किया कि वह धर्म सभाओं का आयोजन करे

10 Nov 1483 → 1505 → 1508 → 1511 रोम यात्रा → 1517 → 31 oct. → 1520 → letter

धर्माधिकारियों को कर्तव्य पालन करने पर बल दो/

* इस पत्र के पश्चात कई जर्मन राज्यों ने अपने चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च से की अधीनता से मुक्त कर दिया। चर्च दो भागों में विभक्त -(1) लूथर के प्रभाव से प्रभावित चर्च (2) रोम के अधीन।
* मार्टिन लूथर के अनुयायियों एवं रोमन कैथोलिक चर्च के मध्य गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई
* 1520 ई. में पोप ने धर्म सभा का आयोजन किया जिसमें मार्टिन लूथर को आमंत्रित किया/ परन्तु सेक्सनी के राजा फ्रेडरिक ने मार्टिन लूथर की सुरक्षा की जिम्मेदारी ली और धर्म सभा में जाने से रोका। (Recant)
* पोप ने मार्टिन लूथर को अपने वक्तव्य वापस लेने के लिए 60 दिन का समय दिया।

पेपल बुल

* मार्टिन लूथर ने वक्तव्य वापस लेने से मना कर दिया। पोप ने एक आदेश जारी कर लूथर को धर्म से बहिष्कृत कर दिया (बुल ऑफ एक्सकम्युनिकेशन) के तहत। इस आदेश को पेपल बुल (Papal Bull) कहा जाता जाता है
* 10 Dec, 1520 मार्टिन लूथर ने विटनबर्ग के विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, सामान्य जनता के बीच Papal Bull को सार्वजनिक रूप से जला दिया/ यह रोम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा थी/

चार्ल्स V

* रोमन साम्राज्य का शासक चार्ल्स पंचम ~~लूथर का~~ पोप का कट्टर अनुयायी था/
* 1521 ई. में वर्म्स नामक स्थान पर राज्य परिषद (डाइट) की बैठक आयोजित की, यहाँ मार्टिन लूथर को पश्चाताप के लिए बुलाया, लूथर ने आने से मना कर दिया/

वर्म्स के आदेश

* चार्ल्स पंचम ने एक आदेश द्वारा मार्टिन लूथर को विधि बहिष्कृत कर दिया/ (Out law of the Land) इस आदेश को वर्म्स के आदेश (Edict of Worms) को कहा गया/ इसी आदेश के अनुसार लूथर के साहित्य को जला देने के आदेश दे दिए
* सेक्सनी के राजा फ्रेडरिक ने मार्टिन लूथर को वॉर्टबर्ग किले में शरण दी/ इस किले में ही मार्टिन लूथर ने बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया जो सित. 1522 इसमें प्रकाशित हुई जिसे सितम्बर टेस्टामेंट कहा गया/

सितम्बर Testament

* मार्टिन लूथर एवं पोप अनुयायी के मध्य गृह युद्ध जारी रहा/

स्पियर

* 1529 में स्पियर नामक स्थान पर दूसरी धर्म सभा का आयोजन किया इस धर्म सभा में पोप ने सामन्तों को आदेश दिया कि वह मार्टिन लूथर से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया/
* 19 अप्रैल 1529 ई. में सामन्तों ने स्पीयर के आदेशों के विरुद्ध औपचारिक रूप से प्रोटेस्ट किया/ ऐतिहासिक रूप से प्रोटेस्टेंट शब्द का प्रयोग 19 अप्रैल 1529 से माना जाता है

* इसके परिणाम स्वरूप ग्रह युद्ध तीव हुआ।

* 1546 ई. मे मार्टिन लूथर की मृत्यु हो गया। रोमन शासक चार्ल्स पंचम ने जर्मन राज्य में शांति स्थापित के लिए अपने भाई फ्रेडरिक - II की नियुक्ति की।

* 1555 मे ट्रीटी ऑफ ऑग्सबर्ग की संधि हुई। (ई. पोप के व लूथर के अनुयायी)

राजा कैथोलिक vs प्रोटेस्टेंट

इस संधि के अनुसार - (1) प्रोटेस्टेंट धर्म को एक स्वतंत्र धर्म के रूप में मान्यता only लूथरवाद

(2) चर्च की सम्पति चर्च के पास रहेगी, परन्तु भविष्य मे उसे सम्पति अधिग्रहित करने का अधिकार नही होगा। (4) 1552 से पूर्व की प्रोटेस्टेंटों की सम्पत्ति उन्हीं के पास, (5) केल्विन वादियों - जुवंगली - एनाबैपटिस्ट

(3) राजा का धर्म ही राज्य का धर्म होगा।

* मार्टिन लूथर ने बाइबिल की सर्वोच्चता पर बल दिया। (2) उसने चर्च में सभी प्रार्थना एवं क्रियाओं के लिए जर्मन भाषा प्रयोग पर बल दिया।

(3) पाप विमोचन पत्रों की बिक्री का विरोध किया। उसने चर्च के पास स्वर्ग की कुंजी होने के सिद्धान्त का विरोध

(4.) उसने धर्माधिकारियों द्वारा विवाह करने का समर्थन किया।

(5.) उसने संत ऑगस्टाइन के ईश्वर की दया पर निर्भरता के सिद्धान्त का विरोध किया।

(6.) मार्टिन लूथर के अनुसार चर्च राज्य के अधीन संस्था है। वह चर्च के सभी कर्मचारी राज्य के अधिकारी है।

(7.) Justification by faith" (ईश्वर में आस्था) and Justification by Sacraments" (यानि संस्कारो से मुक्ति नही मिलती बल्कि आस्था और विश्वास से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। न कि संस्कारों का

* धर्म के अतिरिक्त मार्टिन लूथर रुढ़िवादी था।

⇒ 1526 ई. जर्मन राज्यों में किसानो ने आंदोलन किया (ओपन लेटर टू क्रिश्चियन) जब इन मे मार्टिन लूथर ने इस किसानो का विरोध किया क्योंकि वह सामन्तों का सहयोग चाहता है वह किसानों को, हत्यारा अत्याचारी कहता है।

कैथोलिक चर्च - इसमें मूर्तियां चित्र, ग्लास पेन्टिंग सजावट आदि

प्रोटेस्टेंट - इसमें सरल साधारण दीवारें, मूर्तियां, प्रतिमाएं नही है केवल क्रॉस है

गए — कैथोलिक पादरी विवाह नही ... [illegible]

जर्मनी के धार्मिक अनुयायी मेनोनाइट, मोरेवियन प्रेस्बि

* धर्म सुधार आंदोलन का यूरोप पर प्रभाव "टोगेनबर्ग"

~~स्विट्जरलैण्ड~~

(1484-1531) ***ज्विंगली** :- एक धनी का पुत्र था उसने वियाना एवं बासिल (स्विट्जरलैण्ड) में शिक्षा प्राप्त की यह मार्टिन लूथर का समकालीन था परन्तु मार्टिन लूथर से अधिक उग्र था

उसकी उपलब्धियों में - (1) उसने 67 सिद्धान्त दिये। (67 थीसिस)

(2.) उसने चर्च में सामूहिक प्रार्थनाओं का विरोध किया।

(3.) उसने चर्च में मूर्तियां, चित्र लगाने का विरोध किया।

(4) उसने पाप मोचन चिट्ठी का विरोध किया।

(5.) उसने लैटिन में लिखित का बाइबिल का विरोध [illegible]

6. उसने पोप की सेना में भर्ती होने का विरोध किया

* उसने स्वयं भी विवाह किया

* स्विट्जरलैण्ड में 13 कैण्टीन थे (जिला) जो ज्विंगली एवं पोप के समर्थकों में विभाजित हो गये।

* 1531 ई. में एक युद्ध में "कैपल" नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हो गयी। (कैपल की लड़ाई)

* अन्तिम समय आप मेरे शरीर को समाप्त कर सकते हैं मेरे विचारों को नहीं"। ज्विंगली

* जॉन काल्विन :- 1509-64

काल्विन फ्रांस में पिकार्डी नामक स्थान पर धनी वकील था मार्टिन लूथर के सिद्धान्तों से प्रभावित हुआ व उसके विचारों का समर्थन किया परन्तु फ्रांस के सम्राट फ्रांसिस-1 के काल में प्रोटेस्टेंट सिद्धान्तों के लिए कोई स्थान नहीं था उसे राज्य से निष्कासित कर दिया। 1533 ई. में वह स्विट्जरलैण्ड चला गया जहाँ ज्विंगली ने धर्मसुधार के लिए वातावरण तैयार कर लिया था। स्विट्जरलैण्ड में काल्विन ने धर्मसुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। उसकी उपलब्धियों में :- (पुस्तक "प्रोटेस्टेंट धर्म की रोमन")

(1) उसने बाइबिल की सर्वोच्चता पर बल दिया।

(2.) उसने ईसाईयों द्वारा उत्सव एवं मेले आयोजित करने का विरोध

3. उसने थियेटर का विरोध किया।

4. उसने "नियति" के सिद्धान्त में विश्वास, उसके अनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए माध्यम की आवश्यकता नहीं, जिन्हें "नियति" के अनुसार ही मोक्ष प्राप्त करना है उसे "इलेक्ट" कहा गया।

(5) उसने चर्च की व्यवस्था के लिए वृद्ध पादरी नियुक्त किये इन्हें 'प्रेसबिटर्स' (Presbeters) इसीलिए काल्विन के अनुयायी प्रेसबाइटेरियन कहलाये। (6) 1536 ई. में 'इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन' पुस्तक लिखी

Book → "Institute of christian religion"

- प्रोटेस्टेन्ट पोप - कहा जाता है?

नैतिक अनुशासन पर अत्यधिक बल।

इसे धर्मशास्त्र की उत्कृष्ट पुस्तक मानी जाती थी यह पुस्तक फ्रांस के सम्राट फ्रांसिस -I को समर्पित थी।

* कॉल्विन के अनुयायी फ्रांस में "ह्युगोनाट्स" कहलाये।
* हालैण्ड में उसके अनुयायी "डच रिफॉर्मड चर्च कहलाये
* अमरीका व इंग्लैण्ड में "प्युरिटंस" (Puritans)
* इस सिद्धान्त को कॉल्विनवाद कहलाता है।
* यह परम्परावादी था।

फ्रांस :- फ्रांस में कॉल्विन के अनुयायी ह्युगोनाट्स के नाम से जाने गये। फ्रांस में कॉल्विन एवं पोप के अनुयायी के बीच लम्बे समय तक संघर्ष चला। 1598 ई में फ्रांस के सम्राट हेनरी-चतुर्थ ने एक आदेश जारी कर ह्युगोनाट्स को स्वतंत्र धर्म की मान्यता दी। इस आदेश को "Edict of Nantes" कहा गया।

* **स्कॉटलैण्ड** :-

* **जॉन नोक्स** :- स्कॉटलैण्ड में धर्मसुधार का समर्थन किया लेकिन समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। यह इंग्लैण्ड चला गया। वहाँ से वह जिनेवा पहुँचा। वहाँ कॉल्विन से भेंट हुई (स्पर्श हुई) कॉल्विन के कहने पर वापस स्कॉटलैण्ड गया। स्कॉटलैण्ड में जॉन नोक्स के अनुयायी "प्रेसबाइटेरियन" कहलाये जिन्हे एक स्वतंत्र धर्म की मान्यता मिली।

इंग्लैण्ड

⇒ हेनरी अष्टम (1509-1547) :- प्रारम्भ में पोप का कट्टर अनुयायी तथा लूथर के सिद्धान्तों का विरोधी था।

* पोप का कट्टर अनुयायी होने कारण पोप ने उसे "Fidei Defender" की उपाधि दी। यह उपाधि बाद में सभी शासकों ने यह उपाधि धारण की।
* हैनरी अष्टम की पत्नी का नाम कैथरीन था जो स्पेन की राजकुमारी।
* कैथरीन को तलाक देकर अपनी दासी "एनीबोलिन" के साथ विवाह करना चाहता था। चर्च ने कैथरीन से तलाक स्वीकार करने से मना कर दिया।
* हेनरी कैथरीन को तलाक इसलिए देना चाहता के उसके कोई पुत्र नहीं था (पुत्री)
* वह पुत्र प्राप्ति के लिए वह बेलिन एनी बोलिन से विवाह करना चाहता।
* कैथरीन हेनरी के बड़े भाई की पत्नी थी। उसकी मृत्यु होने पर इससे विवाह करवाते यह ईसाई धर्म में वर्जित था। बाइबिल में लिखा गया था अपने भाई के विधवा से विवाह करता है उसके संतान नहीं होगी।

फ्रांस, स्पेन इटली आदि कैथोलिक थे

* उसने डिस्पेंशन (धर्म के नियमों का उल्लंघन करने के लिए दी जाने वाली शक्ति) देकर "वैध" घोषित माना। इस विवाह की मान्यता - पोप जुलियस - II ने मान्यता दी।
* इस समय पोप क्लीमेंट - VII यह समस्या कि उस वैध विवाह को अवैध कैसे करे। तथा किसी पहले पोप के द्वारा लिए गये निर्णय के विरुद्ध ~~कोई निर्णय~~ दूसरे पोप द्वारा निर्णय नहीं हो सकता है। इसीलिए तलाक से मना कर दिया।
* चार्ल्स-पंचम - रोमन शासक, कैथरीन का भतीजा था। उसने पोप को धमकी दी तथा वह कैथोलिक मार्टिन लूथर के विरोध सभा को बुलाया था।
* 1534 में हेनरी अष्टम ने राज्य के चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च से पृथक किया तथा एक स्थानीय न्यायालय में कैथरीन से तलाक लिया तथा ऐनी बोलिन से विवाह किया। इसमें केन्टरबरी के आर्कबिशप "टॉमस कैनमर" ने सहयोग दिया।
* हैनरी अष्टम ने 1534 में एक अधिनियम पारित किया जिसके अनुसार यह घोषणा कि "इस पृथ्वी पर इंग्लैंड के चर्च पर ब्रिटिश सम्राट की सर्वोच्चता कायम रहेगी
* इंग्लैंड के चर्च को राज्य के अधीन किया गया।
(3) चर्च की सम्पत्ति को जब्त किया गया तथा राज्य की सम्पत्ति घोषित किया
4. राज्य की आय का हिस्सा रोमन चर्च को देना बंद किया
(5) इंग्लैंड में सभी विवादों को निपटाने के लिए राज्य के न्यायालय को अधिकृत किया।
(6) राज्य के चर्च के अधिकारियों व धर्माधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार राज्य के हाथ में लिया।
* इस प्रकार इंग्लैंड के चर्च को राज्य के अधीन कर दिया, तथा राज्य के चर्च पर सम्राट की सर्वोच्चता स्थापित की गई।
* पोप ने हेनरी अष्टम को "धर्मच्युत" (बुल ऑफ एक्स कम्युनिकेशन)

* एडवर्ड - VI (1547 - 1553) - एडवर्ड नाबालिग था। उसके शासन चलाने का दायित्व अल्पायु परिषद ने चलाया। अल्पायु परिषद के सदस्य प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायी थे। इससे इंग्लैंड में प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ।
* 1549 में टॉमस कैनमर ने बुक ऑफ कॉमन प्रेयर "लिखी। (आधुनिक समय में भी इंग्लैंड में प्रार्थनाओं का आधार है।)
* मेरी ट्यूडर (1553 - 1558) - मेरी ट्यूडर हेनरी अष्टम व कैथरीन की पुत्री थी तथा स्पेन के राजकुमार से विवाह किया तथा कैथोलिक धर्म को अपनाया, तथा उसने प्रोटेस्टेंट धर्म को मानने वालों का कत्ले आम करवाया। इसीलिए इसे "खूनी मेरी" कहा गया।

9.9
विदेश

* एलिजाबेथ-I^st. यह हेनरी अष्टम की पुत्री थी, इसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया। इसने इंग्लैण्ड में एक नया चर्च स्थापित किया, जिसे "एंग्लिकन" चर्च कहलाता है। इसके अनुसार इंग्लैण्ड के चर्च पर ब्रिटिश ताज की सर्वोच्चता स्थापित की गई

* नॉर्वे :- फ्रेडरिक-1^st :- मार्टिन लूथर के प्रभावों से प्रभावित हुआ, तथा प्रोटेस्टेण्ट धर्म को संरक्षण दिया। 1553 ई. में मृत्यु हो गई, इसके पश्चात उसका पुत्र क्रिस्टीयन शासक बना। इसके समय में कैथोलिक व प्रोटेस्टेण्ट में संघर्ष शुरू हुआ। क्रिस्टीयन ने नॉर्वे के चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च से पृथक किया एवं प्रोटेस्टेण्ट चर्च को मान्यता दी।

* स्वीडन, पोलैण्ड, हंगरी आदि देशों में भी राज्य के चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च से पृथक कर दिया।

ट्रेण्ट I → Dec. 1545 – Sep. 47
II – May 1551 – Mar. 52
III – [illegible] 1562 – Dec. 63

King James 1611 – इंग्लैण्ड

Roman Vulgate – I

पोप क्लीमेंट
पोप पॉल III
पोप पॉल IV

* प्रति धर्म सुधार आंदोलन * (200)

कैथोलिक धर्म के अन्तर्गत सुधार किए गए. उसे प्रति धर्मसुधार आंदोलन/कैथोलिक धर्म सुधार भी कहते हैं/

*** चर्च में नैतिकता पर बल :-** (1) चर्च में सदाचारी व नैतिक मूल्य पर आधारित जीवन पर बल दिया/ इसी क्रम में कई पोप थे जिन्होंने सहयोग किया/ इनमें पोप क्लीमेंट, पोप पॉल-III, पोप पॉल-IV आदि/ 1537 ई. में पोप पॉल-III ने 9 कार्डिनल का एक कमीशन का गठन किया गया/ जिसके अनुसार चर्च के सुधारों के लिए रिपोर्ट तैयार की, यह रिपोर्ट 1539 में सम्मिलित हुई जिसे "रिपोर्ट ऑफ दी कॉर्डिनल्स ऑन दा रिफोर्म इन दा चर्च"/ (2) कला की दृष्टि से एक नई शैली का विकास हुआ, जिसे बैरोक (Baroque) शैली कहा जाता है/ जिसके अन्तर्गत ईसा मसीह व अन्य संतों की मूर्तियाँ एवं चित्र स्थापित किया गया/

(इटली व जर्मनी सीमा पर)
*** ट्रेंट की परिषद (कॉउंसिल ऑफ ट्रेंट) :-** इटली में ट्रेंट नामक स्थान पर 1545-1563 ई लगभग 18 वर्षों में धर्म सभाओं का आयोजन हुआ. इसे ट्रेंट की परिषद कहते हैं/ यहाँ लगभग 200 धर्माधिकारियों ने भाग लिया/

इसमें तीन बड़े अधिवेशन हुए
1st दिस. 1545 से दिस. 1547
2nd मई 1551 से April 1552
3rd 1562 से दिस. 1563

इस धर्म सभा में दो प्रकार के कार्य किये- (1) सैद्धान्तिक (2) सुधारात्मक / (व्यवहारिक)

*** सैद्धान्तिक :-** (1) चर्च पर पोप की सर्वोच्चता कायम रहेगी/ (2) धार्मिक विषयों पर पोप का निर्णय अंतिम रहेगा (3) एक नई प्रमाणिक बाइबिल का लैटिन भाषा का लेखन किया/ इसे वलगेट संस्करण" (vulgate) संस्करण कहा गया/

आस्था एवं सत्कर्मों से मुक्ति के कैथोलिक सिद्धान्त को सही घोषित किया तथा प्रोटेस्टेंट के अनुसार मान्यता से मुक्ति सिद्धांत को अस्वीकार किया। सात संस्कारों की मान्यता, तीर्थयात्रा, दण्डमोचन, मूर्तिपूजा के सिद्धांत, (2) एक ही व्यक्ति को कई पदों पर नियुक्ति या धार्मिक पदों पर (रखना) समाप्त। (3) पादरियों की कार्यशैली में आई अनैतिकता को समाप्त करने के लिए नियुक्तियों व कार्यशैली की व्यापक जांच। (4) धर्मशास्त्रीय गुरुकुलों की स्थापना जहाँ पादरियों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया जाता। (5) आम जनता की भाषा में नियम-तय उपदेश दिया जाए/

*** (2) सुधारात्मक कार्य :-** (1) धर्माधिकारियों के लिए सदाचारी जीवन पर बल दिया। बल्कि ये ही जीवन शैली में आत्मसंयम
(2.) चर्च के पदों को बेचने की परम्परा को समाप्त किया
उच्च विशेष
(3.) "साइमनी प्रथा" को समाप्त किया/
(4.) धर्माधिकारियों का शिक्षित होना अनिवार्य किया गया/
(5.) धर्माधिकारियों को नियुक्ति के स्थान पर ही वास करना अनिवार्य/
(6.) पाप मोचन पत्र की बिक्री पर प्रतिबंध किया गया
(7) सभी कैथोलिक चर्च में सामान्य प्रार्थनाएं एवं क्रियाएं की जायेंगी/

सेंट जेरोम ने वलगेट (लैटिन - हिब्रू भाषा भाषा)

रिपब्लिक्यूअल उम्सरसाइज

(इण्डेक्स)
* इंडेक्स ऑफ काउंसिल में एक सूची तैयार की, इस पुस्तकों को न पढ़े। जिसका वर्णन है।

जेसुइट अथवा सोसायटी ऑफ जिसस : यह संस्था एक स्पेनिश (1534 ईस्वी) इग्नेशियस लॉयला ने स्थापित की थी। पेरिस में स्थापित की गई। यह 6 सदस्यों की संस्था थी। फ्रांसिस जेवियर इसके संस्थापक सदस्य थे जिन्हें धर्म प्रचार के लिए जापान भेजा गया। 1540 ई. में पोप पॉल-तृतीय ने इस संस्था को मान्यता दी। इसके सदस्य जेसुइट्स कहलाये, तथा वह पृथ्वी के राजा के सिपाही के स्थान पर यह जिसस का सिपाही कहलाने लगा। यह संस्था जिसस का संदेश कोने-२ तक पहुँचाने का कार्य किया।

संत जेरोम द्वारा-सोमरची ... में लान में एंटोनियो जकरिया ने ... बनाया था ... नी बाइबल बेगल ... नेला मेरिसी ... पुलाइन्स

पुस्तक "आध्यात्मिक अभ्यास" यह पुस्तक इग्नेशियस ने लिखी ... मददगार ... कैथोलिक चर्च ...

* इस संस्था का उद्देश्य (1) कैथोलिक धर्म के विरोधियों का दमन करना।
2. कैथोलिक चर्च में सुधार करना
3. ईसाई धर्म की शिक्षाओं का विदेशों में प्रचार-प्रसार करना था।
माध्यम शिक्षण संस्थान दरिद्रों के प्रति परोपकार।

* इस संस्था के प्रमुख को "जैनरल" कहा गया। जैनरल की नियुक्ति पोप के द्वारा आजीवन काल के लिए की गई।
* जैनरल का निवास रोम में होगा।
* इस संस्था का सदस्य बनने के लिए दो वर्ष का कठोर परीक्षण दिया।
* इस संस्था के सदस्यों को धर्म प्रचार के लिए किसी भी देश में भेजा जा सकता है।

* Inquisition (इन्क्वीजिशन) (धर्म परीक्षण) यह एक धार्मिक न्यायालय था। 1542 ई. में इसे पोप पॉल-III ने स्थापित किया। जिसमें 6 इंक्यूजेन्टर (न्यायधीश) नियुक्त किया। इस न्यायालय का उद्देश्य कैथोलिक विरोधी धर्म विरोधियों पर मुकदमा चलाना व दण्डित करना।

मध्यकालीन पद्धति पुनः अपना लिया ... पद्धति का प्रयोग पहले ... कैथोलिक ... किसी भी प्रकार के प्रति अवमानना ... दण्डित किया जाता था ... प्रयोग मूलतः ... धर्मों का ... के लिए ... धर्मविरोधियों ... न्यायालय ... पुनर्गामी ... ई. 1559 में ... इसे ... वहाँ 14 विधर्मी ...

धर्म सुधार आंदोलन के परिणाम :

(1) ईसाई धर्म का विभाजन।
(2) कैथोलिक धर्म में सुधार : प्रति धर्म सुधार
(3) धार्मिक असहिष्णुता का विकास : मेरी ट्यूडर (ब्लडी मेरी)
(4) धार्मिक सहिष्णुता का विकास : क्वीन एलिजाबेथ I, एडिक्ट ऑफ नैन्टीस - फ्रांस के शासक

(6) सम्राट की शक्तियों में वृद्धि :

(7) धार्मिक विषयों पर मतभेदों की उत्पत्ति :- क्या बाइबिल का अध्ययन अनिवार्य है

(8) शिक्षा के क्षेत्र में विकास :- प्रत्येक धर्म ने अपने अस्तित्व को बचाने के लिए प्रत्येक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की।

(9) धार्मिक साहित्य का विकास :

प्रतिधर्मसुधार → प्रोटेस्टेन्ट धर्म सुधार आन्दोलन की सफलता के बाद 1540 ई. के आस-पास ऐसा प्रतीत होने लगा कि पारम्परिक कैथोलिक ईसाईवाद अपनी अन्तिम साँसें गिन रहा है। इटली व मध्य जर्मनी, स्कैंडिनेविया, हंगरी, पोलैंड, लिथुआनिया, स्विट्जरलैंड, लक्ज़मबर्ग से पूर्ण प्रभावित दिख रहे थे, इस प्रोटेस्टेन्टवाद की चुनौती का सामना करने के लिए 'कैथोलिक धर्म सुधार' कार्यक्रमों को प्रति धर्म सुधार आन्दोलन की संज्ञा दी गई जो रक्षात्मक व आक्रामक दो रूपों में अभिव्यक्त हुये रक्षात्मक रूप पोप पॉल III के प्रयासों, ट्रेन्ट काउंसिल के निर्णयों में तथा आक्रामक रूप जेसुइट संघ की गतिविधियों में 'इन्क्वीजिशन' व 'इण्डैक्स' की दमनात्मक कार्यवाहियों के रूप में --

⇒ कैथोलिक धर्म सुधार के लिये निम्न परिस्थितियों को उत्तरदायी माना जाता है

1. निम्न वर्गों में "पारम्परिक कैथोलिक" धर्मनिष्ठा की दृढ़ता-
2. स्पेन के राजाओं एवं अन्य राजकीय परिवारों का कैथोलिक धर्मोत्साह
3. पुनर्जागरणयुगीन इटली के बुद्धिजीवियों की कैथोलिक धर्मनिष्ठा—
4. नवीन धार्मिक संघ —
5. पोप पॉल III के नेतृत्व में पोपतंत्र का सुधारात्मक रूप

2.70
1.10
0.65
12 (3) 2.35 (3.70)

: वाणिज्यवाद व औद्योगिक क्रांति :-

*** वाणिज्यवाद :-** वाणिज्यवाद की शुरुआत भौगोलिक खोजें से प्रारम्भ माना जाता ~~था~~ है। इन भौगोलिक अन्वेषकों (~~अन्य~~) खोजकर्ता की रुचि हमेशा - 3G में रही - (1) God - ईश्वर के संदेश
(2) Glory :- राष्ट्र की प्रतिष्ठा स्थापित करना चाहते
(3) Gold :- धन, ये खोजवेत्ता हेतु (खानकी) तलाश में निकले जो थी EL Dorado
(कुबेर का खजाना मिलेगा।

* इन में से सबसे ज्यादा रुचि Gold में ~~ही~~ की गई है कोलम्बस का कथन है कि जिस किसी के पास Gold होगा वह किसी भी राज्य पर अधिकार कर सकता है तथा दुनिया की कोई भी वस्तु प्राप्त कर सकता है

* 16 वीं शताब्दी प. यूरोपीय देशों ने धन संग्रहण की नीति अपनायी (स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस, इंग्लैण्ड) इसी धन संग्रहण की नीति वाणिज्यवाद कहलाती है। इसके लिए इन्होंने ~~के~~ व्यापार एवं वाणिज्य पर नियंत्रण स्थापित किया। धन संग्रहण के साथ धन संग्रहित करने की क्षमता होनी चाहिए। धन संग्रहण का विशेषतः कीमती धातु (सोना) के रूप में किया।

* लगभग 1600 ई. तक यूरोप में दो गुना सोना एवं दस गुना चाँदी संग्रहित हुई।

* वाणिज्यवाद का प्रयोग सर्वप्रथम 1773 एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक "वेल्थ ऑफ नेशन" में किया। ~~इसे फ्रांस~~ → Wealth of Nations"

* इसे फ्रांस मे काल्बर्टिज्म तथा जर्मनी मे कैमरलिज्म नाम से जाना जाता। (कालबर्टिज्म)
* फ्रांस मे वित्त मंत्री काल्बर्ट था. जर्मनी मे कैमरलिज्म को राज्य का कोष कहा जाता है

* वाणिज्यवाद का
16 वीं शताब्दी मे प. यूरोपीय देशों द्वारा व्यापार एवं वाणिज्य पर नियंत्रण स्थापित कर, धन संग्रहित करने की नीति को वाणिज्यवाद कहते है इस शब्द का सर्वप्रथम एडम स्मिथ (पुस्तक वेल्थ ऑफ नेशन) मे किया तथा फ्रांस मे काल्बर्टिज्म व जर्मनी मे कैमरलिज्म कहते है

कालबर्टिज्म
फ्रांस

कैमरलिज्म
↓
राज्य का कोष
जर्मनी

वाणिज्यवाद के कारण :- (1) **पुनर्जागरण का प्रभाव** -(1) परलोक की चिन्ता छोड़ इस जीवन को खुशहाल बनाना, इसके लिए उसे धन संग्रहण आवश्यक है।

(2) **भौगोलिक खोजें :-** इसके पीछे - 3G है इसमें महत्वपूर्ण गोल्ड है। वास्कोडिगामा भारत से 60 गुणा धन ले गया।

(3) **जनसंख्या वृद्धि :-** वृद्धि के कारण आवश्यकता बढ़ी तथा दो तरह से मदद -(1) सस्ते मजदूर श्रम उपलब्ध होता है (2) ग्राहक उपलब्ध होता है।

(3) **धर्मसुधार आंदोलन का प्रभाव :** एक व्यापारी को चर्च [crossed out] नहीं लेना चाहिए धर्म सुधार के कारण पोप व चर्च के आतंक का स्थान मानव की इच्छा शक्ति ने ले लिया कि बिना धन के आगे बढ़ सकते हैं

(4) **राष्ट्र राज्यों का उदय :-** पहले सामन्त शक्तिशाली थे पुनर्जागरण एवं धर्मसुधार के कारण राजा प्रभावशाली हो रहा है तथा नगर के स्थान पर अब राज्य प्रभावशाली बन गया। लिस्बन के स्थान पर पुर्तगाल महत्वपूर्ण पेरिस के स्थान पर फ्रांस महत्वपूर्ण हो रहा। इस प्रकार राज्य व राजा महत्वपूर्ण हो रहा है तथा वह अपनी प्रतिष्ठा के लिए धन संग्रहित करता है। कोलम्बस ने स्पेन के राजा से कहा था कि वह भारत से गोल्ड

*** वाणिज्यवाद की विशेषताएँ :-** (1) **व्यापार का संतुलन मातृ राष्ट्र के लिए पक्ष के लिए अनिवार्यता** - ~~कोई भी~~ सब अधिक से अधिक निर्यात किया जाये, तथा आयात को केवल अनिवार्य वस्तुओं तक ही सीमित रखा जाये।

(2.) **सोने की आवक को सुनिश्चित किया जाये :-** जो भी मुनाफा हो वह मुनाफा का संग्रह सोने के रूप में हो

(3.) **उपनिवेश स्थापित करने पर बल :-** अधिक से उपनिवेश स्थापित करना चाहिए. उपनिवेश के महत्व- (1) कच्चा माल प्राप्त होगा तथा तैयार माल के लिए बाजार उपलब्ध करवायेगा

(4.) **मातृराष्ट्र के साथ प्रतिस्पर्धा स्थापित करने के लिए कानून तैयार करना :-** उपनिवेश तथा मातृराष्ट्र के बीच व्यापार आदि में प्रतिस्पर्धा न हो जैसे- भारत के कपड़ा उद्योग व हस्तकला के उद्योग समाप्त हो गया अमरीका में लोहे की सामग्री बनाने पर प्रतिबंध करना।

वाणिज्यवाद के परिणाम:- (1) इटली के व्यापारिक केन्द्रों का पतन। →
• मध्य काल में भूमध्य सागर रोमन झील बन गई
भौगोलिक खोजों से भूमध्य सागर का महत्व कम हो गया तथा ~~पहले~~ भूमध्य सागर का स्थान अटलांटिक महासागर ने ले लिया तथा आंतरिक समुद्री व्यापार का स्थान, विदेशी या बाहरी व्यापार ने ले लिया। इसे इटली के व्यापारिक केन्द्रों का महत्व कम हो गया।

(2.) अटलांटिक महासागर की ओर नये व्यापारिक केन्द्र स्थापित हो गये। (स्पेन, पुर्तगाल फ्रांस इंग्लैण्ड के पश्चिमी तटों पर केन्द्रों की स्थापित हुई/ तथा अमरीका के पूर्वी तट पर केन्द्र स्थापित

(3) बड़े व्यापारिक कम्पनीयों की स्थापना
व्यापार अधिक व्यापारिक केन्द्र स्थापित होने से अधिक व्यापार बढ़ा जिसे एक व्यक्ति नहीं चला सकता, उसके लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता महसूस हुई। इन्हीं सामूहिक प्रयासों से बड़ी ~~बड़ी~~ कम्पनीयों की स्थापना हुई।
(~~व्यापार के विस्तार होने के कारण जिसे एक व्यक्ति नहीं सम्भाल सकता~~
जैसे - ईस्टइण्डिया कम्पनी डच आदि की स्थापना। इन कम्पनियों में राज्य का भी शेयर (हिस्सा) होता था। राज्य सैनिक व आर्थिक मदद करता है। तथा यह कम्पनियाँ ~~अ~~ ने राज्यों के राजनैतिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगी।

(4) सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन :- मध्ययुग में जिस यूरोप को लोते इक व प्लेग से प्रभावित था। वह भौगोलिक खोजों व अन्वेषण ने मृत्यु दर को कम

(5) एक मध्यवर्ग का उदय :- पैसा ~~आ~~ धन आने से नये मध्यम वर्ग का उदय हुआ। ✓

(6) सामन्तवाद का अंत :- वाणिज्यवाद के कारण राष्ट्र व राजा महत्वपूर्ण हो गए। जिससे सामन्तवाद का प्रभाव कम हो गया।
* वाणिज्यवाद के परिणाम स्वरूप यूरोप 18 वीं / 19वीं शताब्दी में यूरोप वालों की तैयारी कर रहा था यूरोपीय देशों उपनिवेश स्थापित करने की होड़ मच गयी।

इतिहासकारों का मानना है कि समाज में परिवर्तन का लोगों का कार्य, ~~व~~ मध्यवर्ग का उदय

:- औद्योगिक क्रांति :-

* 18वी शताब्दी में विश्व के इतिहास एवं मानवजाति को प्रभावित किया।
(1) औद्योगिक क्रांति (2) फ्रांस की क्रांति

* 18वी शताब्दी के मध्य तक यूरोप कृषि प्रधान समाज था तथा यूरोप में मशीन का अभाव था। जलशक्ति व वाष्प शक्ति का अभाव दिखाई देता है। इस समय यातायात के साधनों का अभाव दिखाई देता है। व बड़े उद्योग व कारखाने नहीं थे। मानव ~~स्रोत ही~~ श्रम ही एक मात्र ऊर्जा का स्रोत है। एक व्यक्ति एक इकाई का काम करता था। व्यापार सुरक्षित नही था।

* "Life was Slow, Simple and Sleepy."

* इस कृषि प्रधान समाज की पृष्ठभूमि मे ~~177~~ लगभग - 1770 ई. में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत इंग्लैंड मे प्रारम्भ हुई।

* इंग्लैंड मे औद्योगिक क्रांति की शुरुआत शासक ~~जर्मन~~ जार्ज III
(1760-1820)

* **औद्योगिक क्रांति :-** औद्योगिक क्रांति ने कृषि प्रधान देश समाज को औद्योगिक समाज मे परिवर्तन कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप, उत्पादन, निर्माण व वितरण की प्रणाली मे परिवर्तन आया।

* यह क्रांति आम क्रांति की तरह नहीं थी। (इसमे उग्रता नही, विस्फोट नही, खून खराबा नही हुआ)

* औद्योगिक क्रांति का स्वरूप विकासवादी तथा धीमी गति से होने वाला परिवर्तन था।

* औद्योगिक क्रांति कब शुरू हुई यह कहना ~~कब शुरू हुई~~

* इस क्रांति ने समाज मे क्रांतिकारी परिवर्तन किये।

* यह क्रांति एक समय मे सभी स्थानो पे भी एक साथ शुरू न हुई।

* इस क्रांति का (1770 से) 50 वर्ष तक इंग्लैंड और यूरोप के अन्य देश पर असर पड़ा।

* बेल्जियम, फ्रांस एवं अमरीका मे इसका प्रभाव 1815 के बाद दिखाई देता है। (यह वे नेपोलियन बोनापार्ट के पतन का काल था)

* रूस और अन्य पूर्वी यूरोपीय देश, 19वी शताब्दी के अंत तक कृषि प्रधान बने रहे।

* औद्योगिक क्रांति का सर्वप्रथम 1833 ई. ब्लाँकी ने किया।

* इसे लोकप्रिय बनाने का ब्रिटिश विद्वान अर्नाल्ड टॉयनबी ने किया। (1880-1881) - पुस्तक "इण्डस्ट्रियल रिवोल्युशन ऑफ द ~~18वी शताब्दी~~ ~~in England~~ एटीन्थ सेन्चुरी इन इंग्लैंड"
Industrial Revolution of the eighteen century in England"

1685 ई में नान्टेस की संधि के निरस्त होने पर के बाद सारे ह्यूगनेट्स कारीगर/कुशल कारीगर

5 lakh ...

कार्लमार्क्स

* फ्रेडरिक ऐंगिल्स, जॉन स्टुअर्ट मिल, ने भी इसका प्रयोग किया।

* औद्योगिक क्रांति के कारण :- (1) पूंजी की उपलब्धता :- 17वी शताब्दी के अंत एवं 18वी शताब्दी के प्रारम्भ मे इंग्लैण्ड में कृषि के क्षेत्र मे क्रांतिकारी परिवर्तन हुये।
इंग्लैण्ड की संसद में कृषि से सम्बन्धित सुधार के लिए अनेक नियम बनाये।
खुले कृषिफार्म के स्थान पर बाँडाबंदी या तारबंदी प्रणाली फार्म हुई।
इससे बड़े-बड़े कृषि फार्म व पशुधन की सुरक्षा बढ़ी व कम मजदूर श्रमिकों की आवश्यकता हुई।

* इसके अतिरिक्त कृषि के क्षेत्र मे वैज्ञानिक परिवर्तन हुये, ज्योथ्रो टुल ~~टुल ने सीड्डामक मशीन का अविष्कार~~ सीड्-ड्रील मशीन का आविष्कार किया जिसे घोड़े से खींचा जाता था। इसी ने कलटीवेटर नामक यंत्र का अविष्कार किया।

* चार्ल्स टाउनसेन्ट :- ने कृषि चक्र पद्धति (क्रमावर्तन) (Rotation) प्रारम्भ की (अदला-बदली) जिसे मृदा की उर्वरता शक्ति बनी रहे। इसी ने ही शलजम की खेती प्रारम्भ की। (चार फसलें आवर्तन - गेहूं शलजम जौ और ...)
टर्निप टाउनसेन्ड

* राबर्ट बेकवेल ने श्रेष्ठ श्रेणी के पशुओं की वैज्ञानिक प्रजनन पद्धति की खोज की, पशुधन (हाईब्रिड) के उत्पादन मे सुधार विशेषकर भेड़ो की नस्ल में सुधार किया जिससे उसकी ऊन उच्च श्रेणी की, तथा माँस अधिक। (...)

* इस काल मे कृषि सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हुआ।

* इंग्लैण्ड का शासक जार्ज भी फार्मर जार्ज नाम से लेख लिखता था।

* इसके परिणाम स्वरूप कृषि पूंजी की बढ़ोतरी साथ ही व्यापारी पूंजी भी उपलब्ध हुई। यह व्यापारिक पूंजी विदेशी व्यापार, दास व्यापार व समुद्री डकैती से हुई।

* दास व्यापार को सर्वप्रथम 1860 में इंग्लैण्ड ने समाप्त किया।

(2) सस्ते श्रम की उपलब्धता :- बाड़ाबंदी के फलस्वरूप छोटे कृषक अपनी जमीनें बेच दी, तथा उसे बड़े फार्म वालों ने खरीद लिया। जिसके फलस्वरूप कृषक बेरोजगार हो गये तथा वह बाहर की ओर पलायन किया।

(3) समुद्री व्यापार :- कच्चे माल की सुलभता आदि। 17वी शताब्दी व 18वी शताब्दी मे इंग्लैण्ड मे जहाज बनाने के उद्योग का विकास हुआ जिससे इंग्लैण्ड के जहाज दुनिया के कोने-कोने मे पहुँच गये। 17वी शताब्दी तक इंग्लैण्ड समुद्र की रानी बन चुका था।

Piracy - समुद्री डकैती

* इन जहाजों के द्वारा कच्चा माल - (तम्बाकू, चाय कपास, गरम मसाले) भारी मात्रा मे आयात होने लगा। इंग्लैण्ड एक ही वस्तु का निर्यात करता था वह गर्म कपड़े थे। इससे यदि व्यापार - वाणिज्य की दृष्टि से इंग्लैण्ड को विश्व का धनराष्ट्र बनना होता उसे आयात - निर्यात का संतुलन स्थापित करना होगा तथा मातृराष्ट्र के पक्ष मे करना होगा।

(4) प्राकृतिक संसाधनो की उपलब्धता :- इंग्लैण्ड मे यार्कशायर एवं लंकाशायर नामक स्थान पर लोहा एवं कोयला प्रचुर मात्रा मे था। लोहा व कोयला किसी भी उद्योग की रीढ़ होता है।

1750 ई पूर्व ही ... 1600 km. नहरे ... बनायी जा चुकी थी ...

अनुकूल जलवायु ... उपलब्धता

* इंग्लैण्ड पर प्रकृति की मेहरबानी रही कि यहाँ कि जलवायु मे आर्द्रता है जो सूती वस्त्र उद्योग के लिए उपयोगी सिद्ध हुई (धागा बनाना)

(5) बैंकिंग व्यवस्था :- 1694 मे बैंक ऑफ इंग्लैण्ड की स्थापना हुई इसके अतिरिक्त "नेशनल डेट" जैसी वित्तीय संस्थाऐं स्थापित हुई।
इंग्लैण्ड को फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करने के लिए ऋण उपलब्ध कराने के लिए बैंको की स्थापना हुई (यह ऋण टैक्स वसूल कर पैसा आयेगा)।
* शांतिकाल मे औद्योगिक उद्योग स्थापित करने मे कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाते है।

(8) उत्पादित माल की अत्यधिक मांग व तैयार बाजार

(6) राजनैतिक स्थिरता :- ब्रिटेन की अनुकूल राजनीतिक व सामाजिक स्थिति - ब्रिटेन मे 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद ब्रिटिश संसदीय तंत्र का विकास हुआ और यह अवधारणा बनी कि ... शासन को मनुष्य के जीवन स्वतंत्रता एवं सम्पत्ति के नैसर्गिक अधिकारों मे हस्तक्षेप नही करना चाहिए इस अवधारणा ने ब्रिटिश पूंजीपतियो का ...

(7) ब्रिटेनवासियों की महत्वाकांक्षी :- यूरोप की के अन्य देशो की तुलना मे महत्वाकांक्षी ही थे व दुनिया के कोने 2 मे जाकर व्यापार व उद्योग स्थापित करने तथा नयी मशीने बनाने व अन्वेषण मे रही इनकी रुचि रही।

महत्वाकांक्षी

* नेपोलियन के कारण इंग्लैण्ड मे औद्योगिक क्रांति विकसित हुई, तथा इसी औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड ने फ्रांस को पराजित किया।

(9) कृषि विकास की अनुकूल पृष्ठभूमि (10) आरम्भिक तकनीकी आविष्कारो का केन्द्र

* औद्योगिक क्रांति के चरण :- दो चरण (1.) प्रारम्भिक - (1770-1830)
(2.) दूसरा चरण विकसित - (1830-1870)

(1) प्रारम्भिक चरण :- (1) सूती वस्त्र उद्योग
(2) खनिज एवं खनन
(3) यातायात के साधन

(1) सूती वस्त्र उद्योग :- 18वी शताब्दी के मध्य मे इंग्लैण्ड व यूरोप मे सूती वस्त्रो की मांग बढ़ गयी, सूती वस्त्र पहनना फैशन बन गयी। इंग्लैण्ड मे केवल गर्म कपड़े ही बनते व भी हाथ से निर्मित थे। जो मांग बढ़ रही थी उसकी सूती वस्त्र उद्योग के उत्पादन को बढ़ाने की इच्छा शक्ति ने औद्योगिक क्रांति को बढ़ावा ...

इंग्लैण्ड व फ्रांस हमेशा विरोधी हुये

"आवश्यकता आविष्कार की जननी है"

* इंग्लैंड की संसद ने निर्णय लिया कि सूती कपड़े बनाने के लिए उसमें ऊन का प्रयोग अनिवार्य

* जॉन के (Johan kay) – फ्लाइंग (उड़ने वाली) शटल का आविष्कार – इससे कपड़ा बुनने का काम डबल हो गया।

* जेम्स हरग्रीव्स James Hargreaves – Spinning Jenny (पत्नी) (1767) इसमें कताई गुणा हो गया। एक पहिये की सहायता से आठ तकले लगाकर कताई का काम 8 ... लोग ... लगते थे

* रिचर्ड आर्कराइट : (1769) स्पिनिंग फ्रेम / वाटर फ्रेम का आविष्कार – इस यंत्र से मजबूत धागा बनाया जाने लगा। इसे फैक्ट्री प्रणाली का जनक कहा जाता है। 1790 ई. में उसने मैनचेस्टर में सूती वस्त्र उद्योग स्थापित किये जिसमें 600 श्रमिक काम करने लगे।

* स्पिनिंग फ्रेम शुरुआत में अश्व शक्ति से चलाया गया बाद में जल शक्ति से चलाया।

* सैम्युल क्रॉम्पटन – म्यूल (हरग्रीव्स + रिचर्ड का मिश्रण) यह जैनी व मशीन ... 1779. इससे मजबूत, श्रेष्ठ व महीन धागा बनने लगा। यह 400 धागे एक साथ ...

* एडमण्ड कार्टराइट : पॉवरलूम – (1785) इसे 1789 में इसे वाष्प शक्ति से जोड़ दिया।

* एल व्हिटनी (अमरीका) – कॉटन जीन का यंत्र का आविष्कार – इससे कपास से बिनौला अलग करने के लिए की सफाई व बुनाई होने लगा। या कपास ओटने का काम

* **खनिज व खनन :** प्राचीन काल से लौह को व अन्य धातु को गलाने के लिए लकड़ी का प्रयोग किया जाता था। यह कठिन कार्य था (प्रक्रिया लम्बी. वनों की कटाई, मिट्टी का ...)। इसके विकल्प के रूप में कोयला सस्ता विकल्प ... सिद्ध हुआ। यह इंग्लैंड में प्रचुर मात्रा में ... (लंकाशायर यार्कशायर आदि), कोयले के प्रयोग में कठिनाई – यह कि खानों में पानी भर जाता था।

* 1717 ई. में थामसन न्यूकोमेन ने भाप इंजन का आविष्कार किया जो खानों से पानी निकाला जाता था। (कम लम्बे समय तक उपयोगी नहीं)

* 1769 में जेम्स वॉट ने न्यूकोमेन के भाप इंजन का अध्ययन कर नया वाष्प इंजन बनाया। यह स्कॉटलैंड का इंजीनियर था। (इसने कंडेन्सर लगाया, जो तकले के काम को निरन्तर चालू रखा)

* स्थानीय भाषा में स्टीम इंजन को ... कहा गया।

* 1800 ई. में अपने मित्र मैथ्यू बोल्टन के सहयोग से ... 289. स्टीम इंजन का निर्माण जिसका व्यापारिक दृष्टि से उपयोग किया। जो के ...

यह वाटर फ्रेम जी ... हाथ से इसका विरोध ... ... प्रकार ...

कोयले के खान पर पत्थर के कोयले से कोक ... में उपयोगी ... यह ...

Spinning Jenny + Mule.

Mule – खच्चर ... ...

कताई → फ्रेम → म्यूल → ...

* 1789 ई. पावर लूम में वाष्प शक्ति इंजन लगा दिया।

* स्टीमइंजन का औद्योगिक क्रांति के प्रथम चरण की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

* मौसले ने औजार बनाने के लिए "साइड रेस्ट" (लेथ मशीन)

*

* यातायात के साधन :

⇒ सड़क यातायात में जान, ~~मैकाडम~~ मैटकॉफ, थामस टेलफोर्ड, जान मैकडम / मैकाडम

* सड़को के निर्माण करते समय, सड़को के निचले भाग में भारी पत्थरो की परतें रखी जाती थी उसके बाद उनके ऊपर छोटे पत्थरो को जमाकर उन्हें (मिट्टी) के गारे से जोड़कर सख्त सतह बनाई जाती थी। वर्षा (पानी) जल्दी नहीं रुके इस कार्य पर तारकोल का प्रयोग

* 1830 तक इंग्लैण्ड में 20 हजार मील लम्बी सड़को का निर्माण कर दिया गया।

* रेल यातायात :

* कोयला खानो से फैक्ट्री तक पहुँचाने के लिए "रेलगाड़ी का आविष्कार"

* लोकोमोटिव का आविष्कार 1804 में जार्ज स्टीवन ने लॉकोमोटिव का आविष्कार किया। (3 मील प्रति घंटा) इसके रेलइंजन को रॉकेट नाम दिया।

* 1823 ई. में न्यूकॉसल नामक स्थान पर लॉकोमोटिव फैक्ट्री स्थापित हुई।

* 1830 ई. में मैनचेस्टर से लिवरपूल के बीच पहली यात्री रेल लाइन बिछाई गई।

* अब रेलगाड़ी 30 मील प्रति घंटा की दर से चलने लगी (भवाद - ढकलोरिक)

* समुद्री यातायात :

1807 में राबर्ट फुल्टन नामक अमरीकी ने स्टीम बोट का आविष्कार किया। इसे क्लेरमोन्ट कहा गया। इस वाष्प चालित जहाज ने न्यूयार्क से अल्बानी के बीच 150 मील की दूरी 32 घंटे में तय की। (5 मील / घंटे की रफ्तार से) (इसकी गति)

* स्टीम इंजन का प्रयोग बड़े जहाजो में होने लगा।

* ग्रेट वेस्टर्न नामक बड़े जहाज ने न्यूयार्क से ब्रिस्टल के बीच की दूरी 15 दिन में तय की। (अटलांटिक महासागर को पार करके)

* विकसित चरण :- (1830 से 1870)

इस चरण की दो विशेषताएँ (1.) इस काल में वाष्प शक्ति (स्टीमइंजन) लौह एवं कोयले का महत्व बना रहा (2.) औद्योगिक क्रांति का प्रभाव यूरोप एवं अमरीका पर पड़ना प्रारम्भ हुआ।

(1.) औद्योगिक पूंजी में वृद्धि / विकास :

(2.) इंजीनियर नामक नये तकनीकी वर्ग का उदय

(3.) वैज्ञानिक खोजे एवं आविष्कार

1833 -

Note - पढ़िए / औद्योगिक क्रांति सम्पन्न ... दरिद्रता - ...

*** औद्योगिक पूंजी का विकास :** इस चरण मे बड़े पैमाने पर सूती वस्त्र उद्योग स्थापित किये गए, लेकिन कालान्तर मे मशीनें जटिल एवं महँगी हो गयी। अब एक व्यक्ति द्वारा बड़ा उद्योग लगाना मुश्किल हो गया। अब व्यापार मे उद्योग स्थापित करने के लिए आपकी सहयोग की आवश्यकता पड़ी। अधिक से अधिक लोगो ने पूंजी निवेश करना अधिक बड़े² उद्योग मे करना शुरू। इसी के फलस्वरूप सहकारिता एवं लि० कम्पनियाँ स्थापित होने लगी। इसके परिणामस्वरूप व्यक्तिगत उद्योग औद्योगिक स्वामीत्व का स्थान बड़ी कम्पनियो ने ले लिया।

* इसी के परिणाम स्वरूप औद्योगिक पूंजी मे वृद्धि हुई व व्यापार का अनुपात बढ़ा - 1760 ई मे इग्लैंड 4 मिलियन पाउण्ड कपास का आयात करता था।

* 1815 100 मिलियन पाउण्ड, व 1840 मे 500 मिलियन पाउण्ड कपास का आयात इंग्लैंड करने लगा।

* 1835 ई. मे इग्लैंड विश्व का 63% सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन करने लगा।

*** इंजीनियर नामक नये तकनीकी वर्ग का :** नई तकनीकी मशीनो व नई उद्योग स्थापित करने के लिए नये एक नये तकनीकी वर्ग की आवश्यकता हुई। इस नये तकनीकी वर्ग जिसे इंजिनियर कहा जिसे नये तकनीकी मे दक्षता रखता हो।

* इसी के परिणामस्वरूप सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल सड़क, आदि क्षेत्रो मे दक्षता प्राप्त इंजीनियरो की आवश्यकता पड़ी। 1828 ई मे सिविल इंजीनियर सोसायटी का स्थान इंग्लैंड मे स्थापना की। इस प्रकार इंग्लैंड विश्व का कारखाना बन गया।

* इंग्लैंड ने अन्य देशो मे नयें उद्योग स्थापित करने मे सहयोग दिया। और इससे देशो मे रोजगार उपलब्ध करवाया।

(8) वैज्ञानिक खोजे एवं आविष्कार :

* डेवी का सेफ्टी लैम्प : खादानो में काम करने वाले को जहरीली गैस का पता लगा सके।

* फैरेडे - Laws of Electroplating

* Dienemo - डायीनमो

* वॅसन - विद्युत

* एडीसन - बल्ब

* ~~केल्विन~~ केल्विन - मरियन केबल (अमरीका व इग्लैंड के मध्य के बल डाली जिसे अटलांटिक केबल कहते है

* समय के अनुसार आवश्यकता के साथ नये आविष्कार
* राबर्ट ने ड्रिलिंग मशीन का आविष्कार किया।
* नैसमिथ – ग्रूव कटिंग मशीन (चूड़ी निकालने)
* हैनरी बेसेमर ने – लोहे को इस्पात मे बदलने की तकनीक दी, बेसेमर पद्धति

* विकसित चरण मे यातायात के साधनो का विकास हुआ। 1830 मे इंग्लैण्ड मे 49 मिलियन Miles रेल लाइन बिछाई गई। 1870 मे 3 15,300 मील लम्बी रेल लाइन बिछाई गयी थी।

* कुनार्ड लाइन्स – बड़े बड़े जहाज बनाने की कम्पनी स्थापना की।
* सूती वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त भवन निर्माण, फर्नीचर, चर्म उद्योग, मदिरा (Brewing), डिब्बा बंद (Canning) उद्योग विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त विद्युत व तापीय यंत्रो का आविष्कार हुआ।
* व्हिटस्टोन व मोरस ने टेलीग्राफ का आविष्कार
* इसके अति० रबड़ एवं पेट्रोलियम पदार्थ का उत्पादन बढ़ा
* चार्ल्स गुडईयर ने वल्कनीकरण का सिद्धान्त दिया। (ट्यूब मे हवा भरना)
* रिचर्ड गेटलिन ने मशीन गन का आविष्कार किया। जिससे एक मिनट मे 250 कारतूस का प्रयोग किया जा सके।

* औद्योगिक क्रांति के परिणाम ⇒ (1) लाभ (2) दुष्प्रभाव

(1) लाभ ⇒ (1) अधिक से अधिक उत्पादन मशीनो से होने लगा।

(margin: वैचारिक, आर्थिक – उदारवाद, समाजवाद)

(2) व्यापार के अनुपात मे वृद्धि
(3) शक्ति संचालित मशीनो का उपयोग
(4) यातायात के साधनो का विकास ← सड़क, रेल, जहाज
(5) हजारो को रोजगार उपलब्ध हुआ
(6) बैंकिंग व्यवस्था का विकास हुआ।
(7) सामाजिक जीवन स्तर मे वृद्धि
(8) कृषि के क्षेत्र मे विकास

(margin: नगरीकरण, औद्योगिक पूंजीवाद का विकास, राजनीतिक लोकतंत्र की मांग, श्रमिक आंदोलन (चार्टिस्ट आंदोलन))

* दुष्परिणाम :- (1) अनियोजित नगरो का विकास – जहाँ भी फैक्ट्री व उद्योग लगे वहाँ व्यक्ति रहने लगे निरंतर व मशीन के एक साथ संपर्क में लगे तथा इन फैक्ट्री से शारीरिक-मानसिक

(2) पलायन :- कृषि प्रधान इंग्लैंड से औद्योगिक उत्तर की ओर पलायन होने लगा। व सांस्कृतिक धरोहर छोड़ चले गये।

(3) महिला एवं बच्चो का शोषण –
(4) कुटीर उद्योग धंधो का विनाश

(4) बेरोजगारी की समस्या बढ़ी :-

5. पूंजीपति व श्रमिक वर्ग में असमानता

* अमरीका का स्वतंत्रता संग्राम *

* * आधुनिक विश्व की 3 R — (1) पुनर्जागरण (Renaissance)
(2) धर्मसुधार (Reformation)
(3) क्रांति (Revolution)

* अमरीका की खोज / इतिहास - 12 अक्टू. 1492 कोलम्बस द्वारा खोज से शुरू (बहामा द्वीप)

* यूरोपीय लोगों के पहुँचने से पूर्व अमरीका के स्थानीय लोग - मंगोलॉयड - नीग्रो/मैन (रेड/लाल) (अलास्का व ग्रीनलैंड) से पूर्व - मध्य स्थानों से आये तथा कोलम्बस ने इन्हें रेड इंडियंस नाम दिया।

* इस महाद्वीप पर पहुँचने वाले सबसे स्पेनिश थे इनके पश्चात पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश व फ्रांसीसी थे (इसके अतिरिक्त यहाँ पहुँचने वाले जर्मन व स्वीडन भी थे) (स्पेनिश ⇒ पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश, फ्रांसीसी)

(हर्नेन्डो कोर्टेस मैक्सिको जीता)

(* सेंट ऑगस्टाइन बस्ती यूरोपीय द्वारा बसाई पहली बस्ती है)

* अमरीका में रहने वाले मूलतः यूरोपियन थे।

* 18 वीं शताब्दी के मध्य तक इंग्लैंड ने पूरे अमरीका पर आधिपत्य स्थापित कर, 13 उपनिवेश स्थापित किया।

* दक्षिण → जार्जिया, वर्जीनिया, नार्थ कैरोलिना, द. कैरोलिना (यहाँ कपास एवं तम्बाकू की बड़ी मात्रा में खेती की जाती थी। कृषि कार्य दासों एवं गुलामों द्वारा होता था।

* उत्तर में :- (1) कनेक्टिकट, रोड आइलैंड, न्यू हैम्पशायर, मैसाचुसेट्स - प्रेसिब्यूटेरियन्स के द्वारा स्थापित कहा जाता है इसीलिए इन्हें न्यू इंग्लैंड कॉलोनी कहा जाता है।

(3) मध्य :- मैरीलैंड, पेनसिलवेनिया, न्यूजर्सी, न्यूयार्क, डेलावेयर — यहाँ चीनी और मधुरस शराब का उत्पादन होता था।

* इन उपनिवेशों में प्रत्येक में एक प्रतिनिधि सभा थी, जिसे "हाउस ऑफ बर्जेसेस" कहा जाता था। प्रत्येक नगर से इस प्रतिनिधि सभा में दो प्रतिनिधि भेजे जाते थे।

* प्रत्येक उपनिवेश में एक ब्रिटिश गवर्नर नियुक्त किया जाता था।

* गवर्नर का प्रतिनिधि सभा के साथ एवं इंग्लैंड के क्राउन एवं संसद के बीच समान था।

* अमरीका स्वतंत्रता संग्राम के समय जनसंख्या 2 मिलियन (20 लाख) थी।

* प्रारम्भ में इन उपनिवेशों को इंग्लैंड से कोई शिकायत नहीं थी परन्तु ~~इंग्लैंड~~ ने कालान्तर में इंग्लैंड में इन उपनिवेशों के लिए (अमरीकी विरोधी) प्रशासनिक व आर्थिक नीतियाँ लागू की गई। जिसका 13 उपनिवेशों ने विरोध किया।

अमरीका (संघ) का नाम ... — कानून बनाने का अधिकार राज्य को है केवल ब्रिटेन व संसद ... ड्रेडेपल्ला

*अमरीका का स्वतंत्रता संग्राम - 13 अमरीकी उपनिवेशों में इंग्लैण्ड की प्रशासनिक एवं आर्थिक नीतियों के विरुद्ध क्रांति थी। (नीतियाँ उपनिवेशों के हितों के विरुद्ध थी)

*यह 13 अमरीकी उपनिवेशों एवं मातृराष्ट्र के बीच संघर्ष था।

*अमरीकी स्वतन्त्रता संग्राम के कारण :-

(1) **इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति का अभाव:-** (1) ब्रिटिश वासियों के अतिरिक्त इंग्लैण्ड की सहानुभूति नहीं थी। (स्वीडन, डच, पुर्तगाली) (2) ब्रिटिश पिउरिटन्स की भी इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति नहीं थी। (विद्रोह होते रहते थे) (3) ब्रिटिश [illegible] को अमरीकी महाद्वीप भेजा जाता था। इन की इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति नहीं थी।

(4) इंग्लैण्ड व अमरीका के मध्य यातायात के साधनों के अभाव के कारण (सहानुभूति) (यह दूरी अटलांटिक महासागर की जो 3,000 हजार मील थी)

(2) **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** - 17 वी शताब्दी में ब्रिटिश ताज ने उपनिवेशों के प्रति "अहस्तक्षेप" की नीति अपनायी। और उपनिवेशों से राजस्व प्राप्त करने के लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाये।

* उपनिवेश में स्वयं जीवन जीने। आत्मविश्वास, या व्यतीत करना व अपने हितों की रक्षा करना सीख लिया तथा अब इन्हें मातृराष्ट्र का हस्तक्षेप अब इन्हें बर्दाश्त नहीं हो रहा था

(3) **ब्रिटिश उपनिवेशों के प्रति इंग्लैण्ड की नीति** :- उपनिवेशों द्वारा मातृराष्ट्र की सेवा करना उनका दायित्व था। परन्तु 18 वी शताब्दी के मध्य में इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों पे अमरीकी विरोधी नीतियाँ लागु की। इसके परिणाम स्वरूप उपनिवेशों में राष्ट्रीयता की भावना जगी।

(4) **सप्तवर्षीय युद्ध** :- (1756-1763) - कनाडा व उत्तरी अमरीका के उपनिवेशों को लेकर फ्रांस व इंग्लैण्ड के मध्य युद्ध हुआ। सप्तवर्षीय युद्ध 1763 में पेरिस की संधि से समाप्त हुआ। इस युद्ध के पश्चात कनाडा एवं 13 उपनिवेशों पर पूर्णत: इंग्लैण्ड का आधिपत्य हो गया। सप्तवर्षीय युद्ध अमरीका स्वतंत्रता संग्राम का एक मोड़ बिन्दु था।

(प्रतिक्रिया) (1) 1759 में ब्रिटिश संसद ने एक अधिनियम पारित कर अमरीकी संसद द्वारा बने कानून को अवैध घोषित कर दिया (अपने उपनिवेशों के लिए बनाये) (2) ब्रिटिश गवर्नरों की शक्तियों में वृद्धि की गई (3) 1763 में ब्रिटिश संसद ने राजस्व वसूली के कठोर नियम कदम उठाये (4) उपनिवेशों द्वारा पश्चिम में विस्तार

सप्त-वर्षीय युद्ध का पेरिस संधि

Boundary Lights

की नीति पर प्रतिबंध लगाया। (3) स्थानीय इंडियंस को आर्थिक शक्तियाँ व सुविधाएँ देने का वादा किया। (4) अमरीकी उपनिवेशों की सुरक्षा के 300 हजार पौंड की आवश्यकता थी। ब्रिटिश सरकार ने निर्णय लिया कि इसमें 150 हजार पौंड का भुगतान उपनिवेशों को करना होगा।
(5) सप्तवर्षीय युद्ध का खर्चा उपनिवेशों को वहन करना होगा। – इसके परिणाम स्वरूप ब्रिटिश विरोधी भावना उग्र हुई
(6) अब अमरीकी उपनिवेशों के विरुद्ध एक विरोधी केवल इंग्लैंड रहा

(5) इंग्लैंड की आर्थिक नीति (सप्तवर्षीय युद्ध से पूर्व) :- इंग्लैंड ने उपनिवेशों के प्रति नीति अपनायी जिसका आधार –

1. उपनिवेशों को मातृराष्ट्र को कच्चा माल उपलब्ध करवाना।
(2) उपनिवेशों को मातृराष्ट्र के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करना चाहिए
(3) उपनिवेशों को प्रशासन के संचालन में आर्थिक सहयोग देना चाहिए

* इंग्लैंड ने उपनिवेशों के साथ वाणिज्यवाद की नीति अपनायी। 1650, 1660

* नियमों ⟹ (1) नौसंचालन अधिनियम :- Marine acts – 1651, 1663 (1651, 1660, 1663 स्टेपल) इसके अनुसार अमरीकी उपनिवेशों को आयात व निर्यात के लिए केवल ब्रिटिश जहाज का ही प्रयोग करना होगा। इन जहाजों का संचालन ब्रिटिश अधिकारी करेंगे। इससे अमरीका का जहाज बनाने का उद्योग लगभग खत्म हो गया। तम्बाकू व चीनी को निर्यात केवल इंग्लैंड

(1621 * वा. नीतियाँ — की तम्बाकू का निर्यात केवल इंग्लैंड को; स्टेपल एक्ट 1663 – जिसके अनु. विदेशी उपनिवेश पर इंग्लैंड के अलावा अन्य देशों से आने वाली प्रत्येक वस्तु पर प्रतिबंध लगाया।)

(2) औद्योगिक नियम :- इसके अन्तर्गत 1689 में ऊनी वस्त्रों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया। 1732 में टोपियों के निर्यात पर प्रतिबंध, 1750 में लोहे के कारखाने स्थापित करने पर प्रतिबंध लगा दिया। (अमरीकी उपनिवेशों में लोहा व वस्तुओं के उत्पादन को सीमित कर दिया)

(3) व्यापार अधिनियम :- इसके अन्तर्गत उपनिवेश कच्चा माल, चावल, चमड़ा, तम्बाकू, कपास, लकड़ी, कागज व नौसैनिक उपकरण केवल इंग्लैंड को ही निर्यात करेंगे अन्य को नहीं।

(1696 में ... उपनिवेशों के विकास को नियंत्रित करने का कार्य बोर्ड ऑफ ट्रेड एण्ड प्लान्टेशन को सौंपा दिया। *1699 ऊन पर प्रतिबंध लगा दिया)

* (6) इंग्लैंड की नई आर्थिक नीति (सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात) इस नयी आर्थिक नीति के तहत कई कानून बनाये

(1) शुगर एक्ट (Sugar) :- 1764 :- सप्तवर्षीय युद्ध से पूर्व अमरीकी उपनिवेश फ्रेंच वेस्ट इंडिज से चीनी / शक्कर खरीदते थे। परन्तु इस शुगर एक्ट के अनुसार अमरीकी उपनिवेशों को अब ब्रिटिश वेस्ट इंडिज से चीनी खरीदना अनिवार्य कर दिया। तथा चीनी पर चुंगी को 6 Pence प्रति गैलन से घटाकर 3 Pences/gallon कर दिया गया (भाव / रेट कम किया) (बहुत स्कूली कोरोनाकाल)
यह अधिनियम उपनिवेशों की स्वतंत्रता पर आघात था।

1733 का शीरा अधि. इसके तहत अमरीकी उपनिवेशों के लिए विदेशी द्वीपों से शीरा, चीनी, तथा स्प्रिट के आयात पर भारी कर लगा दिया। जिसका उद्देश्य था उपनिवेशों के व्यापारी उक्त वस्तुओं को ब्रिटिश उपनिवेशों से ही खरीदें

(1764)
मुद्रा अधिनियम / करेन्सी एक्ट :- अमरीकी प्रतिनिधि सभाओं को मुद्रा छापने का अधिकार था परन्तु इस अधिनियम से प्रतिनिधि सभाओं को मुद्राओं छापने के अधिकार से वंचित कर दिया था। यह भी उपनिवेशों की स्वतंत्रता पर आघात था।

* खोज वारन्ट अधिनियम (Search Warrant Act-1764 / Writes of Assistance - इसे सहायार्थ अधि. - इस अधिनियम के तहत ब्रिटिश राजस्व अधिकारियों को मकान, भवन, फैक्ट्री, गोदाम आदि की खोज करने का अधिकार दे दिया था। (तलाशी)

रिट्स ऑफ असिस्टेन्स

सहायतादेश — सरकारी के 1-1-1 ... घर में किसी तरह गोदाम तलाशी

* जार्ज तृतीय की प्रशासनिक नीति :- (1760-1820) जार्ज तृतीय अमरीकी उपनिवेशों को अपनी निजी सम्पत्ति मानता था। इस नीति का इंग्लैंड की संसद में विरोध हुआ। लार्ड सदन में विलियम पिट, सदन व हाउस ऑफ कॉमन्स में एडमण्ड बर्क द्वारा विरोध हुआ। परन्तु उसके प्रधानमंत्री जार्ज ग्रेनविल ने इसका समर्थन किया।

(1) विद्रोह अधिनियम-1765 :- इसके अनुसार सभी अमरीकी उपनिवेशों में ब्रिटिश सेना तैयार की जायेगी, इसके रख-रखाव का खर्चा उपनिवेशों को देना होगा।

(2.) स्टाम्प एक्ट (Stamp Act 1765) :- इसके अनुसार अखबारों से (समाचार पत्रों, व का...) लेकर सभी राजकीय दस्तावेजों पर स्टाम्प लगाना अनिवार्य कर दिया। इससे प्राप्त राशि का प्रयोग अमरीकी उपनिवेशों की सुरक्षा व जनहित के लिए किया गया। परन्तु इस अधिनियम का कड़ा विरोध विशेषतः व्यापारियों, वकीलों व बुद्धिजीवियों ने इसका विरोध किया। इसका सर्वप्रथम विरोध वर्जीनिया की प्रतिनिधि सभा में पैट्रिक हेनरी ने किया। उसने कहा "कर लगाने का अधिकार केवल प्रतिनिधि सभा का है।" इसके पश्चात मैसाचुसेट्स में सैम्युल एडम्स ने किया। - उसने कहा - "यह हमारी स्वतंत्रता पर आघात है। "जब हमारी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है इतिहास और सभ्यता हमें यह सिखायेगा कि जनसंख्या वृद्धि, गुलामी की संख्या में वृद्धि होगी। स्टाम्प एक्ट का विरोध उपनिवेशों में आग की तरह फैल गया। अमरीका में Sons of Liberty व Daughter of Liberty (सन्स ऑफ लिबर्टी) नामक संस्थाओं का उदय हुआ। इसके परिणाम स्वरूप Act, 1765 में न्यूयार्क में एक सम्मेलन आयोजित हुआ। इसे स्टाम्प एक्ट कांग्रेस कहते हैं। इस सम्मेलन में 9 उपनिवेशों की प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में बोस्टन के एक वकील जेम्स ऑटिस ने नारा दिया "बिना प्रतिनिधित्व कर नहीं" (No taxation without Representation)

पैट्रिक हेनरी
सैम्युल एडम्स
जेम्स ओटिस
(बोस्टन-वकील)
+ of ...

* स्टाम्प एक्ट कांग्रेस मे यह घोषणा कि गई की इंग्लैण्ड के साथ व्यापार स्थगित किया जाए जब तक स्टाम्प एक्ट वापस न ले। तथा विरोध स्वरूप जहाँ स्टाम्प लगाना था वहाँ मॉमस स्टाम्प लगाये गये। इस विरोध का इंग्लैण्ड के व्यापार पर प्रभाव पड़ा। लंदन, मैनचेस्टर, लिवरपूल, ब्रिस्टल आदि के व्यापारियों ने स्टाम्प एक्ट को वापस लेने के लिए दबाव बनाया। प्रधान मंत्री जार्ज ग्रिनवेले ने दबाव मे इस्तीफा दे दिया। मार्च, 1766 में ब्रिटिश सरकार ने स्टाम्प एक्ट वापस ले लिया। यह अमरीकी उपनिवेशो की नैतिक विजय थी। (बीलारोपण था)

प्रधान मंत्री रॉकिंघम ई० दा

परन्तु ब्रिटिश संसद ने घोषणा अधि॰ (घोषणात्मक अधिनियम) पारित किया जिसके अनुसार यह कहा गया कि उपनिवेशो पर कर लगाने का अधिकार ब्रिटिश संसद को ही रहेगा।

टाउनशेण्ड का अधि॰ (1767) इसने प्रत्यक्ष कर के स्थान पर अप्रत्यक्ष कर की वसुली

*** टाउनसेंड की योजना :-** ग्रेनविल के पश्चात विलयम पिट्स प्रधान मंत्री बना, परन्तु मुख्य नीतिनिर्धारण का कार्य वाणिज्यमंत्री टाउनसेंड करता था। (1) क्वाटरिंग एक्ट - ब्रिटिश अधिकारियो व सिपाहियो के लिए आवास की व्यवस्था अमरीकी उपनिवेशो को करनी होगी।

विरोध जॉन डिकिंसन द्वारा लिखे पत्र था किसान की ओर से पत्र

पॉच वस्तुओ पर आयात (2) राजस्व वसुली के लिए कई वस्तुओ पर आयात कर लागू जैसे- सीसा, शीशा, ग्लास, पेन्ट्स, पेपर, चाय आदि पर टैक्स लगा दिया तथा इसकी वसुली ब्रिटिश राजस्व अधिकारी करेगे इस राशि का प्रयोग ब्रिटिश सिविल सेवा व न्यायाधिकारियो के वेतन के लिए करेगे।

(3) ब्रिटिश अधिकारियो पर मुकदमा केवल ब्रिटिश न्यायलय मे ही मुकदमा चला सकता है।

*** बोस्टन हत्याकांड :- (1770)** Boston Massacre टाउनसेंट की योजना का उपनिवेशो मे कड़ा विरोध हुआ, इसका सबसे अधिक विरोध बोस्टन मे हुआ 5 मार्च, 1770 ब्रिटिश सैनिको एवं बोस्टन वासियो के बीच विवाद के कारण 5 बोस्टन वासियो की हत्या कर दी गई। इस घटना को बोस्टन हत्याकाण्ड कहा गया।

बोस्टन मे अवैध व्यापार को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने ही सैनिक टुकड़िया तैनात की। संस ऑफ लिबर्टी के सदस्य तथा ब्रिटिश बोस्टन नागरिको ने इन्हे अधिक ... तथ्य मानकर उनके बीच तनाव उत्पन्न हो गया। 5 मार्च, 1770 को जब कुछ मनचला लोगो ने ... पत्थर फेंके तो बोस्टन मे इन सैनिको का उपहास करते ... सैनिको द्वारा

*** बोस्टन टी पार्टी :- (1773)** - 1770 से 1773 के बीच उपनिवेशो मे शांति बनी रही, क्योंकि तत्कालिन प्रधानमंत्री लार्ड नार्थ ने टाउनसेंड द्वारा लागू सभी कानूनो को समाप्त कर दिया। परन्तु चाय पर कर लागू रखा। (3 pence) चाय की मांग की पूर्ति यूरोप व अमरीका मे ईस्ट इंडिया कम्पनी करती थी - ईस्ट इंडिया कम्पनी को दिवालिया होने से बचाने के लिए चाय एक्ट -1773 लागू किया जिसके अनुसार अमरीका मे चाय बेचने का अधिकार ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया। कम्पनी ने निम्नतम न्यूनतम कीमत पर अमरीका मे बेची जायगी। चाय से लदे हुए ब्रिटिश जहाज अमरीकी बंदरगाह पर पहुँचे।

ब्रिटिश सिपाहियो की ... लार्ड कहा गया। पैट्रियट अमरीकी सैनिक।

फिलिडेल्फिया व न्यूयार्क में इन जहाजों के ठहरने की अनुमति नहीं दी (यहाँ नहीं आने दिया) परन्तु बोस्टनवाली इन जहाजों को अपने बंदरगाह पर आने से रोक नहीं सके। 16 दिसम्बर 1773 रात में सैम्युल एडम्स Dart mouth जहाज पर 50 सैनिकों के साथ चढ़ गये तथा 342 चाय पेटियाँ अटलांटिक महासागर में फैंक दिया, इस घटना को बोस्टन टी पार्टी कहा जाता है।

सम वउसके थियो केनिडेड पर लगभग 50 अमरीकी व्यक्ति का समूह रूप वेश में

इंग्लैण्ड ने इस घटना के विरुद्ध कठोर कदम उठाये

(1) बोस्टन बंदरगाह को बंद कर दिया व सभी व्यापारिक गतिविधियों को स्थगित कर दिया।

(2) मैसाचुसेट्स वासियों के अधिकार समाप्त कर दिये (विशेषतः न्यायिक अधिकार)

(3) ब्रिटिश गवर्नरों को नियंत्रण स्थापित करने के लिए अधिक अधिकार प्रदान किये।

(4) उपनिवेशों में मकान व भवनों की सेना द्वारा उपयोग करने पर स्वतंत्रता प्रदान की गई।

* उपर्युक्त चारों अधि. को उपनिवेशों में उत्पीडनात्मक था अनुदार / असह्य कानून के रूप में जाना जाता था।

*राष्ट्रवादी नेताओं व बुद्धिजीवियों का प्रभाव :-

1776 * टामस पेन ने कॉमन सेन्स नामक पुस्तक लिखी उसने कहा कि इंग्लैंड से मुक्ति पाने का समय आ गया। " एक इतना बड़ा महाद्वीप जिस पर एक छोटा सा द्वीप का शासन है उसने राजतंत्र व राजाओं का विरोध किया वह ताज को Crowned Ruffians.

* **पैट्रिक हेनरी** :- स्टाम्प एक्ट का विरोध किया। इसके अतिरिक्त सैम्युल एडम्स, आ. जेम्स ओटिस व वाशिंगटन आदि ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

* **अखबार एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रभाव** :- 1704 बोस्टन न्यूज लेटर 1719 अमरीकन मर्करी, 1725 न्यूयार्क गजट आदि है।

* **फ्रांस व अन्य यूरोपीय देशों का सहयोग** :- फ्रांस, स्पेन, हालैंड आदि देशों का उपनिवेशों का समर्थन प्राप्त हुआ। अमरीका ने फ्लोरिडा मिनोरिका व जिब्राल्टर इंग्लैंड ने स्पेन से ले लिये।

* इंग्लैण्ड के कारण हालैण्ड का व्यापार प्रभावित हो रहा है। इंग्लैण्ड यूरोप में अकेला पड़ गया।

*** महाद्वीपीय सम्मेलन :-** (1) प्रथम महाद्वीपीय सम्मेलन - 1774
(2) द्वितीय महाद्वीपीय सम्मेलन - 1775

(1) प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस :- 5 सितम्बर, 1774 फिलाडेल्फिया (न्यूयार्क) में आयोजित इसे फिलाडेल्फिया का सम्मेलन भी कहते हैं। इस सम्मेलन में जार्जिया के अतिरिक्त 12 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य - (1) वर्तमान स्थिति पर विचार करना। (2.) न्यायोचित प्रशासनिक व न्यायिक सुधारों की मांग करना (3) इंग्लैण्ड के साथ मधुर सम्बंध स्थापित करना (4.) असहनीय अधिनियमों व कानूनों को समाप्त करना।

इस सम्मेलन में सैम्यूल एडम्स, जॉन डिकिंसन, जार्ज वाशिंगटन आदि नेताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन में एक मांग पत्र तैयार किया व इंग्लैण्ड भेजा। ब्रिटिश सरकार ने इस माँग पत्र को ठुकरा दिया। प्रथम कांग्रेस का उद्देश्य है कि न्याय उचित मांगें व शांति व सौहार्द इंग्लैण्ड के साथ स्थापित करना चाहते थे। (Just Right and Libraties and Peace and harrmony)

* बोस्टन नामक स्थान सैम्युल एडम्स व जॉन हैन्कॉक ने गोला बारूद इकट्ठे किये। 19 अप्रेल, 1775 ब्रिटिश सेना ने गोला बारूद भण्डार समाप्त करने की दृष्टि से आक्रमण किया। इसके परिणाम स्वरूप लेक्सिंगटन नामक स्थान पर आठ अमरीकी स्वयं सेवक मारे गये इसे लैक्सिंगटन की घटना कहा जाता है। इन परिस्थितियों में द्वितीय महाद्वीपीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।

मानसाई नामक स्थान पर बारूद इकट्ठा कर रखा था उन्होंने नष्ट करवा दिया ब्रिटिश सेना ने ... अमरीकियों ... इसे लेक्सिंगटन की घटना कहते हैं।

*** द्वितीय ~~महाद्वीपीय~~ महाद्वीपीय सम्मेलन - 1775 :-** 10 मई, 1775 में फिलाडेल्फिया में हुआ। इसका नेतृत्व जॉन हैन्कॉक बहुत उद्योगपति व क्रांतिकारी था, उसने इस सम्मेलन में घोषणा कि "हमारी माँगें न्यायोचित है इनके लिए हम संघर्ष करेंगे। हमारे आन्तरिक संसाधन पूर्ण हैं परन्तु विदेशी सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है। इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि एक महाद्वीपीय सेना का गठन किया जाए। जून, 1775 जार्ज वाशिंगटन को इस सेना का सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसी सम्मेलन में अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा के प्रारूप को तैयार करने के लिए पाँच सदस्यों की कमेटी गठित की गई। टॉमस जेफरसन, बेंजामिन फ्रेंकलिन इसके प्रमुख सदस्य थे। 18 अगस्त, 1775 ब्रिटिश सरकार ने अमरीकी उपनिवेशों की सभी गति विधियों को अवैध घोषित किया। और इंग्लैण्ड में अमरीका के विरुद्ध

घोषणा कर दी

***अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा** – 4 जुलाई, 1776 – इस घोषणा का मूल मंत्र – "समानता, स्वतंत्रता व खुशहाली" था। इस घोषणा के तीन भाग थे – (1) सभी अमरीका वासियों के लिए स्वतंत्रता व समानता का अधिकार दिया जाए।
(2) इसमें जार्ज तृतीय के विरुद्ध 27 शिकायतें थी।
(3) ~~इंग्लैण्ड से~~ 13 उपनिवेशों का इंग्लैण्ड से राजनैतिक दृष्टि से सम्बन्ध तोड़ रहेंगे।

यह घोषणा-पत्र अमरीका का जन्म ~~पत्र~~ प्रमाण-पत्र था। इस घोषणा को राजनैतिक साहित्य की उत्कृष्ट घोषणा माना जाता है।

*अमरीका व इंग्लैण्ड के मध्य युद्ध प्रारम्भ हुआ – (1) प्रथम युद्ध – अक्टू, 1777, सारटोगा का युद्ध – इस युद्ध में ब्रिटीश सेना नायक बरगोइन ने 6 हजार ब्रिटीश सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण किया। ~~साथ~~ इस युद्ध के पश्चात, फ्रांस, हालैण्ड व स्पेन ने अमरीका को सहयोग प्रदान किया।

*इस संघर्ष का अन्तिम युद्ध – अक्टू, 1781 में वर्जिनिया में योर्कटाउन नामक स्थान पर लड़ा गया। जिसमें ब्रिटीश सेना नायक लार्ड कार्नवालिस ने 7,000 सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण किया। इस युद्ध में अमरीकी सेना का नेतृत्व वाशिंगटन था।

***पेरिस की संधि** :- 1783, शाँति वार्ता के परिणाम स्वरूप, पेरिस की संधि हुई (इंग्लैण्ड-अमरीका) इस संधि के तहत

(1) 13 उपनिवेशों की स्वतंत्रता को मान्यता दे दी गई।
(2) न्युफाउण्डलैण्ड लेब्राडोर व नोवा स्कोशिया में फ्रांस को मछली पकड़ने का अधिकार दिया गया।
(3) अफ्रीका में सेनेगल व वेस्टइण्डीज में ~~ताबागो~~ टेबोगो फ्रांस को दिया
(4) मीनोरिका का द्वीप स्पेन को लौटा दिया गया।
(5) अमरीका में ब्रिटीश नागरिकों को हुआ नुकसान का हर्जाना अमरीका देगा। (यह हर्जाना नहीं दिया गया था)

आलोचना :- ~~इसमें~~ यह इस संधि की शर्तें कठोर नहीं थी।

* यह बात सही है कि इंग्लैण्ड की पराजय जरूर ~~हुई~~ हुई लेकिन अमरीका द्वारा अपमानित नहीं किया गया।

*अमरीका व इंग्लैण्ड के मध्य मधुर के-सम्बन्ध था ताकि भ[illegible]

जेफरसन के मूल ~~झुका~~ कार्य में समानता, स्वतंत्रता व सम्पत्ति का उल्लेख था
* सम्पत्ति की जगह शिक्षा [illegible] [illegible]

अमरीका ने ..., 1783 [illegible]

[illegible]

(2) [illegible]

चरण – (1) सप्तवर्षीय युद्ध
(2) नई आर्थिक नीति
(3) जार्ज तृतीय की प्रशासनिक नीति –
(4) टाउनसैंड की योजना
(5) बोस्टन हत्याकांड –
(6) बोस्टन टी पार्टी –
(7) महाद्वीपीय सम्मेलन
(8) स्वतंत्रता की घोषणा
(9) युद्ध व संघर्ष –
(10) पेरिस की संधि –

* अमरीका स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम –

(1) 13 उपनिवेशों की स्वतंत्रता :- इन्होंने मिलकर एक संघ बनाया जिसे संयुक्त राज्य अमरीका, तथा 1783 में फिलेडेल्फिया में अमरीकी संविधान बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। ~~1789 में~~ 30 अप्रैल 1789 में लागू किया गया। न्यूयार्क के वालस्ट्रीट में अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन को शपथ दिलाई।

(2) अमरीका को विदेशी प्रभुत्व से मुक्ति :

(3) आर्थिक विकास : अमरीका ने तुरन्त वाणिज्यवाद की नीति का अनुसरण किया जिसके तहत आयात-निर्यात अधिक किया जाने लगा तथा आयात कम से कम किया जिससे व्यापार संतुलन बना रहे। लौह, इस्पात, कागज आदि के बड़े कारखाने स्थापित किये। फिलाडेल्फिया व न्यूयार्क में बड़े वाणिज्य बैंक स्थापित किये।

(4) धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना : अमरीका प्रथम प्रजातांत्रिक राष्ट्र था जो धर्मनिरपेक्ष राज्य बना। (मैं कैथोलिक चर्च में विश्वास नहीं, पोप इंग्लैंड में नहीं ... अपने मालिक ... चर्च मानता है ...)

(5) सामाजिक परिवर्तन : जेष्ठता के सिद्धान्त को समाप्त किया गया (Law of Primogeniture) अब सम्पत्ति का विभाजन पुत्र पुत्रियों में समान विभाजन (महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण)।

लार्ड कार्नवालिस - "हम यहाँ से युद्धों को पराजित ..."

20 जन; को अमरीका राष्ट्र की स्थापना ...

अमरीका स्वतंत्रता संग्राम के लिए जार्ज तृतीय कहा तक उत्तरदायी था

(6) हजारों एकड़ भूमि शिक्षा विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए सुरक्षित रखी तथा कई नियम एवं कानून बनाये गये।

(7) इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को आघात :- इससे पहले इंग्लैण्ड को अजेय माना जाता था यह भ्रम टूट गया।

(8) जार्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन का अन्त :- जार्ज तृतीय इन उपनिवेशों को अपनी निजी सम्पत्ति मानता था।

(9) इंग्लैण्ड ने वाणिज्यवाद की नीति परिवर्तित किया :- उपनिवेशों के प्रति नीति का बदलाव, उसने वाणिज्य वाद नीति के स्थान पर, सुधारवाद की नीति अपनाई जायेगी।

(10) अन्य उपनिवेशों के प्रति सतर्कता की नीति - विशेषतः भारत व आस्ट्रेलिया कनाडा

(11) आयरलैंड के प्रति नीति में परिवर्तन :- इस समय आयरलैण्ड में होमरूल आंदोलन चल रहा था, इंग्लैण्ड ने आयरलैण्ड पर से आर्थिक प्रतिबंध समाप्त कर दिये।

(12) इंग्लैण्ड को आर्थिक हानि :- उसके 13 उपनिवेश हाथ से छीन गये, जो उनसे आर्थिक लाभ मिलते थे समाप्त।

(13) फ्रांस की क्रांति पर प्रभाव :- लुई 16 वें के समय फ्रांसीसी सेनानायक लिफायेत के नेतृत्व में सेना भेजी गयी। लिफायेत अमरीका व अन्य सैनिक अमरीका की स्वतंत्रता के बाद फ्रांस स्वतंत्रता एवं समानता का संदेश लेकर गये। तथा जनता में स्वतंत्रता व समानता की भावना जनता में जाग्रत की।

*इतिहास में अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम का क्या महत्व है?

(1) राजतंत्र एवं शाही आदर्शों के स्थान पर प्रजातांत्रिक व गणतंत्रवादी आदर्शों को अपनाने वाला पहला राष्ट्र है।

(2) धर्मनिरपेक्ष राज्य बनने वाला प्रथम राष्ट्र है।

(3) लिखित संविधान लागू करने वाला प्रथम राष्ट्र बना।

(4) संघात्मक राज्य बनने वाला पहला राष्ट्र था।

(5) प्रथम राष्ट्र जिसने अपने नागरिकों को मौलिक अधिकार दिये।

(6) फ्रांस की क्रांति का अग्रदूत बना।

(7) उदार व खुली नीति व आर्थिक नीति अपनाने वाला पहला राष्ट्र था।

(8) ब्रिटिश साम्राज्य को आघात पहुंचा।

(ii) राज्य व चर्च की पृथकता स्थापित करने वाला पहला राष्ट्र थे। - इनका सापा
मे कोई हस्तक्षेप नही है तथा धर्म को व्यक्ति विशेष के साथ सम्बन्ध रखा।

इस क्रांति ने अमरीका व विश्व के अन्य देशो के लिए प्रजातंत्र का मार्ग
प्रशस्त किया।

अमरीका के झंडे मे मात्र 50 स्टार है पहले 13 थे।

* फ्रांस की क्रांति एवं नेपोलियन बोनापार्ट * (1789)

* फ्रांस के वंश - बूर्बो वंश (Bourbons)

*1789 में यूरोप का इतिहास, एक राष्ट्र, एक घटना एवं एक आदमी/व्यक्ति का इतिहास बन जाता। राष्ट्र - फ्रांस, घटना - फ्रांस की क्रांति, व व्यक्ति नेपोलियन)

* कोई भी देश युद्ध नहीं चाहता है ठीक उसी प्रकार कोई देश क्रांति नहीं चाहता लेकिन

* जब समाज में किसी एक वर्ग को उसके अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है तो वही वर्ग शासन से, पूर्ण से असमन्वय हो समाज से लेना के लिए लड़ाई करता है

* फ्रांस की क्रांति की पृष्ठभूमि

* लुई-14 वाँ यह फ्रांस का सम्राट - (1643-1715) ने फ्रांस यूरोप में फ्रांस की प्रतिष्ठा स्थापित करने का प्रयास, इसके लिए कई राज्यों से युद्ध करने पड़ा इसने "Sun King" की उपाधि धारण की। इसने वर्साय में सम्राट के निजी निवास के लिए भव्य भवनों का निर्माण किया गया। (1000 एकड़ में) यह वर्साय पेरिस से 12 मील दूर है) इसे इतिहास में 'ग्रेंड मोनार्क' कहा जाता है उसने कहा "मैं ही राज्य हूँ" लुई 14 वें के समय दरबार की विलासिता व युद्धों पर अत्यधिक खर्च किया जिसे फ्रांस का खजाना राजकोष खाली हो गया। तथा युद्धों के लिए फ्रांस में किसानों को करों के बोझ से दबा दिया गया।

* अपनी वह अपने पौत्र को मृत्युशैय्या के समय सलाह देता है कि "मैं तुम मेरी युद्ध करने की शौक का नकल मत करना तथा तुम जनता को करों के बोझ से मुक्त करना तथा जो कार्य मैं नहीं कर सका वह तुम उसे पालन करना।

* वह घड़ियों से खेलना का शौक थ

* लुई-15 वाँ (1715-1774) - इसके समय मे दरबार की विलासिता व फ्रांस द्वारा लड़े गये युद्ध जारी रहे।

① दरबार की विलासिता - ② इसकी सरकार को पेटीकोट सरकार कहा जाता।

* सम्राट के सम्मान मे गिरावट आ गई।

* मेरा समय तो निकल जायेगा तथा मेरा उत्तराधिकारी भुगतेगा। (लोगों द्वारा ताना कसना भाई)

* लुई-16 वाँ (1774-1793) यह एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ, न थी दरबारी की विलासिता एवं युद्ध जारी रही।

वह शासक बनना नहीं चाहता व मजबूरी में बना।

* इसके शौक (1) खिड़की से हिरण का शिकार करना।

(2) ताले बनाने का शौक

* लुई 16 वें के समय फ्रांस की राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति अत्यधिक खराब हो गई।

* ~~आर्थिक स्थिति~~ फ्रांस आर्थिक स्थिति संकट की कगार पर खड़ा थी इन परिस्थितियों में फ्रांस की क्रांति शुरू।

* 1789 की फ्रांस की क्रांति फ्रांस में निरंकुश सत्ता के विरुद्ध, व सामाजिक, आर्थिक ~~अ~~ असमानता के विरुद्ध क्रांति थी।

* क्रांति फ्रांस में ही क्यों

बौद्धिक

(1) फ्रांस यूरोप का सांस्कृतिक केन्द्र था।

(2) फ्रांस की भाषा साहित्य भाषा, नाटक दर्शन आदि का पूरे यूरोप पर प्रभाव था, (सभ्य कहलाने के लिए फ्रांसीसी भाषा का ज्ञान अनिवार्य थी)

(3) यूरोप के अन्य देश फ्रांस की कला (स्थापत्य का अनुसरण करते - वासेई के महल यूरोपीय देशों के लिए अनुकरणीय थी

* अकेला फ्रांस ही नेतृत्व कोई परिवर्तन करने के लिए फ्रांस ही नेतृत्व कर सकता।

* दार्शनिकों का प्रभाव :- फ्रांस में ऐसे महान दार्शनिक हुए जिन्होंने न केवल फ्रांस अपितु विश्व के अन्य देशों के हजारों लोगों को प्रभावित किया। - मोंटेस्क्यू, वाल्तेयर, रूसो, ~~हॉब्स~~ आदि।

* इन दार्शनिकों ने सोई हुई जनता को जागृत किया (Slumber and Slati

* एक नये मध्यम वर्ग का उदय :- (बुर्जुआ वर्ग) Bourgeoisie) - पिछले 200 वर्ष से यह मध्यम वर्ग व्यापार व वाणिज्य से धनी व समृद्ध व प्रभावशाली बना। यह एक शिक्षित वर्ग था। परन्तु समाज में सुविधा रहित वर्ग में सम्मिलित था। शिक्षित होने के कारण समाज की असमता का प्रभाव इस वर्ग को अधिक पड़ा। यह इस क्रांति के असली निर्माता थे। इन्होंने किसानों को नैतिक बल इन्होंने प्रदान किया। यह मध्यम वर्ग अन्य देशों में नहीं था। यदि था तो भी वह इतना प्रभावशाली नहीं है।

* 1789 से 1815 का काल :- क्रांति, युद्ध, सत्ता तानाशाह, सम्राट

* फ्रांस के किसानों की माली हालत यूरोप के किसानों से बेहतर थी। (इंग्लैंड के अलावा)

* निरंकुश शासन :- लुई 14 वाँ "मैं ही राज्य हूँ"। 18वीं शताब्दी को तर्क और सुधारों का युग कहा जाता है। यूरोप के अन्य देशों के सम्राट और शासक तर्क के इस युग से प्रभावित थे। इन शासकों ने अपने राज्यों में आवश्यकता अनुसार सुधार किये। (फ्रेडरिक महान - प्रशा, मारिया थरेसा - आस्ट्रिया, कैथरीन महान - रूस आदि) परन्तु फ्रांस में ऐसा नहीं हुआ। इसीलिए फ्रांस की क्रांति हुई।

फ्रेडरिक महान - प्रशा
मारिया थरेसा + आस्ट्रिया
कैथरीन महान रूस

इंग्लैंड की स्थिति यूरोप के अन्य देशों की तुलना

* डेव ... यूरोप [illegible]
* [illegible]

(10) आर्थिक संकट : फ्रांस मे दरबार की विलासिता व लड़े गये युद्धो के कारन फ्रांस का राजकोष खाली होगया। इससे फ्रांस आर्थिक संकट की कगार पर खड़ा था/ पेरिस व अन्य मुख्य शहरो मे खाद्यान्नो की कमी रोटी के लिए दंगे हो गये। लुई 16 वी की पत्नी मेरी ~~[illegible]~~ एन्तोइनेट थी " जब रानी को कहा कि लोगो के पास खाने के लिए रोटी/ब्रेड नही है तो रानी ने कहा उन्हे केक खिलाओ) इसप्रकार जनता की स्थिति खराब थी राजा/शासक उसका पक्ष नही था

* इस आर्थिक संकट ने भी फ्रांस की क्रांति मे जन्म दिया।

@ फ्रांस की क्रांति फ्रांस मे इसलिए हुई कि फ्रांस पूरे यूरोप मे ऐसा था मिट्टी इतनी उपजाऊ थी जिसमे क्रांति के बीज बोये जा सकते थे तथा वे आसानी से उग भी सकते थे।

* **फ्रांस की क्रांति के कारण :-** (1) सामाजिक (2) राजनैतिक (3) बौद्धिक (धार्मिक) कारण (4) आर्थिक कारण।

* **सामाजिक कारण :** फ्रांस की क्रांति निरंकुश सत्ता के विरुद्ध ~~[illegible]~~ कम, सामाजिक सत्ता के विरुद्ध अधिक। फ्रांस का समाज तीन वर्गों मे बंटा था। ~~(1) प्रथम स्टेट~~

1789 मे फ्रांस [illegible]

(1) प्रथम स्टेट :- धर्माधिकारी] (अभिजात)
(2) द्वितीय स्टेट :- सामन्त] सुविधाप्राप्त वर्ग (Previleged Class)
(3) तृतीय स्टेट :- सामान्य, - किसान व बुर्जुआ वर्ग।

* फ्रांस की जनसंख्या इस (2.5) मिलियन थी प्रथम व द्वितीय स्टेट जनसंख्या का 1% था/ इस 1% के पास फ्रांस की 40% भूमि पर अधिकार था/

* **प्रथम स्टेट** - धर्माधिकारी - फ्रांस मे चर्च के पास अपार धन सम्पत्ति थी धर्माधिकारियो के पास मध्ययुगीन अधिकार प्राप्त थे/ ये अधिकारी किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर नही देते थे/ स्ट्रेसबर्ग के आर्कबिशप की वार्षिक आय $300,000 (3 लाख डॉलर) थी एवं विलासिता सम्पन्न था/ चर्च की स्थिति राज्य के भीतर एक दूसरे राज्य की तरह थी

[illegible] सेना पलायन सैनिक प्रशासन के अधीन था

* **द्वितीय स्टेट :-** फ्रांस मे सामन्त एक वंशानुगत वर्ग था सामन्त कोई भी प्रत्यक्ष कर नही नहीं देते थे और कई अप्रत्यक्ष करो से छूट थी इनके पास आखेट/शिकार आखेट व मछली पकड़ने के विशेष अधिकार था/ इन्हे अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण से (कुलीन तंत्र)

वर्तमान समय मे भारत मे 100 परिवारो के भारत की 40% सम्पत्ति है

शासनाधारी पात्राधारी

आर्थर यंग - ट्रैवल्स इन फ्रांस (पुस्तक) — फ्रांस में भीषण निर्धनता, अपर्याप्त भोजन, तथा दुखद जीवन स्तर के चिह्न मिलते है

छूट मिली थी, इसके अतिरिक्त इन्हें सड़को पर श्रम (Corvee) करने की छूट मिली थी।

① कृषक
② श्रमिक
③ बुर्जुआ

③ तृतीय एस्टेट (किसान) - को तीन प्रकार से कर देने होते थे। वे राजा को सामन्तो को व चर्च को कर चुकाते थे।

सुविधाओ से वंचित

* राजा को कर (टेले) - जो भूमि कर था। जो कर निर्धारित नहीं था जो कि किसान की आर्थिक क्षमता पर निर्भर था। ② गैबेल :- यह नमक कर था। नमक बनाने का अधिकार राज्य का था। उस नमक को 10 गुणा कीमत पर बेचा जाता था। फ्रांस में 8 वर्ष से अधिक आयु होने के फ्रांसीसी को निश्चित मात्रा में नमक खरीदना आवश्यक था जो कि (7) पौंड प्रति वर्ष था। तथा यह प्रतिबंध लगा दिया कि वे नमक खारे पानी का उपयोग नहीं कर सकते थे,

* विंगटाइम (Vingtime) यह आय कर था जो प्रत्येक किसान को (5%) देना अनिवार्य था।

* कोरवी - (सड़को पर श्रम) - फ्रांस में सड़को का निर्माण किसानों का कर्तव्य माना जाता था।

* अविवाहित किसानो को अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण लेना अनिवार्य कर दिया (इससे बालविवाह होने लगे।)

* इसके अतिरिक्त किसानो को सामन्तो को भी एक भाग कर देना होता था। इसके अतिरिक्त सामन्तो की भट्टी, शराबखाना, बूचड़खाना, मीट आदि का उपयोग करते थे।

* सामन्तो को दिये जाने वाले कर को "बेनेलाइटस" कहा जाता था। इसके अतिरिक्त किसानो को चर्च को भेंट उपहार व अन्य उपहार आदि देने होते थे उन्हें "टिथ" कहा जाता था।

* बुर्जुआ वर्ग :- यह वर्ग फ्रांस की क्रांति का असली निर्माता था। यह सम्पत्ति की दृष्टि समृद्ध, शिक्षित, सम्पन्न था। इस वर्ग ने रूसो, वाल्तेयर आदि दार्शनिको के ग्रंथो का अध्ययन कर किसानो को क्रांति के प्रेरित किया।

कहावत "सामन्तो का काम युद्ध करना, धर्माधिकारियो का कार्य प्रार्थना करना व सामान्य वर्ग का कार्य भुगतान करना था।

* पादरी प्रार्थना करते थे कुलीन लोग युद्ध तथा जनसाधारण ...

* राजनैतिक कारण :- (1) निरंकुश शासन :- लुई 14 वाँ, 15 वाँ, 16 वाँ तक फ्रांस के शासक "मैं ही राज्य हूँ।" की नीति पर चले। फ्रांस का राजतंत्र पूर्णतः निरंकुश था तथा वर्साय इसका केन्द्र था। इस वर्साय में राजा व उसके सहयोगी, वर्साय में ऐशो आराम से रहते थे। वर्साय में 18 हजार लोग रह रहे थे। इनमें से 16 हजार राजा व परिवार के सेवक थे।

तथा राजनीतिक कर्तव्यो के प्रति उदासीन थे

सामन्त दो प्रकार ① शस्त्र धारी सामन्त - राजा के दरबार व सेवा में रहते थे
② वस्त्र धारी - अपनी जागीरो में रहते थे।

(हाशिये पर टिप्पणियाँ:)
इसके अन्तर्गत लघुत्तम व्यापारी से लेकर निर्धनतम कृषक, प्रबुद्धतम लेखक, ... तक शामिल थे
इस वर्ग में असंतोष का आधार यह कि पूरा वर्ग विशेषाधिकार रहित था तथा राजकीय करों का बोझ वहन करता था
नगर में काम करने वाले श्रमिकों का जीवन कष्टमय व दयनीय
1788-89 के दौरान कृषक एवं प्राकृतिक आपदाओं का शिकार बने
1788 फसल नष्ट
1789 - अभूतपूर्व
फ्रांस राजा स्वयं को दैविक अधिकार से शासक मानता था
वर्साय के महल की विलासिता
Feudal जागीर

लुई 14वें लुई 15वें को सलाह - मेरे बच्चे तुम अपने पड़ौसियों के साथ शांति से रहने का प्रयास करना, युद्धों के प्रति मेरी तरह चाव मत दिखाना, न मेरी तरह असमर्थित खर्च करना। जनता का ध्यान रखना

* लुई 15वें ...

इसमें 2000 दरबारी थी और अकेली मेरी एन्टोइनेत के 500 सेवक थी। इस दरबार की विलासिता पर (4) मिलियन प्रति वर्ष खर्च थी।

फ्रांस की क्रांति की पूर्व संध्या पर दरबारी की विलासिता पर $ 208 मिलियन डॉलर वार्षिक खर्च होता था। लुई 16वाँ मेरी एन्टोइनेत की प्रभाव में था (आस्ट्रिया)। यह मारिया थेरेसा की पुत्री थी जो [illegible] थी (पेटीकोट सरकार)

टेजन: कोई आश्चर्य नहीं कि लोग वर्साय के दरबार राष्ट्र का जीवित कब्रिस्तान कहते थे

* केन्द्रीय कृत शासन: फ्रांस का शासन पूर्णतः केन्द्रीयकृत था, व शासन की बागडोर वर्साय में "एक परिषद" के हाथ में थी। यह परिषद जनता पर ध्यान नहीं देती थी। केवल शासक की विलासिता पर ध्यान देती थी। वर्साय पेरिस से 12 मील दूर था। 285 किस्म प्रकार के कानून

* प्रशासनिक-न्यायिक व्यवस्था: फ्रांस में सभी राज्यों में नियम व कानून समान नहीं थी तथा 400 न्यायिक प्रणालियाँ कार्यरत थी। (कुछ में रोमन कानून, कुछ में पारम्परिक कानून) फ्रांस में कुल 400 प्रकार के थे [illegible]

* कानून राजा व प्रभावशाली व्यक्तियों के हाथ की कठपुतली। "बिना कोई कारण बताए किसी व्यक्ति पर [illegible]"

शासनिक व्यवस्था

* फ्रांस में प्रतिनिधि सभा का अभाव: पेरिस व अन्य नगरों में 13 पार्लियामेंट थी। यह एक न्यायिक संस्था थी, जो सम्राट के आदेशों को कानून पुस्तकों में लिखने का काम करती थी। कानून पुस्तकों में लिखने के बाद ही राजा के आदेश ही कानून बनते थे।

* स्टेट्स जैनरल: यह तीनों एस्टेट्स की संस्था थी (पादरी, सामन्त, सामान्य) राष्ट्रीय संकट की परिस्थिति में इसकी मिटिंग आहूत करता था। तीनों एस्टेट्स के सदस्य पृथक बैठकर विचार-विमर्श करते थे। स्टेट्स जनरल का निर्णय ~~सम्राट~~ राजा पर बाध्य नहीं होता था।

* इस संस्था की स्थापना सम्राट फिलिप द्वारा 1302 में स्थापित, जिसकी अन्तिम बैठक 1614 ई. में हुई।

शासनिक केन्द्रीयकरण
(इन्टेन्डेन्ट) जनरल लिटि में ...
स्थानीय स्वशासन की ...

* अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव: लिफायते के नेतृत्व में अमरीका भेजी गयी थी। वह समानता व स्वतंत्रता का संदेश लेकर आया।

फ्रांस की क्रांति की वैचारिक पृष्ठभूमि बनाने में

* बौद्धिक कारण / दार्शनिकों का प्रभाव: जनता के सामाजिक व आर्थिक असंतोष को वाणी प्रदान की [illegible]

(1) वाल्तेयर: (1694-1778) एक दार्शनिक कवि, साहित्यकार, नाटककार [illegible] था। वह प्रशा के फ्रेडरिक महान व रूस की कैथरीन द्वितीय महान का व्यक्तिगत मित्र था। उसने 1718 में "ओडीप" नामक [illegible] चर्च आलोचक इतिहास लिखा। चार वर्ष बाद एक कविता लिखी हेनरियाड

बुद्धि युग, प्रबोधन युग ... बुद्धि की स्वाधीनता ... विचार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ... प्रबल समर्थक था ... ईसाई धर्म ... आलोचक इसमें अनुदार चर्च, आडम्बर, असहिष्णुता व पूर्वाग्रह युक्त मान्यताओं की

* वह देववाद (यूरोप में प्रबोधन युग प्रचलित हुई एक धार्मिक विचार धारा था 1710 में इंग्लैण्ड में, यह प्रकृति धर्म के यानि प्रकृति में अन्तर्निहित ईश्वर को मानता है जो ब्राह्माण्ड की सभी शक्तियों के नियमों का कारक है

and agonist - उसने इसमें उस और ईसाई कहा। वह उस राज्य से निष्कासित कर दिया। उसने वह लम्बे समय तक इंग्लैण्ड में जहाँ इंग्लैण्ड के समानता पुस्तक - Philosophical letters on the english" (लेटर्स मानदि इंग्लिश) इसे जलाने का आदेश, तथा उसने Candide पुस्तक लिखी। तथा फ्रांस की क्रांति के समय धर्माधिकारी के खिलाफ बना संविधान वाल्टेयर के सिद्धांत पर आधारित उसका सिद्धान्त विध्वंसात्मक माना गया। वह कहता है कि जो पुरानी संस्थाएं उनको पूर्णतः बदल का देना चाहिए (सामाजिक आविष्कार) तथा नई संस्थाओं का विकास किया जाए। * राजतंत्र का विरोधी नहीं था वह प्रबुद्ध तथा शुभकारी निरंकुशवाद का समर्थक था वह प्रजातंत्र में आस्था नहीं रखता था। उसका कहना है वह सैकड़ों चूहों की बजाय एक शेर द्वारा शासित होना पसंद करें

मांटेस्क्यू

दूसरी पुस्तक पर्शियन लेटर्स इसमें फ्रांस के समाज व्याप्त विषमताओं भ्रष्टाचार व धार्मिक अविद्या को लिखा

*मांटेस्क्यू (1689-1755) एक राजनैतिक विचारक था। ब्रिटिश राजनैतिक व्यवस्था व लेखों से प्रभावित था तथा ~~स्प्रिट~~ स्पिरिट ऑफ लॉज पुस्तक लिखी जिसमें शक्ति पृथक्करण पर बल दिया। अमेरिका (राजनीति दर्शन की पुस्तक) इसमें शासन की विभिन्न पद्धतियों का जिसमें इंग्लैण्ड की संवैधानिक राजतंत्र को श्रेष्ठ व विश्व के अन्य देशों ने इसके सिद्धान्तों का पालन किया। वह शासन के निरंकुशता वाद के खिलाफ था व्हिग निरंकुशता वाद व (वह न्याय पालिका ... शीघ्र) लोकतंत्र के मध्य मध्यम मार्ग - जो ब्रिटिश संसदीय पद्धति है।

इसमें प्रजातांत्रिक सरकार की अवधारणा का प्रस्तुत किया।
(1) जनता की प्रभुसत्ता
(2) नागरिकों का समान अधिकार
*नैसर्गिक मनुष्य के अस्तित्व में विश्वास इसमें नारा प्रकृति की ओर लौटो
*एमिल पुस्तक में नवीन शिक्षा पद्धति की अनुसंशा बच्चों पर पूर्व निर्धारित कृत्रिम पाठ्यक्रम की शिक्षा नहीं लादनी चाहिए बल्कि स्वाभाविक रुचि के अनुसार शिक्षा तथा हस्त कला के लिए प्रेरित व व्यावहारिक ज्ञान पर बल देना

*~~जीन~~ जॉन जेम्स रूसो (1712-1778) रूसो का जन्म जिनेवा में हुआ परन्तु मूलतः फ्रांसीसी था उसने राजनैतिक चिंतक की क्रांतिकारी व महत्वपूर्ण रचना "सामाजिक अनुबंध" (Social Contract) पुस्तक लिखी, इसने सामाजिक (समझौता सिद्धान्त) इसने फ्रांस की क्रांति को एक नारा दिया - स्वतंत्रता, समानता व भ्रातृत्व बंधुत्व का नारा दिया सामाजिक समझौता। फ्रांस की बाइबिल है। रूसो ने राज्य के संचालन में जन इच्छा पर बल दिया।
उसकी अन्य कृतियों में एमाइल, कन्फेशन्स, डायलाग, रेवरीज आदि। रूसो को आधुनिक जनप्रजातंत्र का संस्थापक माना जाता है।
" प्रकृति की ओर लौटो का नारा दिया। संविधान में / राज्य में मानव की इच्छा को शामिल करना चाहिए * निबंध डिस्कोर्स आन आर्ट्स एंड साइंस

*ज्ञान कोष लेखक / Encyclopedists - दिदरो, ~~होलबाख~~ हॉलबेक, हुमरस ईसाई Rousseau - 17 अध्याय में ज्ञान कोष लिखा गया। हॉलबेक - धर्म के नाम पर इतिहास में खून-खराबा हो रहा है तथा होलबैकों व राजनैतिक व धार्मिक ~~नदियों में~~ आँसुओं ने नदी धाराओं में तब्दील कर दिया।

मांटेस्क्यू ने ब्रिटेन के संघ को सम्मान पूर्ण बताई जनता (क्योंकि उच्च सदन व निम्न सदन दोनों थे) जब तक ... न्याय पालिका स्वतंत्र थी

राष्ट्रीय खर्च
राष्ट्रीय प्रभाव से अधिक था
[illegible]

वित्तीय संकट
आर्थिक कारण :- फ्रांस की राज्य की आय व सम्राट की आय में कोई अन्तर नहीं था। राज्य की आय को राजा अपनी निजी आय मानते थे। ~~राज्य में~~ राजस्व की वसूली से पूर्व राजा व मंत्री उस आय को खर्च कर देते थे। फ्रांस में बजट, लेखांकन व अंकेक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी। दूसरी ओर दरबार की विलासिता व फ्रांस द्वारा लड़े जाने वाले युद्ध जारी रहे। फ्रांस में आय के दो स्रोत - (1) कर व्यवस्था :- सामान्य जनता की आय का 50% कर के रूप में देते थे। इन करों के बोझ से सामान्य वर्ग किसानों का रक्त सफेद हो चुका था। यानि अब कर नहीं लगा सकते थे।
(2) वित्तीय संस्थाएँ :- फ्रांस में कई निजी संस्थाएं थी जो राज्य को (ऋण उपलब्ध) करवाती थी, लेकिन जो राज्य सरकार ऋण चुकाने में असमर्थ होने के कारण वित्तीय संस्थाओं ने लोन लेने से मना कर दिया।
फ्रांस आर्थिक संकट की कगार पर खड़ा था। इससे यदि सामंत व पादरी कर देने से राजी हो जाते तो फ्रांस की आर्थिक संकट दूर हो जाता।
फ्रांस का राजतंत्र सामन्तों व धर्माधिकारियों के दो स्तम्भ पर खड़ा है
"Not a revolution misere, but of plenty"
* यदि यह राज्य का जहाज इस ~~संकट~~ आर्थिक संकट की चट्टान से टकरा जायेगा तो ~~इस जहाज~~ इसमें बैठे सभी डूब जायेंगे।
पेरिस व अन्य नगरों में रोटी के लिए दंगे हो रहे

[illegible] की घोषणा
न दिवालियापन न करो
वृद्धि और न अधिक ऋण
कृषि उद्योग व वाणिज्य
उदारीकरण द्वारा समृद्धि
वृद्धि की जाये तथा राज्य
मितव्ययता खर्चों में

* **फ्रांस के प्रमुख वित्त मंत्री, तुर्गो** (1774-76) - यह वॉल्तेयर का व्यक्तिगत मित्र था। उसने बेगारी प्रथा को समाप्त करने तथा धान का कर मुक्त समाप्त करने सुझाव दिया। सामन्तों के विरोध के कारण हटा दिया गया। वह सुविधाभोगी वर्ग के लोगों को पेशान [illegible]

नेकर 1781 ई.
[illegible] वार्षिक आय
+ वार्षिक खर्च के [illegible]
[illegible] कारिक [illegible]

* **जेम्स नेकर** : यह बैंकर व स्विट्जरलैण्ड था। इसने अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम के लिए राज्य को ऋण उपलब्ध करवाया। उसने राज्य की आय व व्यय का लेखा तैयार ~~किया~~ करवाया तथा इसके पैम्फलेट तैयार करवाये। मंत्री [illegible] ने [illegible]
* यह फ्रांस का सबसे लोकप्रिय वित्त मंत्री था। इसे तीन बार वित्त मंत्री [illegible] यह प्रोटेस्टेंट था। (सामन्त [illegible] विरोधी)

खर्चों में कटौती के [illegible]
[illegible] में नहीं था और सभी [illegible]
[illegible] चाहता था वह [illegible]
[illegible] लेने की [illegible]
[illegible] था। [illegible]
[illegible]

* **कैलोन** - (1783-87) इसने सामन्तों पर कर लगाने का सुझाव दिया। राजा ने सामन्त सभा की बैठक बुलायी इसमें 144 सदस्य थे। इस सभा ने सुझाव दिया। सामन्तों [illegible] ऋण लेने के लिए अमीर दिखाई देना जरूरी है और अमीर दिखने के लिए खुले हाथ खर्च करना चाहिए। [illegible] अब फ्रांस की [illegible] को [illegible]

* असेम्बली ऑफ नोटेबल्स - 1787 फ्रांस के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सभा थी जिसमें 144 सदस्य ... पर कर नहीं लगाया जाए. (2) कार्वी लागू नहीं किया जाए। (3) कैलोन को पद से हटा दिया जाए (4) वित्तीय स्थिति पर विचार करने के लिए एस्टेट्स जेनरल की बैठक बुलाई जाए।

*** एम० ब्राइन :** (1787) इसके काल में सम्राट व पार्लिमा के बीच विवाद हो गया। पार्लिमा ने कर पद्धति व ऋण सम्बन्धी आदेशों को कानूनों की पुस्तकों में लिखने से मना कर दिया। राजा ने पार्लिमा को भंग कर दिया। तथा इसे पदच्युत कर नेकर को वित्तमंत्री नियुक्त किया गया। नेकर ने फ्रांस को आर्थिक संकट से बचाने के लिए स्टेट्स जेनरल की बैठक बुलाई जाए। जुलाई, 1788 में स्टेट्स जेनरल की बैठक आहूत करने की का निर्णय लिया। (यह 1614 में इसके पूर्व) तथा बैठक में सदस्यों की व्यवस्था - 3 : प्रथम व द्वितीय स्टेट्स के बराबर तृतीय होगा।

5 मई, 1789 को स्टेट्स जनरल की बैठक की उद्घाटन (अधिवेशन प्रारम्भ) समारोह हुआ।

(1) इसमें तृतीय स्टेट्स के सदस्य एक स्थान पर बैठक करें, की मांग की। (परम्परागत ...)

(2) बहुमत से (प्रत्येक एक ही मत मानकर) लिया गया निर्णय राजा को मान्य होना चाहिए।

* यह मांग राष्ट्रीय संकट बन गया। अगले पाँच सप्ताह तक गतिरोध बना रहा।

* 17 जून, 1789 को तृतीय स्टेट्स ने (प्रथम दोनों स्टेट्स की हठधर्मिता से परेशान होकर) अपने आपको राष्ट्रीय सभा के रूप (सदन की) घोषणा की (क्रांति का प्रथम संकेत) तथा अपनी अलग से बैठक बुलाना चाहते थे।

* 20 जून 1789 राष्ट्रीय महासभा ने बैठक बुलाई रखी जिस दिन बैठक होनी थी तब (सभा कक्ष) सैनिकों ने उन्हें रोक दिया तथा हॉल पर ताला लगा दिया। तथा (बाल्कोनी कालिया ...) इस हॉल में जाने से रोक दिया। तब तृतीय राष्ट्रीय सभा ने टेनिस कोर्ट में एकत्रित हुए तथा जॉन बेली ने इसका नेतृत्व किया। उसी के नेतृत्व में राष्ट्रीय सभा का आयोजन टेनिस कोर्ट में हुई। इसमें राष्ट्रीय सभा के सदस्य ने शपथ ली जिसे टेनिस कोर्ट की शपथ कहते हैं "हम जब तक (जब तक राज्य का संविधान ... नहीं होगें) यहाँ से नहीं हटेंगे तब तक हम फ्रांस को हम संविधान न दे दें।

* एकत्रित राष्ट्र किसी के आदेशों का पालन नहीं करेगा - जॉन बेली

* 23 जून, 1789 सम्राट ने एक विशेष शाही सत्र का आयोजन किया जिसमें दो घोषणा की - (1) राष्ट्र सभा की गतिविधियों को अवैध घोषित किया (2) तीनों एस्टेट्स की पृथक सभा आयोजित की जाये।

डेविड थॉमसन - रिवोल्ट ऑफ नेपोलियन / Oath - शपथ

फ्रांस में हर चाय के टेबल फ्रांस की क्रांति का केन्द्र बन गया। (यहाँ दार्शनिक ...)

* लैत द केशे किसी भी व्यक्ति को बिना कोई कारण बताए, वारण्ट जारी कर के जिसे लैतर द केशे कहा जाता है, गिरफ्तार किया जा सकता और बिना किसी अभियोग के अनिश्चित काल तक जेल में रखा जा सकता था।

* 25 जून, 1789 - प्रथम व द्वितीय स्टेटस के कई सदस्य राष्ट्रीय सभा में शामिल हो गये। (प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय संविधानिक महासभा की इकाई के रूप में स्वीकार)
* राजा ने तीनों एस्टेट्स के
* 27 जून राजा ने सम्मिलित बैठक बुलाई बुलाने का आदेश दे दिया (यह क्रांति की प्रारम्भिक विजय थी)

* 11 जुलाई को नेकर को पद से हटा दिया तथा उसे देश छोड़ने का आदेश दिया। लुई 16वें के इस कदम का सामान्य जनता ने कड़ा विरोध किया तथा पेरिस में दंगे हो गये (लुई की सबसे बड़ी राजनीतिक भूल)

बास्तील का पतन
(इसने के बर्बर पतन) * 14 जुलाई, 1789 - पेरिस में बास्तील के जेल में आग लगा दी गई। यह जेल बूर्बो वंश की निरंकुशता व अत्याचार का सूचक था। इस दिन को "बास्तील दिवस" फ्रांस का "राष्ट्रीय दिवस" मनाया जाता है (स्वतंत्रता दिवस)
कामीय देमूले के उत्तेजक भाषण के बाद पेरिस की भीड़ इकट्ठी हो गई, भीड़ की एक टुकड़ी ने पेरिस के पूर्व में स्थित बास्तील पर आक्रमण कर दिया

* फ्रांस की क्रांति का घटना क्रम :- (1789 - 1799) : फ्रांस की क्रांति के
* कम्यून सरकार
इस घटना क्रम में राजनैतिक संस्थाओं के नेतृत्व में क्रांति का नेतृत्व हुआ। प्रमुख संस्थाओं में
(1) राष्ट्रीय सभा (1789-91) (2) विधान निर्मात्री सभा (1791-92) (3) राष्ट्रीय सम्मेलन :- 1792-1795 (Convention) (4) डायरेक्टरी / निर्देशक मण्डल

I - 300
II - 291
III - 610
1201 सदस्य

* राष्ट्रीय सभा :- (1) सम्राट और राष्ट्रीय सभा के बीच संघर्ष
(2) प्रशासनिक सुधार
(3.) नया संविधान

Red	White	Blue

(1) सम्राट व राष्ट्रीय सभा के बीच मतभेद :- 17th June, 1789 में तृतीय एस्टेटस ने अपने को राष्ट्रीय सभा घोषित किया। 20 जून टेनिस कोर्ट शपथ (3) 23 जून - सम्राट ने विशेष शाही सत्र का आयोजन - (4) 25 जून, प्रथम व द्वितीय एस्टेटस के कुछ सदस्य तृतीय में शामिल (5) 27 जून राजा ने सम्मिलित बैठक बुलाने का आदेश (6) 11 जुलाई - नेकर को पदच्युत (7) 14 जुलाई बास्तील पतन (7) लफायते के नेतृत्व नेशनल गार्ड की स्थापना तथा नेकर को वित्त मंत्री बनाया गया (संख्या 48 हजार)

लाल, नीला, सफेद तीन रंग

एक तिरंगा झण्डा राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार किया।
* पेरिस में शाही नियंत्रण से मुक्त, एक नई स्थानीय सरकार कम्यून का गठन

लेटर दी केचे - यह एक शाही आदेश था, जिसके आधार पर किसी को भी बिना मुकदमा चलाये बंदी बनाया जा सकता था।

सुधारों की माँग के प्रतिवेदन तैयार किये * इन प्रतिवेदनों को "काहिए" कहा जाता था। (स्टेट्स जनरल के प्रतिनिधि 50,000 इस्तावेज के सहित)

पेरिस में यह खबर फैल गई कि उक्त कार्यक्रम रानी एन्तोइनेत के कहने पर फ्रांस के झण्डे (तिरंगे) पैरों से कुचला गया।
* लुई 16वें ने फ्लेन्डर्स से शाही सेना बुलाई गई, 1 Act. को जनता में यह अफवाह फैल गई की राजा ने शाही सेना के स्वागत में एक भोज का आयोजन कर रखा है।

* वर्साय की ओर महिलाओं का प्रयाण -
* 5 अक्टू. 1789 में लगभग 5,000 से छह हजार महिलाओं ने पेरिस से वर्साय से मार्च किया। (कृषि औजार व लाठी हाथ में लेकर)। इनकी सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय गार्ड साथ-चल रही थी (इसे वर्साय मार्च कहा जाता है।) रोटी, रोटी का नारा लगा रहे
* 6 अक्टू. 1789 ने इन महिलाओं ने वर्साय से पुनः पेरिस मार्च किया। इनके साथ ही लुई-16वें व मेरी एन्तोइनेत व उसके पुत्र को बंदी बनाकर लाया गया।
* राजा व उनके परिवार के सदस्यों को ~~ट्यूलरी~~ टिवल्री / टिवलरी के (Twileries) महल में (पेरिस) में बंदी बनाया गया।
* 10 दिन पश्चात राष्ट्रीय सभा को पेरिस स्थानान्तरण कर दिया गया।

(2) प्रशासनिक सुधार :- राष्ट्रीय सभा का सत्र अगस्त में प्रारम्भ हुआ। इसे "अगस्त दिवस" कहते है। 4 अगस्त की रात-भर राष्ट्रीय सभा का सत्र चला तथा एक ही रात में **30 प्रस्ताव पारित किये।** प्रमुख सुधार :-
(1) सामन्तों की सुविधाएँ समाप्त कर दी गई। - अब फ्रांस में सुविधा प्राप्त व सुविधा हीन वर्ग समाप्त तथा ~~सुविधा वाहिन~~ पदों की बिक्री पर रोक समाप्त की घोषणा की गई।
(2) समान प्रशासनिक व्यवस्था :- पुरे फ्रांस को 83 विभाग (प्रांत) में विभाजित किया। इन्हें कैंटन (जिला) तथा कम्यून्स (Communes) (स्थानीय शासन) में विभाजित किया गया। शासन को चलाने के लिए निर्वाचित संस्थाओं का गठन किया गया। न्यायिक अधिकारियों के लिए भी निर्वाचन की व्यवस्था प्रक्रिया लागू कि गयी। (यानि पुरातन व्यवस्था समाप्त कर) (यह राष्ट्रीय सभा की सबसे बड़ी भूल)।
(3) समान कर प्रणाली लागू :- वित्तीय संकट से बचने के लिए "AS-सिग्नेट" असियाँ (पेपर करन्सी) लागू की गई (कागजी मुद्रा का प्रचलन) वित्तीय संकट का समाधान
(4) चर्च की सुविधाएँ समाप्त कर दी (1) चर्च को राज्य के अधीन किया गया। (2) चर्च को राज्य का विभाग बना दिया गया। (3) चर्च की सम्पति को जब्त कर दिया गया (4) धर्माधिकारियों के लिए वेतन की व्यवस्था की गई। (5) वाल्टेयर के सिद्धान्तों पर आधारित धर्माधिकारियों का संविधान लागू जिसे ~~सिविल संविधान~~ नागरिक संविधान कानूनी संविधान पादरी वर्ग के लिए। (Civil Constitution for the Clergy) तथा इन्हें नकद वेतन देना। पादरियों का नागरिक संविधान (12 जुलाई) स्टेटनागरिक (राज्य के अन्तर्गत) चुनाव जनता द्वारा
(5) राष्ट्रीय भावना का सुदृढ़ीकरण - राष्ट्रीय शिक्षा, राष्ट्रीय सैनिक सेवा, राष्ट्र भक्ति - आदि - यो शब्द - राष्ट्रीय आत्मनिर्णय की ओर के लिए प्रेरित

इसने निरंकुश राजतंत्र तथा विशेषाधिकार युक्त सामाजिक व्यवस्था ... पुरातन व्यवस्था को समाप्त कर दिया (2) फ्रांस में क्रान्तिकारी व्यवस्था ... पर आधारित नयी प्रशासनिक एवं राष्ट्रीय ढाँचे की नींव रखी

* पोपपायस षष्ठम ने

* सभी धर्माधिकारी को इस संविधान के प्रति शपथ लेना अनिवार्य कर दिया।

इससे धर्माधिकारी दो भागों में विभाजित —(1.) न्याय सभ्य पादरी (संविधान के प्रति शपथ ली)
(2) न्याय असभ्य पादरी

*(6) नागरिक अधिकारों की घोषणा :- 27 अगस्त, 1789 को मानव व नागरिकों अधिकारों की घोषणा की गई। यह घोषणा समानता व स्वतंत्रता के सिद्धान्त पर आधारित थी। यह फ्रांस की पुरातन व्यवस्था का मृत्यु-प्रमाण पत्र सिद्ध हुआ। (यह राष्ट्रीय सभा की सबसे बड़ी उपलब्धि) यह फ्रांस का 'मैग्नाकार्टा' कहलाता है। यह घोषणा नेपोलियन की सभी सेनाओं के अधिक अस्त्र थी। (लार्ड एक्टन)

(7) नया संविधान :- राष्ट्रीय सभा के दो प्रमुख नेता मिराबो व सियेस (Sieyès) ने मिलकर संविधान तैयार किया। 1791 ई. में राजा ने स्वीकार कर लिया, संविधान लागू किया। यह संविधान अब फ्रांस का कानून बन गया। यह फ्रांस का लिखित संविधान (प्रथम) था। यूरोप के किसी देश का प्रथम लिखित संविधान।

संविधान की विशेषताएँ :- (1) फ्रांस में राजतंत्र स्थापित रहेगा। (2) यह एक संवैधानिक व सीमित राजतंत्र रहेगा। (3) कार्यकारी (अध्यादेश) अधिकार सम्राट में निहित रखे। (4) राजा को स्थगनात्मक/आंशिक वीटो का अधिकार होगा। (5) एक सदनीय विधान सभा (निर्माणी) गठित की गई। जिसमें लगभग - 750/745 सदस्य होंगे। (6) केवल सक्रीय नागरिकों को मताधिकार मिलेगा। (7) (दो नागरिक सक्रीय व निष्क्रिय) - सक्रीय नागरिक जो लोग कर देते थे।

* राजा के नागरिक एवं सैनिक प्रशासन सम्बन्धी अधिकारों को नगण्य प्राय की

(left margin: * राज्य की विधायी, कार्यकारी व कानून के न्यायिक शक्ति पर आधारित शक्ति पृथक्करण; सभी स्तरों पर जनों के चयन की व्यवस्था; कार्यकाल की अवधि दो से चार वर्ष तक सीमित)

* जून, 1791 - लुई 16वें ने अपने परिवार सहित पेरिस से भागने का प्रयास किया। लेकिन 21 जून फ्रांस की सीमा पर "वारेन्स" नामक स्थान पर बंदी बना दिया। तथा पुनः पेरिस महल में बंदी रखा गया।

* विधान सभा :- (निर्माणी) (1791-92) :- 30 सित. 1791 को राष्ट्रीय सभा को भंग कर दिया। 1 Oct. 1791 को (दो वर्ष)
लगभग - 745 सदस्यों की नई विधान सभा का सत्र प्रारम्भ हुआ।

(1.) कि सम्राट व विधान सभा के बीच विवाद।

(2.) एमिग्रे (फ्रांस छोड़कर भाग जाये सामन्त) की गतिविधियाँ।

(3.) विदेशी हस्तक्षेप

इंग्लैण्ड में 1215 ई. में मैग्नाकार्टा नाम से मानवाधिकार की घोषणा।

* विधान सभा व राजा के मध्य मतभेद :- नई विधान सभा में दो दल (1) जिरोन्दिस्ट के नेतृत्व में नई संविधान के पक्ष में था।

दूसरा दल डेन्टन, कार्नेट, ~~रोबसपियर~~ रोब्सपियर आदि गणतंत्र के पक्ष में थे।

विधान सभा ने दो कानून पारित किये - (1) न्याय असमर्थ पादरियों के लिए शपथ लेना अनिवार्य (2) देश छोड़कर जाने वाले सामन्तों को वापस लौटने का आग्रह अन्यथा उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी। राजा ने इन दोनों कानूनों के विरुद्ध वीटो का प्रयोग किया।

(2) एमिगर्स की गतिविधियाँ :- लुई 16 वें के भाई आस्ट्रियोंस का शासक (चार्ल्स-10 दशम के नेतृत्व में फ्रांस की सीमा पर कोब्लेन्ज नामक स्थान पर सभी एमिग्रे एकत्रित हुये। इन्होंने फ्रांस में स्वयं के लिए समर्थन जुटाने का प्रयास किया। विदेशी देशों से फ्रांस में हस्तक्षेप करने के लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया।

* आस्ट्रिया-प्रशा सेयुक्त प्रेमाकमांडर ब्रुन्सविक ने घोषणा फ्रांस के राजा-रानी या राजपरिवार के किसी भी सदस्य को नुकसान पहुँचाया तो पेरिस को नष्ट किया जायेगा।

(3.) विदेशी हस्तक्षेप :- मेरी एन्टोइनेट ने अपने भाई लियो पॉल-द्वितीय से सहयोग (आस्ट्रिया सम्राट) से मदद मांगी। आस्ट्रिया व प्रशा ने सम्मिलित घोषणा की जिसे 'पिल्नीट्स' की घोषणा - जिसमें कहा फ्रांस में पुन: राजतंत्र स्थापित किया जाए अन्यथा आस्ट्रिया व प्रशा फ्रांस पर आक्रमण करेंगे। 1792 ई. में आस्ट्रिया व प्रशा ने फ्रांस पर आक्रमण किया। इस संकट की घड़ी में "डेन्टन" ने नेतृत्व अपने हाथों में लिया तथा उसने शाही वर्ग का कत्ले आम करने की नीति अपनायी। 10 अगस्त 1792 को लुई 16 वें को निलम्बित कर दिया। सित. के महीने में हजारों शाही वर्ग का कत्ले आम किया। इसे सितम्बर कत्ले आम कहते हैं।

×(डेन्टन "दुश्मन को रोकने के लिए एक बड़ी ताकत है। यहाँ के शाही वर्ग में आतंक फैलाओ)

* इस प्रकार डेन्टन ने परिस्थितियों पर काबू पा लिया।

* फ्रांस का नया संविधान - 1791 का संविधान असफल हो गया, तब राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

(4) राष्ट्रीय सम्मेलन :- 20 सित. 1792 राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारम्भ तथा 1795 ई. तक सम्मेलन की बैठकें होती रहीं। इसमें दो पार्टियाँ थीं।

(1) Girondins (जिरोन्दिस्ट) - यह फ्रांस के द. प. में जिरोन प्रांत में रहते तथा यह उदार गणतंत्रवादी थे। ~~ब्रिसट~~ ब्रिसो, कोंडोर्से, आइनोट प्रमुख नेता।

(2) Jacobins (जैकोबिन) - यह उग्र क्रांतिकारी थे यह फ्रांस में सामाजिक एवं राजनैतिक प्रजातंत्र स्थापित करना चाहते थे। कॉरनेट, डेन्टन, रोब्सपियर आदि प्रमुख नेता थे।

Reign - रो.
आतंक

(1) राजा के विरुद्ध मुकद्दमा एवं मृत्युदण्ड (दिस,1792 – जन.1793)
(2.) आतंक का युग (1793-94)
(3) राष्ट्रीय सेना का गठन (4) अन्य सुधार (5) चर्च के प्रति नीति
(6) नया संविधान

* राजा के विरुद्ध मुकदमा व मृत्युदण्ड : (1) राजा पर तीन आरोप लगाये
(1) राजा विदेशी शक्तियों से मिला हुआ है तथा मेरी एन्तोइनेत ने गुप्त ~~कागजात~~ दस्तावेज विदेशी शक्ति को सौंपा (2) राजा न्याय असमर्थ अधिकारियों के साथ संदेहयुक्त रखता है लुई 14वाँ

* यह आरोप सही पाये गये / तब 387 : 334 मतों से राजा को मृत्यु दण्ड सुनाया /

* 21 जनवरी, 1793 (रविवार) को राजा को गिलोटिन कर दिया गया/
*गिलोटिन :- डॉ. गिलोटिन के सुझाव पर यह कर्तन यंत्र था जिसके द्वारा सिर से धड़ अलग कर दिया जाता था वह भारी ब्लेड थी/

* रोब्सपियर ने कहा "राज्य को जीवित रखने के लिए राजा को मरना होगा"
* फ्रांस एवं यूरोप में (इंग्लैंड आदि) ने इसका विरोध किया/

* आतंक का युग : रोब्सपियर ने सत्ता अपने हाथ में ली/ 9 मार्च 1793 में क्रांतिकारी न्यायालय की स्थापना से आतंक का युग प्रारम्भ हुआ / इसके अन्तर्गत दो कदम उठाये गये -
(1) जन सुरक्षा समिति (नागरिक सुरक्षा / सामान्य सुरक्षा) :- सभी कार्यकारी अधिकारी इस समिति में निहित तथा आन्तरिक व विदेश नीति पर रोब्सपियर का नियंत्रण हुआ / इसमें प्रारम्भ में 9 सदस्य बाद में 12 सदस्य प्रमुख - दांतो, रोब्सपियर, सेंट जस्ट, कार्नोट और दस्वां, इस समिति ने सारे प्रशासनिक अधिकार अपने हाथ में लिये
(2.) संदेह का कानून :
16 अक्टू., 1793 ई. को मेरी एन्तोइनेत को भी इसी संदेह के कानून के अन्तर्गत गिलोटिन तथा इस आंतक के युग में कुल 15,000 लोग गिलोटिन किये गये (पेरिस में 2 हजार)/

* 29 जुलाई 1794 को रोब्सपियर एवं ~~सहयोगी~~ उसके सहयोगियों की हत्या कर दी गयी/ उसे ~~थर्मोडोरियन~~ षड्यंत्र (थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया) कहा. यह क्रांतिकारियों का जुलाई का महीना था इसलिए थर्मोडिरियन कहा / तथा रोब्सपियर की मृत्यु के पश्चात आंतक का युग समाप्त हुआ/

* राष्ट्रीय सेना का गठन :- कॉरनेट के नेतृत्व मे राष्ट्रीय सेना का गठन इसमे 7 लाख 70 हजार सेना नायक, इसमे - 18 - से 25 वर्ष तक के युवाओ के लिए अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण लागू किया गया। रुगट ही लाई . . के कवि के मॉरसेलेस गीत को राष्ट्रीय गीत के रूप मे स्वीकार किया गया।

* अन्य सुधार :- (1) शिक्षा मे सुधार किये (2) फ्रांसीसी राष्ट्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम घोषित किया गया (3) दास प्रथा को समाप्त किया (4) जेष्ठता के सिद्धान्त को समाप्त किया। इसके अलावा फ्रांस मे एक क्रांतिकारी-कलेण्डर लागू किया गया। जिसमे 12 महीने मे 30 दिन तथा 10 दिन का सप्ताह रखा।

(हाशिये पर: × सम्पति मे पुत्री के साथ महिलाओ का अधिकार, × तौल माप की व्यवस्था मीटरी पद्धति किया लागू)

* चर्च के प्रति नीति :- रोब्सपियर चर्च मे विश्वास नहीं करता तथा आतंक के युग मे चर्च बंद कर दिये तथा धर्माधिकारियों के वेतन का देना बंद कर दिया गया। वि-ईसाईकरण या अखीस्तीकरण का प्रयास तथा विवेक शक्ति के धर्म को स्थापित किया।

(हाशिये पर: अनाज व अन्य वस्तुओ की कीमते निश्चित की गई)

* नया संविधान :- राष्ट्रीय सम्मेलन ने संव नया संविधान लागू किया जिसे डायरेक्ट्री कहा गया। इस नये संविधान की विशेषता (1) फ्रांस को गणतंत्र घोषित किया गया। कार्यकारी अधिकार पाँच डायरेक्टरो के हाथो मे निहित जिनकी नियुक्ति 5 वर्ष के लिए की गयी तथा द्वि सदनीय विधान सभा का गठन (1) पहला सदन निम्न सदन (जिसमे 500 सदस्य) (पाँच सौ का सदन) Five Hundreds - यह विधान बनाता था (2) दूसरा Ancien - पुरातनो का सदन (250 सदस्य) यह विधान को लागू करने तथा रद्द करने का कार्य करता।

(हाशिये पर: अन्य डायरेक्टरी SC निश्चित की, फ्रांस के प्रत्येक व्यक्ति को नागरिक के लाभ, मतदान का अधिकार सीमित (करदाता))

(फ्रांस के गणतंत्र का संविधान; निर्देशक मण्डल के साथ)

* दो तिहाई का कानून लागू किया गया :- इसमे 2/3 सदस्य विधान सभा मे राष्ट्रीय सम्मेलन के होंगे (750 सदस्य)

(4) डायरेक्ट्री :- निर्देशक मण्डल का शासन (1795 - 99) - इस नये संविधान मे 2/3 का कड़ा विरोध हुआ। जिससे पेरिस मे दंगे शुरू हो गये। इन दंगो को समाप्त करने नेपोलियन के नेतृत्व मे सेना भेजी जिसने दंगो का दमन किया। नेपोलियन रातो-रात लोकप्रिय हो गया। इन परिस्थितियो मे डायरेक्ट्री लागू की।

(1) डायरेक्ट्री असफल रहे अयोग्य रहे। - (प्रमुख कार्नेट,

(2) आंतरिक दुर्बलता :- कार्यकारी अधिकार पाँचो को दे दिये तब ये पाँचो कभी एक मत नहीं हुये तब आन्तरिक दृष्टि दुर्बलता।

(3) आर्थिक संकट :- पेपर करेंसी ज्यादा छापने से मुद्रा स्फीति बढ़ी जिससे फ्रांस मे आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ। इन परिस्थितियो मे नेपोलियन ने Sieyes नामक डायरेक्टर के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा - 9 व 10 नवम्बर को डायरेक्ट्री को उखाड़ फैंक दिया गया। ब्रुमेरियर का षड्यंत्र कहा गया। Brumaire - क्रांतिकारी कलेण्डर का नवम्बर का महीना था

(हाशिये पर, खड़ा लिखा: निर्देशक मण्डल का काल डायरेक्टरी का षड्यंत्र का काल)

* नेपोलियन ने Consulate (सलाहकारों की सरकार) गठित की जिसमें "नेपोलियन प्रथम सलाहकार" बना। डायरेक्ट्री का अन्त के साथ फ्रांस क्रांति का अंत हुआ।

* मैं इस क्रांति का पुत्र हूँ, तथा मैंने ही क्रांति का अंत कर दिया है। नेपोलियन

* फ्रांस की क्रांति के परिणाम : इस क्रांति में प्रलय भी था और सृष्टि भी - क्रांति ने एक ओर जहाँ निरंकुशता तथा विशेषाधिकार युक्त पुरातन व्यवस्था को नष्ट कर दिया और दूसरी ओर इसने लोकतंत्र समाजवाद व राष्ट्रवाद के नवीन विचारों पर आधारित आधुनिक युग आरम्भ

(1) राष्ट्रवाद का उदय (2) समान प्रशासनिक एवं न्यायिक प्रणाली (3) समान कर प्रणाली लागू की गयी (4) धर्माधिकारियों व सामन्तों की सुविधाएँ समाप्त कर दी गई। ~~राष्ट्रीय सभा~~ (5) राष्ट्रीय सेना का गठन (6) स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व का सिद्धान्त कल्पना साकार हुआ।

(Interlinear notes: व्यक्तिगत ... राजनीतिक ... / राष्ट्रीय आत्मा के स्थान राष्ट्रीय ... / विधि या कानून जन इच्छा की अभिव्यक्ति है, सम्पत्ति का अधिकार ...)

(Margin note: लेप्टाबिल नियम ... नाप-तौल की एक पद्धति मीट्रिक पद्धति — शैक्षिक सुधार)

(3) सैनिक अधिनायक वाद का उदय मार्ग प्रशस्त किया। (4) लोकतंत्र व व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतिष्ठापन (1) 27 Aug मानवीय अधिकारों की घोषणा (2) प्रथम लिखित संविधान (सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं प्रदान ...)

(5) वर्गभेद और सामाजिक ढाँचे का विनाश - 27 Aug 1789 मानव अधिकार व सामन्तवाद का प्रभाव सामाजिक वर्गों के विशेषाधिकार की समाप्ति

(6) समाजवादी चेतना का अभ्युदय (1) अन्न व अन्य वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण, मजदूरी निर्धारित

* कोर्डिलियर क्लब : उग्र सुधार वादी, इसके प्रमुख क्रांतिकारी सदस्यों में मारा, दांतो, हेबर्ट तथा कामील डेमूले थे। यह क्लब पेरिस के मजदूर वर्ग में लोकप्रिय था, फ्रांस में गणतंत्र के लिए कटिबद्ध था।

* जैकोबिन क्लब : फ्रांस का अत्यंत लोकप्रिय क्लब, फ्रांस की राजनैतिक घटना क्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, प्रारम्भ में यह क्लब नरम था लेकिन बाद में सुधार वादी (उग्र सुधारवादी)। इसका प्रमुख नेता रोब्सपियर था। फ्रांस के विभिन्न नगरों में 2000 शाखाएं थी। यह क्लब फ्रांस में विधान निर्मात्री सभा का प्रतिद्वंद्वी बन गया। (यह एक निजी संगठन)

(Note under heading: माउन्ट निरह ...)

* जिरोंदिस्त : विधान निर्मात्री सभा में एक महत्वपूर्ण वर्ग था, इस वर्ग के लोग फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना के समर्थक थे। इनका गणतंत्र वाद यूनान व रोम के क्लासिकल आदर्शों से प्रेरित था। प्रमुख नेता - ब्रिसो, बर्नियो, कन्डोरसे, तथा मदाम रोलाँ

* फ़ईयाँ : विधान निर्मात्री सभा में संविधान वादियों का एक वर्ग था, इसे फ़ईयां कहा जाता था।

* नेपोलियन बोनापार्ट * (मातृभाषा इटालियन)

जन्म, 15 अगस्त, 1769 में इटली के कोर्सिका द्वीप के आजासियो में हुआ।
इनके पिता चार्ल्स बोनापार्ट जो वकील थे। नेपोलियन के जन्म से कुछ समय पहले इस द्वीप को फ्रांस ने खरीद लिया। (तब नेपोलियन ने कहा - मेरा देश मर रहा था तब मैं पैदा हुआ) नेपोलियन सरकारी खर्चे पर फ्रांस के ब्रीन व पेरिस में सैनिक शिक्षा ग्रहण की। शिक्षा पूर्ण होने पर फ्रांस के तोपखाने में सैनिक अधिकारी नियुक्त हुआ।

* 1795 ई. में दो-तिहाई कानून से हुई दंगों को समाप्त करने के लिए नेपोलियन के नेतृत्व में सेना पेरिस भेजी। "वह आया, उसने देखा, और उसने जीत लिया"

* 1796-97 में आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली के अभियान पर भेजा गया। (आस्ट्रिया ... सम्मिलित)

* अभियान से दो दिन पहले 9 मार्च को जोसफीन से विवाह किया। (विधवा व उससे 6 वर्ष बड़ी थी) (कैम्पो-फार्मियो की संधि (आस्ट्रिया के ...)

(पत्नी/पिरामिड्स युद्ध (1798) मामलूकों पर नेपोलियन की विजय) * 1798-99 नेपोलियन को मिस्र के अभियान के लिए भेजा गया। (नेपोलियन मिस्र को विजय कर, भारत व टीपू के साथ मिलकर (भारत आक्रमण) वह यह अभियान बीच में छोड़कर ... (मिस्र इस समय तुर्की के सम्राट के अधीन था, लेकिन मिस्र में वास्तविक शासक मामलूक था)

(नील नदी युद्ध - पराजित) * Seiyes के साथ मिलकर Brumaire Coup की डायरेक्ट्री को समाप्त कर दिया तथा नेपोलियन प्रथम कॉन्सल बना। (10 वर्ष) 1802 में आजीवन काल के लिए प्रथम कॉन्सल बना। 1804 में वह सम्राट बना। (जनमत संग्रह)

× इसमें 35 लाख मत सम्राट के पक्ष में पड़े।

* 2 दिसम्बर, 1804 में राज्याभिषेक हुआ। उसने पोप के हाथ से मुकुट लेकर उसने स्वयं ताज पहना।

* उसने कहा मैंने फ्रांस के सम्राट का ताज जमीन पर पड़ा था इसे मैंने अपनी तलवार की नोक से उठाकर स्वयं पहना।

* नेपोलियन का राजतंत्र जनता की इच्छा पर आधारित था। यह बूर्बो वंश की निरंकुशता से बेहतर था।

नेपोलियन के काल को दो भागों में विभक्त (1) 1799-1804 प्रथम सलाहकार / प्रथम कॉन्सल

(2) 1804-1815 - फ्रांस का सम्राट (3) पतन - 1805-1815

* 1799-1804 :- प्रथम सलाहकार (कॉन्सल) :- मिस्र अभियान को बीच में छोड़कर नेपोलियन पेरिस आया, तथा उसने डायरेक्ट्री के सदस्य 'Seiyes' से मिलकर डायरेक्ट्री को St. Cloud ... कर दिया तथा कुछ समय बाद भंग कर दिया। तथा स्वयं प्रथम सलाहकार नियुक्त,

* फ्रांस की कार्यकारी सत्ता अब पाँच सदस्यीय संचालक मंडल के स्थान पर तीन सदस्यीय कॉन्सुलेट के पास आ गई।

× नेपोलियन कॉर्सिका ... क्योंकि वह फ्रांस के क्रांतिकारियों (1789-1799) की ... क्रांति की संतान ... शासक नहीं, इटली के ... जनता ... (left margin, vertical)

* उसके दो उद्देश्य -(1) सत्ता का केन्द्रीयकरण व सुदृढीकरण करना
(2) फ्रांस की क्रांति में जिन लोगों को हानि हुई उनके साथ समझौता करना।

फ्रांस का चौथा गणतंत्र आठवां वर्ष
(1) नया संविधान : कॉन्सलेट्स नामक नया संविधान लागू जिसमें कार्यकारी अधिकार प्रथम सलाहकार के हाथों में निहित रखे गये। उसको सहयोग करने के लिए द्वितीय व तृतीय सलाहकार (क्रमशः Sieyes व Ducos) नियुक्त किया। इसके अतिरिक्त 60 सदस्यों की सीनेट का गठन किया - जिनका कार्य प्रथम सलाहकार के आदेशों का पालन करना था। इस नये संविधान को फ्रांस की पूर्व संस्था पर लागू किया गया। (1799)

विधायी शक्ति
1) चार संस्थाओं
1) राज्यपरिषद
2) ट्राइब्युनेट
3) विधाननिर्मात्री
सीनेट

(2.) सत्ता का केन्द्रीयकरण : नेपोलियन का शासन पूर्णतः केन्द्रीकृत था। शासन संचालन के लिए प्रीफेक्ट्स, सब प्रीफेक्ट्स व मेयर्स नियुक्त किये जो प्रथम सलाह के प्रति उत्तरदायी था। पुलिस 'पेरिस व अन्य नगरों में पुलिस प्रशासन पूर्णतः केन्द्रीकृत था।
(नेपोलियन की तानाशाही बूर्बो वंश की तानाशाही से अधिक निरंकुश थी लेकिन जनता विरोध इसीलिए नहीं किया क्योंकि फ्रांस की क्रांति के (10 वर्ष) युन खराबे से परेशान जनता शांति चाहती थी, जिसका वादा नेपोलियन किया इसीलिए विरोध नहीं।

(3.) आर्थिक सुधार : (1) सरकारी खर्च में कमी की गई (कटौती)(मितव्ययता)
(2) राजस्व वसूली के लिए कठोर कदम उठाये
(3) राजस्व की बकाया सभी राशि वसूल करने का प्रयास
(4) योग्य अधिकारी नियुक्त किये गये। तथा भ्रष्ट अधिकारियों को हटाया।
(5) सन्-1800 ई. में बैंक ऑफ फ्रांस स्थापित किया।
बैंक ऑफ फ्रांस को नोट जारी करने का अधिकार
(6) 'फ्रैंक' नामक नई मुद्रा लागू की।
(7) एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी 'डोमेन' नामक फण्ड की स्थापना (इसमें युद्ध का खर्चा पराजित राष्ट्र को देना होता था, जिसे डोमेन फण्ड में रखा जाता तथा वार ऑफ डोमेन्टी - हर्जाना वसूल किया जाता)।

(4) एमिग्रेस के साथ समझौता : देश छोड़ कर भागने वाले एमिग्रेस को पुनः लौटने का आग्रह किया। उन्हें उनकी सम्पत्ति यदि बिकी न हुई तो उसे वापस लौटाने का वादा किया। योग्य सामन्तों को उच्च पदों पर नियुक्तियां दी गईं।

नेपोलियन ने कुल लगभग 40 युद्ध लड़े।

नवीन धार्मिक व्यवस्था

वह फ्रांस के पोप व असंतुष्ट कैथोलिक ईसाइयों का राजनीतिक समर्थन प्राप्त करने के लिए, लेकिन राज्य का नियंत्रण रखना

(7) पोप के साथ समझौता : Con Cordat पोप के साथ समझौता। (1801)

पोप पायस सप्तम के साथ यह समझौता

(क्योंकि फ्रांस कैथोलिक चर्च में विश्वास तथा कैथोलिकों का विश्वास प्राप्त करने के लिए)
(2) यह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था।)

नेपोलियन कहता :- लोग यह कहते हैं कि मैं पोप के प्रति सहानुभूति रखता हूँ तथा मैं मिस्र में मुसलमान था, इटली में मैं पोप विरोधी था।

इस समझौते की शर्तें : (1) पोप ने फ्रांस की क्रांति के कार्यों को मान्यता।

कैथोलिक ईसाई धर्म को राजकीय धर्म स्वीकार किया।

(2) पोप ने चर्च की सम्पत्ति जब्त करने की अनुमति दे दी।

(3) बिशप की नियुक्ति प्रथम सलाहकार के द्वारा की जायेगी जिसे पोप मान्यता देगा। (4) अन्य पादरियों की नियुक्ति अन्य अबिशप द्वारा।

(5) 1794 से वेतन की बकाया राशि धर्माधिकारियों को दे दी जायेगी।

(6) अन्याय असभ्य पादरियों को रिहा कर दिया।

(7) फ्रांस में सभी चर्च पुन: खोल दिये जाये।

नये धार्मिक ... फ्रांस सरकार के प्रति धार्मिक ... की शपथ

* न्यायिक सुधार : (1) कानूनों का संहिता बद्ध करने का कार्य किया।

(2) न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार प्रथम सलाहकार के हाथ में रखा।

(3) नेपोलियन ने नये कानून लागू किये :- सिविल कोड (नागरिक संहिता) या नेपोलियन कोड (2) Code of Civil Procedure (सिविल नागरिक प्रक्रिया की संहिता) (3) Code of Criminal Procedure (अपराधिक प्रक्रिया की संहिता) (4) ~~पैनल~~ Penal Code (दण्ड विषयक संहिता) (5) Code of Commercial Procedure (वाणिज्य की संहिता)

नेपोलियन का कानून : (1) व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार को स्वीकृति, व्यापक कोड (कारखाने) के स्वामित्व पर बल दिया जैसे सम्राट पर कारखाना पर स्वामित्व (परिवार पर पिता का पूर्णत: अधिकार)

(2) इसमें महिला को तलाक का अधिकार को स्वीकृति

(3) धार्मिक अधिकार से मुक्त कानून, कृषकों का भू-स्वामित्व, सामन्तवाद एवं विशेषाधिकारों को समाप्त

* (4) कानूनी समानता, पिता की सम्पत्ति में ... अधिकार

आलोचनात्मक : (1) इसमें महिलाओं को समान अधिकार इसमें नहीं दिये गये। (पति के नियंत्रण में) सम्पत्ति का अधिकार नहीं दिया

(2) दण्ड कठोर दिये जाते थे।

शिक्षा में सुधार :- (1) प्रत्येक कम्यून में प्राइमरी स्कूल स्थापित किया गया।

(2) प्रमुख नगरों उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित

इससे विद्यार्थियों के स्वतंत्र चिन्तन के विकास की प्रवृत्ति को प्रतिबंधित कर

(3) तकनीकी शिक्षा पर बल दिया गया।

(4) लाइसेंस (Lycees) (लाइसी) नामक अर्द्ध सैनिक (आवासीय) मिलिट्री स्कूल स्थापित।

(5) सन् 1800 विश्वविद्यालय स्थापित किया : जिसे यूनिवर्सिटी ऑफ फ्रांस रखा।

(6) शिक्षा को ईसाई धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित रखा।

× शिक्षा का उद्देश्य राज्य व्यवस्था को सुदृढ़ करना था न कि विद्यार्थियों का पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास

सेंट हेलेना डीप - नेपोलियन ने कहा कि मेरी वास्तविक कीर्ति इस बात में नहीं है कि मैंने चालीस युद्ध जीते ..... वाटरलू मेरी विजयों की स्मृतियों को मिटा देगा। (मेरी कभी नहीं मिटाया जा सकेगा, जो चिरन्तर (स्थायी बनी) रहेगी वह मेरी नागरिक संहिता है।)
* बोनापार्ट को द्वितीय जस्टीनियन के नाम से जाना गया।

* शिक्षा को राज्य के प्रति सम्पूर्ण का सिद्धान्त रखा गया।
(इसमें राजनीति विज्ञान, इतिहास विषयों पर नियंत्रण स्थापित किया)

8। अन्य सुधार (1) इस काल में कई सड़कों, पुल, नहरों का निर्माण, बदरगाहों
(2) दलदली कृषि भूमि को कृषियोग्य बनाया गया।
(3) फ्रांस के महलों को कलाकृतियों से सजाया गया।
(4) नेपोलियन ने पेरिस के लुव्र के संग्रहालय को राजकीय संग्रहालय में बदला। (इटली स्पेन से लियोनार्दो दा विंची की बहुमूल्य कलाकृति)
(5) 1802 में "ऑनर ऑफ लिजन" पुरस्कार की घोषणा (योग्यता व उपलब्धियाँ प्राप्त करने वालों को) (अमिताभ, लता मंगेशकर)
* पेरिस शहर का सौन्दर्यीकरण किया।

* नेपोलियन फ्रांस के सम्राट के रूप (1804-1815) प्रमुख उद्देश्य - (35 72 329 पक्ष, 2569 विपक्ष)
1804 में सीनेट में यह प्रस्ताव पारित कराया, जनमत करवाया। 18 मई, 1804 सम्राट बना।
(1) फ्रांस की क्रांति के सिद्धान्तों का प्रसार करना।
(2) स्वयं एवं फ्रांस की प्रतिष्ठा स्थापित करना।
* इसके लिए नेपोलियन ने एक यूरोप एक नेता (स्वामी) (नेपोलियन स्वयं) की नीति अपनायी।

* नेपोलियन द्वारा लड़े प्रमुख युद्ध :- (1) ट्रेफाल्गर का युद्ध :- 21 अप्रैल 1805 (स्पेन के द. पर पश्चिम में अवस्थित) द्वारा किया जिसमें फ्रांस की सेना को पूर्णतः पराजित किया। इस युद्ध में इंग्लैंड का नेतृत्व नेल्सन (नेपोलियन की प्रेस पर नियंत्रण के कारण अखबार में यह खबर नहीं छपती।)
(2) आस्ट्रिया आस्टरलित्ज का युद्ध (पराजय) 2 दिस. 1805 में आस्ट्रिया व रूस की सम्मिलित सेना को पराजित किया। (नेपोलियन का भाग्यशाली दिन) इसके तहत प्रेसबर्ग की संधि की (इस सं. राज्य नि. युद्ध समाप्त)
इस युद्ध के पश्चात वेनिशिया, डेलेमेशिया, इस्तेनिया फ्रांस को दे दिये (फ्रांस इटली का प्रमुख शासक बन गया)
इस युद्ध के पश्चात नेपोलियन ने अन्य यूरोप के छोटे राज्य को पराजित किया तथा इसके पश्चात नेपोलियन ने अपने परिवार को उच्च पद दिलाया। (नेपोलियन राजाओं के निर्माता के रूप में)
(1) जोसेफ बोनापार्ट - (बड़ा भाई) - नेपल्स का शासक बनाया।
(2) एलिस (बहन) लुक्का (उत्तरी इटली) की राजकुमारी घोषित
(3) लुईस (भाई) - हालैंड का शासक बनाया बटाविया गणतंत्र को राज दिया
(4) यूजेन (सौतेला पुत्र) इटली का वायसराय घोषित
(5) उसने 16 जर्मन राज्यों का संघ बनाया जिसे "राइन संघ" कहते हैं यह संघ फ्रांस के अधीन रखा गया।

लोमड़ी व शेर
इंग्लैंड (चालाक) फ्रांस (ताकत)

पवित्र रोमन साम्राज्य के अंतर्गत 300 छोटे-बड़े राज्य थे, नेपोलियन ने इनका पुनर्गठन कर 39 राज्यों में संगठित किया। इनमें से 16 राज्यों को मिलाकर राइन संघ बनाया। अनेक प्रकार के राज्य व छोटे-बड़े शासक थे।

इस संधि ने फ्रांस के विरुद्ध तृतीय संयुक्त गठबंधन समाप्त कर दिया तथा यूरोपीय महाद्वीप का स्वामी बना दिया

* यह नेपोलियन की सबसे बड़ी राजनैतिक भूल थी।

(प्रशा पर विजय)

* 1806 ई. में जेना का युद्ध : इस युद्ध में उसने प्रशा को पराजित किया। तथा 1807 (फ्रेडरिक विलियम तृतीय को अपनी पत्नी लुइसा के प्रति मोह... मंत्री से ... जर्मनी में हस्तक्षेप ...)

तिलसित संधि — तिलसित/टिल्सिट की संधि, इस संधि में प्रशा व रूस सम्मिलित

(1) प्रशा की शर्तें - (1) प्रशा की सेना को 42 हजार तक सीमित (2) प्रशा पर युद्ध का पोलैण्ड ... जुर्माना भारी जुर्माना, जुर्माना चुकाने तक फ्रांस सेना रखी गई।

(3) रूस ने नेपोलियन की महाद्वीपीय प्रणाली का समर्थन किया,

* इस संधि के पश्चात नेपोलियन यूरोप का स्वामी बन गया।

(बाएँ हाशिये पर: मेष भाग ... रूस के जार अलेक्जेंडर (2nd) मध्य भारी ... इसका कोई ... अधिग्रहण नहीं किया ... (1) वह फ्रांस व इंग्लैंड ... क्रमश: महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग के सहयोग (3) रूस को फिनलैंड व टर्की या अधिकार ... का निरंतर सहयोग)

* **महाद्वीपीय प्रणाली** :- नेपोलियन द्वारा फ्रांस व इंग्लैण्ड बीच आर्थिक व व्यापारिक युद्ध को महाद्वीपीय प्रणाली कहलाती है।

(इंग्लैण्ड दुकानदारों का देश कहलाता है।)

ब्रिटिश द्वीपों को तत्काल प्रभाव से अवरुद्ध घोषित किया व उसका समस्त वाणिज्य पर प्रतिबंध

(1) बर्लिन डिक्री (आदेश) - 1806 - (1) यूरोपीय जहाजों को इंग्लैण्ड के बंदरगाह पर जाने से प्रतिबंध। (आज्ञप्ति) (फ्रांस व मित्र राष्ट्रों की सीमाओं के अन्तर्गत अंग्रेजी माल व पत्र वाले पदार्थ गढ़वरों को जब्त कर व संग्रह स्थलों को भी जब्त कर लिया जायेगा) (2) ब्रिटिश यूरोपीय बंदरगाहों को इंग्लैण्ड के जहाजों के लिए बंद कर दिया।

* परिषद के आदेश : (1807 से Nov 1807) इंग्लैण्ड ने बर्लिन डिक्री के विरोध जारी

काउंसिलीय आदेशों (1) फ्रांस व इसके मित्र राष्ट्रों के व्यापार करने वाले जहाजों को इंग्लैण्ड जब्त करेगा। (2) तटस्थ देशों के जहाजों को यूरोप पहुँचने से पूर्व इंग्लैण्ड के बंदरगाह की पहुँचना (कर अनिवार्य) होगा। (डेनमार्क) (तलाशी) उनके माध्यम ब्रिटेन का समान ... देशों में पहुँचाया जा सके

(2.) मिलान डिक्री (आदेश) :- 1807 : इंग्लैण्ड से आने वाले तटस्थ देशों के जहाज को भी जब्त कर दिया जायेगा। (परिषद के आदेश के विरुद्ध) * यानि किसी ब्रिटिश बंदरगाह या ब्रिटिश सेना द्वारा अधिकृत किसी देश के बंदरगाह से चलने वाले व ... तटस्थ जहाज

* इंग्लैण्ड परिषद के आदेश लागू करने में पूर्णतः सफल रहा। ... फ्रांस ... 1810

(3.) फाउंटेन ब्लू डिक्री (आदेश) :- 1810 (1) इंग्लैण्ड से आने वाली सभी वस्तुओं को यूरोप पहुँचने पर जला दिया जायेगा।

* **महाद्वीपीय प्रणाली के परिणाम** (1) खाद्यान्न में कमी

(2) कीमतों में वृद्धि

(3) तस्करी में वृद्धि

(4) इंग्लैण्ड को आर्थिक हानि

(5) फ्रांस को आर्थिक हानि

(6) तटस्थ राज्यों से युद्ध - जैसे डेनमार्क

(7) नेपोलियन की प्रतिष्ठा को आघात।

(बाएँ हाशिये पर, लम्बवत: नेपोलियन इंग्लैण्ड को धेन केन प्रकारेण परास्त करने के लिए कटिबद्ध था। इंग्लैण्ड की उसकी विशिष्ट नौ-सैनिक शक्ति के कारण प्रत्यक्ष न हरा पाने की विवशता को जानकर नेपोलियन ने उसको अप्रत्यक्ष तरीके से हराने की योजना बनाई। यह अप्रत्यक्ष तरीका था "आर्थिक युद्ध"। नेपोलियन द्वारा इंग्लैण्ड के विरुद्ध चलाये गये इस आर्थिक युद्ध को महाद्वीपीय व्यवस्था या महाद्वीपीय नाकाबंदी कहा जाता है। इंग्लैण्ड की समृद्धि का मुख्य आधार उसके औद्योगिक उत्पादों का विदेशी क्षेत्रों में निर्यात। फ्रांस व उसके सहयोगी देशों द्वारा यूरोप में ब्रिटिश वस्तुओं के व्यापार पर लगाये गये प्रतिबंध की नीति को महाद्वीपीय व्यवस्था। प्रतिबंध ...)

महाद्वीपीय प्रणाली असफल होनी ही थी।

असफलता के कारण : (1) इंग्लैण्ड की नौ-सेना की सर्वोच्चता व औपनिवेशिक साम्राज्य

(2) मित्र राष्ट्रों का असहयोग (जोसफ) * पुर्तगाल, स्पेन, रूस ने असहयोग।

* यूरोप के लिए ब्रिटिश उत्पादित वस्तुओं की अपरिहार्यता (चाय, कॉफी, चीनी ...) (नेपोलियन के सैनिकों के लिए गरम कपड़ा व चमड़ा इंग्लैण्ड से मंगाया गया)

* जोसफिन के दो पुत्र-पुत्री - यूजन व हार्टेन्स (इसने लुइस से शादी) - इससे नेपोलियन III

* नेपोलियन की इच्छा कोरी एवं अव्यावहारिक व्यवस्था - इंग्लैंड को परास्त करना चाहता था। महाद्वीपीय व्यवस्था में ... परिस्थितियों में सम्भव नहीं (अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबंध की आवश्यकता थी), नेपोलियन यूरोपीय राष्ट्रों (जो उसके अधीन थे) के लिए ब्रिटिश वस्तुओं का विकल्प नहीं। व्यावहारिक रूप से अमान्य था।
* पुर्तगाल की शराब की इंग्लैण्ड में अत्यधिक मांग जिससे पुर्तगाल को हानि हुई

नेपोलियन का साम्राज्य - पतन, एवं पदच्युत — पुर्तगाल व ब्रिटेन के मध्य आर्थिक व राजनैतिक सम्बन्ध थे।

1808 पुर्तगाल पर आक्रमण :- ~~फ्रांस~~ नेपोलियन ने स्पेन के साथ मिलकर पुर्तगाल पर आक्रमण (50 : 50 बंटवारा) पुर्तगाल के (इसने महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने से मना किया) ब्रेगेन्जा वंश का शाही परिवार ब्राजील की ओर भाग गया। जहां नेपोलियन के प्रभाव से दूर...

* ~~स्पेन पर~~ स्पेन पर अधिकार - 1808

1810 ई. में नेपोलियन ने जोसेफिन को तलाक दे दिया तथा आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी लुईस से विवाह किया (वह अपने उत्तराधिकारी के लिए शाही खून चाहता था)

* स्पेन के साथ युद्ध 1808 व प्रायद्वीपीय युद्ध :- बूर्बो वंश की शाखा के राजा चार्ल्स चतुर्थ को शासन से हटाकर अपने भाई जोसेफ बोनापार्ट को शासक घोषित - इससे स्पेन की जनता रुष्ट हो गई। राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई तथा जनता ने गुरिल्ला पद्धति से फ्रांस की सैनिकों पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया (कैथोलिक जनता ने सहयोग)। स्पेन पर अपना अधिकार बनाये रखने के लिए नेपोलियन को स्पेन वासियों के साथ लम्बा समय 1808 से 1814 तक संघर्षरत रहना पड़ा। इसी युद्ध को "प्रायद्वीपीय युद्ध" के नाम से जाना जाता है। 1808 में जोसेफ बोनापार्ट को आत्म समर्पण के लिए विवश कर दिया। तथा स्पेन की सहायता के लिए वेलेजली के नेतृत्व में सेना पुर्तगाल भेजी व सिन्ट्रा नामक स्थान पर फ्रांस की सेना को सन्धि करनी पड़ी। नेपोलियन स्पेन को सबक सिखाने के लिए 2 लाख सैनिकों के साथ स्पेन स्वयं पहुंचा तथा अपने भाई जोसेफ को पुनः गद्दी ...

* 1812 ई. में वेलिंगटन के नेतृत्व में ब्रिटेन व स्पेन की संयुक्त सेना सलामांका नामक स्थान पर फ्रांसीसी सेना को परास्त कर दिया। स्पेन में उदारवादी ~~संविधान~~ संविधान की स्थापना हुआ इससे नेपोलियन को गहरा आघात लगा बल्कि उसे तीन लाख फ्रांसीसी सैनिक भी गंवाने पड़े। स्पेन के अल्सर (नासूर) ने मुझे बर्बाद कर दिया

रूसी अभियान :- (1812) रूस के जार अलेक्जेण्डर प्रथम व नेपोलियन के मध्य मतभेद, वह जार इसलिए नाराज था क्योंकि वह रूस पूर्वी दिशा में अपेक्षित विस्तार का अवसर नहीं दे रहा तथा आस्ट्रिया के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण आस्ट्रिया की ओर विस्तार नहीं कर पा रहा था। महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने से कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। इस कारण रूस ने जो महाद्वीपीय व्यवस्था को छोड़ दिया ... तब जून में आक्रमण ... मित्र राष्ट्रों के सहयोग से 6 लाख सैनिकों के साथ ... सितम्बर के माह में फ्रांस की सेना मास्को पहुंची तब मास्को खाली था, तथा वहाँ आग लगी मिली। नेपोलियन ने जार अलेक्जेण्डर के पास समझौता सन्धि का प्रस्ताव रखा। जार ने इसे समझौता करने से मना कर दिया। तब नेपोलियन ने अपनी सेना को वापस लाने का निश्चय किया, तब वापस लौटते समय (सर्दी बर्फ गिरने से) रूस की गुरिल्ला सैनिकों ने आक्रमण कर दिया। इस प्रकार नेपोलियन के पांच लाख सैनिक मारे गये। अन्ततः में नेपोलियन बड़ी मुश्किल से पेरिस पहुँचे। यह अभियान नेपोलियन का असफल रहा।

(हाशिया:) लेकिन इंग्लैंड ब्रिटेन को परास्त नहीं कर सका क्योंकि ... ब्रिटिश वस्तुएं चोरी छिपे से यूरोप में ... नेपोलियन ने नहीं ... इतने विशाल ... यह व्यावहारिक व्यवस्था नहीं थी ... के कारण ब्रिटेन के वस्तुओं का आवागमन चोरी छुपे व्यापारियों द्वारा जारी रहा।

(हाशिया:) रूट फ्रांस की सेना को प्रायः सामना करने के बजाय अपनी भूमि पर पीछे हटता गया। फ्रांस की सेना ... जैसे-जैसे आगे बढ़ी ... रूस की सेना आगे पीछे हटने से ... रास्ते में ... नहीं मिल सकी ... यूरोप से 1700 मील ... दूरी थी। नेपोलियन

राष्ट्रों का युद्ध :- (1813 ई. में लेपज़िग के युद्ध में नेपोलियन को - आस्ट्रिया, प्रशा, (रूस) रूस की संयुक्त सेना से युद्ध जिसे राष्ट्रों का युद्ध कहा जाता है

* आस्ट्रिया, प्रशा, रूस आदि यूरोपीय देशों ने एक संघ का गठन किया।

* 1813 लिपज़िग के युद्ध में नेपोलियन को पराजित किया गया। (राष्ट्रों का युद्ध)

* 1814 ई. में नेपोलियन के साथ समझौता हुआ जिसे फाउन्टेन ब्लू की संधि कहते हैं

* शर्तें :- (1) नेपोलियन को सम्राट की उपाधि सहित, इटली के दक्षिण स्थित एल्बा द्वीप पर भेजा जायेगा। (यहाँ 10 माह रहा)

(2) नेपोलियन एवं उसके परिवार के सदस्य का फ्रांस की गद्दी पर कोई हक नहीं (3) नेपोलियन को 20 लाख फ्रैंक 2 मिलियन फ्रैंक वार्षिक पेंशन दी जायेगी।

(4) उसके परिवार व अन्य सदस्यों को 2.5 मिलियन फ्रैंक पेंशन।

* मेरी लुइस को पारमा का राज्य दिया गया। (रियासत) इटली)

* बूर्बों वंश के लुई 18 वें को फ्रांस का शासक को नियुक्त किया।

* 1814 ई. में आस्ट्रिया की राजधानी वियाना 'सम्मेलन' हुआ, आस्ट्रिया के चांसलर मैटरनिक को अध्यक्ष नियुक्त किया था यूरोप को बंटवारे की लेकर

* वैधता का सिद्धान्त :- आगे रहे थे। फ्रांस की क्रांति से पूर्व जिस वंश का शासक था उन्हें पुनः स्थापित किया गया।

* नेपोलियन की दो शिकायतें :- (1) उसे पेंशन समय पर नहीं मिलती (2) उसकी पत्नी लुइस को प्रताड़ित किया गया।

1 Apl, 1815

* नेपोलियन एल्बा द्वीप से भाग कर फ्रांस के दक्षिण में केन्स (Cannes) स्थान पर पहुँचा। व दक्षिण से उत्तर की ओर (पेरिस की ओर मार्च किया। तब सिपाहियों ने उसे सहयोग दिया। तथा नेपोलियन पेरिस पहुँचा लुई-18 वाँ पेरिस को छोड़कर भाग गया। तथा फ्रांस का सम्राट घोषित किया। (20 मार्च, 1815 से 29 जून, 1815)

* 18 जून, 1815 ई. में वाटरलू का युद्ध (बेल्जियम के ब्रुसेल्स) :- वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन को पराजित किया, तथा उसे सेंट हेलेना द्वीप पर भेज दिया। जहाँ 5 मई, 1821 ई. में नेपोलियन की मृत्यु हो गयी।

नेपोलियन का मूल्यांकन :- (1) फ्रांस की क्रांति के सिद्धान्तों को पूरे यूरोप में प्रसारित कर (2) नेपोलियन इतिहास के महान, अत्यंत प्रतिभा सम्पन्न सेनानायकों में एक था (बेलिंगटन के अनुसार नेपोलियन की युद्ध के मैदान में उपस्थिति 40 हजार सैनिकों की शक्ति के बराबर थी (सिकन्दर, सैड़लाम) (3) वह शून्य से सर्वस्व तक पहुँचा।

(4) मेधावी प्रशासक - नेपोलियन की लागू कानून संहिता - फ्रांस के सभी नागरिकों को एक कानून की समक्ष समानता के सिद्धान्त, विशेषाधिकारों की समाप्ति

(5) [illegible] सुधार किया गया

* नेपोलियन एक निरंकुश अधिनायक - फ्रांस के नागरिकों की स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया।

* मानवीय समानता के क्रांतिकारी आदर्शों को नेपोलियन ने व्यावहारिक दृष्टि से सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इसका योगदान अभूतपूर्व व प्रशंसनीय इसी अर्थ में नेपोलियन को क्रांति का पुत्र व उत्तराधिकारी कहा जाता है

* इसने नेपोलियन फ्रांस में गणतंत्र की समाप्ति कर जो निरंकुश शासन स्थापित किया वह बूर्बों वंश राजवंश से दो कदम आगे था - उसने स्वतंत्रता का हनन किया व प्रेस को गुलाम बना दिया (4) महत्वाकांक्षी व साहसी अपनी सैनिक महत्वाकांक्षाओं के बलबूते पर - 19 वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध फ्रांस को कीर्ति शिखा पर पहुँचा दिया / लेकिन इसके लिए फ्रांस के लगभग 10 लाख व्यक्तियों की आहुति दे डाली अंत में अपयश लेकर [illegible]

* इटली का एकीकरण *

विएना सम्मेलन : इटली के लोम्बार्डी तथा वेनेशिया आस्ट्रिया को दे दिये गये। इसके अतिरिक्त तीस जर्मन राज्यों का जर्मन संघ आस्ट्रिया के नेतृत्व में स्थापित किया गया।

* रूस को फिनलैण्ड दिया गया।
* स्वीडन को नार्वे दिया गया।
* वियना सम्मेलन में बंदरबाट शुरू हुई।
* इटली के प्रमुख राज्य, सार्डिनिया, ~~पीडमाण्ट~~, ~~पारमा~~ पार्मा, पीडमाई, टस्कनी, नेपल्स ~~सैम~~ मोडेना, पेपल्स, सिसली के दो राज्य (नेपल्स व सिसली), नीस
* लोम्बार्डी व वेनेशिया - आस्ट्रिया - हंगरी साम्राज्य
* पीडमाँट एवं सार्डिनिया मिलकर से (किंग्डम ऑफ सार्डिनिया) पीडमांट राज्य
* किंग्डम ऑफ सार्डिनिया पर ~~सेवायवंश~~ सैवोय वंश का शासन था
* पारमा मोडेनी टस्कनी पर हैप्सबर्ग ~~का~~ वंश का शासन था। (आस्ट्रिया का राजवंश)
* रोमेग्ना पोप के अधीन था।

X UMBRIA - पोप के अधीन

भौगोलिक स्थिति

इटली का यूरोप से सम्बंध केवल ~~पूर्व~~ उत्तर से था। इटली तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ था। पूर्व में एड्रियाटिक सागर, प. में टिरेनियन ~~सागर~~ सागर तथा जेनोआ की खाड़ी, द. एक ओर टारेन्टो की खाड़ी दूसरी ओर सिसली का द्वीप नेपल्स व सिसली के मध्य मसीना का जलडमरूमध्य है। सार्डिनिया भूमध्य सागर में इटली का द्वीप। उत्तर-प. नीस और सेवॉय की सीमाओं के साथ ...

विएना सम्मेलन

1. आस्ट्रिया ने लोम्बार्डी व वेनेशिया प्राप्त की
2. पार्मा, मोडेना, टस्कनी में पुनः हैप्सबर्ग राजकुमार
3. पोप के प्रदेश पुनः पोप को सौंप दिये
4. जेनोआ तथा सेवॉय का भाग पीडमांट को दिया
   सार्डिनिया का क्षेत्र भी पीडमांट को दिया
5. बूर्बों वंश (स्पेन) को नेपल्स में पुनः स्थापित
   सिसली द्वीप सौंप दिया

उद्देश्य - पोप की प्रतिष्ठा स्थापित करना, फ्रांस के विस्तार पर प्रतिबंध, उदारवादी विचारधारा के विरुद्ध रोक लगाना ...

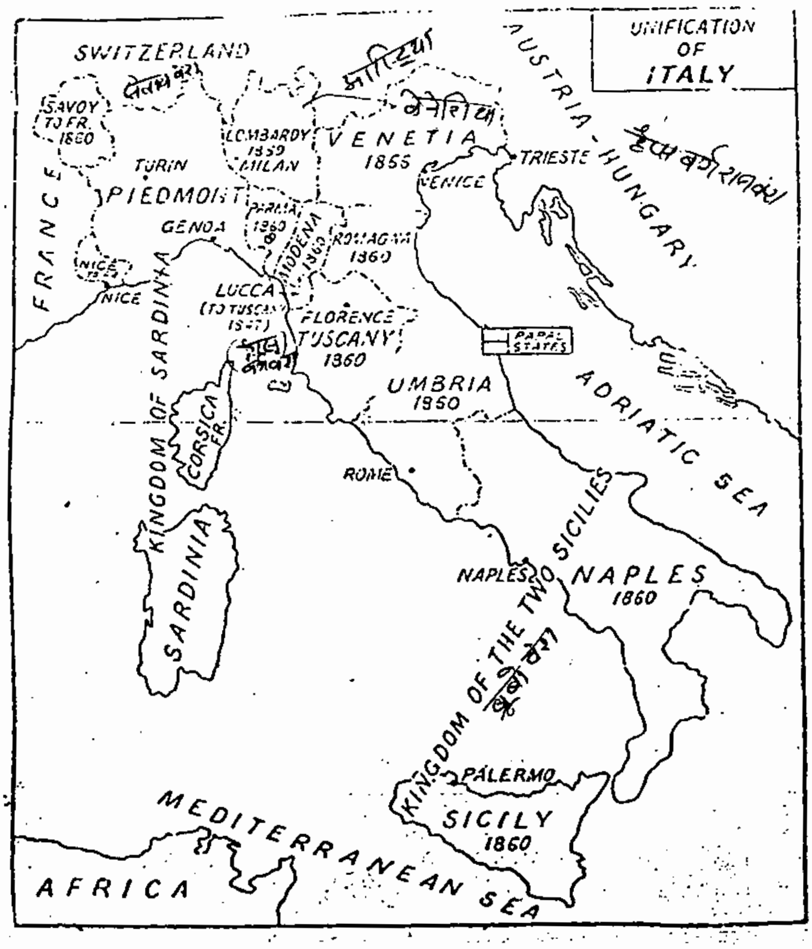

बाल्टिक - स्वीडन ~~फिन~~ फिनलैण्ड नार्वे ...

* अलेसेंड्रो मेंजोनी (Alessandro Manzoni) - इतिहासकार, इन्होंने ऐतिहासिक लेख लिखे, लोम्बार्डी सेंट तथा ग्युल्फ जाति के द्वारा लड़े गये विभिन्न युद्धों को लोककहानियों में लिखा, उसने व्यक्ति स्वाधीनता, विदेशियों से मुक्ति, राष्ट्र प्रेम, व बिखरे विभाजित इटली को एकजुट करने के सम्बन्ध में अपने विचार दिये।

* मेटरनिक के शब्दों "इटली केवल एक भौगोलिक शब्द मात्र रह गया।" उसने खुफिया पुलिस मजबूत कर दी, स्कूली शिक्षा, अखबार तथा विचारों की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण लगाये। इटली का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व नहीं था। इटली को कला का विलास पर बनाया रखा कोशिश की ताकि वे लड़ाई में एकजुट न हो सके।
* इटली वासियों के लिए इटली का निर्माण आवश्यक था।
* सेवाय वंश इटली का राजवंश
* 1815 - 1848 मेटरनिक का युग :

* इटली के एकीकरण में प्रमुख संस्थाएँ (ग्युल्फ जाति) — कवियों में मंमैली की पुस्तक "फ्रैटली डी इटालिया"

(1) कार्बोनरी :- कोयला झोंकने वाली संस्था — यह 1810 ई. में नेपल्स में खान मजदूरों की संस्था, जिसमें सामन्त सैनिक अधिकारी, संत एवं किसान सम्मिलित थे। इस संस्था का उद्देश्य षड़यंत्र के माध्यम से सत्ता को बदलना था। मेजिनी (मैजिनी) तथा फ्रांस का सम्राट तृतीय नेपोलियन इसके सदस्य थे।

* विद्वानों एवं दार्शनिकों द्वारा भी इस मशाल को जला रखा था। ~~रिसो~~

* Resorgimento :- साहित्य व राष्ट्रीय पुनःउत्थान।

* जोसफ मैजिनी (गणतंत्र इटली) :- (1805 से 1872), इटली के जेनेवा में जन्म (1805 ई.)
मैजिनी के पिता डॉक्टर, वह दांते, शेक्सपियर, बायरन से प्रभावित। मैजिनी ने 1831 ई. में "यंग इटली" संस्था स्थापित, जिसका उद्देश्य (1) इटली वासियों में जागृति पैदा करना (2) इटली वासियों में बलिदान की भावना पैदा करना। (3) इटली वासियों को प्राचीन समृद्ध इटली संस्कृति की जानकारी देना। (4) गणतंत्र (जनता के शासन) की स्थापना करना। इस संस्था की सक्रियता 40 वर्ष तक जीवित रखी गयी। इसके 48 हजार सदस्य बने। इस संस्था का नारा :- ईश्वर, इटली और जनता! युवावस्था में मैजिनी कार्बोनरी का सदस्य रहा था। मैजिनी ने कहा "जब भी खड़े हो तब इटली का नाम लेकर खड़े हो।" उसने 'Duties of Man' नामक पुस्तक जिससे जागृति पैदा की। मैजिनी के पास आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए सेना नहीं थी।

* जियोबर्टी (नियो ग्युल्फ आंदोलन) :- (1801-52) पोप के माध्यम — यह धर्माधिकारी था वह पोप की अध्यक्षता में इटली के एकीकरण का समर्थक था, पोप पायस-नवम तथा चर्च उसके विचारों से प्रभावित थे। जियोबर्टी और उसके समर्थकों को जियो ग्युल्फ कहा जाता है। इसने इटली को जाति के रूप में वर्णन किया।
जियो - पुस्तक - डेल प्राइमेटो मोरेल इ सिविल डेगली

* उदार वादी वर्ग :- डेनियल मेनिन, ला फरिना नामक उदार वादी वर्ग के सदस्य पीडमाउंट की अध्यक्षता में एकीकरण करने के समर्थक थे।

* इटली केवल पीडमाउंट की अध्यक्षता में इटली का एकीकरण सम्भव था।

मेंजोनी (Alessandro Manzoni) — कैथोलिक - ... इटली के आदर्श को छोड़कर मध्यवर्गीय विचारों को ... पर ...

इटली के एकीकरण की बाधाएँ (1) आस्ट्रिया (2) इटली में उपस्थिति। (3) शक्तिशाली राष्ट्र (4) ... से (5) मध्य राज्य पोप के राज्य का ... यूरोपीय ... - उत्तरी इटली व द. इटली में सम्बन्ध बनाना मुश्किल (6) आर्थिक दृष्टि से द. भाग अविकसित व पिछड़ा हुआ।

Rights of Man - ... पेन ... पुस्तक

मैटरनिख - अकेले मरने से इकट्ठे मरना कहीं अधिक अच्छा होगा।
पामस्टैन इटली (इंग्लैंड प्रधानमंत्री)
* 1856 ई. में इंग्लैंड और फ्रांस रूस के साथ क्रीमिया के युद्ध के पश्चात

* इटली के एकीकरण में पीडमांड को अध्यक्ष बनाने में दो व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही - (1) विक्टर इम्युनल - II (1820-1878)
काउण्ट कामिलो डि (2) कैवूर (1810-1861) इल रिसआरजीमेंटो

* विक्टर इम्युनल - II की भूमिका:- जन्म, 1820 ई. में टियूरिन नामक स्थान पर हुआ। उसे शाही व सैनिक प्रशिक्षण दिया। 1849 ई. में उसके पिता-चार्ल्स एल्बर्ट के पश्चात पीडमान्ड का शासक बना। आस्ट्रिया ने पीडमान्ड के साथ मधुर सम्बन्ध बनाने का प्रस्ताव रखा। यदि विक्टर इम्युनल - II के पिता के द्वारा दिये उदार संविधान को रद्द कर दो परन्तु पीडमान्ड ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। इस कारण से विक्टर - II लोकप्रिय हुआ, तथा उसे ईमानदार सम्राट की उपाधि मिली। 1858 ई. प्लोम्बियर्स की संधि में विक्टर - II ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसने अपनी पुत्री क्लोथिल्डा का विवाह नेपोलियन तृतीय के भाई जिरोम नेपोलियन के साथ करना स्वीकार, इसके अतिरिक्त सेवॉय और नीस भी फ्रांस को देना स्वीकार।
* 1859 ई. में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध के समय दूरदृष्टि का परिचय दिया।
* उसने कैवूर को आस्ट्रिया के साथ अकेले युद्ध करने से रोका।
* 1860 ई. में दो सिसलियों के राज्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। जहाँ गैरीबाल्डी ने स्थिति को बिगाड़ दिया था।
* मार्च, 1861 ई. में विक्टर इम्युनल - II का एकीकृत इटली का सम्राट बना।

* गियोवानी मस्तायी फेरोटी - जो कि पोप पायस नवम के रूप में इटली के इतिहास में कार्यकाल की शुरुआत, उदारवाद की प्रतीक के रूप में।
उसने पूर्व में रोम से निर्वासित लोगों को पुनः आमंत्रित व लेखन व पत्रकारिता तथा भाषणों की सीमित स्वतंत्रता प्रदान, 1848 ई. में चुने गये प्रतिनिधियों को रोम के प्रशासन में भागीदारी के आमंत्रित किया, 1815 ई. के बाद यह प्रथम प्रगतिशील विचारों का पोप सिद्ध हुआ। लेकिन 24 Apr. 1848 - घोषणा वह आस्ट्रिया की कैथोलिक जनता से युद्ध करने की अनुमति नहीं देता। सभी उदारवादी इसके विरोधी हो गये।

* कैवूर (1810-1861) 1810 ई. में टियूरिन में जन्म हुआ, व सैनिक शिक्षा ग्रहण की व सैनिक अधिकारी नियुक्त किया। वह सेना पद से 1831 में त्याग पत्र दिया तथा राजनीतिक विचारों के अध्ययन में जुट गया। वह फ्रांस की क्रांति से प्रभावित था।
- 1847 में पत्रकारिता का कार्य किया तथा - इल रिसआरजीमेंटो पत्र चलाया। तथा विचारों का प्रचार करता रहा।

* 1849 में पीडमाण्ड की संसद का सदस्य बना। तथा कृषि, उद्योग व वाणिज्य मंत्री नियुक्त (1850)
* 4 नवम्बर 1852 ई में पीडमान्ड का प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ। कैवूर पीडमाण्ड की सहायता से इटली का एकीकरण चहाता था।
* कैवूर की गृह नीति :- (1) आर्थिक सुधार ① औद्योगिक क्रांति को प्रोत्साहन ② यातायात के साधनों का विकास किया (3) विदेशी देशों के साथ व्यापारिक संधियां की ④ समान कर प्रणाली लागू की
(2) सैनिक सुधार : 90 हजार सैनिकों की एक अनुशासित सेना गठित। एक नौ सैनिक बेड़ा भी तैयार किया
(3) धार्मिक सुधार :- चर्च को राज्य के अधीन किया, धर्माधिकारियों के विशेषाधिकार समाप्त, जैसुइट को राज्य से निष्कासित
(4) राष्ट्रीय संस्था का गठन: इटली के अन्य राज्यों का समर्थन प्राप्त करने के लिए, इस संस्था का नारा "एकता व स्वतंत्रता था"
* कैवूर की विदेश नीति / एकीकरण के विभिन्न चरण : कैवूर से पूर्व इटली, इटालिया फैरा देसे की नीति पर चला (यानि इटली अपना कार्य करने में दक्ष है) था। कैवूर ने इस नीति का त्याग किया। क्योंकि इटली का एकीकरण विदेशी सहयोग से ही सम्भव है।
* क्रीमिया के युद्ध मे कैवूर की भूमिका : (1854-56) इसमे इंग्लैण्ड व फ्रांस ने मिलकर रूस को पराजित किया। (क्रीमिया टर्की व रूस के बीच मतभेद आये, उसमें टर्की का सहयोग इंग्लैण्ड व फ्रांस ने साथ दिया)
* कैवूर ने इंग्लैण्ड की मदद के लिए 15,000 सैनिक भेजे। (व इटली के एकीकरण को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर लाने के लिए) तब इटली के सैनिक क्रीमिया के दल-दल भूमि मे फस गये। तब सैनिकों ने कैवूर ने कहा इसी क्रीमिया के कीचड़ से इटली का एकीकरण होगा।
* पेरिस की संधि का महत्व :- (1856) क्रीमिया के युद्ध के पश्चात पेरिस की संधि हुई इटली के सन्दर्भ मे महत्व
(1) पीडमाण्ड को एक यूरोपीय शक्ति के रूप मे मान्यता उसके नेतृत्व को मान्यता।
(2) कैवूर को संधि के लिए बुलाया यह उसकी नैतिक विजय थी।
(3) इटली के एकीकरण का प्रश्न यूरोपीय देशों के संमुख रखा गया।
4. इटली के एकीकरण का सबसे बड़ा विरोधी माना गया।
(5) फ्रांस के रूप मे पीडमाण्ड को मित्र राष्ट्र के रूप मे उपलब्ध हुआ। (नेपोलियन तृतीय के रूप मे मिला।)

[illegible]

- हीनयान
  - ↓ सौतान्त्रिक
  - वैभाषिक
- महायान
  - ↓ शून्यवादी
  - विज्ञानवाद

सम्प्रदाय	जगत: सत्ता	आन्तरिक	बाह्य	ज्ञान (प्रमाण)	
① माध्यमिक शून्यवाद	✓	✗	✗	✗	→ सर्वविनाशवादी
② योगाचार, विज्ञानवाद	✓	✗	✓	✗	→ प्रत्ययवादी
③ सौतान्त्रिक, बाह्य......	✓	✓	✓	✓ (अनुमान)	→ वस्तुवादी +
④ वैभाषिक, प्रत्यक्ष	✓	✓	✓	✓ (प्रत्यक्ष)	→ सर्वास्तित्ववाद

२७/५/०७

प्रश्न → विज्ञानवाद से क्या तात्पर्य है।?
→ विज्ञानवादियों के अनुसार केवल प्रत्यय स्वरूप विज्ञान अथवा चित्त का ही एक मात्र अस्तित्व है विज्ञान ही वस्तु है।

प्रश्न → आलय विज्ञान से क्या तात्पर्य है।?
→ "मन" आलय विज्ञान कहलाता है जिसमें समस्त प्रत्यय अथवा विज्ञान अवस्थित रहते है। (विज्ञानों का घर)

प्रश्न → योगाचार से क्या तात्पर्य है।?
→ असंग तथा वसुबंधु के अनुसार योग के मार्ग का अनुसरण करके आलय विज्ञान का साक्षात्कार किया जा सकता है अथवा उसे जाना जा सकता है।

प्रश्न → नीला रंग तथा नीली वस्तु दोनो में कोई भेद नहीं है कथन से क्या तात्पर्य है।?
→ विज्ञानवादियों के अनुसार विज्ञान ही वस्तु है दोनो में तादात्म्य सम्बन्ध है विज्ञान से पृथक अन्य किसी वस्तु की कल्पना भी नहीं कि जा सकती है।

प्रश्न → विज्ञप्ति मात्र सिद्धि से क्या तात्पर्य है।?
→ विज्ञानवादियों के अनुसार (वसुबंधु) स्वलक्षण अथवा चेतना के रूप में केवल परिणामी परिवर्तनशील चित्त अथवा विज्ञानों का ही अस्तित्व माना जा सकता है।

प्रश्न → कौनसे सम्प्रदाय सर्वअस्तित्ववादी कहलाते है और क्यों?
→ सौत्रान्तिक तथा वैभाषिक सम्प्रदाय सर्वअस्तित्ववादी कहलाते है क्योंकि उक्त दोनों सम्प्रदायों में बाह्य तथा आन्तरिक दोनो जगत के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है।

प्रश्न → सौत्रान्तिक सम्प्रदाय बाह्यानुमेयवादी क्यों कहलाता है?
→ उक्त सम्प्रदाय में बाह्य जगत का अस्तित्व अनुमान प्रमाण से स्वीकार किया गया है अतः ये बाह्यानुमेयवादी है।

नेपोलियन-III ने काबूर से आस्ट्रिया के विषय में वार्ता की और कुछ सहयोग की सम्भावना उत्पन्न हो जाए क्योंकि इसप्र

→ प्लोम्बियर्स का समझौता : (1858) (1) नेपोलियन तृतीय इटली वंश का था (यानि बोनापार्ट वंश) इटली का प्रति विशेष लगाव)
(1) अपने सिंहासन को यश दिलाना चाहता था
(3) इसकी विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य राष्ट्रीयता का सिद्धांत था (जिसका अभिप्राय है कि एक नस्ल और भाषा को लोगों का अधिकार होना चाहिए कि वे अपने पृथक राज्य की स्थापना करें)
(2) वह युवावस्था में कार्बोनरी संस्था का सदस्य
(3) वह कांग्रेस ऑफ विएना सम्मेलन (1815) के प्रावधानों को समाप्त करना (जिसमें बोनापार्ट वंश को समाप्त करके अपमानित किया)

* जनवरी 1858 में ओर्सिनी नामक व्यक्ति द्वारा जो (जो इटली का क्रांतिकारी था) नेपोलियन की हत्या करने का प्रयास किया। तब ओर्सिनी को गिरफ्तार कर लिया। तब ओर्सिनी ने नेपोलियन को पत्र लिखा, जिसमें उसे विश्वासघाती बताया है तथा उसे इटली के एकीकरण में मदद को कहा, इससे नेपोलियन प्रभावित हुआ।

* ओर्सिनी के अन्तिम शब्द " Vive Italia " थे

* साथ ही उसे भय हुआ, कि ऐसी घटना और हो सकती है।

* उसने कैवूर को गुप्त संदेश भेजकर उसे कहा कि वह गर्मी छुट्टी प्लोम्बियर्स में बितायेगा। कैवूर को कहा सम्भव हो तो वह उससे वहाँ मिले।

* 21, 22 जुलाई को कैवूर नेपोलियन तृतीय से प्लोम्बियर्स में मिला।
यह समझौता किसी भावी युद्ध की सम्भावना के लिए नहीं था अपितु योजनाबद्ध रूप से युद्ध में सम्भावना थी

इस समझौता के अनुसार :- (1) फ्रांस पीडमाण्ट को आस्ट्रिया से लोम्बार्डी व वेनेशिया दिलाने में सहयोग करेगा। (आस्ट्रिया द्वारा आक्रमण की पहल करने पर) (2) पोप की अध्यक्षता में इटली का संघ घोषित किया जायेगा इस संघ में (A) उत्तरी इटली साम्राज्य - पीडमाण्ड सार्डिनिया, लोम्बार्डी, वेनेशिया, पार्मा एवं मोडेना तथा पोप राज्य का एक भाग (B) मध्य में पोप के राज्य व रोमेगना पोप के अधीन रहेंगे (C) दक्षिण में दो सिसली का राज्य स्वतंत्र रहेगा।

(3.) क्षति पूर्ति के रूप सेवाय व नीस फ्रांस को दिये जायेंगे।

(4) विक्टर इमैनुअल-II की पुत्री ~~[illegible]~~ क्लोटिल्डे का विवाह नेपोलियन तृतीय के भाई जिरोम से होगा। - दोनों के लिए आवश्यक था कि युद्ध छेड़ने के लिए उचित कारण उपलब्ध हो पारस्परिक विचार करने पर मस्सा, यह निर्णय कि मोडेना में आस्ट्रिया शासन के विरुद्ध उपद्रव करवाया जाए।

* आस्ट्रो - सार्डिनिया का युद्ध :- 1859 : विक्टर इमैनुअल व कैवूर आस्ट्रिया को उकसाने के लिए, उत्तेजित भाषण, (2) तथा लोम्बार्डी की सीमा पर पीडमाण्ट की सेना व तैनात की विपरीत कार्यवाही में आस्ट्रिया ने भी लोम्बार्डी की सीमा पर सेना भेज दी। (युद्ध का वातावरण)

* इस समय रूस, फ्रांस, इंग्लैंड ने सुझाव दिया कि इस विवाद को निपटाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाना चाहिए।

* आस्ट्रिया ने कहा सम्मेलन बुला लेना चाहिए, लेकिन पीडमाण्ट को आमंत्रित न किया जाए (2) तथा पीडमाण्ट को बिना किसी शर्त के सेना हटा लेने को कहा।

* इंग्लैण्ड पीडमाण्ट के पक्ष में बात की लेकिन सेना हटाने की बात कही।

* कैवूर ने

* ~~अ~~ * आस्ट्रिया ने ~~बोल~~ पीडमाण्ड को सेना हटाने के लिए तीन दिन का अल्टीमेटम दिया।
* तीन दिन का अल्टीमेटम पुरा होने पर 19 जुन को आस्ट्रिया ने पीडमाण्ड पर आक्रमण कर देगा। कैवूर खुश हुआ, उसने कहा " ~~पासा फेंक दिया है अब अपना काम पुरा~~ पासा फैंक दिया गया है अब इतिहास बनने वाला है।
* नेपोलियन ने तृतीय ने स्वयं फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व कर आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा। 'Battle of Solferino' के युद्ध मे आस्ट्रिया को पराजित किया तथा लोम्बार्डी पर अधिकार किया तथा उसे वेनेशिया में खदेड़ दिया गया।

(टस्कनी) आस्ट्रिया - सार्डिनिया के युद्ध के समय पार्मा, टस्कनी मेडोना राजाओं को उखाड़ फैंक दिया तथा रोमेगना पर से सब पोप ~~का~~ सत्ता समाप्त कर दिया। नेपोलियन तृतीय बीच युद्ध मे आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस जोसफ विलाफ्रैंका नामक स्थान पर मिला। (बिना पीडमांड के पुछे)

* विलाफ्रैंका का समझौता (युद्ध विराम) (1859) "इस समझौते के अनुसार आस्ट्रिया, लोम्बार्डी फ्रांस को देगा जिसे वह पीडमाण्ड को सौंप देगा (2.) वेनेशिया आस्ट्रिया के पास ही रहेगा। (3) मध्य इटली (परमा, टस्कनी, मोडेना) के राजाओं को पुनः स्थापित किया जायेगा। (4) पोप की अध्यक्षता में इटली संघ का निर्माण किया।
* इस संधि से इटली की एकीकरण की आकांक्षा धूलि-धूसरित हो गई, वेनेशिया में अब आस्ट्रिया का अधि...
* नेपोलियन ने चिन्तित होकर कि वह अपने पड़ोस मे एक शक्तिशाली राज्य बन रहा, (2) पोप की शक्ति मे कमी आ रही थी।

* ~~जब~~ कैवूर ने विक्टर इमैनुअल से ~~एक~~ अकेले ही आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध करेगा तब विक्टर ने उसे इच्छाशक्ति को परित्याग का मना कर दिया। तब उसे कैवूर ने प्रधान मंत्री से ~~स्त्री~~ इस्तीफा दे दिया।
* Treaty of ज्यूरिख - फ्रांस व पीडमाण्ड के मध्य

(1) लोम्बार्डी पीडमांड को दे दिया गया (2) मध्य राज्यो मे सत्ता पुनः स्थापित करेंगे (3) इसमे फ्रांस ने सेवाय व नीस की माँग नही की न ही उसे दिये गये (वादा पुरा नही)

* मध्य इटली के राज्यों मे जनमत (पार्मा, मेडोना, टस्कनी, रोमेगना) जनवरी 1560 कैवूर ने प्रधान मंत्री पद पुनः सम्भाल लिया। कैवूर ने नेपोलियन को पार्मा मेडोना, टस्कनी, व रोमेगना मे जनमत के लिए कहा, तथा उसे बदले मे सेवाय व नीस (फ्रांस) को वादे
* 1860 ई. मे चारो मे जनमत हुआ जनमत के आधार पर पीडमांड के साथ मिल गये।
* ट्यूरिन की संधि: ~~की~~ के अनुसार सेवाय व नीस फ्रांस को दे दिया।

* 1849 ई. से पोप के हितो की रक्षा के लिए रोम में फ्रांसीसी सेना तैनात थी मैजिनी के समय पोप पर अधिकार करने का प्रयास था। वह असफल रहा तब
* कैवूर कहता है कि कूटनीति के आधार मुझे उत्तर मे एकीकरण पर रोक लगा दी है लेकिन मैं क्रांति के माध्यम से दक्षिण से यह काम पुरा करूँगा।
* ~~दो सिसली के राज्य मे एकीकरण~~

प्रश्न → पंचकारिणी क्या है?

→ क्षणिकवाद को स्पष्ट करने वाला वह सिद्धान्त जिसके

(i) कारण तथा कार्य किसी का अस्तित्व नहीं था

(ii) कारण की उत्पत्ति होती है।

(iii) कार्य की भी उत्पत्ति होती है

(iv) कारण का अन्त होता है

(v) कार्य का भी अन्त हो जाता है

अनात्मवाद

प्रश्न → बौद्ध दर्शन में पंच स्कन्धों के नाम बताये?

→ रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान

8. दी सिसली के राज्य में गैरीबाल्डी की भूमिका:

* *इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी की भूमिका – जन्म, 1807 ई. मे नीस में हुआ, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात नौ-सेना मे शामिल, मैजिनी का अनुयायी था। युद्धपोत पर विद्रोह के कारण मृत्यु दण्ड, परन्तु इटली से भागकर द. अमरीका चला गया।

*1848 ई. मे वापस लौटा, तथा लाल कुर्ती दल का गठन किया।

* 1849 ई. में रोम पर आक्रमण के समय मैजिनी को सहयोग दिया, अभियान असफल होने पर अमरीका चला गया।

*1854 मे पुनः लौटा और "कापरेरा द्वीप" खरीदा, इसके पश्चात दो सिसलियों के विलय मे योगदान दिया।

* दो सिसली के राज्य मे बूर्बों वंश के फ्रांसिस –II के विरुद्ध असंतोष।

* गैरीबाल्डी ने इसका लाभ उठाकर, सिसली पर अधिकार करने का प्रयास।

* 5 मई, 1860 ई. मे वह जेनेवा से लाल कुर्ती दल के साथ रवाना हुआ। वह सिसली के मार्शला पहुँचा। वह तीन महीने मे अधिकार कर लिया। तीन महीने पश्चात गैरीबाल्डी ने नेपल्स पर अधिकार कर लिया। फ्रांसिस–II ने 'गैटा' के किले मे शरण ली। (गैरीबाल्डी ने स्वयं तानाशाह शासक घोषित किया।

* कैबूर की दो समस्या :- गैरीबाल्डी कहीं दो सिसली को गणतंत्र घोषित न करदे व पीडमांड के साथ मिलने से मना न कर दे। (2) यदि वह आगे बढ़कर रोम पर (पोपराज्य) पर अधिकार न कर दे जिससे फ्रांस से युद्ध न हो जाए।

* कैबूर के दो उद्देश्य :- सभी गतिविधियों का नेतृत्व विक्टर इमुनल–II को सौंपा जाए (2) अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध को टाला जाए

* दूसरी ओर फ्रांसिस–II ने पोप से गैरीबाल्डी के विरुद्ध मदद माँगी। पोप उसे सैन्य सहयोग देने मे तैयार हो गया।

* कैबूर ने विक्टर –II को पोप राज्य पर अधिकार करने को राजी किया,

* विक्टर –II ने पोप को अल्टीमेटं भेजा कि वह अपनी सेना से विदेशी सैनिकों को निष्कासित करे। (इस समय अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियां अन्य विवादों फंसी हुई)

* विक्टर –II ने पोप राज्य पर अधिकार कर लिया तथा कैस्टूल-फिडार्डो के युद्ध मे पोप की सेना को पराजीत किया। रोम एवं सेंट पीटर के अधीन क्षेत्र

क्षेत्र को छोड़कर पुरे पोप राज्य पर अधिकार कर लिया।

* इस बीच पीडमांड की संसद ने नेपल्स एवं सिसली में जनमत कराने का निर्णय करवाया। इस जनमत के पश्चात, नेपल्स व सिसली का बहुमत पीडमांड के साथ मिलने के पक्ष में रहा।

* इससे कैवूर के हाथ मजबूत होगये व गैरीबाल्डी के हाथ कमजोर।

* जिस प्रकार संत ईश्वर में विश्वास रखते है, गैरीबाल्डी इटली में विश्वास रखता था।

* गैरीबाल्डी 'टियरिन' नामक स्थान पर विक्टर-II से मिला तथा शासक के रूप मे स्वीकार किया।

* 17 मार्च, 1861 ई० को एकीकृत इटली का सम्राट-विक्टर इमैनुअल -II को घोषित किया।

* गैरीबाल्डी सिसली छोड़कर 'कैपरा द्वीप' चला गया।

* 6 जून, 1861 मे कैवूर की मृत्यु हो गयी। यह दुर्भाग्य की बात थी कि कैवूर इटली के एकीकरण को पूर्ण होते नही देख सका (वेनेशिया एवं रोम बाकी थे)।

* इटली का एक राष्ट्र के रूप मे कैवूर ~~की देन~~ के जीवन के कार्यों की देन है वह कूटनीति का प्रयोग करते हुए विदेशी सहयोग द्वारा इसका एकीकरण किया।

* वेनेशिया व रोम की प्राप्ति :- आस्ट्रिया-(प्रशा युद्ध)(1866) इस युद्ध मे बिस्मार्क (प्रशा) व इटली के मध्य समझौता तथा आस्ट्रिया से युद्ध, व विजय. युद्ध के पश्चात प्राग संधि के तहत इसे वेनेशिया इटली को दे दिया।

* फ्रैंच व प्रशा का युद्ध - (1870-71) - बिस्मार्क ने इटली को सुझाव दिया कि ~~रोम से~~ फ्रांस- प्रशा युद्ध के समय इटली से फ्रांस की सेना हटाई जायेगी। तब तुम रोम पर अधिकार कर लेना, तथा तटस्थ नीति अपनाने को कहा। इटली ने मौका देखकर रोम पर अधिकार कर लिया। पोप पायस नवम् ने वेटिकन मे शरण ली।

* रोम को इटली की राजधानी घोषित किया। कैवूर का स्वप्न साकार हुआ।

* जर्मनी का एकीकरण *

* उत्तरी जर्मन राज्यों मे - प्रशा, सैम्सनी, हैनोवर, द. मे वुर्टेम्बर्ग, बवेरिया, हेस -डर्मेस्टाट!

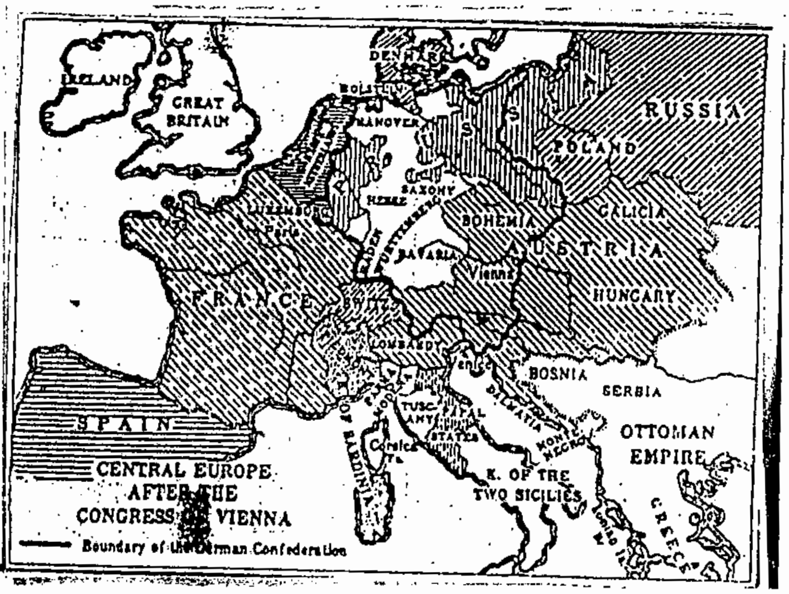

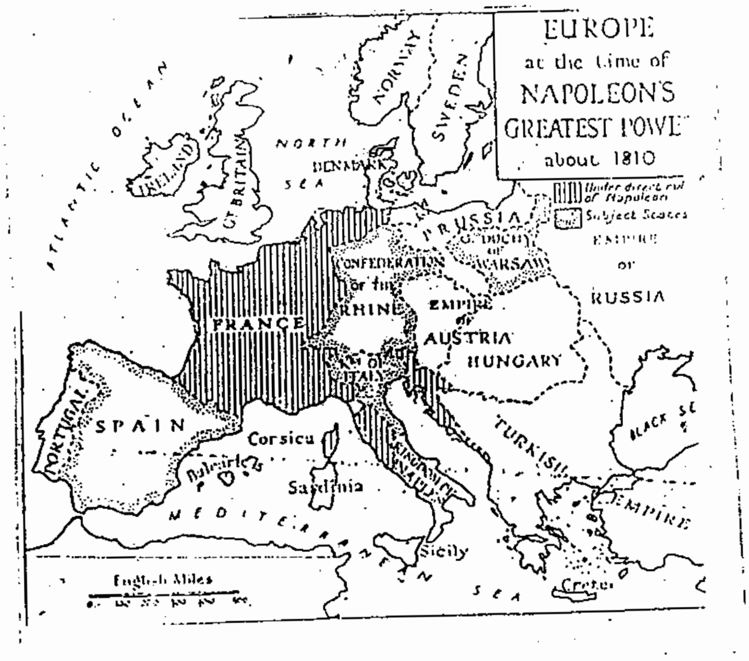

* डाइट : जर्मन राज्यों मे प्रतिनिधि एक व्यवस्था थी, जिसे डाइट कहा जाता, था विधमान थी जहाँ एक ही मंच पर 300 राज्यों के प्रतिनिधि एकत्रित होते थे आस्ट्रिया का शासक इनसे आस्ट्रिया पर किसी भी संकट के समय सैन्य सहायता प्राप्त कर सके तथा

* जर्मन राज्यों मे लेटिन भाषा का प्रचलन था। 17 वी शताब्दी मे जर्मन भाषा ने लेटिन का स्थान

यदि इटली एक भौगोलिक शब्द मात्र था तो, जर्मनी भी भौगोलिक शब्द मात्र
* जर्मनी के श्लेसविग व हॉलस्टीन दो जर्मन राज्य डेनमार्क के पास थी
* 39 राज्यों का जर्मन संघ आस्ट्रिया के अधीन था तथा। 16 जर्मन राज्यों का संघ राइन संघ फ्रांस के अधीन था। (यहाँ के 39 राज्यों के सदस्यों को संसद में भेजा)
* प्रशा की अध्यक्षता में जर्मनी का एकीकरण।

बोहि के जनमत / प्रभाव / फ्रेडरिक / हैनोवर

जर्मन राज्यों में विषमता ऐ अधिक थी।

* एकीकरण की समस्याएँ :- (1) आस्ट्रिया का विरोध - (1) आस्ट्रिया के पास जर्मन संघ था साथ ही आस्ट्रिया में अनेक देशों के लोग रहते थे उनका भी विरोध (भावात्मक) (2) छोटे-जर्मन राज्यों का विरोध

वैधता का सिद्धान्त - वियना संघ / सम्मेलन में इन राजाओं पुनः प्रतिष्ठित किया व राजा बड़े संघ में शामिल नहीं होंगे (अपने हितों की रक्षा के लिए)
जोलवेरिन की क्या / 1 ... उस समय आस्ट्रिया ने विरोध
(3) उदार वादी नेताओं का विरोध - प्रशा की संसद में उदार वादी नेताओं का बहुमत था। ये नेता केवल भाषण व प्रस्ताव पारित करने में विश्वास रखते थे (4) फ्रेडरिक विलियम-IV की समस्या (1840-61) प्रशा का सम्राट था आस्ट्रिया के राजवंश हैप्सबर्ग के प्रति सम्मान व आदर था
(5) एक संगठित व अनुशासित सेना की आवश्यकता थी।
विदेशी शक्तियाँ - इंग्लैण्ड हैनोवर के प्रति ... फ्रांस ... जर्मनी के ... राज्यों ...
* जर्मनी के एकीकरण में विलियम - प्रथम की भूमिका :- (1858) प्रशा के शासक फ्रेडरिक IV की मानसिक स्थिति खराब होने पर उसका भाई विलियम प्रथम शासक बना। (1861)
* 1861 वह प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण के पक्ष में था।
* प्रशासनिक व सैन्य सुधार - (1) अल्ब्रेथ वान रून (रून) को रक्षा मंत्री नियुक्त किया (2) हेल्मुथ मोल्टके को सेनापति नियुक्त किया (3) अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण को दो वर्ष के स्थान पर तीन वर्ष तक के लिए किया।
(4) 39 सैनिक टुकड़ियाँ स्थापित की। दस घुड़सवारों (Cavalry) की सेना।
* प्रशा की संसद में उदार वादी नेताओं का बहुमत था। ये नेता राजा की आंतरिक व विदेश नीति पर नियंत्रण रखना चाहते थे वे वर्तमान व्यवस्था रखना चाहते थे परन्तु उदार वादी सैन्य सुधार के विरोधी थे
* 1862 ई. में विलियम -I ने प्रशा संसद को भंग कर दिया व पुनः चुनाव करवाये। इस बार भी उदार वादियों का बहुमत।
* विलियम -I के पास तीन विकल्प - (1) संसद को भंग करे तथा तानाशाही शासक के रूप में। (2) सैन्य सुधार स्थगित (3) पद त्याग दें।

* विलियम ने पद त्यागने का निर्णय, लेकिन इसने पेरिस से बिस्मार्क को सलाह लेने के लिए बुलाया। उसकी सलाह पर 4 इस्तीफे के प्रस्ताव को फाड़ दिया व सेना सुधार जारी रखा।

* जर्मनी एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका :- 1 APL, 1815 ई. को बिस्मार्क का जन्म हुआ। वह प्रशा के जागी परिवार से सम्बन्धित, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात सिविल सेवा में शामिल। परन्तु अनुशासन हीनता के कारण पद से हटा दिया। 1851 ई. में राजनीति में शामिल हुआ। 1851 से 1859 में जर्मन डाइट का सदस्य रहा। (यहाँ आस्ट्रिया व जर्मन संघ की कमजोरियों की जानकारी प्राप्त की)

* 1859 - 62 ई तक रूस में प्रशा का राजदूत रहा। 1862 ई. में इसे फ्रांस का राजदूत के रूप में भेजा।

* 1862 ई प्रशा की संकट की घड़ी (विलियम 1 द्वारा) बिस्मार्क को पेरिस से बुलाया। तथा प्रशा का प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया।

* बिस्मार्क प्रशा की अध्यक्षता में जर्मनी के एकीकरण का कट्टर समर्थक था।

* 1862 ई में प्रशा की संसद में भाषण दिया - जर्मनी की समस्याओं का समाधान संसदीय आदेशों से सम्भव नहीं है बल्कि लौह व रक्त की नीति" का अनुसरण किया। (उदारवादियों पर प्रहार करते हुए)

* इस लौह व रक्त नीति के दो प्रमुख आधार -(1) प्रशा के पास सर्वोच्च सैनिक क्षमता होना अनिवार्य था (2) अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध को टाला जाए (कभी भी किसी राज्य पर युद्ध करना हो तो उसमें अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप नहीं करे। यानी युद्ध लम्बा न हो।)

* उदारवादी केवल भौंकना जानते हैं, काटना नहीं" बिस्मार्क

* 1861 ई. में रूस को पोलैण्ड के विद्रोह के समय सहयोग देने का प्रस्ताव। इसने रूस का सहयोग प्राप्त कर लिया। प्रशा अब यूरोप की बड़ी शक्ति के रूप में उभरने लगा।

* आस्ट्रिया शासक फ्रांसिस जोसफ ने (चिंता के कारण) विलियम-1 को जर्मन संघ में सुधार करने के लिए एक सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव भेजा।

* 1863 में फ्रेंकफर्ट में सम्मेलन; इसमें प्रशा ने भाग नहीं लिया, जिससे सम्मेलन असफल हो गया। (बिस्मार्क के कहने पर)

* बिस्मार्क का एकीकरण के तीन दिन युद्ध डेनमार्क के साथ युद्ध - 1864

डेनमार्क के साथ पहले युद्ध करने के दो कारण -(1) वह अपनी सैनिक क्षमता को आजमाना चाहता था (2) डेनमार्क के पश्चात युद्ध करने के पश्चात आस्ट्रिया के साथ युद्ध करें

... आन्दोलन ... 1831. जहां विचार को आधार दिया कि सार्वलौकिक विचार धारा का सर्वोत्तम रूप ही राष्ट्र और राष्ट्र से ऊपर कोई नहीं

* 1813 ई लीपज़िग में प्रशा की सेनाओं की विजय और नेपोलियन की हार ने प्रशा की जनता को गौरवान्वित ... भयाक्रांत होकर मेटरनिख ने इसे पारित

* कार्ल्सबाड का कठोर नियम :- मेटरनिख - जब एक जर्मन विद्यार्थी द्वारा कोटजेब्यू नामक प्रतिक्रियावादी लेखक की हत्या कर दी गई ... इसके अनुसार -(1) प्रेस व प्रकाशन पर कठोर नियंत्रण (2) विश्वविद्यालय में व्याख्याताओं और विद्यार्थियों पर नियंत्रण के लिए प्रतिनिधि नियुक्त (3) युवकों व शिक्षकों पर उत्तरदायी नियुक्त (4) कट्टर रूढ़िवादी पादरियों की नियुक्ति।

का बहाना मिल जायेगा।

1815 ई. वियना सम्मेलन में यह दोनों को दिया

युद्ध के कारण :- (1) सेल्सविक (श्लेसविग) एवं हॉलस्टीन का विवाद :- 1490 ई. से ये दोनों पर डेनमार्क के प्रशासनिक अधिकार थे। हॉलस्टीन जर्मन संघ का सदस्य था। सेल्सविक जर्मन संघ के बाहर था। हॉलस्टीन में जनसंख्या का बहुमत जर्मनवासियों का था। सेल्सविक में भी बहुमत जर्मन वासियों था परन्तु यहाँ अल्पसंख्यक डेन भी थे।

* प्रशा सेल्सविक एवं हॉलस्टीन को अपने पक्ष में मिलाने का मैं था। डेनमार्क इन्हें अपनी सीमा में मिलाना चाहता है। (2) डेनमार्क का नया संविधान (Nov. 1863 ई.) :- डेनमार्क के शासक ने डेनमार्क को नया संविधान दिया जिसके अनुसार श्लेसविग व हॉलस्टीन को डेनमार्क का भाग मान लिया। संविधान लागू होने से पहले फ्रेडरिक सप्तम की मृत्यु हो गयी। उसके स्थान क्रिश्चियन नवम् जिसने दबाव में नया संविधान लागू कर दिया। इस नये संविधान के तहत डेनमार्क ने सेना भेजकर सेलसविक पर अधिकार कर लिया। इसका प्रशा ने कड़ा विरोध किया।

युद्ध का घटना क्रम :- आस्ट्रिया ने प्रशा को सहयोग देने को तैयार (बिस्मार्क ने कहा कि डेनमार्क आपके श्लेसविग पर अधिकार कर लिया)

फरवरी 1864 ई. में नया संविधान वापस लेने के लिए 48 घंटे का अल्टीमेटम बिस्मार्क ने भेजा। यदि यह प्रस्ताव वापस न लेगा तो आस्ट्रिया व प्रशा सम्मिलित युद्ध कर लेंगे। इस समय डेनमार्क की संसद का सत्र चालू नहीं था। इसलिए 48 घं. पश्चात, प्रशा व आस्ट्रिया ने मिलकर डेनमार्क पर आक्रमण किया। तथा पराजित किया। दोनों के बीच संधि।

* **वियना की संधि** :- इस संधि के अनुसार ल्यूनबर्ग व सेल्सविक व हॉलस्टीन पर प्रशा व आस्ट्रिया का सामूहिक अधिकार होगा।

यह बिस्मार्क जानबूझकर इसे अंधकार में रखा। बिस्मार्क यह जानता था कि भविष्य में इनकी अधीनता के प्रश्न को लेकर विवाद प्रशा के लिए अनुकूल है।

* **आस्ट्रिया-प्रशा युद्ध** :- (1866) **कारण** :- (1) प्रशा द्वारा आस्ट्रिया का जॉलवरिन का सदस्य बनने का विरोध।

जॉलवरिन :- 1818 ई. यह एक चुंगी युनियन था। जो प्रशा की अध्यक्षता में बना, कई जर्मन राज्य इसके सदस्य बने। जॉलवरिन का उद्देश्य :- सदस्य राज्यों की आर्थिक हितों की रक्षा करना। इस संस्था के कारण जर्मन वासियों में राष्ट्रीय की भावना बढ़ी।

* 1818 ई. तक प्रशा में 67 चुंगी केन्द्र थी लेकिन 1818 में कहा कि कम व दो ही जगह चुंगी देने का प्रस्ताव, तथा जर्मन राज्य को (जिसमें आर्कटिक डेनमार्क) भी कहा सभी मिलकर संघ बना दे तथा सभी के यहाँ अब सदस्य देशों को दो जगह ही चुंगी देनी होगी।

* **बिस्मार्क की नीति** (1) जॉलवरिन में कर मुक्त व्यापार की नीति लागू की। जिससे उसे इंग्लैंड का समर्थन प्राप्त हुआ।
(2) बिस्मार्क ने फ्रांस के साथ व्यापारिक संधि की।

• यह आस्ट्रिया के सदस्य न बनाने बन जाए इसीलिए यह नीति लागू।
* जोलबरिन का सदस्य न बनने के कारण आस्ट्रिया व प्रशा के बीच तनाव बढ़ा।

(2) सेलसविक व हॉलस्टीन का विवाद :- (वियना संधि) : आस्ट्रिया कहता है कि उसका अधिकार है।

इस विवाद को सुलझाने के लिए सुझाव दिया कि प्रशा लोवर हैनोविया के बदले सेलसविक व हॉलस्टीन के पर अधिकार कर सकता है परन्तु बिस्मार्क ने इस आस्ट्रिया के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। दोनों राज्य युद्ध की स्थिति में नहीं थी।

* गेस्टीन का समझौता :- (1865) → गेस्टाइन नामक स्थान पर आस्ट्रिया के शासक फ्रांसिस जोसफ व प्रशा शासक विलियम-I के मध्य ने समझौता हुआ।
(1) ~~जुटलैण्ड~~ लाउनबर्ग की डची पर प्रशा का अधिकार होगा।
(2) सेलसविग पर प्रशा का प्रशासनिक अधिकार
(3) हॉलस्टीन पर आस्ट्रिया का प्रशासनिक अधिकार
कील बंदरगाह को आस्ट्रिया व प्रशा का संयुक्त अधिपत्य रहेगा।

(यह बिस्मार्क की चालाकी, वह युद्ध का बहाना चाहता जो इसमें ही दूरदर्शिता मिलता।)
* इसने दरार पर कागज लगा दिया।
* जर्मन संघ को वियना सम्मेलन में न बनाया जिसमें यूरोप की बड़ी शक्तियाँ शामिल थी यूरोप के सदस्यों में तनाव करने की नीति।

* युद्ध से पूर्व बिस्मार्क की नीति :- (1) इंग्लैण्ड :- बिस्मार्क ने तटस्थ नीति लागू कर इंग्लैण्ड की सहानुभूति प्राप्त की।
(2) इंग्लैण्ड जर्मनी के एकीकरण के पक्ष में था। दूसरी ओर इंग्लैण्ड आस्ट्रिया की हंगरी के प्रति नीति का विरोधी था। (हंगरी में राष्ट्रवाद को दबाने की नीति)
(2) रूस :- 1863 ई. में पॉलैण्ड (पोलिश क्रांति) के विद्रोह के समय रूस को सैनिक सहयोग देने का प्रस्ताव भेजा। इससे बिस्मार्क को रूस की सहानुभूति प्राप्त। दूसरी ओर आस्ट्रिया रूस के संबंध आस्ट्रिया से अच्छे नहीं थे क्योंकि आस्ट्रिया ने रूस को क्रीमिया के युद्ध में सहयोग नहीं दिया।
(3) फ्रांस :- बिस्मार्क को फ्रांस की चिंता थी क्योंकि नेपोलियन-III से मिलने 30 सित. 1865 ई. बिस्मार्क बियारिट्ज (Biarritz) नामक स्थान पर नेपोलियन-III से मिला। इस वार्ता के पश्चात बिस्मार्क ने सुझाव दिया कि इस युद्ध होने पर फ्रांस तटस्थ रहता है तो फ्रांस बेल्जियम, लक्जमबर्ग या राइन प्रदेश में (और अस्पष्ट रूप से कुछ राइन प्रदेश को प्रलोभन दिया) पैलेटिनेट राइन प्रदेश पर अधिकार करता है तो बिस्मार्क विरोध नहीं करेगा। इससे यह लिखित समझौता नहीं किया और उसे तटस्थ रहने को राजी कर लिया।
(4) इटली :- बिस्मार्क ने इटली को सुझाव दिया कि यदि जर्मन संघ में सुधारों को लेकर आस्ट्रिया से युद्ध होता है तो इटली उसे सहयोग देगा तथा बदले में उसे वेनेशिया दिला देगा।

~~मेरिट लाइब्रेरी~~
Ankit Ed Stand

* सडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया का पराजय तथा प्रुश का पराजय हुआ – फ्रांस डिक्टेटरशिप की पराजय *
सात सप्ताह का युद्ध – सेडोवा –

* इटली के प्रधान मंत्री Mar Mora ने ठुकरा दिया फिर इटली ने 100 million lire में आस्ट्रिया से वेनेशिया को खरीदने का प्रस्ताव, आस्ट्रिया ने इसे ठुकरा दिया।
* नतीजन 8 अप्रैल 1866 ई. इटली व प्रुशा ने समझौता कर लिया।
* इस समझौते के अनुसार (1) यदि जर्मन संघ में सुधारों को लेकर यदि आस्ट्रिया से तीन महीने में युद्ध करता है तो इटली सहयोग करेगा।
(2) विजय होने पर वेनेशिया इटली को दिया जायेगा।
(3.) कोई पृथक संधियाँ नही करेंगे। (क्योंकि नेपोलियन धोखा
* बिस्मार्क एक बाजीगर था वह पाँच बॉलो से एक साथ खेलता इसमें तीन हवा में दो हाथो मे रखता था।

* युद्ध का घटनाक्रम :- बिस्मार्क ने दो कदम उठाये (1) बिस्मार्क ने आस्ट्रिया पर गेस्टीन के समझौते का उल्लंघन का आरोप लगाये। (प्रशासन सही न... (तथा हॉलस्टीन में विद्रोह) (2) जर्मन संघ में सुधारो का प्रस्ताव रखा।
(1)* इन सुधारो में जर्मन संघ के स्थान में जर्मन संसद राष्ट्रीय संसद का गठन किया।
(2) इसे आस्ट्रिया को अलग रखा जाए।
(3) नया संघ आस्ट्रिया के साथ नई नीति के साथ का अनुसरण करे।
(4) इस नये संघ की सेना प्रुशा के नेतृत्व में रखी जाए।
* जून : 1866 ई. में जर्मन संघ के सुधारो के विवाद को आस्ट्रिया ने जर्मन डाइट में रखा तथा दबाव बनाया कि इसे ठुकरा दे।
* बिस्मार्क ने कहा "इस प्रस्ताव पर पड़ा ~~एक एक~~ वोट विरोध का एक-2 वोट वह प्रुशा के खिलाफ युद्ध की घोषणा।
* 14 जून, 1866 ई. में जर्मन डाइट ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।
* 16 जून, 1866 ई. में प्रुशा ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।
* 3 जुलाई, 1866 ई. में सेडोवा का युद्ध में प्रुशा ने आस्ट्रिया को पराजित किया।
* ~~केवल~~
* प्राग की संधि :- (1) जर्मन संघ को भंग कर दिया (2.) उसके स्थान पर उत्तरी जर्मन राज्य का गठन किया (3) आस्ट्रिया पर युद्ध का बहुत हर्जाना बहुत कम लगाया (4) वेनेशिया इटली को दे दिया। श्लेसविग, हॉलस्टीन और लोवेनबर्ग राज्य फ्रैंकफर्ट को प्रुशा में मिला दिए
* फ्रांस – प्रुशा युद्ध :- (1870 – 71) राइन संघ के 16 राज्य फ्रांस के साथ जुड़े हुए थे उसकी अधीनता स्वीकार, फ्रांस के साथ युद्ध होना अनिवार्य था। यह युद्ध इतिहास के तर्क में निहित है।
* फ्रांस से युद्ध के पूर्व दो - (1) प्रुशा की सेना का पुनर्गठन किया।
(2) फ्रांस को यूरोपीय देशो से पृथक रखना।

Home work

① नेपोलियन और जर्मनी एकीकरण

① नेपोलियन के युद्धों ने अप्रत्यक्ष रूप से जर्मनी के राज्यों का एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया
② नेपोलियन द्वारा महाद्वीपीय प्रणाली के प्रयोग में लाने से जर्मनी को आर्थिक हानि उठानी पड़ी थी। इससे उबरने के लिए आर्थिक सुधार किये गये
③ नेपोलियन की शासन व्यवस्था से जर्मन राज्यों की संख्या 300 से घटकर 39 रह गई
④ गिल्ड व्यवस्था का अंत करने से वाणिज्य को लाभ मिला।
⑤ पवित्र रोमन साम्राज्य के पद की समाप्ति से, जर्मनीय व्याप्त पुरानी विचारधारा का अंत हुआ। जिन कुलीन वर्गों के विशेषाधिकार जर्मन राज्यों में छीन लिए गए थी वे एकजुट हो गये
इस प्रकार नेपोलियन द्वारा छेड़े गए युद्धों से जर्मनी के राज्यों को अप्रत्यक्ष लाभ मिला।

* बौद्धिक आंदोलन
① जर्मन जातीय दर्प या जर्मन जाति में गर्व का विचार विकसित होने लगा। इसके लिए हर्डर और जॉन. फिक्टे का योगदान प्रमुख था। (हर्डर ने जर्मन राज्यों में सामूहिक सृजनात्मकता की अवधारणा को स्थापित किए ③ फिक्टे ने राष्ट्रीय भावना के जागरण के ~~कारण~~ लिए जोरिया एवं रक्त बल पर राजनैतिक एकीकरण संभव हुआ।
③ हीगल ने इस विचार को नया आयाम दिया - उसका मानना था कि सार्वलौकिक विचार धारा का सर्वोत्तम रूप है, राष्ट्र, और राष्ट्र के ऊपर कोई नहीं
④ मेटरनिख ~~की नीति~~ पद्धति और जर्मनी। - 1815 ई. वियना कांग्रेस से प्रभावित वह जर्मन राज्यों के एकीकरण का घोर विरोधी था
* मेटरनिख ने कार्ल्सबाद नामक कठोर नियम पारित किया। :- ① प्रेस व प्रकाशन पर कठोर नियंत्रण स्थापित कर दिया गया। ② विश्वविद्यालयों की व्याख्याताओं और विद्यार्थियों की गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए ~~निरीक्षक~~ पर्यवेक्षक नियुक्त ③ युवकों और ~~शुल्त्वों पर~~ जिम्नास्टों पर गुप्तचर नियुक्त किए। ④ कट्टर कार्यवाही धाराओं की नियुक्ति ⑤ 1820 ई. में डायट द्वारा स्वतंत्र विषयों की चर्चा पर प्रतिबंध लगा दिया।

* जोलवरिन - प्रशा के शासक फ्रेडरिक विलियम -III. ने, फ्रेडरिक लिस्ट के नेतृत्व में

जोलवरिन के परिणाम — ① राइन, ओडर, एल्ब, विस्चुले आदि स्थानों के उल्लेखनीय भागों पर जो वाणिज्यिक दृष्टि महत्वपूर्ण थे, प्रशा का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।

② जर्मनी का एकीकरण आर्थिक दृष्टि से हो गया। आस्ट्रिया के इस आर्थिक दृष्टि से हट जाने से राजनैतिक रुकावटें दूर हो गईं। इस तरह राष्ट्रीय एकता चेतना का विकास हुआ।

③ ~~मध्यम~~ उच्च मध्यम वर्ग जिसमें जर्मनी के उद्योगपति, बड़े व्यापारी, कारखानों के मालिक आदि सभी जर्मनी का एकीकरण राजनैतिक दृष्टि से भी चाहते थे। उनका मानना था कि जर्मनी समान कानून प्रणाली, कर प्रणाली, वाणिज्य नीति, एक ही डाक व्यवस्था एक ही मुद्रा का चलन होना चाहिए।

④ प्रशा के नेतृत्व में जोलवरिन व्यवस्था ने अलग-थलग पड़े जर्मन राज्यों में सहयोग की भावना को जन्म दिया। उनमें आस्ट्रिया के बगैर कार्य करने की स्थिति ने जन्म [illegible] परिणाम स्वरूप आत्मविश्वास बढ़ा। प्रशा के नेतृत्व के लाभ को उनको समझने आकर [illegible]

⑤ रेलवे, इस्पात और कोयले ने जर्मनी में आर्थिक क्रांति लाई। इनका प्रभाव भविष्य में देखने को मिला।

*

* फ्रांस में प्रशा विरोधी भावना। -(1) फ्रांस कैथोलिक अनुयायी, प्रशा प्रोटेस्टेंट अनुयायी (2) फ्रांस अपने सीमा के अधीन एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना नहीं होगी था कि

* फ्रांस ने अपने राजदूत काउंट बेन्ट बेडेटी को बिस्मार्क (प्रशा से मिलकर उसे बेल्जियम ले म्प्रमबर्ग प्लेटिनेट्स दिलाने में मदद करो
* इससे बिस्मार्क को फ्रांस को भी यूरोपीय शक्तियों के सामने उसे नीचा दिखाने का मौका मिल गया।

* युद्ध से पूर्व की नीति (1) इंग्लैण्ड :- फ्रांस व इंग्लैण्ड परम्परागत शत्रु थे
(2) इंग्लैण्ड ने 1839 में बेल्जियम की तटस्थता कायम रखने का वादा किया था।
* बिस्मार्क ने फ्रांस की बेल्जियम पर आक्रमण की नीति के बारे में इंग्लैण्ड से बात की तथा उसको नाराज कर दिया।
* बिस्मार्क ने फ्रांस द्वारा प्लेटिनेट मांगने की जानकारी छोटे-राज्यों (राइन प्रदेश -16) को बताया तथा उसके बाद राइन क्षेत्र पर अधिकार कर लेगा। इनसे तटस्थ रहने का वादा कर लिया।

* रूस :- 1863 पॉलेण्ड के विद्रोह के समय बिस्मार्क ने प्रस्ताव भेजा था कि यदि जरूरत हो तो सैनिक सहायता भेजें। सहानुभूति प्राप्त
फ्रांस के साथ युद्ध से पूर्व
(1.) 1856 की पेरिस की संधि के काले सागर का के प्रावधान का यदि रूस उल्लंघन करेगा तो बिस्मार्क उसका विरोध नहीं करेगा। (काला सागर प्रावधान - रूस काला सागर के आस-पास सेना नहीं रखेगा।)
(2.) यदि आस्ट्रिया-प्रशा के साथ युद्ध होगा तो रूस प्रशा को सहयोग देगा।

(3) आस्ट्रिया :- प्राग संधि में युद्ध हर्जाना कम कर लगा था & सहानुभू
* फ्रांस सम्राट जोसफ - में आस्ट्रिया शासक
( ) से मिला। झुका दिया।
(1) आस्ट्रिया में फ्रांस के विरुद्ध जन भावना
(2) रूस के साथ युद्ध का भय था
(3) आस्ट्रिया प्राग की संधि से संतुष्ट था।
वह तट

* इटली :- बिस्मार्क ने इटली को प्रस्ताव भेजा कि जब प्रशा-फ्रांस पर आक्रमण करेगा, तो वह तब फ्रांस की सेना रोम से हटायेगा तो, तब वह रोम पर अधिकार कर लेगा। (था तटस्थ रहना का दुआ

तात्कालिक कारण :- (1) **स्पेन में उत्तराधिकार का विवाद** :- स्पेन की रानी ईसाबेल-II इजाबेला द्वि
थी, इसके विरुद्ध स्पेन में असंतोष था तथा स्पेन में असंतोष
सिद्ध हुई। 1868 में मार्शल प्रिम के नेतृत्व में विद्रोह हुआ, ईसाबेला स्पेन छोड़
फ्रांस चली गई। 1869 में स्पेन की संसद कोर्टेस (Cortes) में यह निर्णय लिया
कि स्पेन में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना करना। इस प्रकार स्पेन में उत्तरा.
के लिए राजा की तलाश। यह उत्तराधिकार विवाद शुरू। राजा की तलाश शुरू
हुई, सर्वप्रथम इटली के शासक के छोटे-पुत्र को स्पेन का शासक बनाने का प्रस्ता.
भेजा। लेकिन इटली ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसके पश्चात स्पेन ने प्रशा
के शासक विलियम-I के भाई लियोपोल्ड को शासक बनाने का प्रस्ताव भेजा।
(यह कैथोलिक था) (यह प्रस्ताव तीन बार भेजा - 1869 (2), 1870 (1)) परन्तु लियोपोल्ड
ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। प्रशा में फ्रांस का राजदूत काउंट बेंडेंटी बिस्मार्क
से मिला। और यह स्पष्ट कहा कि फ्रांस लियोपोल्ड को शासक के रूप में कभी स्वीकार
नहीं करेगा। (फ्रांस दो देशों के बीच स्पेन व प्रशा के मध्य था)) यह बिस्मार्क
के लिए मौका था। उसने IV बार पुनः प्रस्ताव भेजने को कहा।

* **2 जुलाई, 1870** - लियोपोल्ड ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।
(बिस्मार्क के कहने पर)
* फ्रांस के विदेश मंत्री ग्रामोंट ने बेंडेंटी ("बेनेदेती") से विलियम प्रथम से मिलने को कहा।
* 12 जुलाई, 1870 - बेंडेंटी एम्स नामक स्थान पर विलियम-प्रथम से मिला।
और विलियम से कहा कि फ्रांस यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेगा, तो युद्ध
करेगा। 12 जुलाई को लियोपोल्ड का प्रस्ताव वापस ले लिया। यह फ्रांस
की नैतिक विजय थी।
* 13 जुलाई, बेंडेंटी (बेनेदेती) एम्स नामक स्थान पर पुनः मिला, तथा उसे कहा कि वह
गारंटी दे कि भविष्य में भी इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा।
* विलियम-I ने गारंटी देने से मना कर दिया। बाद में विलियम I ने बेंडेंटी
के साथ हुई वार्ता का विवरण एक तार द्वारा के माध्यम से बर्लिन
में बिस्मार्क के पास भेजा, इसे "एम्स का तार" कहते हैं तथा कहा कि इसे
बर्लिन के अखबारों में छपवाने को कहा।
* 13 जुलाई की शाम को वॉन रून तथा जनरल हेल्मुथ वान मोल्टके को
रात्रि भोज के लिए आमंत्रित कर लिया। (यह दुःख भरा रात्रि भोज था)
* बिस्मार्क इस्तीफा देने की बात कर रहा है तथा वान रून व मोल्टके के
सुझाव मांग रहा था उस समय "एम्स का तार" बिस्मार्क को मिला।
* बिस्मार्क ने उस तार को जोर से पढ़ा। कहा कि युद्ध अपने हाथ में आ गया

* यह तार उस फ्रांसीसी बैल के लिए लाल व कपड़े का काम करेगा"

* ~~यह बैल~~ उस लाल कपड़े को देखते ही दौड़ा आयेगा।

* 14 जुलाई को 'उत्तरीजर्मन गजट" अखबार में इस एमसतार को प्रकाशित करवा दिया। (उस तार में संशोधन व उसमें कुछ शब्द निकाल कर उसे प्रकाशित करवाया। जिससे कहा कि विलियम-I का अपमान हो रहा। इस

* इस दिन फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस था। इस दिन फ्रांस के मुँह पर तमाचा मार दिया।

* नेपोलियन-III ने तीन बार काउंसिल की मीटिंग बुलाई उसके बाद विदेश मंत्री ने अगली बैठक बुलाने पर इस्तीफा देने को कहा।

* नेपोलियन की पत्नी ने यूजनिन के कहने 15 जुलाई, 1870 को युद्ध की घोषणा कर दी।

* 2 सितम्बर, 1870: सेडान (सीडान) के युद्ध-प्रशा ने फ्रांस को पराजित आ नेपोलियन-III सहित 1 लाख फौजियों को बंदी बना दिया।

* परन्तु फ्रांस में लियान ग्याम्बेटा ने गणतंत्र की घोषणा, तथा प्रशा के साथ जारी रखने का निर्णय लिया।

* अन्तत: 28 जनवरी, 1871 ई. में पेरिस ने आत्मसमर्पण कर दिया।

* फ्रेंकफर्ट की संधि :- 10 मई, 1871 : शर्तें (1) अलसास व लारेन नाम के दो राज्य जर्मनी को दिये।
(2) फ्रांस पर 200 मिलियन पाउण्ड युद्ध का हर्जाना लगाया।
(3) हर्जाना देने तक जर्मनी की सेना फ्रांस में तैनात रहेगी।

द. जर्मनी उत्तरी जर्मनी के साथ मिल गयी। संघ को जर्मन साम्राज्य नाम दिया

फ्रांस-प्रशा युद्ध के परिणाम :- इस युद्ध ने जर्मनी को यूरोप की रानी बना दिया, तथा बिस्मार्क को स्वामी बना दिया।

(1.) जर्मनी का एकीकरण पूर्ण हुआ। 18 जनवरी, 1871 ई. में वर्साय के प्रसिद्ध शीश महल में अपनी जीत का जश्न मना रहा था। बिस्मार्क ने घोषणा कि ईश्वर की मेहरबानी व सामन्तों के सहयोग से विलियम-I को संयुक्त जर्मनी का शासक घोषित कर दिया। बिस्मार्क राजकुमार घोषित

(2.) इटली का एकीकरण पूरा हुआ। (फ्रांस सेना हटाने पर)

(3) रूस को लाभ मिला - (काला सागर के आस-पास उसने अपनी सेना तैनात करी क्योंकि जर्मनी उसका सहयोगी था।

* साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद *

* साम्राज्यवादी नीति भौगोलिक खोजों से प्रारम्भ हुई। 1492 ई. कोलम्बस ने नई दुनिया की खोज की व 1498 ई. में वास्कोडिगामा ने पुरानी दुनिया की खोज

(1) नई दुनिया:- छितरी हुई जनसंख्या (2.) अपार वन व खनिज सम्पदा उपलब्ध थी। अभी इसका आर्थिक दोहन नहीं हुआ था। व (3) अच्छी जलवायु यूरोपीय के लिए अनुकूल थी

(2.) पुरानी दुनिया:- भारत एवं चीन जैसी समृद्ध सभ्यता एवं संस्कृति मौजूद है। यह पुर- नई दुनिया से राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक द्रष्टि अविकसित थी यूरोपीय देशों को पुरानी दुनिया से व्यापार करने तथा व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने का मौका मिल जाए तो कभी की धनी बन जायेगा।

* विश्व की सर्वोच्च आर्थिक शक्ति बनने की इच्छा शक्ति ने साम्राज्य वाद को जन्म दिया।

* पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैण्ड इग्लैण्ड व फ्रांस ने अ उपनिवेश स्थापित करने के लिए साम्राज्य वाद को बढ़ावा दिया। इसके फलस्वरूप इन यूरोपीय देशों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा शुरू हुई और आपस में युद्ध हुए जैसे - सात वर्षीय युद्ध (1756-63), कर्नाटक युद्ध।

* 1776 ई में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चुनौती मिली जब 13 अमरीकी उपनिवेश उनसे स्वतंत्र हो गये।

* 19 वी शताब्दी के प्रारम्भ में अमरीका विश्व की एक सशक्त बड़ी शक्ति के रूप में उभरा। उसके मत को अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय नजर अंदाज नहीं कर सकता। ✓

* 1823 ई. में मुनरो डॉक्टरिन के जैसूल से (सिद्धांत) से एक बार पुन: यूरोपीय साम्राज्य को चुनौती मिली (अमरीका राष्ट्रपति)

मुनरो सिद्धान्त (1) यह स्पष्ट किया कि अमरीका अपने महाद्वीपों में यूरोपीय शक्तियों का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेगा। "अमरीका अमरीका वासियो के लिए है"।

* इस घोषणा के दो वर्ष बाद ही, कोलम्बिया, पेरू, चिल्ली, अर्जेण्टाइना मैक्सिको आदि स्वतंत्र हो गये। (पुर्तगाल व स्पेन से स्वतंत्र) कुछ वर्षों बाद ब्राजील भी स्वतंत्र हो गया।

* मुनरो के सिद्धान्त ने अमरीका के महाद्वीपों से यूरोपीय हस्त क्षेप को रोक दिया।

~~एडम स्मिथ " अमरीका व उत्तमाशा अंतरीप होकर भारत पहुँचने के मार्ग की खोज- मानव जाति के लिखित इतिहास में दो सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटनाएं~~

* किसी शक्तिशाली राज्य, अधिनायक अथवा प्रजाति द्वारा अन्य प्रजाति के भू-क्षेत्र को अधीन करने को साम्राज्यवाद कहा जा सकता है।

= कुतुबनुमा, नये भौगोलिक खोजे। उस युग के प्रमुख प्रेरक तत्व मे वाणिज्यवाद तथा यूरोपीय राष्ट्रों में 'स्वर्ण ~~की प्राप्ति~~ के प्रति लालसा' ने उपनिवेश प्राप्ति की दौड़ यूरोप मे प्रारम्भ कर दी। पुर्तगाल ने, ब्राजील भारत और अफ्रीका के समुद्री तट पर व्यापारिक बस्तियाँ स्थापित की। स्पेन ने नई दुनिया मे सान्ट डियागो लिमा और मैक्सिको नगर पर प्रथम औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित किया।

* एडम स्मिथ व तुर्गो ने जैसे आर्थिक विचारको ने मुक्त व्यापार के सिद्धान्त पर बल दिया

* इस कारण से यूरोपीय देशों ने एशिया व अफ्रीका की ओर ध्यान दिया।
* अमरीका की खोज विश्व की सबसे बड़ी (इतिहास) घटना है।
* इन खोजों से एक दौड़ शुरू हो गई, यह दौड़ उपनिवेश स्थापित करने के लिए

साम्राज्यवाद :- बड़ी शक्तियों के द्वारा छोटे राज्यों पर राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने की नीति, साम्राज्यवाद कहलाता है। इस नीति पर चलकर पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैण्ड, इंग्लैण्ड, फ्रांस, आदि राष्ट्रों ने अधिक से अधिक उपनि स्थापित किये। इसे उपनिवेशवाद कहते हैं।

* इनमें से उन राष्ट्रों को अधिक सफलता मिलेगी जिसके पास नौ-सैन्य शक्ति मा होगी।
* 19वी शताब्दी तक इस पृथ्वी के भू भाग और जनसंख्या का एक चौथाई भाग ब्रिटिश के अधीन है।
* एक महाद्वीप पर द्वीप का स्थान (टॉमसपेन)
* दूसरा स्थान फ्रांस का है, जिसके पास 1/8 वॉ भाग है।
* साम्राज्यवाद को दो भागों में विभक्त (1) 15वी शताब्दी का साम्राज्यवाद (2) 19वी शताब्दी
* 15वी शताब्दी साम्राज्यवाद- इसका उद्देश्य केवल आर्थिक था।
* 19वी शताब्दी का साम्राज्य वाद का उद्देश्य आर्थिक व राजनैतिक था।
* आर्थिक :- कच्चा माल, आदि धन बटोरने की नीति।
* 1857 की क्रांति के पश्चात, 1858 में भारत पर ताज का प्रभुत्व स्थापित कर दिया।
* व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण युद्ध शुरू, जैसे -सप्त वर्षीय युद्ध, कर्नाटक,
* नेपोलियन का मैक्सिको अभियान अन्तिम युद्ध जिसको उन्हें सामना करना पड़ा केकि नेपोलियन को मुँह की खानी पड़ी।
* 19वी शताब्दी का साम्राज्यवाद :- 1870 के बाद यूरोप में साम्राज्यवाद की भावना प्रबल हुई एशिया एवं अफ्रीका में साम्राज्यवाद
* एशिया में साम्राज्यवाद :- (1) इंग्लैण्ड की एशिया में विस्तार की नीति
(1) भारत :- 31 दिसम्बर, 1600 कम्पनी चार्टर की घोषणा,
* 1664 ई. फ्रांसीसी आगमन दोनों की प्रतिस्पर्धा जिसके फलस्वरूप कर्नाटक युद्ध, एवं वाण्डीवाश युद्ध में फ्रांसीसी पराजीत। एवं इंग्लैण्ड सर्वोच्च शक्ति।
* 23 जून 1757 प्लासी युद्ध, से 1858 तक कम्पनी का शासन।
* 1858 से ताज का ~~शासन~~ आधिपत्य।
* 1877 ई. में Empire of India की उपाधि।

* नया साम्राज्यवाद - 1870 के बाद यूरोप में साम्राज्यवाद की भावना पुन: प्रबल हुई, • औद्योगीकरण के फलस्वरूप उत्पादन की खपत की समस्या बढ़ी।
औद्योगीकरण की नीति - उदा. फ्रांस ने औपनिवेशिक विस्तार को सभ्यता का विस्तार कहा। (2) इंग्लैण्ड - श्वेत जाति का भार या दायित्व इसकी पूर्ति कर्तव्य
* इम्पीरियल फेडरेशन आंदोलन (1868-72) इंग्लैण्ड में भी अपने साम्राज्य सुरक्षित रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। रस्किन आदि के भी
* डिजरैली ने भी 1872 के क्रिस्टल पैलेस के प्रसिद्ध भाषण में इंग्लैण्ड को विश्व में स्थान बनाये रखने के लिए व साम्राज्य को बनाए रखने पर बल दी।
नवीन साम्राज्यवाद के विकास के कारण :- (1) आर्थिक तत्व - (1) औद्योगिक क्रांति तथा उत्पादन (2) कच्चे माल की आवश्यकता (3) विनियोग की शुरुआत (अतिरिक्त धन) संचार साधनों व यातायात का विकास • जनसंख्या में वृद्धि (2) राजनैतिक तत्व - प्रखर राष्ट्रीय चेतना (3) धार्मिक तत्व - डॉक्टर डेविड लिविंगस्टन का था - लेडज मिर सोसायटी ने इन्हें अफ्रीका भेजा - उसने अनेक स्थानों को खोज निकाला इस प्रकार अपने राष्ट्र इंग्लैण्ड के लिए व्यापारिक मार्ग प्रशस्त किया। 1873 में अफ्रीका में ही मृत्यु।
(4) भौगोलिक तत्व - नये क्षेत्रों की खोजें

* इंग्लैण्ड ने एशिया में चीन में अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
* 1842 ई. नानकिंग की संधि के अनुसार चीन ने अपने पाँच बंदरगाह इंग्लैण्ड को दे दिये – (कैंटन, अमोय, फूचाऊ, शंघाई, निगप्पो) निंग्पो
* इसी संधि के अनुसार हाँगकाँग भी इंग्लैण्ड को दे दिया।
* चीन एवं जापान दोनों देशों ने यूरोपीय शक्तियों को आने से रोका।
* इंग्लैण्ड ने चीन में अफीम की तस्करी शुरु कर दी धीरे-धीरे चीनी अफीम के आदी हो गये। तब चीन की सरकार ने अफीम पर प्रतिबंध कर दिया।
* 1839 ई. मे अफीम से लदा हुआ इंग्लैण्ड का जहाज को चीन सरकार ने पकड़ लिया। इसको बहाना बनाकर इंग्लैण्ड ने चीन पर आक्रमण किया।
* प्रथम अफीम - युद्ध - (1839-42) इस युद्ध के पश्चात नानकिंग की संधि हुई। इसके तहत पाँच बंदरगाह दिये।
* द्वितीय - अफीम - युद्ध :- (1856-60) - एक यूरोपीय पादरी को चीन की सरकार ने उसे मृत्यु दण्ड दे दिया इसके बहाना बनाकर अ युद्ध।
* टिनत्सिन की संधि :- इसके तहत चीन सरकार ने 11 बंदरगाह और खोल दिये
* इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड ने एशिया में - 1839 में अदन, 1886 बर्मा × 1845 सिंगापुर, 1909 मे माले संघ पर अधिकार।
* इंग्लैण्ड ने फारस की खाड़ी में अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
* फ्रांस :- फ्रांस ने भारत मे अपना प्रभाव स्थापित किया। पुडुचेरी माहे, चन्द्रनगर भारत मे फ्रांसीसी बस्तियाँ थी।
फ्रांस ने चीन मे भी अपना प्रभुत्व स्थापित किया। 1844 ई. में फ्रांस को चीन में ईसाईयों की ओर से हस्तक्षेप करने का अधिकार मिल गया। 1858 में फ्रांस ने चीन मे ईसाई बाहुल्य क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित किया।
फ्रांस ने द. पूर्वी एशिया मे भी प्रभुत्व स्थापित किया।
1862 ई. मे फ्रांस ने इण्डो-चीन मे अ हस्तक्षेप किया। (लाओस कम्बोडिया, वियतनाम), 1867 में फ्रांस ने कम्बोडिया व अनाम पर अधिकार किया, अंत. मे सम्पूर्ण फ्रांस ने सम्पूर्ण इण्डो-चीन पर अधिकार कर लिया।

अपत्रंश 1890 :- इसस 1914 तक प्रथमविश्व की रोका गया।

रूस स्वयं के विस्तार के साथ व्यापार मे भी विस्तार चाहता रूस को ऐसे बंदरगाहो की तलाश थी जो वर्ष भर काम मे लिए जासके। रूस कोंस्टेन्टिनोपल व प० मे एटलान्टिक सागर के तट पर बंदरगाह चाहता था। 1864-1874 के बीच मध्य एशिया मे ताशकंद (1864) समरकंद), खीवा, खोकंद पर अधिकार का लिया। फारस मे - रूस - ब्रिटेन संयुक्त रूप से लाभ उठा रहे थे - 1907 समझौता - फारस का उत्तरी भाग रूस के प्रभाव मे व द. ब्रिटेन फारस की खाड़ी का तटस्थ भाग।

रूस : रूस की एशिया मे साम्राज्य वाद की नीति को आंशिक सफलता मिली। 1878 ई. मे बर्लिन कांग्रेस ने रूस की बाल्कन साम्राज्य वादी नीति को चुनौती दी इस कारण से रूस ने टर्की और चीन में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। 1878 ई. में उसने टर्की के कार्स प्रांत पर आधिपत्य स्थापित। 1880 ई. में चीनी-तुर्कीस्तान पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात रूस ने अफगानिस्तान में विस्तार की नीति अपनाई। इसके परिणाम स्वरूप उसका इंग्लैंड से हित टकराया और मतभेद बढ़े। 1885 ई. में रूस ने मध्य एशिया में पंजदेह नामक स्थान पर सेना भेजी। इसके परिणाम स्वरूप इंग्लैंड एवं रूस के बीच युद्ध की सम्भावना बढ़ी। परन्तु रूस के जार अलेक्जेण्डर-III ने पंजदेह से सेना हटा ली। इसी इससे रूस एवं इंग्लैंड में सम्भावित युद्ध टल गया।

1892 के पश्चात रूस ने अफगानिस्तान में विस्तार की नीति को त्याग दिया। इसके परिणाम स्वरूप इंग्लैंड एवं रूस के सम्बंध मधुर और। अंत मे 1907 मे रूस व इंग्लैंड के बीच मैत्रीपूर्ण संधि हुई।

रूस ने ~~सर्बिया~~ साइबेरिया पर अधिकार कर उसे अपराधियो की बस्ति बस्ती मे बदल दिया। 1860 ई. में रूस ने आमूर प्रांत पर अधिपत्य स्थापित किया और अपनी सीमा को ~~ब्लाडीवास्टक~~ व्लाडीवास्टक तक स्थापित किया। 1892 ई. मे रूस ने फ्रांस की आर्थिक सहयोग से ट्रांस-साइबेरियन रेलवे का निर्माण किया। (लेनिनग्राड से व्लाडीवास्टक तक)।

इसके पश्चात रूस ने मंचूरिया और कोरिया पर मे हस्तक्षेप किया। इससे उसका जापान से विवाद हुआ। 1903 ई. मे मंचूरिया की ओर बढ़ने का प्रयास इसके प० परिणाम स्वरूप रूस-जापान युद्ध हुआ (1904-05) इस युद्ध मे जापान ने रूस को पराजित किया। यह युद्ध विश्व के इतिहास की एक महत्व पूर्ण घटना थी (एशिया की शक्ति ने यूरोप की शक्ति को पराजित किया) और जापान विश्व शक्ति के रूप में उभरा। इस प्रकार रूस की विस्तार की नीति को आंशिक सफलता प्राप्त हुई।

बाल्कन समस्या :- बर्लिन कांग्रेस (इसमे बिस्मार्क ने एक ईमानदार दलाल का कार्य किया) इसमे रूस ने जर्मनी से पूछा यदि बाल्कन पर अधिकार करेगा तो उसे वह सहायता करेगा (रूस व आस्ट्रिया) तो उसने आस्ट्रिया का सहयोग देगा क्योंकि जर्मनी को लारेंस, अल्सेशिया फ्रांस से युद्ध की सम्भावना थी वह आस्ट्रिया की मदद चाहता था।

बाल्कन :- सर्बिया, मोंटीनिग्रो, हर्जीगोविना, बल्गेरिया, अल्बानिया, मोंटेनिग्रो, रूमानिया, ग्रीस (यूगोस्लाविया) शामिल है।
84

* **पंजदेह की घटना** : रूस ने पंजदेह पर अधिकार करने के लिए, 1885 ई. में सेना भेजी। इसके परिणाम स्वरूप रूस व इंग्लैण्ड के बीच युद्ध की सम्भावना बढ़ गई, लेकिन ज़ार अलेक्जेंडर III ने अपनी सेना हटा ली जिससे युद्ध टल गया।

* पोर्ट आर्थर बंदरगाह की प्राप्ति (गर्म बंदरगाह), जापान - रूस युद्ध।

* 1895 ई. में रूस, ब्रिटेन और अफ. के संयुक्त आयोग ने पामीर व अफगानिस्तान की सीमा तय की।

*अफ्रीका में साम्राज्यवाद :

19वीं शताब्दी तक इसे अंध महाद्वीप कहते हैं। 1850 से 1880 ई. के बीच, स्पीक, लिविंग्स्टोन व स्टेनली खोजकर्ताओं ने अफ्रीका की खोज के प्रयास शुरू। इसीलिए आर्थिक कारणों से यूरोपीय देशों ने अफ्र (प्रेरित होकर) साम्राज्यवाद को बढ़ाया। विश्व में सर्वोच्च आर्थिक शक्ति स्थापित करने के लिए साम्राज्य की नीति अफ्रीका में शुरू।

*अफ्रीका की बंदरबाट :

AFRICA before the FIRST WORLD WAR

*[illegible]

① [illegible]

ब्रिटेन - मिस्र, सूडान, द. अफ्रीका, रोडेशिया
पू. अफ्रीका में केन्या, युगांडा
प. नाइजीरिया, गोल्डकोस्ट

× अन्य

जर्मनी - एंग्रा पेक्वेना अंगोला व केप कॉलोनी के बीच सम्पूर्ण प्रदेश पर

② टोगोलैण्ड व कैमरून

(ब्रा.) लैण्ड व सोमालीलैण्ड

इटली व अफ्रीका - मसोवा व इरिट्रिया त्रिपोली

पुर्तगाल : अंगोला व मोजम्बिक

× स्पेन - मोरक्को, हैनिपेर (?) रीओ डी ओरो

उत्पादन पर 1830 ई. में फ्रांस ने अल्जीरिया पर नियंत्रण स्थापित, इंग्लैण्ड।

* स्टेनली की पुस्तक - थ्रू दी डार्क कोंटीनेंट (Through The Dark Continent) × बेल्जियम शासक लियोपोल्ड - ने 1876 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन, बहुत से खोजकर्ताओं ने इसमें भाग लिया - वे मध्य अफ्रीका में खोज व सभ्यता के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की।

बर्लिन सम्मेलन - 1885 ई. - (1884 ई. - 1885 ई. तक चला) फ्रांस व जर्मनी ने मिलकर - इसमें स्विट्जरलैण्ड को छोड़ यूरोप के सभी राज्य व अमेरिका राज्य ① कांगो फ्री स्टेट पर अंतर्राष्ट्रीय [illegible] का अधिकार मान लिया ② कांगो नदी घाटी में सभी राष्ट्रों को व्यापार की छूट [illegible] ③ नाइजर नदी - ब्रिटेन-उत्तर द. भाग फ्रांस के अधीन ④ दास व्यापार पर रोक लगा दी।

* **ब्रुसेल्स एक्ट** - 1889 - ब्रिटेन के सुझाव पर बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स में एक सम्मेलन हुआ - 17 राज्यों ने हस्ताक्षर - दास व्यापार पर प्रतिबंध

* <u>स्वेज नहर का महत्व</u> :- हजारों सालों से यूरोपीय व्यापारियों का एक स्वप्न था, कि भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ा जाए। अफ्रीका महाद्वीप के चक्कर लगाकर भारत आना पड़ता था इसलिए कम दूरी में पहुंचने के लिए विकल्प ढूंढा। स्वेज नहर निर्माण में फ्रांसीसी इंजीनियर Ferdinand ने 1854 ई. में खदीव सईद पाशा से कुछ सुविधाएँ प्राप्त की। 1859 ई. में स्वेज कम्पनी का गठन किया। इसमें सबसे ज्यादा शेयर- फ्रांस एवं इजिप्ट (मिस्र) के थे। इंग्लैण्ड ने स्वयं को इस कम्पनी से दूर रखा।
17 NOV, 1869 ई. को स्वेज नहर को व्यापार के लिए खोल दिया गया। यह विश्व की इतिहास की एक बड़ी घटना थी। यह भव्य उद्घाटन समारोह, खदीव इस्माइल पाशा के काल में हुआ। लगभग 190 km लम्बी यह नहर बनी जिससे 10 हजार कि.मी. रास्ता कम हो गया। यूरोपीय व्यापारों का सपना साकार हो गया। इससे भूमध्य सागर का महत्व बढ़ गया। खदीव इस्माइल पाशा विलासी था और कर्ज में डूबा था। उसके पास 176000 शेयर थे जिन्हे वह बेचना चाहता था। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री डिजरैली ने (1874-1880), 1875 ई. में सभी 176000 शेयर खदीव इस्माइल से 4 लाख, 80 हजार रुपये में खरीद लिये।
* इंग्लैंड ने फ्रांस के समान अधिकार प्राप्त कर लिया।
* स्वेज नहर के निर्माण से अफ्रीका का महत्व बढ़ा।

* अफ्रीका में यूरोपीय शक्ति की साम्राज्यवादी नीति -
(1) <u>इंग्लैण्ड</u> का अफ्रीका में साम्राज्यवाद - (1) <u>मिस्र पर अधिकार</u> :- स्वेज नहर के निर्माण से अफ्रीका का एवं मिस्र का महत्व बढ़ा। खदीव इस्माइल पाशा विलासी था व कर्ज में डूबा था। उसके समय मिस्र की राजनैतिक व आर्थिक स्थिति बिगड़ गयी तथा मिस्र इससे मिस्र में राजनैतिक अस्थिरता की स्थिति बन गई। इन परिस्थितियों में 1876 ई में इंग्लैण्ड एवं फ्रांस ने मिलकर अपने मिस्र में अपने आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग का गठन किया। राजनीति में स्थायी मित्र नहीं होते हैं अपितु स्थायी स्वार्थ होते हैं। (डिजरैली)।

मिस्र राजनैतिक दृष्टि से टर्की के अधीन था। इंग्लैण्ड और फ्रांस के दबाव से खदीव पाशा को गद्दी से हटा दिया। (1879 ई.) उसके स्थान पर उसके पुत्र तौफिक को मिस्र का खदीव बनाया। (तौफिक)
<u>मिस्र में विद्रोह</u> :- (1881-82) - खदीव तौफिक के समय भी मिस्र की राजनैतिक और आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ। तौफिक विलासी व अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। 1881 ई. में एक सैनिक अधिकारी <u>अराबी पाशा</u> ने तौफिक के विरुद्ध विद्रोह किया स्वयं ने सत्ता को सम्भाल लिया, एवं मिस्र, मिस्रवासियों के लिए नारा दिया, तथा मिस्र में विदेशी प्रभुत्व

फ्रेडिरिक लोगिन - जो मोरक्को का मार्शल था।

मिस्र के राजा - खदीव कहते हैं। सूडान के राजा - महदी कहते हैं, जर्मनी के राजा कैसर (काइजर) ज़ारशाह - ज़ार (Tzar), फ्रेडरिक लेस

*1850 से 1870 तक फ्रांस और इंग्लैण्ड दोनों के व्यापारिक सम्बन्ध मिस्र के साथ। इंग्लैण्ड व फ्रांस का द्वैध नियंत्रण मिस्र में स्थापित हुआ।

तेल-अल-कबीर के युद्ध में अराबी पाशा

से मुक्त करवाया जाए। इंग्लैण्ड और फ्रांस चिन्तित हुए। मिस्र की राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति पर विचार करने के लिए जून, 1882 ई. में कुस्तुनतुनिया में राजदूतों का सम्मेलन हुआ। परन्तु इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के मत भेदों के कारण यह सम्मेलन असफल रहा।

इसी बीच 11 जून को निनबाई अलेक्जेण्ड्रिया में कुछ यूरोपीयों का कत्लेआम कर दिया। इसको बहाना बनाकर मिस्र पर आक्रमण कर दिया। इंग्लैण्ड से नौ-सेना भेजी गई। 13 सितम्बर, 1882 ई. में "तेल अल कबीर" युद्ध में अराबी पाशा को पराजीत किया। अगले दिन इंग्लैण्ड ने मिस्र की राजधानी काहिरा पर अधिकार कर लिया। टॉफिक को मिस्र की गद्दी पर पुनः स्थापित किया गया। अरबी पाशा को मृत्यु दण्ड दिया गया। परन्तु बाद में उसे सिलोन भेज दिया गया। टॉफिक व अंग्रेजों की कठपुतली बन गया। इस प्रकार इंग्लैण्ड ने 1882 ई. में मिस्र पर आधिपत्य स्थापित किया। इंग्लैण्ड की व अन्य देशों ने कड़ी आलोचना की। इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री ने कहा जब तक मिस्र में शांति स्थापित होगी तब इंग्लैण्ड सेना मिस्र में रहेगी। ब्रिटेन के प्रतिनिधि लार्ड क्रोमर को नियुक्त किया गया।

* **सूडान पर अधिकार:** सूडान राजनैतिक दृष्टि से मिस्र का भाग था। 1883 ई. में सूडान के महदी मोहम्मद अहमद के नेतृत्व हुआ में विद्रोह हुआ, एवं सूडान को मिस्र से पृथक किया। खदीव टॉफिक ने इंग्लैण्ड से सहयोग मांगा। 1883 ई में जनरल हिक्स के नेतृत्व में ब्रिटीश सेना भेजी गई, परन्तु सूडान के कबीलों ने ब्रिटीश सेना को पराजीत किया एवं जनरल हिक्स मारा गया। 1884 ई. में जनरल गोर्डन के नेतृत्व में सेना भेजी गई परन्तु अन्त में यह सेना भी पराजीत हुई। जनरल गोर्डन मारा गया। ब्रिटीश लोगों ने सूडान के प्रति नीति की आलोचना हुई।

फसोदा में एक पुराना दुर्ग था जहाँ से नील नदी जिस पर मिस्र अधि(कृत) था की क्षेत्र निगरानी रखी जा सकती थी। इस दुर्ग पर किचनर का अधिकार था। किन्तु फ्रांस ने राष्ट्र मार्चेण्ड भी फसोदा पहुँच गया। दोनों देशों के सैन्य प्रतिनिधियों में तनाव उत्पन्न। यह तनाव अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर ला इससे पहले दोनों अधिकारियों के सहयोग (समझौते) से आपसी समझौते अंत में फ्रांस ने दावे को छोड़ दिया। 1899 में फ्रांस ने समझौता ... (इंग्लैण्ड) आम इंग्लैण्ड व फ्रांस

* **फासोदा संकट :-** (1898) सूडान में फ्रांस ने भी अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। लार्ड किचनर के नेतृत्व में (1896-98) ई. ~~सैनिक अभियान के नेतृत्व~~ के बीच सूडान पर अधिकार कर लिया। 1898 ई. में फ्रांस के सेनानायक कैप्टन ~~मर्केन्ड~~ मार्चेण्ड ने फासोदा नामक ग्राम में फ्रांसीसी झंडा फहरा कर बहलखल-गजल ~~क्षेत्र~~ नामक क्षेत्र को फ्रांस का क्षेत्र घोषित कर दिया। इस कारण से फ्रांस व इंग्लैण्ड के बीच युद्ध की संभावना बढ़ी। परन्तु फ्रांस के विदेश मंत्री डेलकासे ने फासोदा से फ्रांसीसी सेना हटाने का आदेश दिया। इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के बीच सम्भावित युद्ध टल गया। इसे फासोदा की घटना कहते हैं। फ्रांस ने सूडान पर ब्रिटीश आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

बोअर – दक्षिण अफ्रीका में ... बोअर कहलाते थे इनके पास विस्तृत भू-क्षेत्र जिसपर खेती किया करते थे। बोअर परम्परावादी थे

* **दक्षिण अफ्रीका (1) कैपकॉलोनी** :- 1815 ई तक यह हॉलैण्ड/डच का उपनिवेश था परन्तु नेपोलियन के काल में हॉलैण्ड पर अधिकार किया (तथा अपने भाई लुईस को शासक बनाया)। 1814 ई. में हॉलैण्ड से कैप कॉलोनी 6 मिलि. पाउण्ड में इंग्लैण्ड ने खरीद लिया। कैप कॉलोनी में स्थानीय डच वासियों को बो. कहते हैं, बोअर या कृषि कार्य एवं दास व्यापार में संलग्न थी परन्तु स्थानीय बोर व इंग्लैण्ड के बीच सम्बन्ध खराब हुये। (दास व्यापार इंग्लैण्ड में प्रतिबंध, बहु (1807 ई.) का वि. यह अब कैप कॉलोनी में दास व्यापार नहीं होने देंगे)। इस कारण से बोर कैप कॉलोनी को छोड़कर ट्रांसवाल चले गये। – केपटाउन → नेटाल → ट्रांसवाल → फ्री ओरेंज स्टेट।

(2) **नॉटॅल** :- 1824 ई. में इंग्लैण्ड ने नटॉल राज्य पर अधिकार किया। 1868 ई. में बासुतोलैण्ड पर अधिकार, 1877 ई. में ट्रांसवाल पर अधिकार कि. (डिजरेली की घोषणा)

* **प्रथम ~~बोअर~~ बोअर युद्ध** – 1880-81 :. ट्रांसवाल में जुलू कबीलो का प्रभाव था किन्तु इंग्लैण्ड के द्वारा ट्रांसवाल पर अधिकार होने पर प्रमुख नेता ~~पॉल कुगीर के नेतृत्व में~~ ~~पॉल कुगर~~ पॉल क्रूगर के नेतृत्व में ट्रांसवाल में अंग्रेजी से. को पराजीत किया। ट्रांसवाल के कमीश्नर ई. वुड ने पॉल कुगर के नेतृत्व में स्वतंत्र घोषित किया। (ब्रिटीश ताज के अन्तर्गत स्वायत्तता दी। (मजूबा हिल युद्ध

* **द्वितीय बोअरयुद्ध** :-(1899-1901) ब्रिटीश डॉक्टर जेम्सन ने बोअर की सरकार के (ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता चलने) विरुद्ध आंदोलन किया, वह सोने की खानो में ब्रिटीशवासियों के लिए विशेषाधिकार चहाता था। जिसका बोर ने विरोध किया। इसके परिणाम स्वरूप बोर एवं अंग्रेजों के बीच युद्ध हुआ। परन्तु बोर ने अंग्रेज. को पराजीत किया और अंत में 1901 treaty of veringing व ~~बोअर~~ बोअर ट्रांसवाल में स्वायत्तता प्रदान कर दी।

* **वेरीनिंगिंग की संधि** : ① बोअर ने ब्रिटीश प्रभुसत्ता स्वीकार ② पाठशाला व न्यायलयों में डच भाषा ~~का~~ के प्रयोग को स्वीकार ③ अंग्रेजी का शासन की भाषा ④ ट्रांसवाल तथा ओरेंज-फ्री स्टेट अंग्रेजी-साम्राज्य का अंग

अनेक घटनाओं ने 1914 ई. तक प्रथम विश्वयुद्ध को टाला गया।
बासुतो जनजाति।

*फ्रांस - अफ्रीका :- (1) अल्जीरिया : फ्रांस के शासक लुई फिलिप्स के समय (1830) समुद्री डाकुओं से सुरक्षा करने के लिए एवं दमन करने के लिए, के उद्देश्य से फ्रांस ने अल्जीरिया अधिकार कर लिया।

(2) ट्यूनिशिया : इस पर फ्रांस व इटली दोनों अधिकार करना चाहते थे 1878 ई. में बर्लिन कांग्रेस के समय बिस्मार्क ने इटली और फ्रांस दोनों पर को ट्यूनिशिया पर अधिकार करने के लिए उकसाया। इस बिस्मार्क को उकसाने के तीन कारण (1) फ्रांस कुछ समय के लिए अल्सास व लोरेन को कुछ के लिए भूल जायेगा (2) इससे इटली व फ्रांस के सम्बन्ध खराब होंगे। (3) इटली, जर्मनी के खेमे में सम्मिलित हो जायेगा। इसी बीच ट्यूनिशिया व अल्जीरिया के भी सम्बन्ध खराब थे ट्यूनिशिया के कबीलों का अल्जीरिया में आतंक था इन कबीलों के आतंक को समाप्त करने के लिए फ्रांस ने ट्यूनिशिया पर अधिकार कर लिया (1881)

(3.) मेडागास्कर (1883) :- फ्रांस ने 1883 ई. में अपनी सेना भेजकर मेडागास्कर पर अधिकार कर लिया।

(4) मोरक्को :- 1904 ई. मे इंग्लैण्ड की सहमति एवं सहयोग से मोरक्को पर अधिकार कर लिया। मोरक्को पर जर्मनी व फ्रांस दोनो अधिकार करना चाहते थी परन्तु इंग्लैण्ड के समर्थन के कारण जर्मनी मोरक्को पर अधिकार नही कर सका।

*फ्रांस ने, 1891 मे आइवरी-कोस्ट पर अधिकार किया, 1892 ई. दहोमी पर अधिकार किया

*जर्मनी - अफ्रीका मे साम्राज्यवाद : जर्मनी साम्राज्यवाद की दौड़ में देर से शामिल (बिस्मार्क पहले रुचि नहीं, क्योंकि देर से बना था). आर्थिक आवश्यकता के परिणाम स्वरूप एक जर्मन खोज कर्ता - वान डेर डेक्कन ने पूर्वी अफ्रीका के तटों की खोज की, 1882 में जर्मन कॉलोनियन यूनियन का गठन किया। अगले दो वर्षों में, 1883 ई- 1885 ई. में जर्मनी ने टोगोलैण्ड, कैमरून, टंगानिका पुर्तगाल गेम्बिया व प. जर्मन अफ्रीका पर अधिकार कर लिया। इसे शांति पर हस्तक्षेप किया।

द. पूर्वी एशिया। शब्द - द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व नहीं होता किन्तु जापानियों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिए द. पूर्वी एशिया कमान की स्थापना हुई तभी से यह शब्द प्रयोग हुआ

* बड़ी शक्तियों का छोटे राष्ट्रों का अधिकार
* इंग्लैण्ड-फ्रांस (1904) के कारण - इंग्लैण्ड के प्रति फ्रांस मित्रता।

*इटली :- 1911-12 ई. में इटली ने त्रिपोली व साइरन आइका पर अधिकार किया

*बेल्जियम :- शासक लियोपोल्ड ने अफ्रीका के मध्य भाग की खोज करने के लिये एक खोजकर्ता का अन्तर्राष्ट्रीय आयोग गठन किया। इसमें फ्रांस, बेल्जि इंग्लैण्ड, अमरीका जर्मनी आदि सम्मिलित थी परन्तु प्रारम्भ से ही बेल्जियम मध्य अफ्रीका मे कांगो क्षेत्र मे सक्रीय रहा। 1885 ई. मे बेल्जियम के कांगो पर आधिपत्य को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दे दी गई। इस प्रकार बेल्जियम ने कांगो पर अधिकार किया।

*पुर्तगाल :- पुर्तगाल ने अंगोला व ~~मोजाम्बिक~~ मोजाम्बिक मे अधिकार।

*स्पेन ने - मोरक्को के टैन्जियर पर अधिकार कर लिया।

*परिणाम :-

(1) उपनिवेशों का यूरोपीयकरण :- (1) यूरोपीय संस्कृति का उपनिवेशों मे प्रसार- (1) अमरीका, आस्ट्रेलिया, द. अ. व साइबेरिया यहाँ लोग यूरोपीय संस्कृति के ओत प्रोत हो।

(2) यूरोपीय संस्कृति को उपनिवेशों पर थोपा गया- भारत, चीन, मिस्र देशो थोप दिया गया। - धर्म सुधार सतीप्रथा बालविवाह दासप्रथा निषेध हुआ।

(3.) अफ्रीकी कबीलो को सभ्य बनाना

*किपलिंग → व्हाइट मैन बर्डन की थ्यौरी।

(2) औद्योगिक विकास :-

(3) यूरोपीय शक्तियों मे आपसी प्रतिस्पर्धा शुरु। - ~~Berm.~~ मिस्र को लेकर फ्रांस व इंग्लैण्ड के मध्य विवाद, अफगानिस्तान को लेकर इंग्लैण्ड व रूस के बीच मतभेद, ट्यूनिशिया - फ्रांस व इटली के बीच मतभेद, मोरक्को - फ्रांस व जर्मनी के बीच विवाद

(3.) विश्व का दो भागों मे विभाजन :-

प्रथा- आधुनिकज्ञान व [illegible]

* प्रथम विश्व-युद्ध के कारण व परिणाम *(५वर्ष, ३माह, १५)

** प्रथम विश्व युद्ध अनिवार्य था। इसे 1914 तक रोका गया था।

* 1870-71 से 1914 के बीच कूटनीति का इतिहास

* 1870-71 ई. को फ्रांस-प्रशा युद्ध हुआ।

* इसके बाद शक्ति-संतुलन और स्थानान्तरण हो रहा। फ्रांस के स्थान पर जर्मनी यूरोप का राजनैतिक केन्द्र बना। अब पेरिस के स्थान पर बर्लिन केन्द्र बन रहा।

* फ्रांस को अल्सास व लारेन्स जर्मनी को देने पड़े।

* जर्मनी को पता था कि फ्रांस अल्सास व लारेन्स लेने के लिए युद्ध जरूर करेगा तो जर्मनी को ने सैनिक शक्ति बढ़ाने व हथियारों की होड़ में लग गया। जिससे यूरोपीय के अन्य देशों ने भी शक्ति व हथियार की होड़ में लग गये।

* हथियारों की होड़ से :- (1) घृणा
(2) ईर्ष्या
(3) संदेह
(4) भय

की भावना बढ़ने लगी जिससे यूरोपीय की भावना को समझा जा सकता है।

* सुरक्षा के नाम पर हथियारों की होड़ में शुरू हो गयी। सच्चाई यह थी कि यूरोप युद्ध की तैयारी में लग गया।

* 1914 ई. में विश्व दो भागों में बँट गया - दो सैनिक शिविर थी

* 1870-71 से 1914 का काल सशस्त्र-शांति का काल था।

" विश्व दो खेमों में उस तरह से बँट गये जैसे- फुटबाल मैदान में दो फुटबाल टीम खड़ी हो। रेफरी की सीटी की जरूरत थी युद्ध शुरू के लिए।

* 1870-71 ई. में जर्मनी के साथ अन्य यूरोप शक्तियों से सम्बन्ध :-

(1) फ्रांस : जर्मनी ने फ्रांस से अल्सास व लारेन्स छीन लिए जिससे प्राप्त करने के लिए युद्ध जरूर होगा। तथा फ्रेंकफर्ट संधि से भी ... व ... (जाना)।

(2) रूस : रूस के साथ जर्मनी के अच्छे सम्बन्ध - (पालैण्ड विद्रोह के समय सहायता का आश्वासन व कालासागर के पास अधिपत्य में सहायता) - तथा रूस, जर्मनी व आस्ट्रिया सम्बन्ध युद्ध के समय तटस्थ रहा।

(3) आस्ट्रिया : जर्मन प्रभाव संघ से प्रभाव समाप्त हो गया। आस्ट्रिया के कुछ कुछ राज्य हथिया इटली को दिये प्रशा मैत्री से संतुष्ट।

(4) इटली : प्रशा ने वेनेशिया दिलाने व रोम दिलाने में सहयोग किया व उसका सहयोगी यदि युद्ध होगा तो वह तटस्थ रहेगा।

(5) इंग्लैण्ड : बिस्मार्क ने फ्री-ट्रेड लागू कर इंग्लैण्ड सहानुभूति प्राप्त की। वह एकीकृत जर्मनी के पक्ष में था। बिस्मार्क जानता था कि जब तक इंग्लैण्ड की नौ-सेना को चुनौती नहीं देंगे तब तक इंग्लैण्ड युद्ध नहीं करेगा।

* इस समय प्रशा यूरोप की एक शक्ति के रूप में उभरा।

श्लीफिन योजना: विलियम-II यह यूरोप का अधिनायक होना चाहता था, उसके सैन्य अधिकारियों ने श्लीफिन योजना नामक सैनिक रणनीति फ्रांस व रूस पर निर्णायक और तीव्र गति से आक्रमण करना निहित था।

* 1870-71 ई. में जर्मनी का रूस के साथ मधुर सम्बंध, आस्ट्रिया, इटली व इंग्लैण्ड तटस्थ रहे। जर्मनी का फ्रांस के साथ अलसास व लोरेन्स को लेकर विवाद है।

* जर्मनी के एकीकरण के पश्चात बिस्मार्क लौह - व रक्त की नीति का त्याग किया। एवं उसके स्थान पर शुगर एण्ड प्लम की नीति अपनाई।

शुगर एण्ड प्लम

Sugar and Plum - इसके दो आधार - (1) फ्रांस को यूरोपीय देशों से पृथक किया जाए (2) जर्मनी के लिए मित्र राष्ट्र की तलाश करना।

इस नीति के परिणाम स्वरूप कूटनीति व गुटबंधन व प्रति गुटबंधन का युग शुरू हुआ।

* बिस्मार्क की 1870-71 से 1890 तक बिस्मार्क की विदेश नीति :-

- इस काल में बिस्मार्क ने शुगर एण्ड प्लम (खट्टे-मीठे की नीति) को अपनाते हुए वह फ्रांस को यूरोपीय देशों से पृथक रखना, तथा उसे मित्र न प्राप्त होने देना तथा जर्मनी के लिए फ्रांस के विरुद्ध मित्र की तलाश।

* तीन सम्राटों के बीच समझौता (सित. 1872) - (जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस)
(1) यूरोप में शान्ति की स्थापना।
(2.) किसी अन्य देश या अ. राष्ट्र से युद्ध होने पर आपसी विचार-विमर्श करना व सामूहिक कदम उठाना।

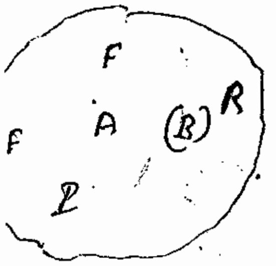

* बाल्कन को लेकर रूस एवं आस्ट्रिया के बीच विवाद है। दोनों ही बाल्कन में विस्तार करना चाहता था।

* 1878 ई. बर्लिन काँग्रेस में रूस हारा। जर्मनी से पूछा कि यदि आस्ट्रिया के साथ युद्ध करेगा तो वह किसका साथ देगा, तो जर्मनी ने आस्ट्रिया का साथ

* रूस व आस्ट्रिया के बीच समझौता :- (1) इसके अनुसार बोस्निया व हर्जेगोविना पर आस्ट्रिया किसी समय अधिकार कर सकता है (2) रूस बल्गेरिया पर अधिकार कर सकता है

* बाल्कन को लेकर आस्ट्रिया व रूस के सम्बंध नहीं अपितु रूस व जर्मनी के भी सम्बंध बिगड़ रहे थे (बोस्निया व हर्जेगोविना को मान्यता व बुल्गारिया को छोटे भागों में विभक्त कर दिया)

* द्वि-गुट संधि (7 अक्टू. 1879) (जर्मनी व आस्ट्रिया) दोनों को दोस्ती की आवश्यकता थी
उस समय आस्ट्रिया का चांसलर एैनरेसी था ~~कि जिसने कहा~~ वह कूटनीति में बिस्मार्क से कम नहीं था उसने कहा यदि जर्मनी का फ्रांस के साथ युद्ध करता है तो वह उसका सहयोग नहीं करेगा। उस समय बिस्मार्क को ऐसा ही कहना पड़ा। कि

* इस संधि के तहत :(1) आस्ट्रिया व रूस के बीच युद्ध होता है, तो जर्मनी आस्ट्रिया की मदद करेगा।
(2) यदि जर्मनी व फ्रांस के बीच युद्ध होता है, तो आस्ट्रिया तटस्थ रहे
(3) यदि फ्रांस व रूस ने मिलकर जर्मनी के साथ म युद्ध करता है।
आस्ट्रिया जर्मनी की मदद करेगा। बिस्मार्क का उद्देश्य पूरा हो गया।
* इस संधि की शर्त - 1887 तक गुप्त रखा गया।
*त्रि-गुट संधि :- (जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली) (1882) ~~त्रिपक्ष ट्रीटी~~
* बर्लिन कांग्रेस में बिस्मार्क ईमानदार दलाल की नीति - वह दोहरी चाल चला रहा थी
वह इटली व फ्रांस दोनों को अलग² उकसा रहा था।
~~* इस संधि की शर्तों को 1887 तक गुप्त रखा गया।~~
* 1881 ई. में फ्रांस ट्यूनिशिया पर अधिकार करने पर इटली त्रि-गुट संधि में शामिल।
शर्त :- (1) यदि इटली का फ्रांस के साथ युद्ध होता है तो जर्मनी व आस्ट्रिया सहयोग करेंगे
(2) जर्मनी, आस्ट्रिया व इटली का यदि किसी चौथी शक्ति के साथ युद्ध होता है तो
तीनों मिलकर युद्ध करेंगे।
(3.) इटली ने यह स्पष्ट किया कि वह इंग्लैंड के साथ युद्ध नहीं करेगा।
* यह एक गुट तैयार हो गया। [आस्ट्रिया, जर्मनी, इटली] A G I

*बिस्मार्क की नीति (1870-71-1890)
(1) तीन सम्राटों के बीच नया समझौता :- (1881) [जर्मनी, आस्ट्रिया व रूस]
- यह जानते हुए कि त्रि-गुट संधि रूस के विरुद्ध थी, किन्तु व रूस संधि न करना चाहता था।
मार्च, 1881 ई. में रूस जार के जार अलेक्जेण्डर की हत्या कर दी उसके स्थान पर जार
अलेक्जेंडर - III शासक बना। वह जार यूरोप में अकेला महसूस करता था। (फ्रांस
गणतंत्र था) तथा बिस्मार्क का उद्देश्य - फ्रांस को अलग रखना।
* शर्तें - (1) तीनों राष्ट्रों में से किसी का अन्य देश के साथ युद्ध होने पर बाकी दोनों
देश तटस्थ रहेंगे। (यह बिस्मार्क की दोहरी चाल)।
(2.) रूस ने बाल्कन क्षेत्र में आस्ट्रिया के हितों को मान्यता दे दी।
* जर्मनी, आस्ट्रिया व रूस के बीच (Rein Surence treaty - 1887)
फ्रांस का विदेश मंत्री बाऊलेंगर जर्मन विरोधी प्रोपोगेंडा कर रहा था।
इस संधि के अनुसार ①तीनों में से किसी एक राष्ट्र का किसी चौथी शक्ति के साथ
युद्ध होता है तो बाकी दो राष्ट्र तटस्थ रहेंगे।
② बाल्कन क्षेत्र में यथा स्थिति कायम रखी जायेगी।
* 1890 ई. में बिस्मार्क ने पद त्याग दिया।
* बिस्मार्क विश्व के रंगमंच पर उस समय आया, जब
1862 ई. में रक्त व लौह की नीति से जर्मनी का एकीकरण, 1870 से 1890 तक
वह फ्रांस को अलग व अन्य देशों की मित्रता प्राप्त की।
* 1888 ई. में कैसर विलियम मृत्यु हो गई। 1888 ई. में कैसर विलियम - II शासक

उस समय तक बिस्मार्क अपने पुत्र को उच्च सेवा में पहुँचा चुका था। तथा कैसर-II के समय हर व जगह बिस्मार्क की बू आ रही थी इसीलिए उस म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती, इसे मजबूर किया गया त्याग पत्र।

त्रि-राष्ट्र तोड़ाई * द्वि-गुट संधि :- (1893) (फ्रांस व रूस) :- 1887 ई. में द्वि-गुट संधि (1879) की संधि के की शर्तों का प्रकाशन हुआ तो रूस फ्रांस ने रूस को आर्थिक व सैन्य सहायता का प्रस्ताव भेजा। (1888), 1891 ई. में फ्रांसीसी नौ-सैन्य सेना बेड़ा रूस पहुँचा जिसका जार ने व्यक्तिगत रूप से स्वागत किया। 1893 ई. मे रूस का सैन्य बेड़ा फ्रांस पहुँचा तथा 1893 ई. में फ्रांस व रूस के मध्य द्वि-गुट संधि हुई।

शर्तें :- (1) यदि रूस का आस्ट्रिया या जर्मनी या दोनों के साथ युद्ध होता है तो फ्रांस रूस की सहायता देगा।

(2) यदि फ्रांस का जर्मनी या इटली या दोनों के साथ युद्ध होता है तो रूस फ्रांस को सहायता देगा।

* द्वि-एन्टेन्ट (आंतात) (1904 ई.) (फ्रांस व इंग्लैण्ड) :- (1) फासोदा घटना - फ्रांस के विदेश मंत्री थियोफिलोडियण डिलकासे डेलकासे द्वारा सुझबूझ से सेना हटा युद्ध को टाल दिया। 1903 ई. एडवर्ड-VII फ्रांस की यात्रा पर गया। जहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ। 1904 ई. में फ्रांस के राष्ट्रपति इम्याइल लूबे व विदेश मंत्री डेलकासे इंग्लैण्ड की यात्रा पर गया। और दोनों के बीच समझौता जिसे द्वि-एंटा हुआ। इस समझौते के अनुसार :-

(1) इंग्लैण्ड ने मोरक्को में फ्रांस हितों को मान्यता दे दी।

(2) फ्रांस ने मिस्र में इंग्लैण्ड के हितों को मान्यता दे दी।

* द्वि-एन्टेन्ट (आंतात) - 1907 - (इंग्लैण्ड व रूस) इंग्लैण्ड रूसो फोबिया से ग्रस्त था।

* रूसो जापान-युद्ध के समय उत्तरी सागर में डोगर बैंक में जापानी नौ-सैन्य बेड़ा समझकर रूस ने इंग्लैण्ड के नौ-सैन्य बेड़ा पर आक्रमण कर दिया। इंग्लैण्ड ने इसका कड़ा विरोध किया। इंग्लैण्ड ने रूस के विरुद्ध सेना भेजी, परन्तु फ्रांस के विदेश मंत्री डेलकासे ने दोनों के बीच समझौता मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सहयोग किया। इसे डोगर बैंक की घटना कहते हैं।

शर्तें ①इस समझौते के अनुसार फारस की खाड़ी में इंग्लैण्ड व रूस के बीच मतभेद समाप्त कर दिये। इसके अनुसार यह निश्चित किया कि उत्तरी फारस में रूस का अधिकार रहेगा। दक्षिणी फारस में इंग्लैण्ड का प्रभाव रहेगा।

(2.) रूस व इंग्लैण्ड तिब्बत के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।
(3) रूस ने अफगानिस्तान में विस्तार की नीति को त्याग दिया। (इंग्लैण्ड हित को मान्यता)

* त्रि-गुट-ऐंटा -(1907) 1907 ई. इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस

* त्रि-गुट (1882) → त्रिगुट-ऐंटा	जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली त्रि (1882) पूर्व मैत्री संधि यह सैन्य समझौता था।
* G+A+I → E+F+R	ट्रिपल ऐंतात

* ऐंटा - मैत्रीपूर्ण संधि।

* प्रथम विश्व-युद्ध के कारन :- (1) यूरोप का दो-सैन्य शिविरों में विभक्त :-

(1) त्रि-गुट संधि + त्रि-गुट ऐंटा। (2) जर्मनी का एक सैन्य शक्ति के रूप में उभरना :- जर्मनी एक लौह-रक्त नीति का उत्पाद था उसका अस्तित्व सैन्य क्षमता पर निर्भर करता है। (3.) हथियारों की होड़ शुरू :- जर्मनी एक सैन्य शक्ति के रूप में उभरा, जर्मनी अभी तक यूरोप की शक्ति है उसे विश्व शक्ति बनाने के लिए 1898 ई. में नौ-सेना योजना बनाई इसके तहत नौ-सेना को बढ़ाना (यदि जर्मनी को सूर्य के नीचे स्थान चाहिए तो उसे इंग्लैण्ड की नौ-सेना की चुनौती को टक्कर देनी होगी) - जर्मनी कहता है उसका भविष्य समुद्र पर निर्भर है

— इंग्लैण्ड - हमारे देश में सूर्य नहीं छिपता, यदि जर्मनी 1 जहाज बनायेगा तो इंग्लैण्ड दो सैन्य जहाज बनायेगा।

* हथियारों की होड़ को रोकने के लिए (1) 1899 ई. प्रथम निःशस्त्रीकरण सम्मेलन हेग :- रूस के कहने पर हेग में शुरू हुआ इसमें, अमरीका सहित 29 देशों ने भाग लिया। प्रमुख - (1) अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का संहिताबद्ध करने का कार्य प्रारम्भ हुआ। (2.) आपसी विवादों को सुलझाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्याय स्थापित किया, जिसे International Cort of Arbitration (सलाह-मशविरा के...)

* यह सम्मेलन असफल रहा, क्योंकि जर्मनी किसी भी तरह अपने हथियारों ~~कम करने में~~ कटौती नहीं करना चाहता था।

* द्वितीय - निशस्त्रीकरण सम्मेलन 1907 (हेग) :- रूस के प्रभाव से, इसमें अमरीका सहित 44 देशों ने भाग लिया। यह सम्मेलन भी असफल रहा। (जर्मनी कटौती नहीं करना चाहता) इस सम्मेलन की उपलब्धियाँ —

(1) युद्ध होने से पहले औपचारिक घोषणा करना अनिवार्य।
(2) इस प्रकार के सम्मेलन भविष्य में और आयोजित किया जाए।

* निशस्त्रीकरण सम्मेलन के बावजूद हथियारों की होड़ जारी रही।

* **कैसर विलियम-II की उग्र नीति :-** जर्मनी का शासन सेना से प्रभावित था।
- कैसर विलियम द्वारा उग्र भाषण - जर्मनी के लोग इंग्लैण्ड से युद्ध करना चाहते हैं लेकिन मैं इनके बीच खड़ा हूँ नहीं तो कभी युद्ध हो जाता है। वान एवं कैसर के भाषणों में तलवार की टनकराहट सुनाई दे रही थी (Sabir ...)

(2) **अल्सास व लारेन्स का विवाद :-** फ्रांस फ्रैंकफर्ट संधि के तहत फ्रांस से जर्मनी ने ले लिया।

* **बाल्कन क्षेत्र :** बाल्कन ऐसा समुद्र है जहाँ यूरोप की सभी शक्तियों ने गोता लगाने की कोशिश की।

(1) **आस्ट्रिया व रूस :** के बीच विवाद :- **बर्लिन कांग्रेस** बिस्मार्क द्वारा आस्ट्रिया की मदद करने का -

(2) **आस्ट्रिया - सर्बिया :-** 1908 ई. में बोस्निया व हर्जीगोविना पर अधिकार आस्ट्रिया अपना अधिपत्य कुस्तुनतुनिया तक स्थापित करना चाहता था। सर्बिया एक स्लाव देश था। बोस्निया व हर्जीगोविना में भी स्लाव जाति थी। सर्बिया एक स्लाव के राष्ट्र के निर्माण की पहल करना चाहता था। (स्लाव वासियों के लिए स्लाव राज्य)। रूस भी एक स्लाव राज्य है। इसलिए रूस भी मदद करेगा। आस्ट्रिया - सर्बिया को कुचल कर कुस्तुनतुनिया तक अधिकार कर लेगा।

* सर्बिया में प्रेस पर नियंत्रण नहीं था। (2) सर्बिया में अनेक आतंकवादी गुट थे जिनका उद्देश्य आस्ट्रिया के उच्च प्रमुख अधिकारियों की हत्या करना था।

(3) आस्ट्रिया-हंगरी व रोमानियाँ के बीच विवाद :- क्योंकि हंगरी द्वारा रोमानियाँ वासियों पर अत्याचार हो रहे थे। इस कारण विवाद थी।

* **बाल्कन में जर्मनी - रूस विवाद :-** जर्मनी को तुर्की से - बर्लिन-बगदाद रेलवे के निर्माण का ठेका मिला था। जिससे जर्मनी का प्रभाव बढ़ा। जिसका रूस ने विरोध किया।
(कैसर विलियम-II का तुर्की में भाषण में कहा हम मुस्लिम जनता की रक्षा करना चाहते हैं)

* बुल्गारिया व रोमानियाँ में जर्मन शासक थे तथा यूनान की महारानी जर्मन राजकुमारी थी।

S. B. 407

*** तात्कालिक कारण :- आस्ट्रिया के राजकुमार ~~फर्डिनेंट~~ फ्रांसिस फर्डिनेंट की हत्या :-**

On Sunday, The ("सेंट वाइटस डे") St. Vitus day, 28 June, 1914, 10:45 A.M. Archduke Frany Fridinond - हत्या करने वाला - Gavrilo Princip (गेवरीलो प्रिंसिप). यह ~~Black~~ Black Hand (काला हाथ) आतंकवादी गुट का नाम।

Black Hand

* यह फ्रांसीस जोसफ का भतीजा था, वह आस्ट्रिया का उत्तराधिकारी था।

* आस्ट्रिया ने फर्डिनेंट की हत्या का आरोप सर्बिया पर लगाया क्योंकि प्रिंसिप (हत्यारा) स्लाव था।

* 5-6 जुलाई, 1914 ई. को आस्ट्रिया का राजदूत कैसर विलियम-II का राजदूत पोटस नामक स्थान पर मिला तथा उसने आस्ट्रिया के सम्राट की ओर से मदद का प्रस्ताव रखा। • कैसर विलियम ने आस्ट्रिया को बिना शर्त (Blank Cheque) सहायता का ~~प्रस्ताव किया~~। वादा किया।

* 18 जुलाई, 1914 रूस के विदेश मंत्री Serge Sazone ने घोषणा की यदि आस्ट्रिया - सर्बिया पर आक्रमण करता है, तो रूस उसे बर्दाश्त नहीं करेगा।

* 23 जुलाई, 1914 आस्ट्रिया ने सर्बिया को 10 माँगों का प्रस्ताव भेजा व 48 घंटे का समय दिया।

* 25 जुलाई 10 में से 8 माँगे मान ली गई, एवं 2 के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में विवाद सुलझाने का प्रस्ताव रखा।

- दो मांगे - (1) आस्ट्रिया की पुलिस सर्बिया में तैनात हो जाये
  (2) राजकुमार की हत्या की जिम्मेदारी सर्बिया लो।

* 20 जुलाई से 23 जुलाई, 1914 ई. फ्रांस के राष्ट्रपति M. Poincare and विदेश मंत्री Viviani दोनों रूस की यात्रा पर थे। M. Poincare ने आस्ट्रिया के राजदूत से कहा, ~~सर्बिया रूस~~ मे सर्बिया के घनिष्ठ ~~मित्र~~ मित्र है तथा रूस का एक मित्र है फ्रांस।

* आस्ट्रिया ने सर्बिया के इस प्रस्ताव को टालने वाला बताया।

* 28 जुलाई, 1914 को रूस ने इस विवाद को सुलझाने के लिए एक सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव रखा।

* 28 जुलाई, 1914 ई. आस्ट्रिया ने सर्बिया पर आक्रमण कर दिया। (शांति के प्रयास समाप्त)

* यह आस्ट्रिया का विदेश मंत्री - Berchtold तथा जर्मनी का प्र. प्रधानमंत्री Bethmann Hollweg था। दोनों

* **गुप्त संधियाँ** :- अप्रैल 1915 ई. की लंदन की संधि - के तहत इटली ने युद्ध में भाग लिया। इटली को ट्रेंटीनो, गोरिजिया, ग्राडिस्का, आस्ट्रिया तथा उसके पास के द्वीप, टाइरोल, फ्यूम को छोड़कर अन्य सभी बंदरगाहें सहित डालमेशिया, अल्बानिया व डोडेकेनीज देने का वचन दिया। राष्ट्रीय पक्ष ... होगा तथा ... फ्रांस व इंग्लैंड के बराबर हिस्सा दिया जायेगा। व जर्मनी के उपनिवेशों के बंटवारे उसमें भी उसे हिस्सा मिलेगा तथा। युद्धोपरांत इस संधि का पालन नहीं की गई।

* फरवरी 1917 - जापान - आंग्ल संधि

* युद्ध से पूर्व जर्मनी के चांसलर बेथमन हॉलवेग ने युद्ध रोकने के प्रयास हुवे।

* 3 अगस्त 1914 ई. में बेल्जियम पर आक्रमण (आस्ट्रिया) के कारण इंग्लैण्ड भी शामिल हो गया।

* 6 अप्रैल, 1917 ई. में अमरीका प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ (Man, material, Money)

* पश्चात ब्रिटेन ने भी युद्ध की घोषणा (बेल्जियम की तटस्थता भंग करने के कारण किया)

युद्ध समाप्त - 11/11/1918 ई

* प्रथमविश्व युद्ध के परिणाम ; इस युद्ध में विश्व के 30 देशों ने भाग लिया तथा 87% जनता प्रभावित हुई। इस युद्ध में शामिल नहीं (यूरोप - हॉलैण्ड, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन) नहीं हुवे। (द. अमरीका - मैक्सिको व चिल्ली) इस युद्ध में पहली बार लड़ाकू टैंक, जहरीले गैस, आदि का प्रयोग हुआ।

* लैंगसम - World Since 1914: प्रथम विश्वयुद्ध जो कि एक हजार पाँच सौ दिन लड़ा गया। अब तक के लड़े हुए युद्धों में सबसे खूनी एवं खर्चीला युद्ध था।

(1.) आर्थिक हानि :- इस युद्ध में 186 बिलियन डॉलर खर्च हुआ

(2.) जन हानि :- दोनों ओर से 6.50 करोड़ लोग लड़ रहे थे इनमें से 1 करोड़ 40 लाख मरे तथा 2 करोड़ 20 लाख घायल हो गये इनमें से 70 लाख अपाहिज हो गये (Maimed) (यानि - 1870 - 1914 ई के बीच हुये युद्धों में मरने वालों की संख्या दुगुनी थी)

(3.) आर्थिक व वित्तीय संस्थाओं को आघात - सभी देशों ने अपने आय के स्रोत युद्धों में लगा दिया। युद्ध समाप्त होने पर सभी देशों की वित्तीय व्यवस्थाएं चरमरा गई।

(4.) प्रजातंत्र की स्थापना :- इस युद्ध के पश्चात प्रजातांत्रिक एवं गणतांत्रिक राज्यों की स्थापना - पोलैण्ड, एस्थो, स्लोवेनिया, लुथिया, जर्मनी, आस्ट्रिया आदि में गणतंत्रवादी राज्य स्थापित हुवे। जापान व अफ्रीका में भी प्रजातांत्रिक सरकारों की माँग हुई (इससे पूर्व संवैधानिक राजतंत्र था)

(5.) उदार वाद को आघात। गैथोन हार्डिंग के अनुसार :- उदारवाद अपनी मृत्यु शैय्या पर लेट गया। प्रथम युद्ध से पूर्व उदारवादी पार्टियां बहुमत में थी किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद विश्व समाजवाद की ओर अग्रसर हुआ।

(6) बेरोजगारी की समस्या : सेना व सेवा से जुड़े थे

26 Apr 1915 लंदन की गुप्त संधि - मित्र राष्ट्रों ने इटली को ट्रेन्टीनो, दक्षिण टायरोल, गोरिजिया, इस्ट्रिया व अल्बानिया द्वीप समूह देना स्वीकार किया। व 23 मई 1915 को इटली ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।

* ब्रेस्ट लिटोवस्क संधि, 3 मार्च 1918 जर्मनी द्वारा रूस को पराजित किया गया। ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि रूस पर थोपी गई, रूस युद्ध से बाहर हो गया

Emerald years मृत्युशैय्या पर

राजतंत्रों का पुनः पराभव

(7) यूरोप के मानचित्र में परिवर्तन :- आस्ट्रिया व हंगरी को दो स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में स्थापित किया गया। पोलैंड को एक स्वतंत्र राज्य बनाया गया। इसके अतिरिक्त रूस लैटविया, Estonia, लुथिनिया आदि राज्य तथा चेक जाति के लिए चेकोस्लोवाकिया नामक राज्य तथा स्लाव जाति के लिए युगोस्लाविया स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त फ्रांस, जर्मनी आदि राज्यों की सीमाओं में परिवर्तन हुआ। (जैसे - जर्मनी का प्रशा राज्य व लुथि. आदि का ~~बकाना~~ अलग अलग होना)

(8) विश्व में श्रमिक वर्ग का प्रादुर्भाव / या महत्व :- प्रथम विश्व के पश्चात जर्मनी फ्रांस जर्मनी आदि में श्रमिक का महत्व बढ़ा तथा 1917 ई. में रूस में साम्यवादी क्रांति हुई जिसमें श्रमिकों ने योगदान दिया।

(9) महिला मताधिकार के पक्ष में वातावरण बना :- प्रथम विश्व में महिलाओं का योगदान तथा उनके योगदान को पश्चात्, ~~तब~~ तो उन्हें मताधिकार प्रदान किया। 1918 ई. में इंग्लैंड में मताधिकार बढ़ाया (21 वर्ष पुरुष व 30 वर्ष महिला) जो हैमल देती है।)

* 21 वर्ष की महिलाओं को मताधिकार 1928 ई. में दिया गया।

(10) शक्ति संतुलन का स्थानान्तरण :- यूरोप के स्थान पर अमरीका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व कूटनीति का केन्द्र बन गया। अमरीका विश्व का सबसे बड़ा ऋणदाता बन गया।

(11) विज्ञान के क्षेत्र में विकास :- विजय हासिल के लिए नई तकनीक का हुई गये। जिससे विज्ञान के क्षेत्र - शल्य चिकित्सा आदि विकास।

12 राष्ट्रों के उद्धव प्रोत्साहन

* पेरिस का शांति सम्मेलन :- फरवरी 1918 ई. में अमरीका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने शांति प्रस्ताव रखा। परन्तु विल्सन के पास कोई ठोस ~~अर~~ योजना नहीं थी इसलिए प्रयास असफल रहा।

* 12 दिसम्बर 1916 ई. जर्मनी के शासक कैसर विलियम-II, शांति स्थापित करने के अमरीका को मध्यस्थता के लिए कहा। लेकिन समझौता किस आधार पर किया य ठोस योजना नहीं थी अतः काम असफल रहा।

* 18 दिस. 1916 ई. में विल्सन ने पुनः प्रस्ताव रखा - इस शांति प्रस्ताव में - (1) जर्मनी, अ फ्रांस को अलसास व लारेंस लौटाए (2) भविष्य में ~~युद्धों~~ युद्ध समाप्त करने के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना का प्रस्ताव। (3) युद्ध से पहले जो देश ~~जिस देश सीमा तक थी वहीं~~ (जिनके) सीमाएं निर्धारित थी वहीं तक सेना हटा ली।

* यह सामान्य शांति नहीं होनी चाहिए, यह बिना विजय के शांति - वुडरो विल्सन।

~~अमरीका का राज्य Wyoming - 1890 ई. में महिलाओं को मताधिकार दिया।~~ देश - न्यूजीलैंड - 1893, आस्ट्रेलिया 1903, फिनलैंड - 1906, इंग्लैंड, रूस - 1918, जर्मनी स्वीडन चेको. आस्ट्रिया पोलैंड - 1919, USA व हंगरी 1920

इसमे यह तय कि नहीं हो सका कि कौन विजय हुआ, तय नहीं होगा।
* विल्सन के प्रस्ताव को मित्र व धुरी राष्ट्रों ने ठुकरा दिया।
* जनवरी, 1917 ई. को जर्मनी ने ब नौ-सेना युद्ध को उग्र किया इसके परिणामस्वरूप कई अमरीकी जहाज क्षतिग्रस्त हो गये।
* 3 फरवरी, 1917 अमरीका ने जर्मनी से सभी राजनायिक सम्बन्ध तोड़ दी परन्तु जर्मनी ने नौ-सैन्य युद्ध जारी रखा। जिससे अमरीका युद्ध मे शामिल।
* गुडफ्राइडे, 6 अप्रैल, 1917 ई. में अमरीका शामिल हुआ।
* 8 जनवरी, 1918 ↳ वुडरो विल्सन ने अपने 14 सिद्धान्तो पर आधारित शांति प्रस्ताव रखा।
इसका मूलाधार :- स्वतंत्र संधि नहीं करे, व समुद्री मार्ग सभी के लिए स्वतंत्र खोलदे।
* जर्मनी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। 18 अगस्त 1918 ई. मे जर्मनी ने अपना अंतिम आक्रमण किया। जो असफल रहा।
* मित्र- बुल्गारिया, अम्बू- टर्की, नम्बर- आस्ट्रिया ने समर्पण किया।
* 3 नम्बर : जर्मनी ने कील नहर क्षेत्र में जर्मन सेना ने विद्रोह कर दिया। तथा इसी प्रकार के विद्रोह जर्मनी के अनेक नगरो में शुरू।
* 9 नम्बर 1918 ई. कैसर विलियम हॉलैण्ड चला गया।
* 11 नम्बर, 1918 ई. 11:00AM युद्ध विराम हुआ। (Amistice)
* युद्ध-विराम मे जर्मनी ने हस्ताक्षर किए की वि वुडरो विल्सन के 14 सूत्री सिद्धांतो पर आधारित एक संधि पर हस्ताक्षर करेगा।
* 18 जनवरी, 1919 - पेरिस शान्ति सम्मेलन व वर्साय संधि - उद्घाटन फ्रांस के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति M. Poincoré (पोइनकरे) तथ
इसका अध्यक्ष - प्रधानमंत्री (फ्रांस) Georges Clemenceau (क्लेमेन्सु) तथा इसमे 32 राष्ट्रों ने भाग लिया। (जर्मनी व रूस शामिल न होने दिया)।
* 7 मई, 1919 शांति सम्मेलन का प्रारूप तैयार कर लिया। इस प्रस्ताव को जर्मन प्रतिनिधियो के समक्ष रखा। जिन्हें 29 अप्रैल को बुलाया गया।
* 22 जून, 1919 ई. क्लेमेन्सु ने जर्मनी को शांति प्रस्ताव पर संधि के लिए हस्ताक्षर के लिए 24 घंटे (दिन) का अल्टीमेटम दिया। जर्मनी और समय मांगा। लेकिन फ्रांस इसके लिए राजी नहीं है।
* 28 जून 1919 ई. को 2:00 PM वर्साय के शीश महल मे जर्मनी ने हस्ताक्षर की।
* इस वर्साय के महल मे जर्मनी का बहुत अपमान हुआ।
* जर्मनी के प्रतिनिधि Bell व मूलर ने अपनी ओर पर हस्ताक्षर किये।
* फर्डिनेंड की यह 5 वी पुण्यतिथि थी।
* यह संधि-पत्र - 15 भागो मे विभाजित, जिसमें 439 धाराएं थी। -

* वर्साय संधि के तीन भाग (1) सीमा व्यवस्था :-
(2) क्षति-पूर्ति :-
(3) निशस्त्रीकरण :- (फ्रांस)

* मित्र राष्ट्र की ओर से हस्ताक्षर - Marshal Foch. ने कहा - यह युद्ध विराम 20 वर्ष के लिए शांति प्रस्ताव है।

* इस वर्साय के सम्मेलन में चार बिग थे - (1) वुडरो विल्सन (अमेरीका)
जापान - P.M. सेमोजी
(2) क्लेमेन्सु (फ्रांस प्रधानमंत्री) (टाइगर)
(3) लायड जॉर्ज (इंग्लैण्ड ...)
(4) ऑरलैण्डो (इटली प्रधानमंत्री)

* अमरीका के सीनेट में उदारवादी (गणतंत्रवादी) का बहुमत था। उन्होंने वुडरो विल्सन की नीतियों को खारिज कर दिया। इस कारण यह नेशनल लीग का सदस्य नहीं बना। वह लोकतंत्र था तथा अमरीका का वर्साय की संधि को मानने से इंकार।

* क्लेमेन्सु ने वुडरो विल्सन के 14 सूत्री प्रस्ताव को ताक रख दिया।

* ईसाईयों के धर्म के "दस सिद्धान्त" को TEN Commandments कहते हैं। क्लेमेन्सु कहता है कि भगवान दस सिद्धान्तों से संतुष्ट है, तो 14 सूत्री का महत्व है।

* इटली चाहता था कि 1915 ई. की हुई 'लंदन की संधि' के अनुसार उसे सायर, इस्टु इलिरियाँ Dalmatia प्राप्त हो जाये तो संतुष्ट होगा।

* राजनीति में स्थायी मित्र नहीं होते स्थायी स्वार्थ होते हैं।

* सीमा व्यवस्था :- (1) अल्सास एवं लारेन्स फ्रांस को दे दिये।
(कोयले की खानें) (2) सार बेसिन क्षतिपूर्ति के लिए 15 वर्ष के लिए फ्रांस को दिया (यह जर्मनी का खनिज सम्पदा से भरपूर था। 15 वर्ष बाद जनमत करवाया जायेगा।)
(3) कील नहर क्षेत्र का असैन्यकरण किया गया। तथा उसकी तटस्थता स्थापित की गयी। (4) राइन प्रदेश का असैन्यकरण किया गया। तथा उसकी तटस्थता स्थापित।
(5) जर्मनी के अन्तर्राष्ट्रीय बंदरगाह रेलवे आदि पर नियंत्रण के लिए राइन आयोग का गठन किया गया।
(6) लैग्जमबर्ग को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया गया वह उसकी तटस्थता स्थापित की गई।
(7) बेल्जियम को यूपेन, ~~मार्सनेट~~ मालमेडी नामक राज्य दिये।
(8) पोलैण्ड को जर्मनी का Posen and West Prussia (पोसेन व प. प्रशा) दिया गया और आस्ट्रिया से गलेशिया का राज्य पोलैण्ड को दिया। पोलैण्ड को समुद्र तक पहुँचने के लिए एक गलियारा दिया, जिसे पोलैण्ड गलियारा दिया गया।
(9) विस्तुला नदी पर नदी पर स्वतंत्र डैन्जिग राज्य की स्थापना की।
(10) आस्ट्रिया को स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित एवं उसकी सीमा को कम किया। (11) जर्मनी का अपने उपनिवेशों (जबरदस्ती) पर सारे अधिकार मित्र राष्ट्रों को सौंपे।
(12) श्लेसविग में जनमत संग्रह कराया गया, इसके आधार पर उत्तरी श्लेसविग डेनमार्क को व द. श्लेसविग जर्मनी के पास रहा।

*(10) हंगरी को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया। (यह कभी एक नहीं होंगे)

(11) चेकोस्लोवाकिया नामक नया राज्य स्थापित किया गया। (बोहेमिया मोरेविया स्लोवेकिया मिलकर) तथा जर्मनी का स्युडेटनलैंड भी चेकोस्लोवाकिया को दिया।

(12) युगोस्लाविया नामक नया राज्य स्थापित हुआ। (स्लाव जाति के) इसमें सर्बिया, बोस्निया-हर्जेगोविना, मोंटेनिग्रो, क्रोशिया (Croats), इस्तिरिया, डेलमाशिया को मिलाकर युगोस्लाविया बना।

(3) इटली को टाइरोल दिया गया। फ्रांस से प्राप्त बहुमूल्य कलात्मक वस्तुएँ, ट्रॉफियाँ, झंडे आदि (जर्मनी को 1870-71 के फ्रांस-प्रशा युद्ध में) वापस करनी पड़ी।

(2) **क्षति पूर्ति** :- (1) युद्ध के समय सिविल सम्पत्ति के नुकसान का हर्जाना जर्मनी को देना होगा। (2) जर्मनी युद्ध के पश्चात होने वाली विधवा विधवाओं को पेंशन देनी होगी। (3) क्षतिपूर्ति राशि का भुगतान के लिए "क्षतिपूर्ति आयोग" का गठन किया जायेगा।

(कोयला खानों को छोड़ 15 वर्ष) (4) जर्मनी फ्रांस की कोयले की मांग पूरी करेगा। बेल्जियम, लेमन को कोयले की मांग (?)

(5) 1600 टन से अधिक भार के मालवाहक जहाज समर्पित करेगा।

(7) क्षार बेसिन 15 वर्ष के लिए फ्रांस को दिया गया।

(8) आस्ट्रिया-हंगरी आदि देशों द्वारा दी जाने वाली राशि भी क्षती-पूर्ती आयोग तय करेगा।

(9) जर्मनी की एल्ब, डेन्यूब आदि नदियों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण व राइन नदी को अंतर्राष्ट्रीय आयोग के अधीन

(3) **निशस्त्रीकरण** (1) जर्मनी की सेना को एक लाख सैनिकों तक सीमित कर दिया।

(2) जर्मनी अस्त्र के हथियार निर्माण पर नियंत्रण किया।

(3) जर्मनी के सैन्य अधिकारियों के अधिकारों को नियंत्रित (कम) किया।

(4) जर्मनी ने अपनी सभी पनडुब्बियों का समर्पण करना होगा।

(5) आस्ट्रिया की सेना को 30 हजार सैनिकों तक सीमित।

(6) हंगरी की सेना को 35 हजार तक सीमित।

(7) बुल्गारिया की सेना को 20 हजार सैनिकों तक सीमित

(8) इन राज्यों में अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण समाप्त कर दिया।

अन्य पृथक संधियाँ -(1) आस्ट्रिया - Treaty of St. Germain (1919) (सैंट जर्मेन की संधि 10 सित.)

(2) हंगरी - treaty of Trianon - 1920 (ट्रियानों की संधि)

(3) बुल्गारिया - Treaty of Neuilly 1919 (न्यूइली)

(4) टर्की - treaty of Sevres 1920 (सेव्रे)

टर्की ने इस संधि को मानने से इंकार कर दिया। तथा 1923 की लोजान की संधि के तहत से हुआ।

* राइनलैण्ड का सेना रहित क्षेत्र घोषित किया गया
* जर्मनी में शस्त्रों, गोला-बारूद आदि युद्ध सामग्री पर प्रतिबंध लगा दिया। युद्ध सामग्री के मंगाने और विदेशों में भेजने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। युद्ध
× जर्मनी की नाविक शक्ति को कम से कम कर दिया गया। जर्मनी 6 युद्ध-6 क्रूज, 6 लड़ाकू विमान, 12 तोपची जहाज और 12 टारपीडो नावें रख सकेगा
× जर्मनी नौसेना व वायुसेना नहीं रखेगा

• विल्सन के 14 सूत्र :- जर्मनी ने अंतिम रूप से समर्पण राष्ट्रपति विल्सन के 5 नवम्बर, 1918 ई. के नोट के आधार किया। इसमें कहा गया कि मित्र राष्ट्र इस बात पर सहमत हैं कि जर्मनी के साथ संधि के आधार राष्ट्रपति विल्सन के 8 जन, 1918 के व्याख्यान होंगे जिनमें 14 सूत्रों की घोषणा की।

(1.) भविष्य में शांति संधियां प्रकट रूप से की जाए, गुप्त कूटनीति का सहारा नहीं लिया जाए।

(2) शांति व युद्ध दोनों स्थितियों में समुद्रों पर सबके लिए स्वतंत्रता रहे, वे सब देशों के लिए खुले रहें।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मार्ग से आर्थिक बाधाएँ हटा दी जाएं।

(4.) शस्त्रों में कटौती हो।

(5.) अधिक लोगों का ध्यान रखकर उनके हितों की रक्षा करते हुए औपनिवेशिक दावों का निष्पक्ष निर्णय हो।

(6.) रूस को विकास के लिए पूर्ण अवसर प्रदान किया जाए।

(7.) जर्मनी द्वारा बेल्जियम की भूमि को खाली कर दिया जाए और यथा पूर्व स्थि को स्थापित किया जाए।

(8) फ्रांस की भूमि को खाली कर यथा पूर्व स्थिति स्थापित की जाए, और लोरेन व अलसास फ्रांस को लौटा दें।

(9) राष्ट्रीयता के सिद्धान्त के आधार पर इटली की सीमाओं का समाधान हो

(10) आस्ट्रिया-हंगरी के लोगों को स्वायत्त शासन का अधिकार प्राप्त हो।

(11) सर्बिया, मोण्टीनीग्रो तथा रूमानिया को केन्द्रीय राष्ट्रों के अधिकार से खाली करवाकर पूर्व स्थिति में पहुँचा दिया जाए। सर्बिया के समुद्र तट पर निकास स्थल प्राप्त हो।

(12) तुर्की के साम्राज्य के विशुद्ध तुर्की प्रदेश की संप्रभुता सुरक्षित रहे, तथा शेष भागों को स्वायत्त शासन प्राप्त हो। दार्दनेल, बॉसफोरस के जलडमरूमध्य सभी राष्ट्रों के जहाज के लिए यातायात की स्वतंत्रता हो।

(13) स्वतंत्र पोलेण्ड का निर्माण हो, और उसे समुद्र तक पहुँचने की सुविधा हो।

(14) छोटे-बड़े सभी राज्यों को समान रूप से राजनैतिक व्यवस्था, स्वतंत्रता और प्रादेशिक अखण्डता का आश्वासन देने के लिए एक राष्ट्र संघ की स्थापना की जाए।

* सेण्ट जर्मेन की संधि (आस्ट्रिया) :- (10 सित०, 1919) यह संधि मित्र राष्ट्रों और आस्ट्रिया-हंगरी के बीच हुई, जिसके तहत - आस्ट्रिया ने हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता की मान्यता दी उससे बंदरगाह छीन लिए, सैनिकों की संख्या घटाकर, 30,000 करदी व नौसेना समाप्त, व क्षतिपूर्ति राशि आरोपित करायी गई।

* त्रियानो की संधि - यह संधि हंगरी और मित्र राष्ट्रों के बीच इसके तहत - हंगरी ने गैर-मग्यार जनसंख्या को छोड़ दिया, स्लोवाक प्रदेश (चेकोस्लोवाकिया), क्रोशिया-स्लोवेनिया (क्रोशिया, (युगोस्लाविया) को दिए गए, सेना घटाकर, 35,000 करदी, नौसेना गई।

* निउली की संधि :- बुल्गारिया व मित्र राष्ट्रों के मध्य, इसके तहत - प्रथम विश्व युद्ध तथा 1912-13 (बाल्कन युद्धों) में जीते हुए सारे प्रदेश लौटा दिए, उसने युगोस्लाविया को मेसीडोनिया का कुछ भाग व रूमानिया को डोब्रूजा वापस करना पड़ा, उसने थ्रेस का समुद्री तट मित्र राष्ट्रों को दिया (जिसे यूनान को सौंप दिया) तथा 5 लाख डालर क्षतिपूर्ति व सेना 33,000 कर दी।

* सेव्रे की संधि :- तुर्की व मित्र राष्ट्रों के मध्य (10 अगस्त, 1920) - इसके अनुसार हेजाज के अरब राज्य को औपचारिक रूप से स्वतंत्र करके ब्रिटेन के नियंत्रण में फिलिस्तीन, आर्मीनिया को एक ईसाई राज्य बनाकर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में रखा, मैसोपोटामिया ब्रिटेन, जोर्डन सीरिया और फिलिस्तीन को तुर्की से ले लिया, सीरिया को राष्ट्र संघ के संरक्षण में फ्रांस को दिया, डारडेनेलिज और बोस्फोरस जलडमरूमध्यों को अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में रखा। 1920 ई॰ में तुर्की ने सेव्रे की संधि स्वीकार कर ली परन्तु मुस्तफा कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्क राष्ट्र भक्तों ने सेव्रे की संधि को स्वीकार नहीं किया तथा यूनानियों को 1922 ई॰ में पराजित कर एशिया माइनर में अपना स्वामित्व स्थापित रखा।

* पेरिस शांति सम्मेलन - यूरोप का पुनर्निर्माण और शांति स्थापित करने के लिए बुलाया गया।

रासपुटीन् (ग्रेगरी स्फीमोविच नोविख)

* रूस-क्रांति 1917 * (रोमानोव वंश)

* ~~ज़ार~~ ज़ार अलेक्जेंडर-II (1855-1881)
* रूस का समाज दो वर्गों में बंटा हुआ - (1) सामन्त (2) सामान्य वर्ग (कृषि किसान)
* रूस में प्रेस, शिक्षा, व विदेश यात्राओं पर नियंत्रण था।
* ज़ार निकोलस-I (1825-55) की मृत्यु के पश्चात ज़ार अलेक्जेंडर-II शासक बना। (1855-1881)
* ज़ार अलेक्जेंडर ने रूस में कई सुधार किए इसीलिए उसे ज़ार मुक्ति दिलाने वाला ज़ार कहा जाता है। प्रमुख सुधार:-

(1) 1861ई. में सर्फडम अथवा बंधुआ मजदूर प्रथा समाप्त किया।
(2) 1862ई. में न्याय-प्रणाली में सुधार किये - उसने जस्टिस ऑफ पीस ना. न्यायिक अधिकारी (शांति न्यायधीश) की नियुक्ति इनके निर्वाचन की व्यवस्था
(3) 1864ई. में स्थानीय बोर्ड "Zemstvo" (जेमस्त्वो) - यह रूस में 33 प्रांत थे प्रत्येक प्रांत में स्थानीय बोर्ड जेमस्त्वो की स्थापना की। इसके अन्तर्गत - भू-स्वामी व किसानों के प्रतिनिधि व नगरों के प्रतिनिधि शामिल थे। जेमस्त्वो का कार्य सड़क अस्पताल स्कूल जेल आदि का निर्माण करना था। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य आदि जनहितों के कार्य करना था।

* परन्तु रूस की जनता इन सुधारों से संतुष्ट नहीं थी। जनता संवैधानिक सुधार चाहती। ज़ार ने सुधार से मना, परिणाम स्वरूप ज़ार अलेक्जेंडर-II के विरुद्ध आंदोलन जिसे निहिलिस्ट आंदोलन कहते हैं।
* निहिलिस्ट उग्र ~~समाजवादी~~ क्रांतिकारी थी।
* 13 मार्च 1881ई. सेंट पीटर्सबर्ग सड़क पर ज़ार अलेक्जेंडर की बम ब्लास्ट में हत्या कर दी गई। (सेंट पीटर्सबर्ग रूस की राजधानी) इससे पूर्व सात प्रयास हो चुके थे।
* हत्या करने वाला आंतकवादी दल - Peoples will तथा हत्या - Michael Bakum and Pester Lavror ने की।

* ज़ार अलेक्जेंडर-III (1881-1894) - 36 वर्ष का शासक बना। इसके समय की प्रमुख गतिविधियाँ :- (1) निरंकुश शासन - ज़ार-III ने निरंकुश शासन स्थापित किया। उसने ज़ार-II के सुधारों को समाप्त कर दिया।
(1) उसने जेमस्त्वो जामक स्थानीय बोर्ड पर राज्य अधिकारियों की नियुक्ति की।
(2) प्रांतीय गवर्नरों को जेमस्त्वो के चुनाव निरस्त करने का अधिकार दिया।
(3) शिक्षा को चर्च के अधीन किया गया।
(4) गुप्तचर व्यवस्था को सुव्यवस्थित स्थापित किये।

* रास पुटीन - (अर्थ - गंदा व चरित्रहीन), (धार्मिक संत), पवित्र साधु के रूप में ज़रीना की मुहब्बत का बस प्रयोग, ज़ार शासन पर रासपुटीन - कोई कु नियंत्रण, ज़ार कठपुतली था। 1916ई. में प्रिंस यूसुपोव ने हत्या कर दी। ज़ार अलेक्जेंडर-III - उसने कृषक बैंक की स्थापना व स्थानीय प्रशासन में सुधार कि

1785ई. में गोर्बाचेव - ग्लास्नोस्त (खुलापन) (2) पेरेस्त्रोइका (पुनर्निर्माण) की नीति लागू

बाल्शेविक : 1903 ई. लंदन सम्मेलन जहाँ ... के कारण (सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी-1898) ... बाल्शेविक
- बहुमत अर्थात् परन्तु यह प्रारम्भ मे अल्पमत वालो की पार्टी थी. लेनिन इस दल का नेता वह अपने दल मे अल्पमत होते हुए भी बोल्शेविक कहता रहा।
(2) मेन्शेविक - (अल्पमत) यह दल प्रारम्भ मे बहुमत मे था, यह केन्द्रीय संगठन व कठोर अनुशासन के द्वारा सर्वहारा वर्ग का अधिनायक तंत्र स्थापित करना चाहता था। बोल्शेविको की तुलना मे अधिक प्रभाव शाली, मार्तोव इस दल का नेता, ये श्रमिक वर्ग के साथ-साथ अन्य वर्गों के सहयोग से जनतंत्र की स्थापना चाहता था।

(4) निहलिस्ट आंदोलन का दमन किया।

(5) शांति न्यायधीशों के स्थान पर लैण्ड कैप्टीन्स नियुक्त, जो वे भी सामन्तवर्ग इन्हे प्रशासनिक व न्यायिक अधिकार दिये।

(2.) रूसीकरण :- गैर रूस के लोगो का रूसीकरण किया। जार- अलेक्जेण्डर-III की नीति "एक रूस एक धर्म, व एक जार।" (यहाँ 50 लाख यहूदी थे)

(3) स्लाववाद :- स्लाव संस्कृति, भाषा, व परम्पराओं की प्रतिष्ठा स्थापित करना।

(4) औद्योगिक विकास/आर्थिक विकास :- जार-III ने सर्जियस डी वाइट ~~Sergius-de-witte~~ को वित्तमंत्री नियुक्त किया। उसके सुधार :-

(1) विदेशी निवेशको को रूस ~~आमंत्रित~~ आमंत्रित किया तथा इन्हे सुविधाऐ व रियायते प्रदान की।

(2) उसने विदेशी बैंकरो से ऋण उपलब्ध करवाया (फ्रांस से विशेषतः)

(3) यातायात के साधनो मे सुधार (फ्रांस के आर्थिक सहयोग से ट्रांस-साइबेरियन रेलवे का निर्माण)

(4) नये अ उद्योग स्थापित, इसके अन्तर्गत खनिज, लोहा, व विद्युत उद्योग स्थापित।

*19वी शताब्दी के अंतिम दशक में रूस विश्व के प्रमुख औद्योगिक राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा हुआ। औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से विश्व मे 5वा (स्थान)

*रूस में ~~3 लाख श्र~~ 4 मिलियन कैम्बी श्रमिक लोग रहते थे (इस समय)

*जार निकोलस-II (1894-1917ई.) इसने कहा कि उसकी नियुक्ति ईश्वर द्वारा की गई तथा उसे असीमित अधिकार भगवान द्वारा प्रदान किये गये। जो उसकी सत्ता को चुनौती देते है वह गलत है क्योंकि वह ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है वह अपनी पत्नी जरीना अलेक्जेण्ड्रा के प्रभाव में था।

*इसके समय प्रेस, शिक्षा, भाषण आदि पर प्रतिबंध लगा दिये।

*1906 ई. मे 78 न्यूजपेपर पर प्रतिबंध एवं 58 पत्रकारों को बंदी बना दिया।

(2.) करों का बोझ :- जार निकोलस-II ने सेना के संगठन व रेलवे के निर्माण के लिए किसानो पर कर लागू किये। रूस मे किसानो की आय का 50% से अधिक भाग कर चुकाने मे लग जाती थी।

नरोदनिक / पापुलिस्ट :- रूस में समाजवादी विचार धारा के आधार पर हर्जेन व चर्नीशेवस्की के नेतृत्व में आंदोलन, इनके समर्थक को नरोदनिक, ये कृषकों को भूमि का स्वामी मानने का पक्षधर थे, तथा आतंकवादी उपायों को मान्यता दी।

रूसी पंचांग :- 1917 ई. की क्रांति तक रूस में दो पंचांग प्रचलित - जूलियन पद्धति पर आधारित व ग्रेगोरियन पद्धति। दोनों की तिथियों में 13 दिन का अन्तर था। क्रांति के पश्चात वहाँ भी ग्रेगोरियन केलेण्डर प्रचलित हो गया। अतः तिथियाँ 13 दिन आगे खिसक पड़ी

(3) फिनलैण्ड में ~~समाप्त~~ संवैधानिक सरकार का अंत :- (1815 ई. वियना सम्मेलन में इसको ... 1899 ई. में जार निकोलस-II ने फि[illegible] में संवैधानिक सरकार को समाप्त किया, व निरंकुश शासन की स्थापना की। फिनलैण्ड की सेना को रूस की सेना का अंग बना दिया गया। फिनलैण्ड में उच्च पदों पर रूसी अधिकारी नियुक्त किये गए। इस प्रकार फिनलैण्ड की स्वायत्तता समाप्त कर दी गई। फिनलैण्ड वासियों ने इसका विरोध किया। 5 लाख लो[गों] ने एक हस्ताक्षर युक्त पत्र जार को भेजा। जिसे जार ने लेने से मना कर दिया।

(4) रूस - जापान युद्ध (1904-05) - 1903 ई. में रूस ने मंचूरिया में पोर्ट आर्थर नामक बंदरगाह पर अधिकार प्राप्त करने के लिए आक्रमण किया। इस युद्ध में जापान ने स्थल व जल दोनों युद्धों में रूस को पराजित किया। तथा इसके पश्चात "पोर्टमाउथ" की संधि हुई। (190[5])
(एशिया शक्ति ने यूरोप को पराजित)
(यह अमरीका के न्यूहेम्पशायर में स्थित है) :-

शर्तें :- (1) पोर्ट आर्थर का बंदरगाह जापान को दे दिया।
(2.) मंचूरिया से रूस एवं जापान की सेना हटा ली गई।

* 1905 ई. की क्रांति :- 1905 ई की रूस की क्रांति रूस में 1917 ई. की क्रांति का पूर्वाभ्यास था। निरंकुश सत्ता के कारण रूस के किसानों में असंतोष था। रूस-जापान युद्ध के पश्चात सैनिकों में भी असंतोष बढ़ा।

* 1898 ई. में कार्लमार्क्स के सिद्धान्तों पर आधारित जार्ज Plekhanov ने सोश्यल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। Plekhanov यह रूस में श्रमिकों का नेता था। 1884 ई में कार्लमार्क्स के ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद हुआ। उसने श्रमिकों को संगठित किया, तथा द. रूस में 1898 ई. में सोश्यल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की।

* 1903 ई. में सोशियल डेमोक्रेटिक पार्टी का दूसरा सम्मेलन लंदन में हुआ, इसमें सोश्यल डेमोक्रेटिक पार्टी का विभाजन - (1) बोल्शेविक - (2) मेन्शेविक

* बोल्शेविक - बहुमत (बहुसंख्यक) इसके नेता, लेनिन ट्राटस्की थी इसमें क्रांति को जोड़ा जाता था

* मेन्शेविक - अल्पमत नेता, जार्ज प्लेखेनोव व ~~मार्त्~~ मॉर्तोव थे।

*

किसी भी राष्ट्र की आय का स्रोत - श्रमिक वर्ग है, तथा उस राष्ट्र की आय का अधिकार श्रमिकों का है, वह, वर्गविहीन समाज की स्थापना का पक्षधर था। आदमी में जितनी उसमें क्षमता है वह उतना उत्पादन करे तथा उसको जितनी आवश्यकता उतना • उतना वितरित होना चाहिए।

कार्लमार्क्स :- जर्मनी निवासी 1844 ई. हेगेल के प्रयास का रहे थे [illegible] आंदोलन [illegible] पर पेरिस → इंग्लैण्ड - यहाँ अपना जीवन बिताया। फ्रेडरिक एंजिल्स से मिला।
- 1848 ई में दोनों ने मिलकर कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो लिखा। 1867 ई दास कैपिटल कहते हैं

* 1903 ई. में लंदन सम्मेलन में ~~मत~~भेद वैचारिक मत भेद के कारण।
* बोल्शेविक व मेन्शेविक पार्टीयों ने किसानो एवं श्रमिको को संगठित किया।
* जुलाई 1904 ई. में वॉन (फिवे) नामक गृहमंत्री की हत्या कर दी। इस असंतोष के परिणाम स्वरूप रूस में अराजकता की स्थिति पैदा हुई।
* 1904 ई. मे स्थानीय बोर्डो ने एक सम्मेलन आयोजित किये 11 मांगो का प्रस्ताव रखा इसमें- प्रेस, भाषण, धर्म एवं शिक्षा, स्वतंत्रता पर बल दिया गया। जार ने इन मॉंगो को ठुकरा दिया। परिणाम स्वरूप 1905 की क्रांति हुई। 1905 ई. की क्रांति का नेतृत्व फादर गेपन ने किया।
* 22 जनवरी 1905 ई. एक लाख श्रमिक व किसान अपने परिवारों सहित अपनी मॉंगो को लेकर सेंट पीटर्सबर्ग महल मे के सामने इकट्ठे हुये। ये सभी किसान (राजनैतिक सुधारों की मांग कर रहे थे) निहत्थे थे। जार ने निहत्थे किसानो पर गोलियॉं चलाने का आदेश दिये। जिसमें सैकड़ो किसान मारे गये। इस घटना को रूस के इतिहास मे "ब्लडी संडे" कहा जाता है। इस घटना के कारण रूस मे विद्रोह बढ़ा।
* फरवरी, 1905 जार निकोलस द्वितीय के चाचा ग्रांड ड्यूक सैरज की हत्या।
* जून, 1905 ई. मे पुरे रूस मे राष्ट्रवादी आंदोलन हुये। जिसका अंत अक्टू. 1905 आम हड़ताल से हुआ।
* बोल्शेविको ने सेंट पीटर्सबर्ग में प्रथम सोवियत (श्रमिक यूनियन) का गठन किया।
* जार निकोलस-II इस आंदोलन के सामने झुका व सुधारों की घोषणा की। - 1905 ई इसे "अक्टू. मेनीफेस्टो" कहते है। इसके अनुसार एक निर्वाचित संसद का गठन किया जिसे ड्यूमा कहा गया। इसे विधान ~~बनाने~~ निर्माण का अधिकार व 25 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषो को मताधिकार दिया गया।
* परन्तु एक अन्य आदेश के ~~अनुसार~~- एक साम्राज्य परिषद का गठन किया गया। (व अंतःकरण, भाषण, लेखन, सभा करने व संगठन करने की स्वतंत्रता दी गई) इसकी नियुक्तियॉं जार ~~के द्वारा~~ की जायेगी। ड्यूमा द्वारा बनाये गये विधान की स्वीकृति ~~साम्राज्य~~ परिषद से लेना अनिवार्य किया।
* जिन लोगों ने अक्टूबर मेनीफेस्टो का समर्थन किया वह अक्टूबरिस्ट कहलाये जिन्होंने विरोध किया उन्हें "कैडेट" कहलाये।
* इस घोषणा के पश्चात 1905 की क्रांति का अंत हो।
* प्रथम ड्यूमा :- (अप्रेल, 1906 से जुलाई, 1906 ई.) 524 सदस्यों की प्रथम ड्यूमा स्थापित हुई इसमें आधे से अधिक सदस्य निरंकुश। सत्ता के विरोधी थे ड्यूमा ने निम्नलिखित मांगे रखी।
* इसमे कैडेट (कॉंस्टीट्यूशनल डेमोक्रेटिक पार्टी) को 1/3 की बहुमत प्राप्त हुआ

हालस्ताय, टुगनेव, मास्सम गोर्की, प्रोमसे आदि विचारकों से प्रेरणा प्राप्त कर नूतन आदो

(1) राजनैतिक बंदियों को मुक्त किया जाए।
(2) सामान्य परिषद के सदस्यों के अधिकार कम किया जाए।
(3) जार के मंत्रियों को ड्यूमा के प्रति उत्तरदायी बनाया जाए।
(4) रूस में सैन्य कानून समाप्त किया जाए।
(5) मृत्युदण्ड समाप्त किया जाए।

* ड्यूमा एवं जार मंत्रियों के विरुद्ध मतभेद हुआ। जार ने जुलाई, 1906 ई. में ड्यूमा भंग कर दिया। वह पुनः चुनाव कराये।

* द्वितीय ड्यूमा : (मार्च 1907 से जून, 1907 ई.) ने भी यही माँगे रखी। इसमें आधे से ज्यादा निरंकुश सत्ता के विरोधी थे। जार के ड्यूमा के विरुद्ध बिल तथा जून, 1907 ई. को भंग कर दिया गया।

* 1907 ई. में प्रधानमंत्री पीटर स्टोलिपिन ने एक आदेश द्वारा किसानों व नगरों श्रमिकों को मताधिकार से वंचित कर दिया। सीमित निर्वाचन मताधिकार ले किया।

* तृतीय ड्यूमा - (Nov, 1907) ई. जार ने उद्घाटन इसके अधिकतम सदस्य सामन्त थे इसका कार्यकाल 1912 ई. तक रहा

* चतुर्थ ड्यूमा - (1912 से 1917 ई.) 11 मार्च, 1917 ई. को जार ने इसे भंग कर

* 1917 ई. • विश्व के इतिहास में एक मोड़ बिन्दु सिद्ध हुआ इस वर्ष जर्मनी की सेना विश्व युद्ध से पीछे हटने लगी लगा रहे थी इसी वर्ष अमरीका (6 गुड फ्राइडे 6 APL 1917 ई.) प्रथम विश्व में शामिल, इसी वर्ष रूस की क्रांति हुई।

* रूस के कलेण्डर में व वि यूरोप के अन्य देशों के कलेण्डर में 13 दिन का अन्तर था (ग्रेगोरियन कलेण्डर - 13 दिन आगे थी)

* मार्च, 1917 ई. की क्रांति व नवम्बर, 1917 की क्रांति, उद्देश्य एवं नीतियों के आधार पर यह दो पृथक क्रांतियाँ थी, परन्तु निरन्तरता की दृष्टि से यह ~~दो क्रां~~ एक ही थी। मार्च की क्रांति 6 Nov तक चली व 7 Nov ~~तक~~ से दूसरी क्रांति शुरु हुई।

* Nov, 1917 की क्रांति अक्टूम्बरिट क्रांति या बोल्शेविक क्रांति कहते हैं

---

(1) कम्युनिस्ट - राज्य का नियंत्रण, पैदा होती राज्य का नियंत्रण, कम्युनिस्ट होते हैं ~~सोशलिस्ट होना ज़रूरी नहीं~~
सोशलिस्ट - संसाधनों का समान विभाजन, इसमें कम्युनिस्ट होना जरूरी नहीं।
*

① सामाजिक आर्थिक विषमताएं :- रूसी समाज दो विषम वर्गों में विभाजित ① अधिकार युक्त वर्ग (राजपरिवार, सामन्त, उच्चपदाधिकारी) व कुलीन वर्ग जिनके पास अपार सम्पत्ति वैभव व अधिकार थे ② अधिकार हीन वर्ग – (छोटे किसान, भूमिहीन किसान, श्रमिक, और अर्द्धदास (1861 का मुक्ति...)
② आर्थिक संकट से उपजा असंतोष :- सरकार ने युद्ध के प्रथम तीन वर्षों में 1.5 करोड़ सैनिक युद्ध क्षेत्र में भेजदिए। जिससे खेतीय कार्य के लिए काम करने वालों की कमी,
③ प्रथम विश्व युद्ध में रूस की पराजय

मार्च क्रांति

(1) जार की सत्ता का अंत हुआ
(2) अंतरिम सरकार का गठन हुआ
(3) सरकार में शासन में कुलीन वर्ग के सदस्य सम्मिलित किये गये/
(4) अंतरिम सरकार को मित्र राष्ट्रों ने मान्यता दी
(5) अन्तरिम सरकार ने युद्ध जारी रखने का निर्णय लिया/

अक्टूबर Nov. / बोल्शेविक

(1) यह बोल्शेविकों की क्रांति थी
(2) बोल्शेविकों सरकार को मित्र राष्ट्रों ने मान्यता नहीं
(3) शासन में श्रमिक व किसान वर्ग को स्थान दिया
(4) यह सोवियतों की सरकार थी/
(5) बोल्शेविकों ने युद्ध समाप्त करने का निर्णय
(6) रूस हमेशा² के लिए एक साम्यवादी देश बन गया।

रूस की क्रांति के कारण :- (1) संवैधानिक सुधारों की मांग :- यह
(2) सेना में असंतोष - रूस-जापान युद्ध के पश्चात सेना को ~~आघात पहुँचा~~ असंतोष बढ़ा तथा जार की को आघात पहुँचा/

* 1905 ई. Potemkin (नाविक अधिकारी ने) विद्रोह किया/ इसी वर्ष रूस में रेलवे में हड़ताल हुई, जिससे शासन कुछ समय के लिए ~~समाप्त~~ ठप्प हो गया/

(3) निरंकुश शासन - जार निकोलस-1 व जार निकोलस II

(4) साहित्यकारों का प्रभाव :- (1) Leo tolstoy - वार एण्ड पीस, अन्ना करेनिना
(2) Dostovsky

(5) श्रमिकों का उदय/प्रभाव :- श्रमिकों को उनके अधिकारों से वंचित था (मत डालने से) (1907) में मत का उदय/

* तात्कालिक कारण दुर्भिक्षकाल - 1916-17 ई. में शरद ऋतु में भयंकर अकाल पड़ा। इससे खाद्यान्नों की कमी हो गई दूसरी ओर किसानों को युद्ध में भेजदिया/ इस कारण लोगों में असंतोष बढ़ा/ प्रथम विश्व युद्ध में रूस मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ रहा था/

* रूस ने इस युद्ध में 1.50 लाख सैनिक ~~खोए~~ झोंके/ युद्ध के समय 20 लाख सैनिक घायल हुआ/ सैनिकों में असंतोष व्याप्त था/

रूस की मार्च-क्रांति :- 30 दिस. 1916 ई. रासपुटीन की प्रिंस हलीमस ने हत्या करदी/

* रासपुटीन - वह एक स्वयंभू संत था। इसका जारीना पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। रासपुटीन सम्मोहन शक्ति सम्पन्न व नियंत्रण वाला/ वह अपने निजी जीवन में कामुक, भ्रष्ट, तथा सम्मोही था/

* * 7 मार्च, 1917 ई. रूस की तात्कालिन राजधानी व Petrograd में रोटी की मांग को लेकर क्रांति अप्रत्याशित रूप से शुरू होगयी।

* सेंटपीटर्सबर्ग का नाम प्रथम विश्व युद्ध के समय नाम बदल दिया - Petrograd रखदिया। सेंट पीटर्सबर्ग नाम जर्मन उच्चारित होता था जर्मन विवाद के कारण

* 22 अप्रैल, 1920 - पैट्रोग्रेड का नाम बदल कर लेनिनग्राड करदिया। (वर्तमान नाम सेंट पीटर्सबर्ग रखा।

* 8 मार्च 1917 80 से 90 हजार श्रमिक अपने परिवारो सहित अपनी मांगो को लेकर सड़क पर आगये।

*10 मार्च, 1917 ई. Petrograd के सभी फैक्ट्री व कारखाने बंद कर

* 11 मार्च, 1917 ई Petrograd की सेना की Garrison कम्पनी ने वि... कर दिया

* 11 मार्च, 1917 ई जार ने चौथी ड्यूमा को भंग करदिया। श्रमिकों व किसानो ने क्रांतिकारी संगठन स्थापित किया जिसे " श्रमिकों व सैनिकों की सोवियत संघ की स्थापना की।

* 14 मार्च, 1917 ई. प्रिंस ल्वोव के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन हुआ। 15 मार्च को जार निकोलस द्वितीय ने अपने भाई ग्रेंड ड्यूक माइकल के पक्ष पद त्याग दिया। माइकल ने इस परिस्थिति मे सम्भालने से मना कर लिया। प्रिंस ल्वोव ने अपने सहयोगी अलेक्जेंडर कैरेन्स्की के साथ मिलकर मंत्रीमण्डल का गठन किया।
अंतरिम सरकार को मित्र राष्ट्रों ने मान्यता दी।

* अंतरिम सरकार के कार्य :- राजतंत्र समाप्त हो गया।

* (1) राजनैतिक बंदियो को रिहा कर दिया, यहुदी के विरोध करने नियम कम कर दिये (2) रूस को नये संविधान देने का वादा किया

* ग्रीक चर्च के विशेषाधिकार समाप्त करदिये।

(3) पोलेण्ड में संवैधानिक सुधार करने का वादा किया।

(4) प्रशासनिक सुधार - जिसके अन्तर्गत प्रेस शिक्षा, भाषण आदि की स्वतंत्रता स्थापित होगई।

(5) मृत्युदण्ड समाप्त किया।

(6) अंतरिम सरकार ने युद्ध नीति रखने का निर्णय लिया।

सोवियत - सैनिकों और मजदूरों ने मिलकर श्रमिकों व सैनिकों के प्रतिनिधियों की परिषद (सोवियत) स्थापित की, वास्तविक शासन इन सोवियतों के हाथ में आ गया।

* अंतरिम सरकार के सामने दो चुनौती - (1) युद्ध को जारी रखना।
(2) पूरे रूस में सोवियतो की उभरती शक्ति का सामना करना।
* अंतरिम सरकार की राजनैतिक भूल - युद्ध जारी रखना।
* मई, 1917 मोस्को में सोवियतों का अखिल सम्मेलन का आयोजन जिसमें यह घोषणा कि राजनैतिक क्रांति से काम नहीं चलेगा। रूस को सामाजिक व आर्थिक क्रांति की आवश्यकता थी
* 20 जुलाई, 1917 ई. को प्रिंस ल्वोव ने दबाव में इस्तीफा दे दिया।
* अलेक्जेंडर केरेन्सकी ने अंतरिम सरकार का अध्यक्ष बनाया।
* केरेन्सकी ने युद्ध जारी रखने की नीति का अनुसरण किया।
* 6 Nov. 1917 ई. केरेन्सकी ने इस्तीफा दे दिया।
* 6-7 Nov की रात को लगभग 25 हजार Red Gards ने रूस के सभी सरकारी कार्यालयों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया (रेलवे स्टेशन, डाकघर, तारघर आदि पर अधिकार कर लिया)
* 7 नवम्बर, 1917 (25 अक्टू.)
* "Peace, Land and Bread" - बोल्शेविक का नारा"
* बोल्शेविक क्रांति - या अक्टू. या Nov की क्रांति :
(1) लेनिन की भूमिका : (1870-1924) जन्म, अप्रैल 1870 ई. में हुआ उसने सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा का अध्ययन किया। वह कार्ल मार्क्स का कट्टर अनुयायी था। उसने कुछ समय कानून की प्रैक्टिस की परन्तु जार शाही सत्ता में साम्यवादी या मार्क्सवादी विचार के लिए कोई स्थान नहीं था इसीलिए वह उसे अधिक समय विदेशों में रहा तीन वर्ष वह साइबेरिया की जेल रहा। वह अधिक तर समय स्विट्जरलैंड में बिताया। विदेशों में रहते हुए उसने रूस में साम्यवादी विचार धारा का प्रचार किया। उसने ISKRA इस्करा (चिंगारी) (The Spark) नामक समाचार का सम्पादन किया। 1912 ई. में बोल्शेविकों का प्रावदा Pravda (The Truth) समाचार छपा था।
* मार्च, 1917 की क्रांति के समय लेनिन स्विट्जरलैंड में था
* नाशपूत (भारकोचे) (हमारापथ)

रूस की आज की न्यूज़ एजेंसी · Pravda है

* 16 अप्रेल, 1917 ई. वह जर्मनी सहयोग से रूस पहुँचा। (जर्मनी रूस मे पूर्वी सीमा पर लेनिन द्वारा क्रांति करने तथा साम्यवादी के कारण, गृह युद्ध की स्थि[illegible] जिससे युद्ध में रूस की पूर्वी क्षेत्र में कमजोर स्थिति होगी)।
* रूस में पहुँचकर लेनिन ने ट्रोटस्की के साथ मिलकर सोवियतो को संगठित कि[illegible]
* 6 नवम्बर,–7 Nov. की रात को रेड गार्डस की मदद से अंतरिम सरकार का अंत कर दिया गया।
* 7 नवम्बर की प्रात: लेनिन ने घोषणा कि– "सभी शक्तियाँ सोवियतो को सौंप, जाती है। किसानों की श्रमिकों की सैनिकों की क्रांति विजय हो।
* 7 नवम्बर की शाम को सभी सोवियतों का अखिल सम्मेलन हुआ। जिसमे लेनिन ने दो घोषणा कि ① शांति वार्ता प्रारम्भ कर युद्ध समाप्त किया जाए।
(2) भू-स्वामियों की जमीनें बिना मुआवजा दिये छीन ली[illegible] और इस भूमि का वितरण किसानों में कर दिया जाए।
* 8 नवम्बर 1917 ई. को नये मित्र मंत्रीमंडल का गठन-जिसमें लेनिन नई सरकार का प्रमुख बना। तथा लियोन ट्राटस्की को विदेश मंत्री नियुक्त किया।
* जोसफ स्टालिन को राष्ट्रीय अल्पसंख्यको का नेता मंत्री घोषित किया।
* राइकोर को गृहमंत्री नियुक्त किया।
* स्टालिन (Joseph Djugashvili), 1904 ई. बोल्शेविक में भर्ती।
* ब्रेस्टलिटोवास्क की संधि-(1918)
* लेनिन ने 5 दिस. 1917 ई. में जर्मनी के साथ युद्ध-विराम का समझौता किया।
* रूस ने 3 मार्च, 1918 को जर्मनी ब्रेस्टलिटोवास्क संधि कहते है।
– इस संधि के अनुसार ① रूस ने पोलैण्ड व यूक्रेन व रूस की सीमा पर गैर रूसी रा[illegible] जर्मनी को दे दिये। रूस को 1 मिलियन k.m का भू-भा[illegible] व 1/3 जनसंख्या से हाथ धोना पड़ा। (यह पहले रूस में साम्यवाद स्थापित कर बाद में पूरे यूरोप में स्थापित करेगा बाद में ये वापस ले लिये जायेगे)।
(2) गृह-युद्ध : 1918-1920 ई. के बीच रूस में लाल रूसी व सफेद रूसी के बीच गृह युद्ध चला। लाल रूसी बोल्शेविकों के समर्थक व सफेद रूसी जार की सत्ता के समर्थक थे। इस गृह-युद्ध का प्रभाव यूक्रेन जॉर्जिया आरमेनिया, अजरबेजान आदि राज्यों पर पड़ा। इस गृह युद्ध के समय बोल्शेविक सरकार ने जार निकोलस-II को देश-द्रोही घोषित किया। जुलाई 1918 ई. में उसे मृत्यु दण्ड दिया गया।

गृह युद्ध पर नियंत्रण में ट्राटस्की की महत्वपूर्ण भूमिका रही, वह इस समय रक्षा मंत्री भी था। उसने रेड आर्मी नामक बोल्शेविकों की एक नई सेना गठित की।

* लेनिन की आर्थिक नीति (युद्ध साम्यवाद) (1918-1921) (यौद्धिक साम्यवाद)
युद्ध सम। साम्यवाद का प्रयोग

गृह-युद्ध के समय किया गया जिसका अर्थ - अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण स्थापित से किया गया। (सिविल गृह-युद्ध के समय ने बोल्शेविकों ने स्वयं को साम्यवाद कहना शुरू कर दिया)

* "शांति, भूमि, रोटी का नारा - साम्यवाद का"

* लेनिन ने 7 नवम्बर को Land Decree - भूमि आदेश के तहत भू-स्वामियों की भूमि किसानों को विभाजित कर दिया। क्योंकि वह किसानों का सहयोग प्राप्त करना चाहता था।

* फरवरी, 1918 ई. लेनिन ने रूस की सम्पूर्ण भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया। रूस की भूमि को राज्य की भूमि घोषित किया। अब केवल स्वयं कृषि करने वाले किसानों को जमीन (कृषि) कृषि के लिए श्रमिकों को प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया। गृहयुद्ध के समय खाद्यान्नों की कमी हुई। इस कारण से लेनिन ने खाद्यान्नों पर (अनाज की अनिवार्य वसूली) लेवी लगा दी अर्थात् किसानों को अतिरिक्त धान राज्य को देना होगा।

* जून, 1918 ई. में रूस में सभी छोटे-बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। उद्योग उद्योगों के संचालन के लिए समितियां गठित की गई।

* उत्पादन व वितरण पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण स्थापित। तथा निजी व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया। केवल राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त श्रमिक या यूनियन का सदस्य बना जा सकता था। हड़ताल करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। बैंक व अन्य वित्तीय संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण किया। तथा राज्य के ऋण को समाप्त कर दिया।

* बोल्शेविक सरकार चर्च व धर्म में विश्वास नहीं करती थी। जनवरी, 1918 ई. को चर्च बंद कर दी, तथा धर्माधिकारियों के विशेषाधिकार समाप्त कर दी। केवल सिविल मैरिज को मान्यता दी।

X पूर्णतः असफल रही।

चेका - बोल्शेविकों ने [illegible] (Chrezvychainaya Komissiya) की स्थापना की। चेका ने हजारों प्रति क्रांतिकारियों को पकड़कर गोली से उड़ा दिया और आतंक राज स्थापित किया। इसका अध्यक्ष [illegible] आतंकवादी नीति को आवश्यक मानता था। चेका ने प्रति क्रांतिकारियों का निर्ममतापूर्वक दमन किया।

* रूस का नया संविधान (जुलाई, 1918) :- बोल्शेविक सरकार ने रूस को नया संविधान दिया। इस नई सरकार को काउंसिल ऑव पीपुल्स कमिसारी Council of Peoples Commisseur. लेनिन इसका अध्यक्ष, तथा शासन को 18 विभागों में विभक्त किया, उसके मंत्री या अध्यक्ष को कमीशनर कहा गया। (ट्राटस्की विदेश मंत्रालय का कमिश्नर था)

* मॉस्को को बोल्शेविक सरकार की राजधानी बनाया। तथा एक लाल झंडा (जिसमें हथौड़ा व हंसिया का चिह्न) राष्ट्र ध्वज के रूप में मान्य किया।

* 18 वर्ष के पुरुष व महिलाओं (जो अपनी स्वयं आजीविका कमाते) को मताधिकार दिया गया।

* ज़ार के अधिकारियों व भू-स्वामियों को मताधिकार से वंचित कर दिया।

* पिरामिडनुमा निर्वाचन व्यवस्था लागू की। (1) सबसे पहले स्थानीय सोवियतों का चुनाव, यह सोवियतें प्रांतीय सोवियतों का निर्वाचन तथा प्रांतीय सोवियत सभी अखिल रूसी सोवियत का चुनाव करती

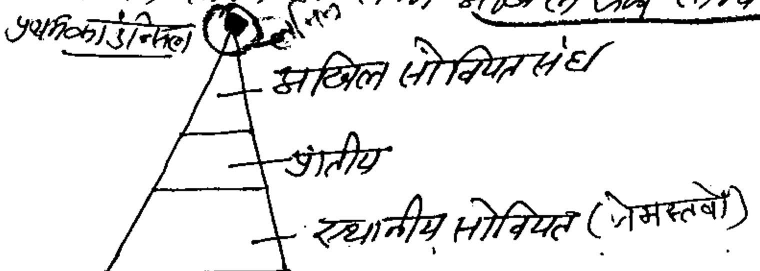

* परन्तु शासन व सत्ता प्रमुख कमीशनर (लेनिन) के हाथ में थी।

* लेनिन की नई आर्थिक नीति :- (N.E.P. MARCH, 1921 ई.) यह 1921-28 की रूस की अर्थव्यवस्था का आधार रही।

* कैंची आर्थिक नीति में कैंची संकट के तहत लाई नीति।

* नई नीति के अंतर्गत समाजवाद व पूंजीवाद के बीच समझौता किया इसे लेनिन का अस्थायी रूप से पीछे हटना (Temporary Retreat)।

* (लेनिन - यदि विकास के लिए दो कदम आगे बढ़ने के बजाय एक कदम पीछे हटे तो कोई भय नहीं)

(1) अतिरिक्त उत्पादन की अनिवार्य वसूली को समाप्त

इस नीति के तहत (1) रूस में समृद्ध व सम्पन्न किसानों (Kulaks) को निजी कृषि फार्म स्थापित करने की अनुमति दे दी गई। तथा फूड लेवी समाप्त कर दी गई। तथा अतिरिक्त धान्य को बेचने की अनुमति दे दी। सीमित निजी व्यापार की अनुमति प्रदान की।

(2) छोटे उद्योग पुनः उद्योग मालिकों को सौंप दिये गए तथा बड़े उद्योगों पर राज्य का नियंत्रण कायम रहा। सीमित निजी व्यापार को अनुमति दी गई। एन.ई.पी. के परिणाम स्वरूप रूस में आर्थिक

विकास हुआ व विदेशी निवेशकों को रूस आमंत्रित, तथा विदेशी देशों से व्यापारिक संधियां की, इस कारण रूस में लौह, कोयला, व तेल का उत्पादन कई गुणा बढ़ गया/ किसानों के सामूहिक सहकारिता संघ स्थापित किये गए इससे किसानों को आर्थिक लाभ मिला/ एन.ई.पी. के कारण बोल्शेविक सरकार को स्थिरता प्राप्त हुई/

* जिनेवा - सम्मेलन (रैपैलो की संधि - 1922ई): मित्र राष्ट्रों ने प्रारम्भ में बोल्शेविक को मान्यता नहीं दी 1922 ई में आर्थिक समस्या पर विचार के जिनेवा में सम्मेलन हुआ/ रूस को इस सम्मेलन में आमंत्रित किया गया/ प्रथम बार बोल्शेविक सरकार के प्रतिनिधि मित्र राष्ट्र के प्रतिनिधियों के साथ बैठे/ यह बोल्शेविक सरकार को अप्रत्यक्ष मान्यता थी/ यह सम्मेलन आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में असफल रहा/ परन्तु रूस व जर्मनी के बीच - 16 अप्रैल 1922 रूस व जर्मनी के बीच समझौता। जिसे रैपैलो की संधि।

— शर्तें:- (1) दोनों राष्ट्रों ने राजनैतिक व आर्थिक सहयोग देना स्वीकार किया/ (2) यह संधि बोल्शेविक सरकार को औपचारिक रूप से मान्यता थी

* 1924ई. में इंग्लैण्ड - फ्रांस व इटली ने भी बोल्शेविक सरकार को मान्यता/ 1925 में जापान ने मान्यता दी/

* रूस संविधान का पुनःमूल्यांकन (जुलाई 1923): (1) इसके अनुसार रूस के साम्राज्य को यू.एस.एस.आर (यूनियन ऑफ सोवियत सोशियलिस्ट रिपब्लिक) (2) रूस में एकल पार्टी प्रणाली लागू की (3) 'चेका' नामक क्रांतिकारी न्यायालय की स्थापना की।

* लेनिन की मृत्यु - जनवरी, 1924ई. में लेनिन की मृत्यु हो गई/

* स्टालिन व ट्राटस्की के बीच विवाद:

— स्टालिन - N.E.P में विश्वास ट्राटस्की शुद्ध साम्यवाद में विश्वास जता - स्टालिन को प्राप्त हुई तथा उसने रूस में N.E.P लागू की तथा पंचवर्षीय योजना लागू की/

बुड्रो विल्सन - फरवरी, 1924ई. को मृत्यु/

* आर्थिक-मंदी - 1929-30 *

* प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात सभी यूरोपीय देशों द्वारा पुनर्निर्माण का कार्य शुरु हुआ सभी यूरोपीय देश आर्थिक विकास की ओर अग्रसर हो रहे थे
* इंग्लैण्ड व फ्रांस व तेजी से विकास हो रहा था रूस भी गृह-युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों से उभरने का प्रयास कर रहा था।
* जर्मनी भी अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास कर रहा था। परन्तु अर्थशास्त्रि के अनुसार यह एक बहारी चमक-दमक थी। अर्थशास्त्रियों के अनुसार (की अर्थव्यवस्था एक ~~e~~ कमजोर नींव पर रखी हुई थी। एक मामूली या हवा के झौंके से यह अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो सकती थी।

अक्टूबर, 1929 ई. में अमरीका के शेयर बाजार में तेजी गिरावट आयी। इसके परिणाम स्वरूप अमरीका व अन्य यूरोपीय देशों के बैंक दिवा हो गये, कीमतों से तेजी से गिरावट आई। हजारों की संख्या में लोग बेरोजगा हो गये। अति उत्पादन के कारण कनाडा मे धान या अनाज ब्राजील मे कहवा के भण्डारों को जला दिया गया। अर्थशास्त्रियों के अनुसार पूँजीवादी देशों मे अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आना एक स्वाभाविक क्रिया है। परन्तु 1929 की इस आर्थिक-मंदी का व्यापक प्रभाव पड़ा जिसने पूरे विश्व को विशेष अमरी व यूरोप को ~~डस~~ डस लिया। ~~यह~~

यह आर्थिक मंदी 1929-30 ई. मे प्रारम्भ हुई, एवं 1931 ई. तक इसका प्रभाव था। 1933 ई. के पश्चात इसका प्रभाव कम होने लगा।

* आर्थिक-मंदी के कारण :-

(1.) प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियां :- अर्थशास्त्रियों के अनुसार सभी छोटे-बड़े युद्धों के पश्चात आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसा सप्तवर्षीय-युद्ध, अमरीका मे गृह-युद्ध, नेपोलियन के युद्धों व फ्रेंच-प्रशा युद्ध के पश्चात भी हुआ। युद्ध के समय युद्ध सामग्री की माँग बढ़ती है, इसके परिणाम उद्योगों का विस्तार होता है। कई लोगों के सेना में भर्ती होने के कारण श्रम की दर में वृद्धि होती है, परन्तु इससे रोजगार उपलब्ध होता है, एवं मुनाफे मे वृद्धि होती है ऐसी परिस्थिति युद्ध समाप्त होने के पश्चात कुछ समय के लिए जारी रहती है उसके पश्चात मंदी आ जाती है। परन्तु प्रथम विश्व युद्ध की परिस्थितियों के कारण आर्थिक मंदी का प्रभाव व्यापक था।

(2) क्षति-पूर्ति एवं युद्ध ऋण :- क्षति-पूर्ति आयोग द्वारा जर्मनी द्वारा दी जाने वाली क्षति-पूर्ति राशि की रिपोर्ट 1 मई 1921 ई. को सौंपनी होगी। क्षति-पूर्ति आयोग ने अपनी रिपोर्ट 27 अप्रैल 1921 ई. को सौंप दी।

6600 Million

* जर्मनी द्वारा दी जाने वाली क्षति-पूर्ति राशि का निर्धारण - 33 अरब डॉलर (6600 million) तय की। क्षति-पूर्ति तय होने से पूर्व जर्मनी को 5 मिलियन डॉलर राशि अग्रिम देना तय हुआ था।

*1924 ई. में दावस योजना (Dawas Plan) :- चार्ल्स दावस एक अंग्रेजी बैंकर था। उसने 1924 ई. में अपनी रिपोर्ट लंदन सम्मेलन में प्रस्तुत की, इसे दावस कमेटी रिपोर्ट कहा। इसके अनुसार जर्मनी को पुनर्निर्माण के लिए चार करोड़ डॉलर पाउण्ड का ऋण उपलब्ध करवाया जाए। Dawes Plan में क्षति-पूर्ति की राशि कम करने की सिफारिश नहीं की गई।

8000 Million

*1929 ई. का यंग-योजना :- ओवन यंग एक अमरीकी बैंकर व वित्तीयविशेषज्ञ था। क्षति-पूर्ति की राशि को कम कर यह राशि 8 हजार मिलियन कर दिया जाए जिसे जर्मनी 58½ किस्तों में चुकायेगा।

* फ्रांस को 52%, इंग्लैण्ड - 22%, इटली - 10%, बेल्जियम - 8%, युगोस्लाविया, रूमानिया तथा ग्रीस - 6.5%, जापान व पोर्तगाल - 1.5%।

(3) युद्ध-ऋण :- युद्ध के समय मित्र-राष्ट्रों ने अमरीका से $ 7 बिलियन डालर का ऋण लिया। युद्ध समाप्त होने पश्चात पुनर्निर्माण के लिए $ 3 बिलियन डालर ऋण अमरीका से लिया। (यह ऋण क्षति-पूर्ति राशि के रूप में)

* अमरीका ने मित्र-राष्ट्रों को युद्ध ऋण उपलब्ध करवाया। मित्र-राष्ट्रों में युद्ध-ऋण का भुगतान क्षति-पूर्ति राशि से चुकाए पुनः भुगतान करना तय। अमरीका के शेयर बाजार में गिरावट आने से अमरीका ने मित्र राष्ट्रों को ऋण देने से मना कर दिया। दूसरी ओर जर्मनी क्षति-पूर्ति की राशि देने में असमर्थ था अमरीका द्वारा ऋण देना बंद करने की घोषणा के कारण यूरोपीय देशों में पुनर्निर्माण का कार्य बंद होगया और यूरोपीय देशों में "आर्थिक-संकट" आ गया।

(3.) कृषि एवं उद्योगों का मशीनीकरण :- युद्ध के समय की माँग बढ़ने के कारण कृषि एवं उद्योगों में अधिक से अधिक उत्पादन मशीनों से होने लगा। मशीनों के प्रयोग के परिणाम स्वरूप 1914 ई. में एक श्रमिक 6 एक कार्य 52 घंटे में करता था वह 1924 ई. में 30 घंटे में करने लगा। मशीनों के प्रयोग के कारण

कम श्रमिकों की आवश्यकता पड़ी कृषि व उद्योग में श्रमिकों की छँटनी की जाने लगी, इसके परिणाम स्वरूप सभी देशों में बेरोजगारी की समस्या बढ़ी इस समस्या ने आर्थिक संकट की ओर गहरा बना दिया।

(5.) अति उत्पादन व क्रय-शक्ति में कमी :- युद्ध के समय व युद्ध समाप्त होने के पश्चात माँग को पूरा करने के लिए अत्यधिक उत्पादन किया जिसे अति-उत्पादन की स्थिति उत्पन्न हुई। इससे भी बेरोजगारी के कारण विशेषतः श्रमिकों की क्रय-शक्ति में कमी आयी। सभी यूरोपीय देशों विशेषतः जर्मनी की मुद्रा का मूल्य भी न्यूनतम स्तर तक गिर गया।

*1923 ई. 1 Billion Mark bank note - से एक पॉकेट सिगरेट खरीदा जा सकता था। इससे 10 वर्ष पूर्व - 1 बिलियन मार्क बैंक नोट की मूल्य - $ 50,000

(6.) सोने की कमी :- सोने की कमी के कारण भी आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ क्षति-पूर्ति की राशि का भुगतान व युद्ध ऋण राशि भुगतान सोने के रूप में। जा रहा था। क्षति-पूर्ति की अधिकतम राशि फ्रांस को मिल रही थी। व युद्ध-ऋण की अधिकतम राशि अमरीका को मिल रही थी

* लगभग - 60% सोना अमरीका व फ्रांस में संग्रहित हो गया। इसके परिणाम स्वरूप जिन राष्ट्रों में सोने के सिक्के प्रचलित थे महँगे हो गये। परन्तु उनकी क्रय-शक्ति में कमी आई। भारत व चीन जैसे-देशों ने भी जहाँ चाँदी के सिक्के प्रचलित थे आर्थिक अभाव मंदी का प्रभाव पड़ा। अर्थशास्त्रियों के अनुसार सोने की कमी से आर्थिक संकट गहरा हो गया।

(7.) आर्थिक राष्ट्रवाद या आर्थिक संरक्षणता :- प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात सभी यूरोपीय देशों ने आर्थिक संरक्षणता व आर्थिक की नीति का पालन किया। इस नीति के अनुसार अधिक से अधिक आयात-कर चुंगी लागू की। व स्वदेशी पर अधिक से अधिक बल दिया। इंग्लैंड कर मुक्त व्यापार नीति का समर्थक था। परन्तु इंग्लैंड ने भी आर्थिक राष्ट्रवाद की नीति का पालन किया। इस नीति के परिणाम स्वरूप विश्व व्यापार में अत्यधिक कमी आयी। 1920 ई. के दशक में विश्व व्यापार में यूरोपीय व्यापार में 10% कमी आयी।

(8.) तात्कालिक कारण - स्टॉक एक्सचेंज वॉल स्ट्रीट की घटना :-

में अमरीका में अत्यधिक औद्योगिक व आर्थिक हुआ। अमरीका विश्व का 40% उत्पादन करने लगा। प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात अमरीका सबसे बड़ा

युद्ध विजेता सिद्ध हुआ! अमरीका में अधिक २ से अधिक लोगों ने अपना धन शेयर बाजार में निवेश करने लगे अमरीका के शेयर बाजार के भाव २ गुना से १२ गुना तक बढ़ गये। इससे अमरीकी वासियों को अत्यधिक लाभ हुआ।
परन्तु, अक्टूबर, १९२९ ई. में अचानक शेयर बाजार में गिरावट आयी (२५ अक्टू. १९२९ ई. में एक ही दिन में $16\frac{1}{2}$ मिलियन शेयर न्यूनतम कीमत पर बेच दिये गये। इसके परिणाम अमरीका के शेयर बाजार में 50 अरब डॉलर की गिरावट आयी। एक ही सप्ताह में अमरीका के शेयर बाजार में 40 हजार मिलियन डॉलर की कमी शेयर बाजार में गिरावट आ गई इस घटना को वॉल स्ट्रीट की घटना कहते हैं इसे "काला गुरुवार" कहते हैं।

* 1920 ई. शदी को अमरीका में Roaring twenties.
* अमरीका में प्रथम विश्व युद्ध के समय 7 मिलियन कार थी वह 1929 ई. में 24 मिलियन कारें उपलब्ध हो गयी (उत्पादन में वृद्धि)

1920 [More Sales] ⇒ [More Profits] ⇒ [More wages] ⇒ [More dividends]
1929 [Less sales] – [Less Profits] – [Less wages] ⇒ [Less dividends]

✓ * आर्थिक मंदी का प्रसार :- वॉल स्ट्रीट की घटना के पश्चात अमरीका की अर्थव्यवस्था बहुत ही खराब हो गयी। 1930-32 ई. में अमरीका में छोटे-बड़े 5000 हजार बैंक दिवालिया होकर बंद हो गये। इसके परिणाम स्वरूप अमरीका में 13 मिलियन लोग बेरोजगार हो गये। इस घटना के तुरंत पश्चात यूरोपीय देशों को ऋण देना बंद कर दिया इससे यूरोप के आर्थिक स्रोत सूख गये। इस कारण से यूरोपीय देशों में पुनर्निर्माण का कार्य ठप्प हो गया; दूसरी ओर यूरोपीय देशों को क्षति-पूर्ति और युद्ध ऋण का भुगतान लेने के रूप में कार्य ऋण। पुनर्निर्माण के कार्य ठप्प हो जाने के पश्चात यूरोपीयन अर्थव्यवस्था चरमरा गई और सभी यूरोपीय देशों के बजट असंतुलित हो गये
* आर्थिक मंदी का सबसे अधिक प्रभाव जर्मनी पर पड़ा। परन्तु इस आर्थिक मंदी पहला शिकार आस्ट्रिया का सबसे बड़ा बैंक Kredit-anstalt Bank दिवालिया हो गया। आस्ट्रिया की सरकार ने एक आदेश जारी कर (विदेशी देशों के आर्थिक हितों की रक्षा करने के आस्ट्रिया सरकार ने अपने हाथ में लिया परन्तु इसका प्रभाव नहीं पड़ा (विदेशों)। इस घटना के पश्चात मध्य यूरोपीय देशों के बैंकिंग सिस्टम की साख गिर गयी। इसके तुरंत पश्चात जर्मनी में राइख बैंक से 3 सप्ताह में विदेशी निवेशकों ने 5 करोड़ पाउंड मूल्य का सोना निकाल लिया। इसके पश्चात जर्मनी की सबसे बड़ी वित्तीय संस्था Darmstader und national Bank दिवालिया हो गये।

क्रेडिट आनस्टाल्ट / Austria
राइख बैंक
जर्मनी
डर्मस्टड उंड नेशनल Bank

राइख - (सम्राट) — 1st कैसर विलियम — 2nd कैसर 3rd राइख - हिटलर

जर्मनी के सभी बैंक बंद कर दिये गये। 1931 ई में 4½ मिलियन लोग बेरोजगार हो गये, व 1933 ई में 6 मिलियन पहुँच गई।

* जुलाई 1931 ई बैंक ऑफ इंग्लैण्ड की भी साख गिरने लगी। इस बैंक के पास लोगों को पैसा अदा करने के लिए धन नहीं था। बैंक ऑफ इंग्लैण्ड ने अपनी साख को बचाने के लिए अमरीका व फ्रांस से 5 करोड़ पाउण्ड का कर्ज लिया। परन्तु इसका इंग्लैण्ड पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रेमजे मैकडोनाल्ड ने इस्तीफा देकर विरोधी सरकार से मिलकर राष्ट्रीय सरकार का गठन किया। परन्तु यह सरकार भी आर्थिक समस्या का समाधान करने में असफल रही। इंग्लैण्ड में 18 सित. 1931 के दिन ही इंग्लैण्ड बैंक से 180 लाख पाउण्ड रुपये निकाल लिया। इससे इंग्लैण्ड की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। इस आर्थिक मंदी का प्रभाव फ्रांस, इटली व अन्य सभी यूरोपीय देशों पर पड़ा। इस आर्थिक मंदी के परिणाम स्वरूप पूरे विश्व में 30 मिलियन लोग बेरोजगार हो गये।

फ्रांस-विदेश मंत्री "ब्रियाँ"

* आर्थिक-मंदी को सुलझाने का प्रयास : आर्थिक मंदी की समस्या का समाधान करने के लिए सबसे पहला कदम फ्रांस के विदेशमंत्री ब्रियाँ ने उठाया। ब्रियाँ ने 1930 ई में इस समस्या के समाधान के लिए यूरोपीय संघ बनाने का सुझाव दिया। इस संदर्भ में उसने राष्ट्रीय संघ को सुझाव दिया। ब्रियाँ के सुझाव के आधार पर 'राष्ट्रसंघ' ने एक समिति का गठन किया। इस समिति की पहली बैठक जनवरी 1931 ई में आयोजित की गई। इस बैठक में [illegible] आर्थिक [illegible] को दूर करने का प्रयास किया। इसके अन्तर्गत सीमा शुल्क या आयात कर कम करने पर बल दिया।

* आस्ट्रिया ने एक क्षेत्रीय संघ बनाने का सुझाव दिया। इसका फ्रांस ने विरोध किया। अतः मार्च 1931 ई में आस्ट्रिया व जर्मनी ने एक सीमा शुल्क संघ का गठन किया। फ्रांस ने इसका भी विरोध किया क्योंकि यह वर्साय की संधि के प्रावधानों के विरुद्ध थी। इस प्रकार यह सम्मेलन आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में असफल रहा।

वर्साय

* राष्ट्र संघ के तत्वाधान में जून 1932 ई में स्विट्जरलैंड के लोसाने नामक स्थान पर आर्थिक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में अमरीका ने भी भाग लिया। इस सम्मेलन में दो विषयों पर विचार हुआ – (1) क्षति-पूर्ति (2) युद्ध ऋण। मित्रराष्ट्रों ने यह सुझाव दिया कि यदि जर्मनी 3 बिलियन मार्क एक मुश्त यूरोपीय पुनर्निर्माण के लिए चुका देता है तो बाकी क्षति-पूर्ति की राशि को समाप्त किया जा सकता है। युद्ध-ऋण के संदर्भ में मित्र-राष्ट्रों ने क्षति-पूर्ति की राशि की कटौती के अनुपात में युद्ध ऋण की राशि को कम करने की माँग की।

10-8-

* अमरीका ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। अमरीका के राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने सुझाव दिया कि पुरे विश्व में ऋण अदायगी को एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया।
* इस सुझाव को अन्य देशों ने मानने से इंकार कर दिया। अमरीका के राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर के दबाव के कारण "लोसान सम्मेलन" में क्षति-पूर्ति राशि को पूर्णत: समाप्त कर दिया। लोसान सम्मेलन में आर्थिक समस्या का समाधान के लिए विश्व-सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया।

जून, 1933 ई. में लंदन में विश्व आर्थिक सम्मेलन का आयोजन किया। अमरीका सहित 64 राष्ट्रों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में (1) ... मुद्रा की मूल्य को बढ़ाने पर बाँधाओं को हटाने का प्रयास किया। (2) व्यापारिक बाँधाओं को हटाने के प्रश्न पर विचार किया। परन्तु कोई भी राष्ट्र व्यापारिक बाँधाओं को हटाने के पक्ष में नहीं था। इस कारण लंदन सम्मेलन असफल हो गये। ~~इस कारण से लंदन सम्मेलन~~

* 1933-34 तक आर्थिक मंदी का प्रभाव कम होने लगा। अमरीका में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कई आर्थिक सुधार किये जिसे अमरीका की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। विश्व के अन्य देशों में भी आर्थिक सुधार होने लगा।

* आर्थिक मंदी - परिणाम :- (1) आर्थिक राष्ट्रवाद :- स्वदेशी पर बल दिया गया। अधिक से अधिक सीमा शुल्क लागू किया गया। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अनुपात में गिरावट आई।

(2.) राष्ट्र संघ की प्रतिष्ठा को आघात :- अन्तर्राष्ट्रीय शांति व स्थिरता स्थापित करना। परन्तु ~~आर्थिक~~ अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द में कमी आई। (यानि अब प्रत्येक राष्ट्र अपने हित की ओर देखने लगे)।

(3.) लोकतांत्रिक व्यवस्था को आघात :- यह प्रजातांत्रिक सरकारें आर्थिक मंदी से बचा नहीं पायी तब उन पर यह आरोप लगा कि प्रजातान्त्रिक सरकारें असफल है, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था को आघात।

(4.) अधिनायकवाद का उदय: जर्मनी, स्पेन, इटली व अतिरिक्त राष्ट्रों में प्रजातंत्र सरकारों के विकल्प के रूप में तानाशाही शासन की स्थापना हुई।

(5) अर्थव्यवस्था पर राज्य-नियंत्रण में वृद्धि :- प्रजातांत्रिक अर्थव्यवस्था में राज्य की अहस्तक्षेप की नीति ~~...~~ पर परन्तु आर्थिक-मंदी के पश्चात अमरीका इंग्लैण्ड जैसे देशों ने अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया।

(6) हथियारों के निर्माण पर बल :- आर्थिक-मंदी के कारण विश्व में अशान्ति का असुरक्षा का वातावरण बना। सभी राष्ट्रों ने स्वयं की रक्षा सुरक्षा के लिए व आर्थिक-मंदी से निपटने के अधिक से अधिक हथियारों के निर्माण पर बल दिया। (हथियारों की संख्या से बेरोजगार से उबि हरे असुरक्षा) इससे रोजगार के साथ सुरक्षा भी होगा।

(7.) साम्यवाद का उदय :- आर्थिक-मंदी ने रूस युगोस्लाविया, चेकोस्लाविया, बुल्गारिया आदि पूर्वी यूरोपीय देशों ने साम्यवाद के उदय के लिए वातावरण तैयार किया।

(8) जापान में सैनिकवाद का उदय :- आर्थिक-मंदी के कारण जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया, इसी आर्थिक कारण से 1937 ई. जापान ने चीन पर आक्रमण किया।

(9) इटली में तानाशाही शासन :- मुसोलिनी के नेतृत्व में तानाशाही शासन की स्थापना हुई। आर्थिक-संकट के कारण ही अबिसीनिया पर आक्रमण किया। (इथो...

(10) जर्मनी में हिटलर का उदय :- आर्थिक-संकट के परिणाम स्वरूप ही हिटलर का उदय हुआ।

*न्यू-डील / नई व्यवस्था :- नवम्बर 1932 ई. में आम-चुनाव हुये, रिपब्लिकन ने पुनः हूवर हर्बर्ट हूवर को पुनः उम्मीदवार बना। डेमोक्रेटिक पार्टी ने रूजवेल्ट को अपना उम्मीदवार बनाया। अपने चुनावी भाषण में घोषणा - मैं आपके प्रति व अपने प्रति यह शपथ लेता हूँ कि मैं अमरीकी वासियों को नई व्यवस्था दूँगा। रूजवेल्ट को 57% मत मिले व हूवर को 43% मत मिले। 4 मार्च, 1933 ई. रूजवेल्ट ने अमरीकी राष्ट्रपति की शपथ ली। 6 मार्च के दिन अमरीका के सभी छोटे-बड़े सभी बैंक (4 दिन के लिए) बंद कर दिये। केवल आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बैंक को ही पुनः खोल दिया। तथा वादा किया कि जो बैंक खुले हैं उनमें जमा राशि सुरक्षित रहेगी।

Relief
Recovery
Reform

*न्यू-डील का उद्देश्य :- (1) सहायता / सहयोग (2) पुनःउद्धार (3) सुधार

पुनः उद्धार - कृषि व उद्योग क्षेत्र में विकास की ओर ध्यान देना। ~~ताकि अमरीका~~ ऐसे संकट का सामना करने के लिए तैयार रहें।

(1) आपातकालीन बैंकिंग अधिनियम :- इसके अन्तर्गत सभी बैंको पर सरकारी नियंत्रण स्थापित (2) कृषक सहायता अधिनियम :- इसके अन्तर्गत किसानों को खाद्यान्न कम पैदा करने पर बल दिया, ताकि किसानों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

(3.)(3C) - सिविल. कंजर्वेशन कप्स :- इस योजना के अन्तर्गत 2.5 मिलियन युवाओं को रोजगार दिया गया। (उन्हें 30 डॉलर प्रतिमाह दिया जाता था)

(4.) औद्योगिक पुनः उद्धार अधिनियम :- इसके आधार पर 2 मिलियन कामगारों को रोजगार मिला। इसमें अति उत्पादन को कम करने की योजना थी। (काम के घंटे तय किये, शराब पर से प्रतिबंध कम कर दिया, छुट्टी मानते आदि)

(5.) टेनिसी वेली अथॉरिटी :- अमरीकी सरकार ने टेनिसी घाटी बहुउद्देश्यी परियोजना लागू की, इसका उद्देश्य सस्ते दर पर बिजली उत्पादन करना व कृषि उपकरण, व सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करवाना।

→ Banking Emergency Act
→ farmers relief Act
→ Industrial Reovery Act

विल्सन के बाद → हार्डिंग → कुलिज → हूवर

रूजवेल्ट, जो 12 APL 1945 ई. जॉर्जिया के वार्मस्प्रिंग्स में मृत्यु हुई।

1989 में जैविक उत्पाद के लिए सारा व पर प्रतिबंध था।

Bootlegger - शराब की तस्करी करने वाले

* द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण एवं परिणाम *

* प्रथम विश्व के युद्ध विराम के समय मार्शल फोच ने कहा कि "यह युद्ध 20 वर्ष के विराम-मात्र है।

*** 1919-1339 ई. तक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध :-** (1) 1919-1933 (2) 1933-39 ई.

***(1) 1919 ई.-1933 ई. :-** (1) 1919-23 ई. (2) 1924 ई.-1929 ई. (3) 1930-33

(1) 1919-23 ई.:- टर्की व इटली वर्साय की संधि से संतुष्ट नहीं थे. टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा ने सेव्रे की संधि को मानने से मना कर दिया।

* इटली के असंतुष्ट होने के कारण (1) 1915 ई. की लंदन संधि के मुताबिक प्राप्त नहीं।

* 18 अक्टू.-1922 ई. में मुसोलिनी सत्ता में आया व तानाशाही सरकार की स्थापना।

* 1922 ई. में फ्यूम पर अधिकार किया (यह इटली का राज्य जो युगोस्लाविया को दे दिया था)

* इसके पश्चात 1923 ई. में कॉरफ्यु कॉरफ्यु की घटना (यह यूनानी आँयरलैंड है।) यूनान में आपसी मुठभेड़ में कुछ इटालियन मारे गये इसके विरोध में मुसोलिनी ने कॉरफ्यु पर आक्रमण किया एवं अधिकार कर लिया।

* इटली ने 1935 ई. में साम्राज्यवादी नीति का पालन करते हुए एबीसीनिया पर भी अधिकार कर लिया।

(2) क्षति-पूर्ति की समस्या:- को लेकर इंग्लैण्ड एवं फ्रांस में मत भेद बने रहे।

* 1922 ई. में जर्मनी एवं फ्रांस के बीच सम्बंध सुधारने के लिए इंग्लैण्ड के प्रभाव पर जिनेवा में सम्मेलन हुआ। परन्तु यह सम्मेलन असफल हो गया। (इंग्लैण्ड जर्मनी को पैरों पर खड़ा करना चाहता था / फ्रांस का इसका विरोध)

* 1923 ई. जर्मनी क्षति-पूर्ति की राशि देने में असमर्थ था। 1923 ई. में फ्रांस ने जर्मनी के औद्योगिक क्षेत्र 'रूहर' पर अधिकार कर लिया। इस रूहर से 40 मिलियन का लाभ मिला।

* अमरीका ने यूरोपीय राजनीति में "अहस्तक्षेप की नीति" का अनुसरण। परन्तु उसे आर्थिक हस्तक्षेप की नीति अपनाना अनिवार्य था। अमरीका ने प०. युद्ध-ऋण की पूर्ण अदायगी पर बल दिया।

* रूस में बोल्शेविक सरकार स्थापित हो चुकी थी, जिसे प० यूरोपीय देश संदेह की दृष्टि से देखने लगे।

* 1918 ई. से 1919 ई. में रूस में गृह-युद्ध हुआ जिसमें जापान जैसे देश ने हस्तक्षेप किया लेकिन जापान को सफलता नहीं प्राप्त।

*** 1924-1929 ई. :-** इस काल में यूरोप में शांति बनी रही। इसका कारण तीन राष्ट्रों में नये राष्ट्राध्यक्ष का आगमन।

(1) फ्रांस, जर्मनी व इंग्लैण्ड – फ्रांस में एडवर्ड हेरियट ने नये प्रधान मंत्री व ब्रियाँ नये विदेश मंत्री बने।

(2) जर्मनी में गुस्ताऊव स्ट्रेसमैन नये चांसलर बने।

(3) इंग्लैण्ड में रैम्जे मैकडोनाल्ड नये प्रधान मंत्री।

ये तीनों आपसी-सम्बंध सुधारने के पक्ष में थे। परिणाम-

* 1924 ई. के दावस-योजना:- क्षति-पूर्ति राशि समस्या सुलझाने के लिए, इसमें 4 हजार मिलियन ऋण जर्मनी को प्रदान किया।
* 1925 ई. लोकार्नो की संधियाँ – इसमें इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम पौलेण्ड व चेकोस्लोवाकिया सम्मिलित हुये। इसमें से एक संधि प्रमुख थी।
* फ्रांस, जर्मनी व बेल्जियम के बीच यह संधि प्रमुख थी। इस संधि के अनुसार वर्साय की संधि के द्वारा निर्धारित सीमा का निर्णय लिया।
* इस संधि को लोकार्नो हनिमुन कहा जाता है। (इस संधि के तहत फ्रांस रुहर से हट जायेगा।
* 1926 ई. को जर्मनी को राष्ट्र संघ का सदस्य बना दिया गया। और इसके दो वर्ष बाद – 1928 ई. केलॉग-ब्रियाँ पैक्ट हुआ। इसके अन्तर्गत विश्व के 65 देशों ने अनाक्रमण समझौते पर हस्ताक्षर किये। (केलॉग- अमरीका के विदेश मंत्री थे।) ले परन्तु शांति भंग करने वाले राज्य के विरोध कदम उठाने का प्रयास नहीं किया गया। (जापान ने भी हस्ताक्षर किये थे परन्तु तीन वर्ष पश्चात जापान ने चीन पर आक्रमण कर लिया।
* 1929 ई. यंग-योजना:- क्षति-पूर्ति समस्या सुलझाने के लिए, इसमें जर्मनी के 1919 ई. के दबाव को कम करने का प्रयास तथा इसमें क्षति-पूर्ति राशि 2 हजार मिलियन 59 किश्तों में देना स्वीकार किया गया।
* गुस्ताव स्ट्रेसमैन की 1929 ई. में मृत्यु हो गई।
* 1930-1933 ई.:- 24 अक्टूबर, 1929 को वॉलस्ट्रीट की घटना, इस काल में सभी राष्ट्रों ने संकीर्ण राष्ट्रवाद व स्वार्थपूर्ण नीति का अनुसरण किया। इस काल में विश्व में आर्थिक-मंदी आई इस कारण से सभी राष्ट्रों में सौहार्द पूर्ण वातावरण समाप्त हो गया। आर्थिक संकट के कारण ही 1931 ई. में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया। साथ ही हथियारों के निर्माण पर बल दिया इससे विश्व में हथियारों की होड़ शुरू हो गई।
* इसी स्थिति हथियारों की होड़ को कम करने के लिए जिनेवा में 1932-33 ई. में जिनेवा में निशस्त्रीकरण सम्मेलन हुआ।
* अक्टू- 1933 ई. जर्मनी निशस्त्रीकरण सम्मेलन से अलग हो गया, तथा एक सप्ताह पश्चात राष्ट्र संघ की सदस्यता त्याग दी। (हिटलर का पहला कदम)

* आर्थिक-मंदी के कारण हिटलर का उदय हुआ।

*1933ई- 1939ई:- हिटलर का उदय :- एडोल्फ हिटलर के पिता का SirNames Schicklgruber था उसने 1873ई. में हिटलर रखा। हिटलर अपने पिता की तीसरी पत्नी की संतान थी। हिटलर आस्ट्रिया का रहने वाला था तथा वह बचपन में चित्रकार बनने का चाहता था। वियना में उसे यहूदियों के प्रति घृणा होने लगी। (उसकी माँ यहूदियों के यह काम करती थी, उसकी माँ के साथ शोषण किया जाता था।

*प्रथम विश्व-युद्ध के समय हिटलर जर्मनी की ओर से लड़ा। तथा उसे आयरन क्रॉस नामक मैडल मिला। (यह केवल सैनिक अधिकारियों को दिया जाता था)

*1919ई. में हिटलर जर्मन-वर्कर्स-पार्टी का सदस्य बना। 1921ई. वह इस पार्टी का नेता बना तथा इसके इसका नाम बदलकर "नाजी पार्टी" के रखा। (नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी) वह श्रमिकों का समर्थन चाहता था।

* 30 जनवरी 1933ई. हिटलर सत्ता में आया। हिटलर Living State की नीति पर चला। (यानि जर्मन को निवास स्थान व खाद्यान्न की प्राप्ति हो।)

*अक्टू. 1933ई. में जिनेवा निशस्त्रीकरण से जर्मनी से अलग हो गया। (इसने देश शस्त्र बनाने की होड़ पर रोक नहीं)

*एक सप्ताह पश्चात जर्मनी लीग ऑफ नेशन्स से अलग हो गया।

*जनवरी 1934ई. हिटलर ने पोलेण्ड के साथ 10 वर्षीय अनाक्रमण संधि की।

*जुलाई 1934ई. में हिटलर ने आस्ट्रिया पर अधिकार करने का असफल प्रयास किया।

* जनवरी 1935ई. सार बेसिन में जनमत करवाया जिसमें 90% बहुमत जर्मनी के पक्ष में मिलने में रहा।

* मार्च, 1935 में हिटलर ने अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण की शुरुआत की। (वर्साय की संधि का पहला प्रावधान को का उल्लंघन किया) उसने कहा कि शांतिकाल में 36 आर्मी डिविजन शांतिकाल में 6 लाख सैनिक अनिवार्य

*प्रतिक्रिया स्वरूप इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि ने उत्तरी इटली में 'स्ट्रेसा' नामक स्थान पर सम्मेलन आयोजन व धारामें की कड़ी आलोचना की। (Stressfront

* जून, 1935ई. ऑग्ल-जर्मन नौ-सैनिक समझौता :- इसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि जर्मनी की नौसैनिक क्षमता इंग्लैंड की नौ-सेना का 35% होगा। इससे स्ट्रेसा-फ्रंट टूट गया।

*1938ई. तक जर्मनी के पास 51 आर्मी डिविजन, 8 लाख + रिजर्व सैनिक थी। (21 युद्ध-पोत, 47 यू-बोट, 5,000 टैंक, लड़ाकू जहाज)

* मार्च, 1936 ई. हिटलर ने राइन प्रदेश पर अधिकार किया। (इंग्लैण्ड समर्थन के तहत कहा कि वह अपने पिछवाड़े में ही तो अधिकार किया जो सही है।

* अगस्त, 1936 ई. हिटलर ने इटली के साथ समझौता किया जिसे रोम बर्लिन धुरी राष्ट्र कहा गया।

* अगले महीने जर्मनी ने जापान के साथ समझौता किया जिसे एंटी कॉमिंटन पैक्ट (साम्यवादी अन्तर्राष्ट्रीय) (साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए)

* 1937 ई. में इटली एंटी कॉमिंटन पैक्ट का सदस्य बन गया तथा यह, रोम, बर्लिन टोक्यो धुरी राष्ट्र कहा।

* 1937 ई. में स्पेन में गृह-युद्ध हुआ, जर्मनी व इटली ने जनरल-फ्रेंको का समर्थन किया इसके परिणाम स्वरूप स्पेन में तानाशाही शासक की स्थापना हुई (जर्मनी व इटली ने सैन्य शक्ति को टेस्ट करने का प्रयास) (यह द्वितीय विश्व का रिहर्सल था)

* मार्च, 1938 ई. जर्मनी ने आस्ट्रिया पर अधिकार कर जर्मनी ने अधिकार कर लिया → जर्मनी व आस्ट्रिया के बीच संघ बना (अब तक की सबसे बड़ी कूटनीतिक जीत)

* इंग्लैण्ड फ्रांस व अन्य यूरोपीय देशों ने इसका विरोध किया। क्योंकि यह वर्साय की संधि के विरुद्ध है।

* इसके पश्चात हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया से स्वीडनलैंड की माँग की

* 29 सित., 1938 म्यूनिख-समझौता - यह 4 राष्ट्रों - हिटलर, मुसोलिनी (इटली) इंग्लैण्ड प्रधानमंत्री (चेम्बरलेन फ्रांस - डेलादियर)

समझौते के अनुसार (1) इस के तहत चेकोस्लोवाकिया स्वीडनलैंड जर्मनी को दे दिया जाए (2) जर्मनी इससे अधिक माँग नहीं करेगा। यदि जर्मनी चेकोस्लोवाकिया पर अधिक आक्रमण करेगा तो मदद नहीं देंगे। (म्यूनिख पैक्ट समझौता में रूस व चेकोस्लोवाकिया को आमंत्रित नहीं किया गया।

* चेकोस्लोवाकिया स्वीडनलैंड जर्मनी को देने का मन कर दिया।

* जर्मनी ने सेना भेजकर स्वीडनलैंड पर अधिकार कर लिया।

* मार्च, 1939 ई. जर्मनी ने चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया।

* स्वीडनलैंड के छीन जाने के पश्चात चेकोस्लोवाकिया में अराजकता फैल गई। तब स्लोवाकिया ने स्वायत्तता की बात की।

* चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति ने हिटलर के कहने पर जर्मनी से सहयोग मांगा (हाका) चेकोस्लोवाकिया का राष्ट्रपति था (Hacha)। जर्मनी चेकोस्लोवाकिया को निगल गया।

जापान में सैन्यवाद का विकास :- जापानी सैन्य वाद एक तरह की सैन्य शाही था - इसका कारण सामन्ती संस्कार वाली परम्परा का आक्रमण पूँजीवाद का प्रत्यारोपण था जापान की औद्योगिक प्रगति ने साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को जन्म दिया। 1905 में रूस को हराने के बाद से जापान में महत्वाकांक्षा अहंकार बढ़ता गया

*** पौलेण्ड पर अधिकार :-** अप्रेल 1939 ई. जर्मनी ने पोलेण्ड से डेन्जिंग की माँग व पोलेण्ड के गलियारे में रेलवे सड़क मार्ग की माँग पौलेण्ड ने जर्मनी के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। 1 ~~अप्रेल~~ सितम्बर 1939 ई. जर्मनी ने पौलेण्ड पर अधिकार कर लिया। इंग्लैण्ड व फ्रांस ने जर्मनी को पौलेण्ड से सेना हटाने के लिए अल्टीमेटम भेजा। अल्टीमेटम का समय **3 सितम्बर** 19.. समाप्त हो गया। इंग्लैण्ड ने जर्मनी के विरुद्ध सेना भेज दी। कुछ समय पर फ्रांस भी सम्मिलित हुआ। इसके पश्चात इटली रूस आदि शामिल हुये।

* हिटलर जर्मनवासियों को 'राइख' के नियंत्रण में लाना चाहता था। यह हिटलर का "तृतीय राइख"

*** द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण :-** (1) जर्मनी का उग्र राष्ट्रवाद - हिटलर ... में आक्रमण करूँगा, तथा उसने कहा मैं अब देश की पराजय को ~~सहन~~ देखने के लिए जीवित नहीं रहूँगा। मुझे बटर नहीं चाहिए। तथा मेरे समय में युद्ध हो जाना चाहिए।

(2.) इटली व जापान में उग्र राष्ट्र वाद एवं सैन्य वाद :- मुसोलिनी चहाता वह इटली एक शक्ति बने उसका सम्मान व भय बना होना चाहिए। वह युद्ध का पुजारी था। वह शाँति की बात को मुर्खता समझता। मैं फासीवाद युद्ध में विश्वास करता हूँ। " पुरुष के लिए युद्ध उतना ही अनिवार्य जितना महिला के लिए मातृत्व" मुसोलिनी ने इलड्यूस की उपाधि ग्रहण की। जापान में उग्र राष्ट्र वाद का उदय हुआ। जापान विश्व की एक सैनिक शक्ति के रूप में उभरा।

(3.) अल्प संख्यको में असंतोष :- यूरोप में अनेक नये राज्य बनने बाद उन में चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड आदि को सब

(4) विश्व का दो सैनिक शिविरों में विभाजन (1) धुरी राष्ट्र - जर्मनी, इटली जापान (2) मित्र राष्ट्र - इंग्लैण्ड, फ्रांस

(5.) इंग्लैण्ड व फ्रांस के बीच मतभेद :- राष्ट्र संघ को अखाड़ा बना दिया - ① क्षति-पूर्ति राशि ② इंग्लैण्ड यूरोप का शक्ति संतुलन चाहता है। फ्रांस जर्मनी को दबाना चाहता।

(6.) आर्थिक - मंदी :- 1. आर्थिक राष्ट्रवाद संरक्षण वाद व नियंत्रण वाद पर बल दिया। व राज्यों के बीच परस्पर अविश्वास की भावना फैला... जापान व ...

(7) वर्साय की संधि में असमानता :- इसमें जर्मनी विरोधी कदम उठाये।

(8) राष्ट्र संघ की असफलता

9. स्पेन का गृह-युद्ध :-

(10) हथियारों की होड़ :- आंग्ल - जर्मन नौसैनिक समझौता

(11) युद्ध की तैयारियाँ शुरू फ्रांस ने अपने उत्तर-पूर्व में सुरक्षित किले बंदी की

इसे 'मैजिनोलाइन' कहते है, दूसरी ओर जर्मनी ने अपनी सीमा पर अगत किले बनाये जिसे सिगफ्रिडलाइन कहते हैं।

* तात्कालिन कारण : जर्मनी द्वारा पौलेण्ड पर आक्रमण (1 सितम्बर, 1939)
3 सित. 1939 ई. अल्टीमेटम खत्म होते ही 2:00 बजे ~~इंग्लैण्ड युद्ध में~~ युद्ध शुरू।

* पर्ल हार्बर घटना :- (Sunday 7th Dec, 1941) :- इस घटना को एडमिरल यामा मोतो ने अन्जाम दिया है। 353 जापानी लड़ाकू विमान जापान से उड़े, व किसी को कानों-कान खबर नही हुई, बेतथा वे पर्लहार्बर पहुँचगये।
(350 AIRCraft, 5 Battleships, 3700 men killed) | रूजवेल्ट ने इस घटना को "काला दिवस" कहते है। 8 DEC 1941 ई। अमरीका ने जापान के विरोध युद्ध घोषणा व अमरीका द्वितीय विश्व-युद्ध में शामिल हो गया।
(कारण :- अमरीका द्वारा जापान को चीन से सेना हटाने को कहा, तो जापान मना करने पर उसकी ~~तेल बंद~~ आयल-तेल बंद पर प्रतिबंध लगा दिया, इसलिए जापान ने आक्रमण।

* Kamikaze
* कमीकाजी - जापानी आत्मघाती दस्ते

* APL., 1945 - जर्मनी अपनी पराजय की ओर अग्रसर होने लगा।
* 28 अप्रेल, 1945 रात 12 बजे "इवा ब्रोन" से शादी की। अगले दिन 29 अप्रेल मुसोलिनी की हत्या की ~~सु~~ सूचना मिली।
* 30 अप्रेल, 1945 इवा ब्रोन व हिटलर ने आत्म हत्या कर ली तथा जर्मनी ने आत्म समर्पण कर दिया।
* 2 मई, को रूसी सेना ने जर्मनी पर अधिकार कर लिया।
* यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया लेकिन प्रशांत महासागर में युद्ध जारी था। (जापान - अमरीका)
* मैनहट्टन योजना : इस योजना के तहत एटम बम बनाया गया।
* 12 अप्रेल 1945 ई. "जेफरसन डे" पर रूजवेल्ट की मृत्यु हो गयी।
* हेरी ट्रूमैन अमरीका के राष्ट्रपति बने। तथा इन्होंने निर्णय लिया कि युद्ध समाप्त करने के लिए, 6 अगस्त, 1945 ई. सुबह 8:16 मिनट पर जापान पर बम डाला। बम T-29 (नाम- Little boy) ~~इसमें~~ 800, 9 अगस्त, 1945 नागासाकी पर अमरीका ने बम डाला। (11:02 मिनट) T-29 (फैट मैन) इसमें 40 हजार से अधिक लोग मारे गये। जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया।
* जापान के सम्राट हिरोहितो ने रेडियो पर घोषणा आत्मसमर्पण की।
* 14 अगस्त, 1945 ई. मध्यरात्री औपचारिक रूप से युद्ध समाप्त हुआ।

* जर्मन सोवियत संधि - 28 सित. 1939 ई. को जर्मनी और सोवियत संघ के विदेश मंत्रियों ने एक जर्मन सोवियत संधि समझौता 1.50 लाख वर्ग मील क्षे. और 3.5 करोड़ जनसंख्या वाले पोलेण्ड का परस्पर विभाजन कर लिया।

* **द्वितीय विश्व-युद्ध के परिणाम** :- (1) जनहानि व आर्थिक हानि :- (50 मिलियन मारे गये - इसमें 22 मिलियन सैनिक थे) इस युद्ध में $ 1384 900,000,000 की हानि हुई।

(2.) सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन :- विश्व दो खेमों में विभाजित हो गया।
(1) पूंजीवादी (अमरीका नेतृत्व) (2) साम्यवादी राष्ट्र (नेतृत्व रूस ने किया)
(3) सांस्कृतिक प्रभाव - प. लोकतांत्रिक समाज में एक खालीपन व खोखलापन उजागर हुआ, निराशा, कुण्ठा का प्रतिबिम्ब द्वितीय विश्व युद्ध काल के बाद के साहित्य को प्रोत्साहित किया। अस्तित्ववाद, रॉक आदि, पारा

(3.) साम्राज्यों का अंत :- ब्रिटिश साम्राज्य से भारत, पाक, बर्मा, मलाया, मिस्र आदि स्वतंत्र हुये। फ्रांसीसी साम्राज्य से इण्डो-चीन (लाओस, कम्बोडिया व वियतनाम नामक तीन स्वतंत्र राज्य स्थापित हुये। हालैण्ड से जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि द्वीप स्वतंत्र। तथा इण्डोनेशिया के नाम से नया राज्य बना। जर्मनी, इटली, जापान का अपने उपनिवेशों से ~~अधिकार~~ आधिपत्य समाप्त हो गया।

(4.) इटली में प्रजातांत्रिक सरकार का गठन :- इटली में युद्ध समाप्त होने के पर राष्ट्रवादियों व साम्यवादी में संघर्ष शुरू हुआ। मित्र राष्ट्रों के सहयोग से प्रजातांत्रिक सरकार का गठन हुआ।

(5) जर्मनी का विभाजन :- द्वितीय विश्व के पश्चात जर्मनी को पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी दो भागों में विभक्त। पूर्वी जर्मनी पर रूस का नियंत्रण व पश्चिमी जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों के नियंत्रण रहा।

(6) जापान में राजतंत्र का अंत :- अमरीका ने जापान में राजतंत्र को समाप्त किया। अमरीका के सहयोग से प्रजातांत्रिक की सरकार की स्थापना की गई।

(7.) रूस का महाशक्ति के रूप में उदय :- रूस को आधा पोलेण्ड, इस्तोनिया, लेटविया, ~~फिनलैण्ड आदि पूर्वी प्रशा~~ आदि रूस को दिया गया। इसके अतिरिक्त हंगरी, ~~चेकोस्लोवाकिया~~ युगोस्लोवाकिया, रूमानिया आदि में साम्यवादी सरकारें स्थापित।

(8) अमरीका का महाशक्ति के रूप में उदय :- अमरीका द्वितीय-विश्व-युद्ध के ~~बाद~~ पश्चात युद्ध विजेता रहा। अमरीका में 50% औद्योगिक निर्माण व 36% कृषि उत्पादन बढ़ा।

(9) चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना :- चीन में Chiaing Kai Shaik की K.M.T व Mao Tse Tung) (C.C.P - Chinang Communist पार्टी) के बीच संघर्ष हुआ व माओ के नेतृत्व में CCP सरकार बनाया।

(10) संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन :- 24 अक्टू., 1945 ई. को U.N.O की स्थापना। - 1 अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा।

(11) शीत युद्ध का आरम्भ - शीत युद्ध व लोकों प्रोपेगेण्डा युद्ध था। एक दूसरे पर कई आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए (12) तकनीकी व वैज्ञानिक प्रगति

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझने के : नव. 1989 को जर्मनी की दीवार तोड़ दी गई।

-यूरोपीय प्रभुत्व का अंत, (3) परमाणु युग का आविर्भाव (4) अफ्रो-एशियाई देशों में जागरण (अटलांटिक चार्टर की घोषणा के उप... रों की जनता को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया व उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन हुये - क्षेत्रीय संगठनों का विकास - द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विकसित दोनों गुट अपनी भावी सुरक्षा के प्रति चिंता के कारण क्षेत्रीय संगठनों-गठन की ओर अग्रसर हुए अमरीका नेतृत्व में प. गुट में NATO व द. पूर्वी एशिया संधि संगठन (SEATO) व साम्यवादी गुट में वारसा पैक्ट महत्वपूर्ण रहा।

महायुद्ध के विभिन्न चरण - प्रथम चरण - (1 सित. 1939 ई. 21 जून 1941 ई) ① 1 सित. 1939 हिटलर का
पौलेंड पर आक्रमण 3 सित. ग्रेट ब्रिटेन व फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा परन्तु पोलैंड
की सहायता नहीं कर सके/ इसी बीच सोवियत संघ ने भी पूर्वी पौलेंड पर आक्रमण । ② जर्मनी-
सोवियत संधि/ साथ ही जर्मनी के साथ सोवियत संघ ने भी प्रादेशिक विस्तार - बाल्टिक
राज्यों एस्टोनिया, लेटविया, लिथुआनिया को पारस्परिक संधि व सहयोग करने हेतु विवश
- पौलेंड विजय के पश्चात हिटलर युद्ध बंद करना चाहता था परन्तु ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस तैयार नहीं थे
तो अप्रैल, 1940 ई. में युद्ध ने तेजी पकड़ी 1940 ई. हिटलर ने डेनमार्क, नार्वे पर आक्रमण करके
- व फ्रांस पर आक्रमण, उधर इटली ने भी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा/ फ्रांस ने 22 जून
1940 ई. हथियार डाल दिए व जर्मनी व फ्रांस के बीच संधि हुई।
- हिटलर ने द. पूर्वी यूरोप (बाल्कन प्राय: द्वीप) जीतने का प्रयास व सम्पूर्ण भूमध्यसागर
पर जर्मनी का अधिपत्य/ 18 जून, 1940 ई. जर्मनी ने ग्रेट ब्रिटेन पर भीषण आक्रमण किया
ग्रेट ब्रिटेन के कड़े - प्रतिरोध के कारण जर्मनी को इस अभियान में सफलता नहीं मिली/
- प्रथम चरण में जर्मनी की तूती बोलती रही | अधिकांश प. व द. पूर्वी यूरोप पर उसका
प्रभुत्व था/ सोवियत संघ उसका मित्र था और बाल्टिक राज्यों पर उसका प्रभुत्व था इटली
भी जर्मनी का मित्र था/

द्वितीय चरण (22 जून, 1941 ई. से 6 दिस. 1941 ई.) - 22 जून, 1941 ई. को बिना घोषणा के
सोवियत संघ पर ~~भीषण~~ जर्मनी का भीषण आक्रमण । तथा जर्मनी ने एस्टोनिया, लेटविया,
लिथुआनिया, फिनलैंड और पूर्वी पोलैंड से रूसी सेना को हटाकर अपना अधिकार
कर लिया/ मास्को पर आक्रमण उसकी भयंकर भूल थी। उस पर कब्जा तो कर नहीं सका
उल्टे काफी हानि उठानी पड़ी।

- तृतीय चरण :- (7 दिस. 1941 ई. से 1942 ई. के अंत तक) - एशिया एवं प्रशांत महासागर
क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापना की जापानी आकांक्षा प्रबल होती जा रही थी । रोम - बर्लिन
टोकियो धुरी का निर्माण हो चुका था/ सित. 1940 में उसने जर्मनी और इटली के साथ
संधि सम्पन्न कर वृहत्तर पूर्वी एशिया में अपना नेतृत्व की मान्यता प्राप्त की । फ्रेंच इण्डो
-चायना व ईस्ट-इण्डीज में वह सैनिक लाभ प्राप्त करने को उत्सुक था/ उसकी महत्वाकांक्षा
ओं ने जापान संयुक्त राज्य अमरीका के साथ उसके सम्बंधों में कटुता उत्पन्न की/
जापान ने अवसर देखकर 7 दिस, 1941 को बिना चेतावनी दिए संयुक्त राज्य
अमरीका के हवाई द्वीप स्थित पर्ल हार्बर नामक बंदरगाह पर आक्रमण कर उसके
अनेक जहाज डुबो दिए/ अमरीका कांग्रेस ने 8 दिस, 1941 ई को जापान के विरुद्ध युद्ध
की घोषणा कर दी, ग्रेट ब्रिटेन ने भी उसका अनुसरण किया। जर्मनी व इटली ने संयुक्त
रूप से 11 दिस. 1941 ई. को संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा। अमरीकी
कांग्रेस ने उनके विरुद्ध तुरन्त युद्ध की घोषणा/ अन्य राज्य भी प्रविष्ट हो गए/ इस छः माह की
अवधि में जापान ने पूर्वी एशिया और प्रशांत महासागरीय क्षेत्र से यूरोपीय तथा
अमरीकी प्रभुत्व समाप्त कर दिया/ 1942 ई. की ग्रीष्म ऋतु तक धुरी राष्ट्रों का पलड़ा भारी रहा
इसके बाद पलड़ा मित्र राज्यों के पक्ष में झुकता गया/

(1942 ई. में जर्मनी को ग्रेट ब्रिटेन व अमरीका की सेना ने उत्तरी अफ्रीका में पराजित किया) व उत्तरी अफ्रीका पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार हो गया था। उधर रूसी मोर्चे पर जर्मन सेना ने 1942 ई. ग्रीष्म ऋतु में पुनः भयंकर आक्रमण किया इस में जर्मनी को भारी क्षति उठानी
- तृतीय चरण में युद्ध का एशिया व प्रशांत महासागर में विस्तार हुआ। जापान व संयुक्त राज्य अमरीका की प्रत्यक्ष सहभागिता से विश्व की समस्त महाशक्तियाँ इस युद्ध में संलग्न हो गई

<u>चतुर्थ चरण</u> :- (जन. 1943 ई. से 7 मई 1945 ई. तक) 1943 ई. की बसंत ऋतु के उपरांत अमरीका ने अपनी शक्तिशाली जहाजी बेड़े की सहायता से प्रशांत महासागर प्रत्याक्रमण आरम्भ किए और जापानियों को हटाते हुए आगे बढ़ते गये। इस चरण में इटली का पतन हो गया (मित्र राष्ट्रों की जुलाई, 1943 ई. सिसली पर आक्रमण कर उसे अधिकार कर लिया। 3 सित. 1943 ई. को मित्र राष्ट्रों के साथ युद्ध विराम कर लिया। इसी बीच जर्मनी ने इटली की प्रतिरक्षा का भार स्वयं पर ले लिया, उसने 3 सित. 1943 ई. रोम पर आक्रमण कर लिया। हिटलर के स्टॉफ द्वारा मुसोलिनी को कैद से छुड़ाकर उसे नाजी पंक्ति के पीछे सुरक्षित स्थान पर ले गए। प्रतिशोध स्वरूप मित्र राष्ट्रों ने इटली पर आक्रमण कर इटली को नाजियों से मुक्त कराया
- धुरी शक्तियों का नेतृत्व जर्मनी के पास था उसकी पराजय के साथ चतुर्थ चरण पूर्ण
युद्ध का लम्बा खिंचना, सोवियत संघ में दूर तक अनावश्यक अभियान और इटली जैसे कमजोर साथियों का बोझ इसके पतन के कारण थे। 25 अग. 1944 ई. जर्मन अधिकृत पेरिस का पतन हो गया। तथा इस चरण में प. मोर्चों पर से अमरीकी और अंग्रेज सेनाएँ व पूर्वी मोर्चे पर रूसी सेनाएँ जर्मनी द्वारा हस्तगत राज्य को मुक्त कराते हुए जर्मनी पर आक्रमण के लिए आगे बढ़ने लगीं। सम्पूर्ण यूरोप का भाग्यविधाता बनने की सोचने वाला हिटलर स्वयं अपनी और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अक्षम सिद्ध हुआ। 2 मई, 1945 को बर्लिन का पतन हो गया। इस चरण में जर्मनी ने आत्मसमर्पण किया और यूरोप में युद्ध बंद हो गया। 28 APL. 1945 मुसोलिनी की हत्या व 30 APL. 1945 हिटलर आत्महत्या कर ली

<u>पंचम चरण</u> :- (8 मई. 1945 ई. से 2 सित. 1945) - जर्मनी की पराजय के पश्चात एकमात्र जापान ही ऐसा राज्य था जो धुरी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व में तेजी से बढ़ते हुए बर्मा मलाया, फिलिपीन्स व सिंगापुर को मुक्त करवाया। पोट्सडम सम्मेलन द्वारा मित्र राष्ट्रों ने जापान से बिना शर्त आत्मसमर्पण की माँग परन्तु जापान ने इसे स्वीकार नहीं किया। युद्ध जल्दी समाप्त करने की दृष्टि से अमरीका ने 6 अगस्त, 1945 ई. को जापान के सैनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नगर हिरोशिमा पर बम गिरा दिया। सोवियत संघ ने 8 Aug, 1945 ई. को युद्ध की घोषणा की जापान ने भी आत्मसमर्पण नहीं किया 9 अगस्त, 1945 अमरीका ने जापान के नागासाकी पर परमाणु बम गिराया। 14 अगस्त, 1945 को जापान मित्र राष्ट्रों की शर्तें मान ली 2 सित. 1945 ई. को हस्ताक्षर हुए व युद्ध विराम

* जापान का आधुनिकरण *

* जापान के उदय व पतन की विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी।
* जापान सुदूर पूर्व में स्थित है यह कई द्वीपों का समूह है परन्तु इसके चार द्वीप प्रमुख है

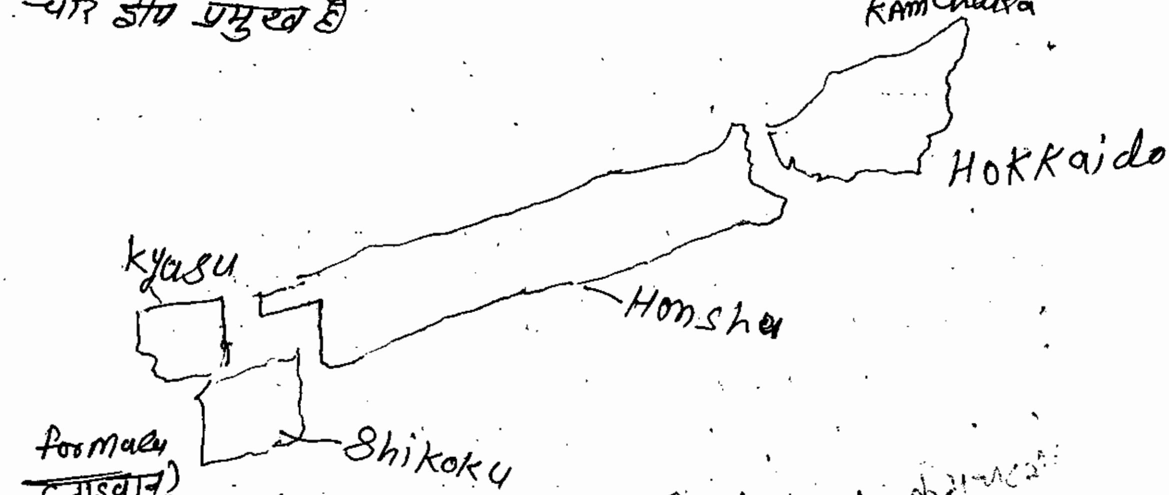

* यह 2 हजार मील लम्बा द्वीप है समूह है (3) जो उत्तर में कमचटका तथा द. में फॉरमोसा द्वीप तक फैला है, फॉरमोसा (ताइवान आधुनिक है)
* सुदूर पूर्व में सर्वप्रथम सूर्योदय होता है। इसलिए इसे सूर्योदय का देश कहते हैं, इसलिए जापानी स्वयं को सूर्यपुत्र कहते हैं।
* जापान का औपचारिक नाम - (निप्पन) है।
* गीजे गर्ल्स व Kimono (ड्रेस) प्रसिद्ध है।
* जापान में केवल 17% भूमि पर कृषिकार्य होता है यहाँ कि मुख्य पैदावार चावल, चाय, शहतूत है।
* प्राचीनकाल व मध्यकाल में शिल्प उद्योग भी प्रसिद्ध था।
* जापान के लोग मंगोलाइड प्रजाति के है।
* जापान का इतिहास भारत व चीन के समान प्राचीन है।
* छठी शताब्दी ई. पू. में चीन में कन्फ्यूशियस व भारत में बौद्ध धर्म के द्वारा धर्म सुधार के हुआ। उस समय जापान में कबीले निवास करते थे
* प्राचीन जापानियों को लेखन-कला की जानकारी नहीं थी।
* छठी शताब्दी ई. में कई चीनी बौद्ध भिक्षु जापान पहुँचे, और जापानियों को लेखन कला का ज्ञान दिया।
* चीनी बौद्ध भिक्षुओ ने जापान में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इसी के परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म जापान का राजधर्म बना। परन्तु जापान में शिंतो धर्म प्रचलित रहा।
* शिन्तो धर्म - यह जापान का प्राचीन धर्म है जहाँ प्रकृति की पूजा, पूर्वजों की पूजा व शासकों की पूजा पर बल दिया।
* जापान कम मिलावटी वाला धनी देश है।

***ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-** जापान में प्राचीनकाल से राजतंत्र व्यवस्था प्रचलित रही। 650 ई. में जिमोतेनो नामक सम्राट ने सम्पूर्ण जापान पर आधिपत्य स्थापित किया, और "यामातो" नामक नगर को राजधानी बनाया। इसी कारण से जापान का शाही वंश- "यामातो वंश" के नाम से जाना जाता है।

* 8वी शताब्दी से 12वी शताब्दी के बीच जापान में सामन्तवादी व्यवस्था व्याप्त रही। इस व्यवस्था में सम्राट व केन्द्रीय व्यवस्था कमजोर पड़ी और सभी शासन शक्तियाँ सामन्तो के हाथो केन्द्रित रही।

यूरीतोमो

* 1192 ई. में यूरीतोमो 6 नामक सामंत ने असभ्य कबीलो को पराजीत कर सभी शक्तियाँ अपने हाथों केन्द्रित की। सम्राट ने उसे "शोगुन" की उपाधि दी।

* शोगुन सम्राट के प्रधान मंत्री बने और शोगुन का पद वंशानुगत हो गया।

* शोगुन - असभ्य कबीलो को पराजीत करने वाला।

* 1867 ई. में शोगुन के पद को समाप्त कर दिया गया।

* जापान में शासन व सत्ता का कार्य सम्राट के नाम से किया जाता था।

* सम्राट कियोटो (Kyoto) नामक नगर में रहता, तथा सामान्य जनता को सम्राट से दूर रखता, तथा राज्य की आय का एक भाग राजा को दिया जाता था परन्तु शासन व सत्ता के अधिकार शोगुन के हाथो में निहित थे। शोगुन येडो नामक नगर में निवास करते थे। शोगुन शासन संचालन सामन्तो के सहयोग से करते थे। ये सभी परम्परावादी व रूढ़ीवादी थे। जापान में विदेशी यात्राओ पर प्रतिबंध था। वह विदेशियों के जापान आगमन पर प्रतिबंध था।

23 Sep 1543

*** पश्चिमी देशों के साथ सम्पर्क :-** 1542 ई. में सर्वप्रथम पुर्तगाली जापान पहुँचे इनके पश्चात हॉलेण्ड के डच व ब्रिटेन भी जापान पहुँचे। फ्रांसिस जेवियर के नेतृत्व में ईसाई मिशनरी भी जापान पहुँचे। इसके पश्चात जापानी-ईसाई शताब्दी का युग प्रारम्भ हुआ।

* जापान में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार का विरोध हुआ। 1636 ई. जापान की सरकार ने एक कानून लागू किया।

* 1536 ई. के कानून के अनुसार (1) पश्चिमी देशो के जापान आगमन पर प्रतिबंध लगा दिया। (2) जापान में इंग्लैण्ड व अन्य यूरोपीय देशों से सभी व्यापारिक सम्बन्ध त्याग दिया। (3) केवल डच व्यापारियों को नागासाकी में एक बस्ती स्थापित करने की अनुमति दी।

* इस प्रकार अगले 200 वर्षों तक एकांतवाद की नीति का पालन करता रहा।

* 19वी शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में आर्थिक विकास हुआ और कच्चे माल आवश्यकता पड़ी। 19वी शताब्दी के मध्य में प्रशांत महासागर में वाष्प संचालित जहाजों की गतिविधियाँ बढ़ी। इन जहाजों को

इन जहाजों को जापान के तटीय बंदरगाहों पर ठहरने व ईंधन की आवश्यकता पड़ी। जापानी बंदरगाहों पर सुविधा प्राप्त करने अमरीका, अग्रणी भूमिका नि.

*1850ई. मे दो अमरीकी जहाज मैत्री-पूर्ण सम्बंध स्थापित करने जापान भेजे। परन्तु सफलता नही मिली। इसी समय एक ऐतिहासिक घटना ने जापान व चीन नीति को प्रभावित किया। (प्रथम-अफीम-युद्ध - 1839-42)

*1853ई. मे कमाण्डर मैथ्यु पैरी के नैतृत्व मे चार का जहाज व जापान पहुँचे पैरी अमरीकी व राष्ट्रपति फिलमोर का पत्र लेकर जापान पहुँचा अमरीका —

*अमरीका जापान के साथ व्यापारिक सम्बंध स्थापित करना चाहता था। कमाण्ड पेरी ने 'येडो की खाड़ी' मे जापानी अधिकारियों को यह पत्र देकर एक वर्ष प. इसका जबाव लेने के का कह का चला गया।

*जापानी अधिकारियो ने राष्ट्रपति का पत्र तोक्यो तक पहुँचाईया

*1854ई. मे कामोडोर पेरी, 10 अमरीकी जहाज व 2 हजार अमरीकी जहाज लेकर जा. पहुँचा।

*जापान ने कानागावा स्थान पर पेरी व जापानी अधिकारियों के बीच शांति समझौ. इसके पश्चात संधि "कानागावा" की संधि हुई

नागासाकी शीमोदा हाकोदाते

कानागावा संधि की शर्ते :- (1) इस संधि के अनुसार जापान ने तीन बंदरगाह अमरीक. के लिए खोल दिये (1) नागासाकी (2) शिमोड हाकदाड़ी।

(2) जापान में एक अमरीकी राजदूत अमरीका के प्रतिनिधि के रूप मे रहेगा।

(3) अन्य यूरोपीय देशो का को दी जाने वाली सुविधा अमरीका को भी दी जाय.

इसके पश्चात जापान ने (1854ई. मे इंग्लैण्ड के साथ, व 1855 रूस व 1856 हॉलैंड के साथ व्यापारिक संधियाँ की। इस प्रकार जापान ने 200 वर्षो की बंद द्वार क. नीति का परित्याग कर दिया।

*1858ई. जापान में अमरीकी राजदूत टॉउनसेंड हेरिस ने एक ओर संधि की। इस संधि के अनुसार (1) जापान ने चार ओर बंदरगाह अमरीका के लिए खोल.

(2) जापान में अमरीकी वासियो को विशेष अधिकार दिए। (3) इन पर मुकदमा जापान मे नही चलाया जायेगा आदि।

(3) जापानी बंदरगाहों से प्राप्त चुंगी 5%. जापान का ही जायेगी

(4) जापान व पश्चिमी देशो के बीच विवाद होने पर अमरीका मध्यस्थता क.

*जापान ने इस प्रकार की सुविधाएँ अन्य प. देशो को प्रदान की।

*मैइजी काल / मैइजी पुनर्स्थापना :- प. देशो के साथ सम्बंध स्थापित करने व संधिया स्थापित करने के लिए शोगुन को जिम्मेदार ठहराया। इसका जापान की जनता ने कड़ा-विरोध किया। इसके परिणाम स्वरूप जापान में कई स्थान पर विद्रोह हुये। राष्ट्र वादियो की यह माँग थी कि.

(1) शोगुन का पद समाप्त किया जाए, । (2) विदेशी प्रभाव से जापान को मुक्त किया जाए (3) सम्राट के पद को पुनः स्थापित किया जाए।
(4) जापान में कई स्थानों पर विद्रोह व हिंसात्मक कार्यवाही हुई अमरीका व इंग्लैण्ड के दूतावासों में आग लगा दी गई। इस कारण से प. देशों ने एक संघ स्थापित किया व सामूहिक रूप से विद्रोह का दमन। इसके परिणाम स्वरूप सम्राट की स्थिति को पुनः स्थापित करने के लिए वातावरण तैयार हुआ।
*1866 ई. में Kieki नामक युवा शोगुन पद पर स्थापित हुआ।
*1867 ई. में सम्राट Komic की मृत्यु हो गई।
* जनवरी 1867 ई. में मुत्सुहितो (14 वर्षीय) जापान का सम्राट बना।
* शोगुन Kieki एक राष्ट्रवादी था। शोगुन विरोधी वातावरण व परिस्थितियों के अनुसार उसने Nov 1867 ई. में पद त्याग दिया।
* मुत्सुहितो ने शोगुन के पद को हमेशा के लिए ~~त्याग दिया~~। समाप्त कर दिया।
* मुत्सुहितो ने मैइजी की उपाधि धारण की। मैइजी - बुद्धिमत्तापूर्ण शासन व शासन व सत्ता की सभी शक्तियाँ अपने हाथों केन्द्रित की।
*1867 ई. - 1912 ई. का काल मैइजी काल या पुनर्स्थापना काल कहते हैं।
* राजनैतिक सुधार (1) शासन सत्ता का सुदृढ़ीकरण :- मुत्सुहितो ने ~~मैजी~~ मैइजी की ~~स्थापना की~~। ~~आधि~~ उपाधि ग्रहण की जिसका अर्थ है बुद्धिमत्ता पूर्ण शासन। 1868 ई. राजधानी क्योटो से यैडो में स्थानान्तरित किया गया। और नाम बदलकर टोक्यो रखा गया। टोक्यो का अर्थ है पूर्व की राजधानी।
*1874 ई. में सीनेट का गठन किया गया तथा निर्वाचन प्रक्रिया प्रारम्भ की। तथा इसी वर्ष केन्द्रीय न्यायालय ~~तथा~~ स्थापित किया गया।
*1878 ई. में स्थानीय स्वायत्त शासन लागू किया गया।
* इस प्रकार सत्ता को सुदृढ़ कर लिया गया।
(2) सामन्तवाद का अंत :- 1868 ई. में जागीरों पर राज्याधिकारी नियुक्त किये गये। और 1871 ई. में एक कानून के तहत जापान को ~~सामन्त~~ सामन्तवाद से का अंत कर दिया गया।
*1880 ई. में एक कानून पारित कर सभी जापानियों को ~~उपनाम अपना~~ उपनाम प्रयोग करने की अनुमति दे दी गई।

~~fiefs - स्थापित~~ fiefs - जागीर

* **सैनिक सुधार** :- 1872 ई. में जापान में अनिवार्य सैन्य-प्रशिक्षण लागू किया गया। जापान में एक संगठित एवं अनुशासित सेना का गठन किया गया। जापान में सैनिक सुधारों के लिए यह श्रेय- यामागाता और सांगो को दिया जाता है।

* जापान में (पैदल) सेना का गठन फ्रांसिसी व जर्मनी पद्धति पर आधारित रखा गया।
* जापान की नौ-सेना को ब्रिटिश - नौसेना पर आधारित रखा गया। कई यूरोपीय सैनिक विशेषज्ञों को जापान की सेना का प्रशिक्षण देने के लिए बुलाया गया।
* जापान में हथियारों के निर्माण पर अत्यधिक बल दिया गया। इस प्रकार जापान विश्व की एक बड़ी सैनिक- शक्ति के रूप में उभरा।

* **संवैधानिक सुधार** :- 1882 ई. में जापानी राजनैतिक विशेषज्ञों को अमरीका व अन्य यूरोपीय देशों में पश्चिमी देशों के संविधानों का अध्ययन करने के लिए भेजा गया। रूसो वाल्तेयर आदि दार्शनिको के सिद्धान्तो का जापानी भाषा में अनुवाद हुआ।

* 1889 ई. में जापान में नया संविधान लागू किया गया।

* **संविधान की प्रमुख विशेषताएँ** :- (1) सम्राट शासन व सत्ता की सभी शक्तियाँ सम्राट के हाथों में केन्द्रित रखी गई। (2.) सम्राट को सर्वोच्च प्रशासनिक, सैनिक, व न्यायिक अधिकारी नियुक्त किया गया। (3) द्विसदनीय विधान सभा का गठन किया गया। (संसद) (1) House of Peers (सामन्त सदन) (अ) इस सदन में सामन्तो को सदस्य बनाया गया जिसकी नियुक्ति सम्राट के द्वारा की जावेगी। (2) प्रतिनिधि सभा :- (House of Represen..) इस सभा में निर्वाचित प्रतिनिधियों की नियुक्तियाँ की गई।
* 25 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों को जो न्यूनतम आय कर देते थे। मताधिकार दिया (3.) जापानी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किये.

* **आर्थिक-सुधार** :- (1) जापानी का औद्योगीकरण :- 1870 ई. में जापान में उद्योग मंत्रालय स्थापित हुआ। बड़े पैमाने पर मशीनों का आयात किया गया। (2.) जापान में बड़े² उद्योग व कारखाने स्थापित किये गये। (3) जापानी निवेशकों को सुविधाएँ व रियायतें प्रदान की गई। (4) जापान में कागज - सीमेन्ट लोहा, कांच जूता, सिल्क, सूतीवस्त्र आदि के बड़े कारखाने स्थापित किये गये।
(5) निजी उद्योग को भी प्रोत्साहित किया गया। (6) प. देशों के साथ व्यापारिक संधि स्थापित की गई। 1890 ई. तक जापान में 250 से अधिक, वाष्प संचालित उद्योग स्थापित हुये। इस प्रकार जापान विश्व के औद्योगिक राष्ट्रों की श्रृंखला में खड़ा हो गया, और जापान को "पूर्व का इंग्लैंड" कहा गया। (एशिया का इंग्लैंड)

सफ्रागेटिय मूवमेंट - इंग्लैंड में महिलाओं के अधिकार के लिए उठाई गयी। 1918 ई. मताधिकार

45/10/ 165/

2 *(2) यातायात के साधनों का विकास :- 1872 ई. मे जापान मे टोक्यो से योकोहामा के बीच पहली रेल-लाइन बिछाई गई। (18 मील इसी में 53 मिनट में)
*1894 ई. में 2118 मील लम्बी रेललाइन बिछा दी गई। व 1903 ई. मे 4500 मील लम्बी लाइन बिछा दी गई।
*दूर संचार क्षेत्र मे भी सुधार किये गये। 1868 ई. पहला तार-घर स्थापित हुआ।
*1877 ई. प्रथम टेलीफोन कार्यालय स्थापित हुआ।
*जहाज बनाने के उद्योग का विस्तार हुआ। नागासाकी इसका प्रमुख केन्द्र था। जहाँ वाष्प संचालित बड़े जहाजों का निर्माण किया गया।

(3) बैंकिंग व्यवस्था मे सुधार :- जापान मे अमरीकी पद्धति पर आधारित बैंकिंग व्यवस्था का विकास हुआ।
*1873 ई. मे जापान मे प्रथम राष्ट्रीयकृत बैंक स्थापित किया गया। 1879 ई. जापान मे 151 बैंक स्थापित किये गये। 1885 ई. मे बैंक ऑफ जापान की स्थापना की गई। इस बैंक को मुद्रा छापने का अधिकार दिया गया। इस बैंक के द्वारा जापान की अर्थव्यवस्था का संचालन किया गया।

*सांस्कृतिक व बौद्धिक विकास :- विदेशी यात्राओं पर से प्रतिबंध हटा दिया।
* 1871 ई. शिक्षा-विभाग स्थापित किया गया। 1872 ई. मे प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया गया। (1866 ई. मे 46% स्कूल जाते व 1905 ई. मे 95% बच्चे स्कूल)
*जापान में साहित्य के अतिरिक्त, विज्ञान व सामाजिक विज्ञान पर बल दिया।
*जापान में स्कूल शिक्षा अमरीकी पद्धति पर, उच्च शिक्षा अंग्रेजी पद्धति व विश्वविद्यालय शिक्षा - जर्मन पद्धति पर आधारित थी।
*पश्चिमी साहित्य का जापानी भाषा मे अनुवाद किया गया। इसके अतिरिक्त - जापानी-अंग्रेजी शब्दकोष तैयार किये गये।
*जापान को आठ विश्वविद्यालयी क्षेत्रों में विभाजित किया गया।
*1877 ई. टोक्यो विश्व-विद्यालय स्थापित किया गया।
*1871 ई. मे जर्मन पद्धति पर आधारित विज्ञान व औद्योगिक शिक्षा लागू की गई।
*1913 ई. मे जापान मे पहला महिला विश्वविद्यालय स्थापित हुआ।
*सांस्कृतिक व बौद्धिक सुधारों के परिणाम स्वरूप एक नये बौद्धिक व शिक्षित वर्ग का उदय हुआ।

* सामाजिक सुधार - जापान मे सामन्त वाद को समाप्त किया गया व जापानी कानून समान की स्थापना की। जापान के खान पान रहन-सहन, शिक्षा आदि पर भी परिवर्तन का प्रभाव पड़ा।

ZEN– [illegible]

* 1872ई. एक राजादेश के अनुसार जापानी अधिकारीयों व कर्मचारियों के लिए पश्चिमी ड्रेस पहना अनिवार्य किया।
* जापान में स्थापत्य कला चित्रकला पर भी पश्चिमी प्रभाव, विक्टोरिया शैली पर आधारित भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ।
* **धार्मिक सुधार** – शिंतो धर्म पर बल दिया गया। तथा इसे राजधर्म घोषित बौद्ध धर्म में विश्वास जारी रहा।

* चीन में साम्यवादी-क्रांति *

*** ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** :- चीन का इतिहास भी भारत के इतिहास के समान प्राचीन है। चीन भी प्राचीन सभ्यताओं का जन्म स्थल माना जाता है। परन्तु चीन का इतिहास अत्यधिक जटिल है। चीन में 22 राजवंशो का शासन रहा। हान व चाऊ वंश प्राचीन राजवंश थे। इन वंशो की संस्कृति चीन का सांस्कृतिक आधार बना।

* 7वी शताब्दी से 9वी शताब्दी के बीच चीन में तांगवंश का शासन रहा

*13 वी शताब्दी के प्रारम्भ में चीन में मंगोल वंश स्थापित हुआ।

*1214ई. में चंगेज खाँ नामक मंगोल शासक बना

*13वी शताब्दी के अंत में कुबलाई खान नामक मंगोल शासक हुआ। जिसने एशिया व यूरोप को एक-सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। उसने कई विद्वानों, दूतो को आमंत्रित किया। मार्कोपोलो नामक इटालियन यात्री इसके दरबार में रहा।

*14वी से 17वी शताब्दी के बीच मिंग वंश का शासन रहा।

* 1644ई. मांचू वंश की स्थापना व 1911ई में मांचूवंश समाप्त हुआ।

* मांचूवंश चीन का अन्तिम वंश था।

*** पश्चिम के साथ-सम्पर्क** :- 1557ई. में सर्वप्रथम पुर्तगाली चीन पहुँचे इसी समय द. चीन में मकाऊ पर अधिकार किया। (इसे 18 Dec, 1999ई को चीन को लौटाया) लगभग इसी समय स्पेनवासी चीन पहुँचे। 1604ई. में हालैण्ड के डच चीन पहुँचे 1636ई. में अंग्रेज चीन पहुँचे। परन्तु चीन की सरकार ने यूरोपीय देशो को कोई सुविधा प्रदान नहीं की।

*ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने चीन में प्रवेश के लिए अफीम का प्रयोग किया, इस कारण से अफीम-युद्ध हुआ (1839-1842) व नानकिंग की संधि हुयी।

इसके तहत (1) पाँच बंदरगाह इंग्लैण्ड को दिये व हांगकांग उसे स्थायी रूप से दिया।
(2) 2 लाख का हर्जाना चीन ने इंग्लैण्ड को दिये।

नानकिंग संधि - चीन पर यूरोपीय व अन्य शक्तियों के प्रभुत्व का आरम्भ माना जाता है।

*द्वितीय-अफीम युद्ध :- कैथोलिक पादरी को चीन सरकार ने मृत्यु दण्ड दिया जाने के स्वरूप (इंग्लैण्ड + फ्रांस संयुक्त) आक्रमण किया। इसके पश्चात 'टीनत्सिन संधि' की संधि हुई। (1856-60)

संधि के तहत :- चीन ने 11 बंदरगाह इंग्लैण्ड के लिए खोल दिये।

*1844ई. के पश्चात चीन में फ्रांस ने भी अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया व 1858ई तक चीनी कैथोलिक ईसाइयो पर संरक्षणता स्थापित की। इस प्रकार चीन की एकान्तवाद की नीति का अंत हुआ। (बंद द्वार की नीति)

बाक्सर विद्रोह :- चीन में (1900ई) विदेशी शक्तियों के प्रभुत्व विस्तार एवं विदेशियों द्वारा चीनी जनता पर किये जाने वाले अत्याचारों के कारण चीनी लोगो का एक विद्रोह स्वरूप संगठन बना "बक्सरदल" जिसके द्वारा 1900 ई. आंदोलन प्रारम्भ हुआ (जिसे चीन की साम्राज्ञी का समर्थन था) जिसके तहत विदेशी दूतावासों को घेर लिया, विदेशी सम्पत्ति की लूट, गिरजाघर नष्ट करके व ईसाई पादरियो की हत्या करदी, रेल पटरियां उखाड़ दी, जापान, अमेरिका, फ्रांस व जर्मनी, इंग्लैण्ड की सम्मिलित सेना बाक्सर विद्रोह को बुरी तरह कुचल दिया। लेकिन चीन के राजनीतिक भविष्य पर दूरगामी प्रभाव डाला।

* 24 दिस. 1911 ई. सनयात सेन अमरीका से शंघाई पहुंचे

चीन की साम्यवादी क्रांति - 1911 (12 फरवरी, 1912 को गणतंत्र बना)

प. देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उस समय की सत्ता व सरकार को ज़िम्मेदार ठहराया। इस प्रकार चीन में विदेशी प्रभाव के विरोध वातावरण बना। इस असंतोष के परिणाम फलस्वरूप चीन में 1911 ई. में क्रांति हुई इसका नेतृत्व राष्ट्रवादी नेता "सनयात सेन" ने किया।

* 1905 ई. में सनयात सेन ने पार्टी का गठन किया: तुंग-मिंग-हुई नाम से जाना जाता है। 1911 ई. में इस पार्टी को "कुओमिंगतांग पार्टी" रख दिया।
Ku - देश - (National), min (मिन) - जनता (People) Tang - पार्टी/दल।
* इसे राष्ट्रवादी पार्टी भी कहते हैं। सनयात सेन के तीन प्रमुख सिद्धान्त
- Sun - Nationalism राष्ट्रवाद
- min - democracy - लोकतंत्र
- Chu - Socialism समाजवाद (जन-जीविकावाद (People's Livelihood)
* 1911 ई. की क्रांति के तहत से चीन में "मांचू वंश" का अंत व राजशाही की समाप्ति हुई (स्युआंग तुंग शासक)
* मार्च, 1925 ई. में सनयातसेन (58वर्ष) की मृत्यु हो गई।
* सनयातसेन की मृत्यु के पश्चात कुओमिंगतांग पार्टी का नेता चियांग-काई-शेक (K.M.T) अध्यक्ष बना।
* चियांग-काई-शेक ~~की नीति में~~ ने सनयातसेन की नीति के विपरीत नीति का अनुसरण
- उसने सत्ता में स्थापित रहने के लिए सामन्तों व भू-स्वामियों का सहारा लिया।
- दूसरी ओर 1921 ई. में चीन में - C.C.P का गठन हुआ (चीन कम्युनिस्ट
* पार्टी का गठन जिसके प्रमुख नेता - माओ-त्से-तुंग।
* चियांग-काई-शेक ने पूंजीवादी अमरीका से आर्थिक सहयोग प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उसकी सत्ता व सरकार पूर्णतया केंद्रित थी। उसके शासन में भ्रष्टाचार व्याप्त था। और चीन में आर्थिक विकास में रुकावट आ चुकी थी।
* दूसरी ओर - C.C.P ने अपने कार्य-योजना की घोषणा की।
- इस योजना के तहत - (1) चीन में विदेशियों के प्रभाव को अंत करना।
(2) राष्ट्रीय आय का प्रयोग जनहित [illegible] जनसाधारण पर करना। राष्ट्रीय आय का दुरुपयोग करने वालों को दण्डित करना, राज्य के सामान्य वर्ग के लिए रोजगार व भोजन उपलब्ध करवाना।
* इस योजना के परिणाम स्वरूप साम्यवादी क्रांति के पक्ष में वातावरण तैयार हुआ
* इस प्रकार K.M.T. व C.C.P के बीच सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हुआ। इस संघर्ष को चीन की साम्यवादी क्रांति कहते हैं।

* 1894 ई. 95 ई. जापान से पराजय व शिमोनोसेकी की संधि की

ताइपिंग विद्रोह - (1851-64) [illegible] हुंग-सु-च्वान
दैवीय सम्राट घोषित और नए शासन "ताइपिंग" (पूर्ण शांति) की स्थापना की। इस संगठन पर रोक लगाई बल्कि तब विद्रोह भड़क उठा यह विद्रोह नानकिंग तक बढ़ा
लगभग 14 वर्षों तक देश भक्तों ने ऐसी सरकार कायम करने का प्रयास जो कृषकों की दशा सुधारने तथा विदेशियों के प्रभाव को रोकने के लिए प्रयत्नशील थी। यह मंचू
शासन व विदेशियों के लिए समान रूप से खतरनाक आंदोलन था। मंचू सरकार की सहमति से 1864 ई. को इस आंदोलन को विदेशियों के सहयोग से पूर्णतः कुचल दिया

डॉ. सनयात सेन के कुओ-मिंग-टांग दल ने मिन पाओ नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ

* चीन की साम्यवादी क्रांति में "माओ" की भूमिका।

⇒ "मैं पूर्व का लेनिन हूँ"।
⇒ आधुनिक चीन – माओ की देन।
⇒ माओ का जन्म चीन के द. पूर्व में हुनान प्रांत में हुआ। वह कृषक परिवार सम्बंधित था। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वह पीकिंग विश्व-विद्यालय में पुस्त सहायक के लिए नियुक्त हुआ।
⇒ यहाँ माओ ने मार्क्स व लेनिन के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया। वह मार्क्सवा विचार धारा से अत्यधिक प्रभावित। पीकिंग विश्व विद्यालय में माओ की भेंट "चेन-डुई-सुई" से हुई। यह मार्क्सवादी विचार धारा का कट्टर अनुयायी था।
⇒ प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात उसने चिंग-सिंग-चीन नामक पत्रिका के माध्यम से मार्क्सवादी विचार धारा प्रचार किया। बाद में ई. कुओमिंग टांग को क्रांति संगठन
* 1921 ई. में प्रो चेन-लिंग-चीन के नेतृत्व में चाइना कम्युनिस्ट पार्टी का गठन।
* गठन के समय रूसी पर्यवेक्षक उपस्थित थे।
* माओ और "चाओ इन लाई" C.C.P के ~~संस्थापक थे~~ संस्थापक सदस्य थे।
* माओ को C.C.P की हुनान प्रांत की शाखा का ~~अध्यक्ष~~ सचिव नियुक्त।
* 1923 ई. में माओ को C.C.P की केन्द्रीय समिति में शामिल किया।
* माओ ने हुनान प्रांत में किसानों व श्रमिकों को संगठित किया। 1923 ई. में CCP के 300 सदस्य थे व 1927 ई. में 50 हजार सदस्य बन गये। इन का चीन दो मिलियन ~~श्रमिकों~~ किसानों व कई मिलियन श्रमिकों का नेतृत्व था।
* 1927 ई. में माओ ने हु-एक किसान आंदोलन को नेतृत्व किया। परन्तु चांग-काई शेक सरकार ने इस का दमन किया। माओ इस आंदोलन में असफल रहा। 1927 ई. में माओ ने संघाई में एक किसान आंदोलन का नेतृत्व परन्तु असफल रहा। राष्ट्रवादी पार्टी ने संघाई आंदोलन का दमन कर लिया।
* C.C.P की संघाई शाखा ने माओ को अयोग्य घोषित किया। माओ को हुनान शा के पद से हटा दिया। उसे केन्द्रीय समिति के पद से हटा दिया गया।
* 1928 ई. में चीन के ~~क्वांग~~ चांग प्रांत में C.C.P ने एक स्वतंत्र किसा आंदोलन का नेतृत्व किया। ~~यह~~ आंदोलन सफल रहा। इसके पश्चात CC के कई सदस्य असंतोष ~~[illegible]~~ माओ मिलगये। इनमें – चू-तेह, व लिन पियाओ शामिल। 1930 ई. में ~~माओ~~ ने कियांग-सी (Kiangsee) में साम्यवा सरकार की स्थापना की इसके पश्चात ~~हुनान~~ हुनान में 20 साम्यवादी ~~सर~~ कार की स्थापना की। इस प्रकार द. चीन में Kiangsee, हुनान प्रांत में सोवियत की स्थापना की।
* माओ ने चू-तेह ~~व लिन~~ पि आओ को 'लाल सेना' का सेनानायकों क पद दिया।
* 1931 ई. में माओ C.C.P का अध्यक्ष नियुक्त हुआ।

पीकिंग – बीजिंग

* जापान द्वारा मंचूरिया पर आक्रमण ← मंचूरिया चीन का औद्योगिक क्षेत्र था। 1931 ई. में आर्थिक कारणों से जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया। परन्तु चियांग काई शेक की सरकार ने जापान के विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाया। (क्योंकि Chiang Kiesheik की सरकार पहले माओ ~~से लड़ा~~ को जापान से बड़ा दुश्मन मानता था।)

* चियांग-काई शेक ने माओ की साम्यवादी सरकार का दमन करने का प्रयास किया। इसी के परिणाम स्वरूप K.M.T व C.C.P के बीच सत्ता के संघर्ष शुरू।

* Long March / ऐतिहासिक प्रयाण ← अक्टू, 1934 ई. चियांग काई शेक ने माओ की साम्यवादी सरकार का दमन के लिए पाँच बार सैनिक अभियान। परन्तु सफलता नहीं। क्योंकि माओ ने गुरील्ला पद्धति / छापामार पर संघर्ष कर राष्ट्रवादी सेना को पराजित की।

"जब दुश्मन आगे बढ़ता है हम पीछे हटते हैं तथा जब दुश्मन पड़ाव डालता है तो हम परेशान करते तथा जब वह थक जाता है तो हम आक्रमण करते हैं जब शत्रु पीछे हटता है, हम आक्रमण करते हैं।" (माओ)

* च्यांगकाई शेक ने माओ के विरुद्ध 1 लाख सेना भेजी। इस सेना ने कियांसी कियांगसी व हुनान प्रांत को चारों तरफ से घेर लिया, माओ के लिए कियांगसी छोड़ना भी कठिन था।

* Oct 1934 ई. में माओ अपने 1 लाख अनुयायियों के साथ द. में Kiangsee (कियांगसी) प्रांत से उत्तर में Shansi (शांसी) प्रांत की 6000 मील की दूरी को आठ महीने में पूरी की। इसे ऐतिहासिक प्रयाण / Long March कहते हैं। इस अभियान में माओ के 80 हजार सैनिक मारे गये लेकिन माओ CCP का निर्विरोध नेता के रूप में उभरा।

* माओ ने येनान (Yenan) को (~~सेन~~ Senegal प्रांत) अपना मुख्य केंद्र बनाया।

* लांग मार्च माओ के लिए पराजय के विजय होने सिद्ध हुई। (क्योंकि वह Yenan प्रांत रूस के नजदीक था। ~~पर~~ साम्यवाद का सीधा प्रभाव पड़ा। व रूस से उसे सैनिक व आर्थिक सहयोग प्राप्त होगी।)

* चीन-जापान युद्ध - 1937 ← 1931 ई. में जापान ने चीन मंचूरिया पर आक्रमण किया तो चियांग काई-शेक सरकार ने इसका कोई विरोध नहीं किया, जापान इससे उत्साहित हुआ, तथा उसने साम्राज्यवादी नीति का अनुपालन का चीन पर आक्रमण किया, तथा ~~तेल पर~~ चीन के तेल उत्पादक क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए 1937 ई. में चीन जापान ने युद्ध आक्रमण किया।

* जापान द्वारा चीन पर आक्रमण के समय माओ ने चियांग काई शेक को जापान के

विरुध सामुहिक रूप से ~~सामने~~ सामना करने के लिए प्रस्ताव भेजा। प्रारम्भ में चियांग-काई शेक ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परन्तु उसके सेनानायकों के दबाव व सलाह से इस प्रस्ताव को मान लिया। जापान द्वारा चीन पर आक्रमण के समय व द्वितीय विश्वयुद्ध के समय - K.M.T. व C.C.P. ने सामुहिक रूप से सं. किया।

*दिसम्बर, 1941 ई. में जापान के विरुध अमरीका ने युद्ध की घोषणा की (8 दिस. 194 इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध में चियांग-काई शेक की सरकार की सहयोगी बनी।

*द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापान ने चीन के 7 में से 6 प्रांतों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इसके अतिरिक्त जापान ने चीन के बड़े तटीय भाग पर भी जापान ने अधिकार कर लिया।

*1945 ई. में जापान-युद्ध में पराजीत हो गया। जापान चीन से हट गया। और चीन की सत्ता राष्ट्रवादी सरकार को सौंप दी।

*जापान के विरुध-युद्ध के समय माओ की C.C.P की पार्टी को अधिक लोकप्रियता मिली, क्योंकि जिन क्षेत्रों C.C.P के नेतृत्व प्राप्त था। वहाँ सफलता प्रा. हुई। दूसरी और K.M.T के नेतृत्व में जिन स्थानों पर संघर्ष हुआ K.M.T की पराजय हुई।

* ~~चीन में~~ Peoples Republic of China - 1949.

* 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ, तथा K.M.T व C.C.P के बीच गठबंधन का अंत हुआ। एक बार पुनः K.M.T व C.C.P के बीच संघर्ष प्रारम्भ हुआ। 1945 1949 ई. के बीच चीन में K.M.T व C.C.P के बीच गृह-युद्ध चला। अन्त में इस संघर्ष में राष्ट्रवादी सरकार की पराजय हुई। चियांग-काई शेक चीन छोड़ फॉरमोसा द्वीप चला गया। और वहाँ उसने राष्ट्रवादी सरकार की स्थापना की।

*जनवरी, 1949 ई. में माओ ने अ. चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना की। इसे ~~पिपल~~ पिपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना की। (लाल सरकार)

*चीन का नया संविधान (1950) - 1950 का चीन का नया संविधान औपचारिक रूप से 1954 ई. में लागू किया। इस संविधान की प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) चीन की नई सरकार को पिपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना कहा गया।

(2) नेशनल पिपुल्स ~~नामक सदन का~~ कांग्रेस नामक सदन का गठन।

(3) इसे इस सदन को विधान (N.P.C) बनाने का अधिकार दिया।

(4) नेशनल पिपुल्स का कार्यकाल 4 वर्ष का निर्धारित।

(5) 18 वर्ष से अधिक आयु के ~~का~~ महिला व पुरुषों को मताधिकार दिया गया।

(6) C.C.P के चेयरमेन व मंत्रीमंडल की नियुक्ति का अधिकार N.P.C को दिया।

* इस संविधान के परिणामस्वरूप सशक्त केन्द्रीय सरकार की व्यापना की गई। परन्तु व्यावहारिक रूप से शासन व सत्ता के सभी अधिकार C.C.P के चेयरमैन के हाथ में रहे।

"माओ की आर्थिक नीति व आर्थिक सुधार :-

(1) कृषि क्षेत्र में सुधार :- इसके तहत माओ ने दो कदम उठाये। सर्वप्रथम सामन्तों व भूस्वामियों की भूमि/जमीन छीनकर किसानों में वितरित कर दी। इसके पश्चात चीन में छोटे निजी कृषि फार्म के स्थान पर रूसी पद्धति पर आधारित बड़े सहकारिता कृषि-फार्म स्थापित किये। सभी किसानों को इस सहकारिता समिति का सदस्य बनाये गये। एक सहकारिता कृषि-फार्म के एक सौ-से तीन सौ परिवार को सदस्य बनाया। 1956 तक 95% किसान सहकारिता के सदस्य बन चुके थे। इस पद्धति के अनुसार सहकारिता के अधीन भूमि पर व कृषि उपकरणों पर सामूहिक स्वामित्व प्रदान किया। सहकारिता की आय का सम्मान वितरण प्रत्येक परिवार को किया।

(2) औद्योगिक विकास : रूसी पद्धति पर आधारित चीन के प्रमुख नगरों में बड़े उद्योग व कारखाने स्थापित (आयरन, कोल, इस्पात व रसायन के)। इसके लिए रूस से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त रूसी वैज्ञानिक व श्रमिकों ने चीन पहुँच कर सहयोग किया।

* माओ की विदेश नीति (1950 - 1970 ई॰)

* 1950 ई॰ में कोरिया युद्ध के समय माओ ने उत्तरी कोरिया के पक्ष में चीनी स्वयंसेवकों को भेजा।

* 1950 ई॰ चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया। तिब्बत के धर्मगुरु दलाई लामा ने भारत में शरण ली।

* 1962 ई॰ भारत व चीन मध्य-युद्ध जिसके तहत चीन ने भारत के बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया। परन्तु कुछ समय पश्चात यथा स्थिति प्राप्त कर ली गई।

* प्रारम्भ में चीन के रूस के साथ मधुर सम्बन्ध थे उसे रूस का आर्थिक सहयोग प्राप्त।

* 1953 ई॰ में स्टालिन की मृत्यु हो गई। निकिता ख्रुश्चेव नये राष्ट्रपति बने।

* 1956 ई॰ में ख्रुश्चेव ने रूस की नीति में परिवर्तन कर, उसने पश्चिम के साथ शांति-पूर्ण सह-अस्तित्व पूर्ण की नीति की घोषणा। इस नीति का माओ ने विरोध किया। माओ के अनुसार यह नीति मार्क्स-लेनिन के सिद्धान्तों के विपरीत थी। माओ ने रूस को अवसरवादी कहा और ख्रुश्चेव की

दलाई लामा धर्मशाला के मैकलॉड गंज में निवास करते हैं

नीति का सार्वजनिक रूप से कड़ी आलोचना की।
*रूस के साम्यवाद व चीन के साम्यवाद में भारी अन्तर - (1) रूस का साम्यवाद नगर आधारित था। चीन का ग्रामीण आधारित।
*रूस ने चीन को आगे दी जाने वाली आर्थिक सहायता बंद कर दी।
*1960 ई. तक रूसी वैज्ञानिक तकनीकी व श्रमिक दल चले गये।
*~~14~~ इसके बावजूद चीन ने 1963 ई. में ~~परमाणु बम~~ अणु बम का परीक्षण व 1967 ई. में हाइड्रोजन बम का परीक्षण किया।
*Hundred Flowers Campaign. - सहस्त्र पुष्प अभियान 1957
*माओ ने सरकार के कार्यों की सकारात्मक आलोचना करने के लिए व सुधारों के सुझाव की नीति का पालन, जिसे सहस्त्र पुष्प अभियान कहते हैं। माओ के स्वयं "सहस्त्र पुष्पों को खिलने दो, व सहस्त्र विचार धारा का विकास होने दो"।
*परन्तु साम्यवादी सरकार व उसकी नीतियों की कड़ी आलोचना हुई। आम जनता ने मानसिक श्रम करने वालों को अधिक वेतन देने व चीन ~~में~~ विरोधी पार्टी ~~के बनने~~ की स्थापना पर बल दिया।
*1958 ई. में माओ ने इस नीति को तुरन्त समाप्त किया। और चीन की परिस्थिति व आवश्यकतानुसार नई आर्थिक नीति लागू की। इस नई आर्थिक नीति को - लम्बी छलांग की नीति - 1958 / ग्रेट लीप फॉरवर्ड : माओ ने इस नई आर्थिक नीति के अन्तर्गत चीन की परिस्थितियों के अनुरूप व अनुकूल नीति लागू की। इस को लम्बी छलांग की नीति थी। (1.) कृषि क्षेत्र :- सहकारिता कृषि फार्म के स्थान पर "कम्यून" नामक बड़ी फार्म स्थापित की गई। कम्यून का संचालन करने के लिए - (ब्रिगेड) Brigade, Works Teams (श्रम दल) व (परिषद) Elected Councils (निर्वाचित परिषद) में विभाजित। कम्यून स्थानीय प्रशासन का कार्य करने लगा। तथा कम्यून के माध्यम से स्थानीय परियोजनाओं पर कार्य किये गये जैसे - कृषि कार्य, नहर निर्माण, बाँध सड़क आदि परियोजनाओं पर कार्य किये गये। कम्यून से मिलने वाली आय का सभी परिवारों में समान रूप से विभाजन किया गया।
(2.) उद्योग :- बड़े-उद्योग व कारखानों के स्थान पर छोटे कारखाने ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित किये जायें। इन उद्योगों का उद्देश्य कृषि क्षेत्र के लिए उपकरणों का निर्माण करना था। माओ स्वयं ग्रामीण क्षेत्र में 6 लाख भट्टियों के निर्माण का दावा करता है।
*प्रारम्भ में माओ की इस नीति का विरोध हुआ, परन्तु माओ अपनी नीति को पूर्णतः मार्क्स-लेनिन सिद्धान्तों पर रखना चाहता था।

Revesionist- अवसरवादी

* इस नीति के आधार पर माओ चीन में कृषि प्रधान समाज की स्थापना के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त वह समाज को श्रम प्रदान या श्रम आधारित रखना चाहता था। वह मशीन आधारित पश्चिमी नीति का विरोधी था।
* माओ ने इस नीति के तहत शिक्षा के क्षेत्र में सुधार किये। उसने कई जनहित योजनाओं की घोषणा की। महिलाओं के उत्थान के विशेष योजनाओं की घोषणा की।

* सांस्कृतिक - क्रांति :- 1966-69 :-

माओ अपनी नीतियों को पूर्णतया मार्क्स लेनिन के सिद्धान्तों पर आधारित रखना चाहता था। वह तीन चीजों के अन्तर को समाप्त करना चाहता था। (1) नगर व ग्रामीण, (2) कृषि व उद्योग (3) मानसिक श्रम व शारीरिक श्रम। माओ यह संदेश चीन के गाँव 2 में पहुँचाना चाहता था। माओ ने इसे सांस्कृतिक क्रांति नाम दिया। इसके तहत युवाओं को माओ सिद्धान्तों के प्रचार (रेड बुक) करने गाँवों में भेजा।

* साम्यवादी चीन को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता :- 1965 ई. के पश्चात अमरीका व चीन के मध्य गुप्त वार्ता शुरु हुई। चीन ने अमरीका से U.N.O का सदस्य बनने का प्रस्ताव रखा। 1971 ई. में अमरीका के सहयोग से सुरक्षा परिषद का सदस्य बना दिया गया। इस प्रकार चीन विश्व के पाँच सशक्त राष्ट्रों में सम्मिलित हुआ। इससे पूर्व यह स्थान राष्ट्रवादी चीन को प्राप्त था। इस प्रकार साम्यवादी चीन को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई।
* 1972 ई. में अमरीका के राष्ट्रपति निक्सन ने चीन की यात्रा की व आपसी सहयोग का वादा किया।
* 1976 ई. में माओ और चाओ-इन-लाई (C.C.P के संस्थापक सदस्य) की मृत्यु हो गई।

* 1911 की क्रांति के परिणाम

① मंचु राजवंश की समाप्ति :- 1644 ई. स्थापित यह राजवंश 1908 ई. में राजमाता के जीवित रहने तक मजबूत नजर आता है, यद्यपि भीतर से खोखला हो चुका था। राजमाता के निधन बाद शिशु सम्राट के समय इस वंश की सत्ता को ~~सही समय~~ समाप्त करने का सही मुहूर्त आ-पहुँचा। मंचुओं को चीनियों ने कभी भी पूर्णतः देशी नहीं माना, उनकी नजरों में इनका विदेशी मूल बना रहा। डॉ. सेन के अनुयायी तो इस राजवंश को उखाड़ फैंकने को संकल्पबद्ध थे। 12 फरवरी 1912 ई. को क्रांतिकारियों द्वारा इस वंश को उखाड़ फैंका यह क्रांति का महत्व परिणाम था। कूटनीतिक दाँव-पेंचो से ही यह लक्ष्य अर्जित कर लिया गया, इसके लिए रक्तपात नहीं करना पड़ा।

② गणतंत्र की स्थापना :- राजवंश के ~~स्थान~~ स्थान पर गणतंत्र की स्थापना एक अद्भुत घटना थी चीन एशिया का प्रथम देश था जहाँ गणतांत्रिक शासन-व्यवस्था लागू की। वास्तव में यह क्रांतिकारी परिणाम था। चूँकि चीन एशिया का प्रथम गणतंत्र था इससे एशिया के अन्य देशों को भी भविष्य में इस ओर अग्रसर होने का अवसर मिला।

③ सांस्कृतिक प्रभाव :- क्रांति के दूरगामी सांस्कृतिक प्रभाव भी परिलक्षित हुए। इसने चीन में पुनर्जागरण का संक्रमण काल प्रारम्भ किया। चीन की प्राचीन कठिन भाषा का स्थान "पाइ-हुआ" ने ले लिया। जो प्राचीन की तुलना में अधिक सरल थी। लिपि सरलीकृत की गई। विद्यालयों में आधुनिक विज्ञान पढ़ाया जाने लगा। धार्मिक क्षेत्र में भी कंफ्यूशियस का प्रभाव क्षीण होने लगा। यद्यपि यह एक संक्रमण काल था। जिसमें सांस्कृतिक जागरण की आकांक्षा के साथ एक भटकाव और अराजकता

④ अराजकता व गृह-युद्ध :- गेथोर्न हार्डी के अनुसार 'क्रांति का तात्कालिक प्रभाव अराजकता व अपखण्डन था' जो कड़ी चीन के विस्तृत साम्राज्य को किसी तरह एकत्व में बाँधे हुए थी। वह नष्ट हो गई। युआन शीह-काई गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति तो बना दिया गया। परन्तु उसके संस्कार राजतंत्रात्मक थे। ~~व~~ सेन व कुओमिनतांग में व्यापक मताधिकार पर आधारित लोकतंत्रात्मक पद्धति जिसमें कार्यकारिणी की शक्तियाँ सीमित हो और संसद शक्तिशाली हो को प्राथमिकता थी। इन विरोधी विचारों में संघर्ष होना स्वाभाविक था। युआन ने 1913 ई. कुओमिनतांग दल पर प्रतिबंध लगा दिया, 1914 ई. पुनः संसद भंग कर दी गई और उसने अधिनायकवादी शासन प्रारम्भ किया। 6 जून 1916 ई. को उसके देहांत के पश्चात उसका उत्तराधिकारी उपराष्ट्रपति ली-युआन-हेंग बना। चीन में अराजकता फैल गई। प्रांतों पर केन्द्रीय सरकार का प्रभुत्व क्षीण होने लगा, प्रांतपति अपने-अपने क्षेत्र स्वतंत्र शासक की तरह आचरण करने लगे। 1917 ई. कुओमिनतांग दल ने द. चीन में अपनी शक्ति को पुनः संगठित कर केण्टन में डॉ. सनयात सेन के नेतृत्व में गणतांत्रिक सरकार का गठन किया। पुनः दो सत्ता केन्द्र बन गये। द. में केण्टन की सरकार व उत्तर में पीकिंग की सरकार

वस्तुतः चीन में एक अराजकता का दौर आया। जिसमें किसी सरकार की सत्ता का खेल चलता रहा। 1922 ई. में उत्तरी चीन में गृह-युद्ध भड़क उठा। ~~और इसका इतिहास [illegible]~~ 1917-24 ई. के दौर में कई राष्ट्रपति बने, हटे. डॉ डॉ सेन ने अपने दल कुओमिन्तांग को संगठित कर धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का क्रम जारी रखा।

... था। स्पष्ट कीजिए ?।

द० पूर्वी एशिया में उपनिवेशवादी संघर्ष :-

* द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात स्वतंत्र होने वाले देशों में इण्डोनेशिया यानि एशिया का प्रमुख स्थान है।

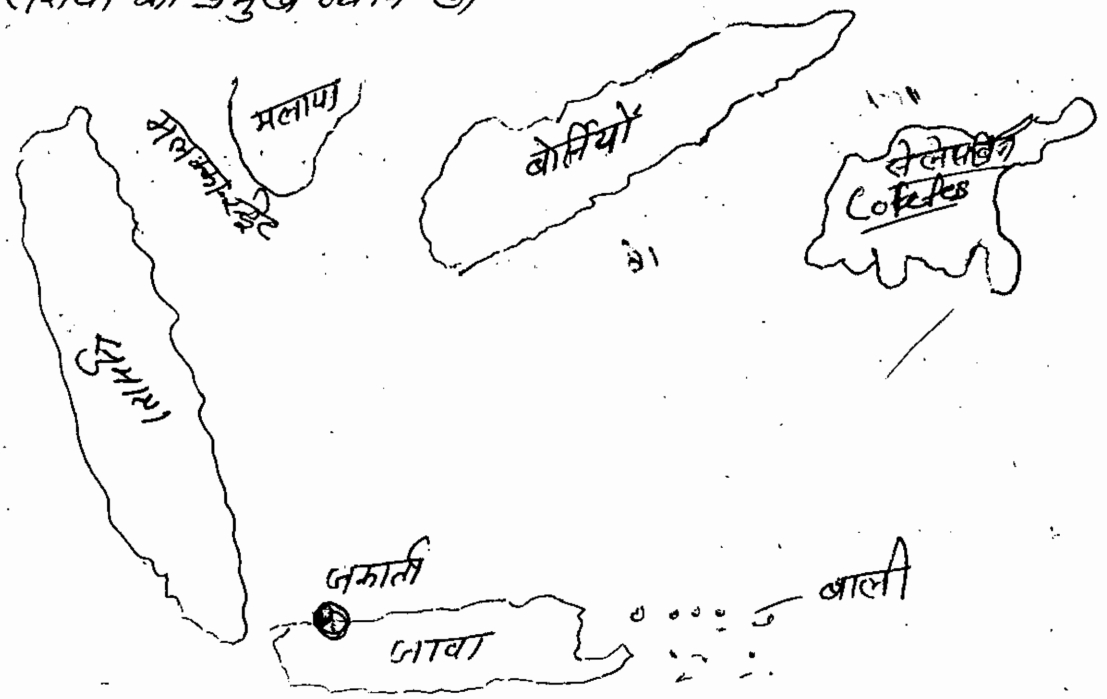

* द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व इसे ईस्ट-इण्डीज कहा जाता है। यह 3000 द्वीपों का समूह है। इसमें प्रमुख – जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो, सेलेबीज आदि द्वीप समूह है। इसका क्षेत्रफल - 5,75,45 sq.k.m. है तथा जनसंख्या 12 करोड़ है। यहाँ लगभग 300 जातियाँ है व लगभग 250 बोलियाँ, इसकी राजधानी जकार्ता (जावा) में स्थित है। आधुनिक समय में इण्डोनेशिया में 90% मुस्लिम समाज है।

*ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- प्राचीन काल से ही इण्डोनेशिया पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव रहा। प्राचीन काल में इण्डोनेशिया में हिन्दू धर्म का प्रचार हुआ। इसके अतिरिक्त चीन के प्रभाव के कारण बौद्ध धर्म का भी प्रसार हुआ। दूसरी शताब्दी में जावा चौथी शताब्दी में सुमात्रा व बोर्नियो व पाँचवी शताब्दी में बाली भारत के उपनिवेश बने। इस प्रकार हिंद-एशिया में शैव धर्म वैष्णव धर्म व बौद्ध धर्म लोकप्रिय हुये। यहाँ से प्राप्त संस्कृत के चार अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि प्राचीन काल में संस्कृत भाषा लोकप्रिय थी। यह सांस्कृतिक साम्राज्यवाद था।

11 वी शताब्दी में इण्डोनेशिया में इस्लाम का प्रचार हुआ। इस समय तक हिंदू राजवंशों का पतन हो चुका था। स्थानीय शासकों ने इस्लाम के सिद्धान्तों को अपनाया और इस प्रकार इण्डोनेशिया में इस्लाम धर्म का प्रसार

प्रसार हुआ। आरत परन्तु बाली में आज भी भारतीय मूल के लोग सबसे अधिक रहते हैं।

*उपनिवेशवादी संघर्ष व पश्चिम के साथ सम्पर्क :

सर्वप्रथम इण्डोनेशिया पहुँचने वाले पुर्तगाली थे। 1511 ई. में पुर्तगालियों ने ~~मलक्का~~ मलक्का पर अधिकार किया। यह अन्तर्राष्ट्रीय बंदरगाह था। इसके पश्चात डच (हालैण्ड) भी इण्डोनेशिया पहुँचे तथा 1605 ई. में ~~Ab~~ Amboyna (एम्बोनिया द्वीप) पर अधिकार किया। डच प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में सक्रीय रहे तथा उपनिवेशवादी नीति का पालन किया। 1641 ई. में डचों ने पुर्तगालियों के साथ संघर्ष व उन्हें पराजित कर मलक्का पर अधिकार कर लिया। डचों ने ब्रिटिश-ईस्ट-इण्डिया कम्पनी के समान यूनाइटेड-ईस्ट-इण्डिया कम्पनी का गठन किया। 17 वीं शताब्दी के अंत तक डचों ने सम्पूर्ण ईस्ट-इण्डीज पर राजनैतिक-प्रभुत्व स्थापित कर उसे अपना उपनिवेश बना दिया।

*1789 ई. फ्रांस की क्रांति हुई, क्रांति के नायक नेपोलियन ने हॉलैण्ड पर अधिकार किया। तथा अपने छोटे भाई को वहाँ का शासक नियुक्त किया। इस प्रकार हालैण्ड के लिए ईस्ट-इण्डीज पर या इण्डोनेशिया पर प्रभुत्व रखना कुछ कठिन हो गया।

*इसके परिणाम-स्वरूप ईस्ट-इण्डीज पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

*1815 ई. में नेपोलियन की पराजय के पश्चात वियाना सम्मेलन ~~के पश्चात~~ आयोजित इस सम्मेलन के वैधता के सिद्धान्त के आधार पर ईस्ट-इण्डीज को पुनः लौटाने को कहा।

*1814 ई. में इंग्लैण्ड ने ईस्ट-इण्डीज को हॉलैण्ड को सौंप दिया। हालैण्ड द्वारा इण्डोनेशिया पर पुनः राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात ~~डच~~ डचों ने यहाँ दमनकारी नीति का अनुसरण किया। इसके परिणाम स्वरूप इण्डोनेशिया में डच विरोधी उपनिवेशवादी संघर्ष हुये। ~~1825 ई.~~

*1825-30 ई. में जावा में डच विरुद्ध आंदोलन हुये। 19 वीं शताब्दी के अंत में सुमात्रा में मुसलमानों द्वारा डच विरोधी आंदोलन हुये। इसी समय बोर्नियो में चीनियों ने डच विरोधी आंदोलन किये।

*1908 ई. में बाली में हिंदुओं ने डच विरोधी आंदोलन किये। 1910 ई. सेलिबिज में मुस्लिम ने डच विरोधी आंदोलन किया। परन्तु इस उपनिवेशवादी संघर्ष में डच सरकार ने दमनकारी नीति अपनाकर दमन किया।

*आर्थिक-शोषण व उपनिवेशवादी संघर्ष :-

* नैतिक नीति के परिणामस्वरूप आर्थिक विकास हुआ। इस कारण से इंग्लैण्ड- फ्रांस, बेल्जियम, अमेरिका ने भी अपनी पूँजी का निवेश किया। एक अन्य मत के अनुसार नैतिक नीति का उद्देश्य- ① पश्चिमी देशों द्वारा जापान की आर्थिक साम्राज्यवाद की ~~नीति~~ चुनौती का सामना करना था।

*इण्डोनेशिया में राष्ट्रीय चेतना का उदय :- इण्डोनेशिया में राष्ट्रीय चेतना व जागृति विलम्ब से हुई। इसका प्रमुख कारण सांस्कृतिक विषमता, स्थानीय राजाओं की उदासीनता व अशिक्षा था। परन्तु 19वीं व 20वीं शताब्दी में एशिया व अफ्रीका की घटनाओं का इण्डोनेशिया पर भी प्रभाव पड़ा है।

हिंद-एशिया के राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कारण

① फ्रांस की क्रांति का प्रभाव :- फ्रांस की क्रांति ने समानता, स्वतंत्रता व बंधुत्व का सिद्धांत दिया। नेपोलियन के समय फ्रांस ने हॉलैण्ड पर अधिकार किया इसके परिणाम स्वरूप, हॉलैण्ड के प्रशासन इन सिद्धान्तों पर आधारित रखा गया। हॉलैण्ड का शासन इन सिद्धान्तों पर आधारित था। परन्तु हॉलैण्ड की सरकार ने इन सिद्धान्तों को इण्डोनेशिया में लागू नहीं किया। इस प्रकार फ्रांस की क्रांति का अप्रत्यक्ष रूप से हिंद एशिया की जन जागृति में सहायक सिद्ध हुआ।

② डच सरकार की दमनकारी नीति :- डच सरकार ने जावा, सुमात्रा, बाली, सेलिबिज आदि द्वीपों में डच विरोधी आंदोलनों का दमनकारी नीति अपना कर इस आंदोलन को ~~कुचल~~ ~~दिया~~ कुचल दिया।

③ आर्थिक -शोषण :- डच सरकार ने Culture System (कल्चरल सिस्टम) के व नैतिक नीति के द्वारा इण्डोनेशिया का आर्थिक शोषण किया।

④ प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव :- प्रथम विश्व युद्ध के समय मित्र राष्ट्रों ने युद्ध समाप्त होने के पश्चात मित्र राष्ट्रों ने प्रजातंत्र और स्वनिर्णय/आत्मनिर्णय के सिद्धान्तों पर बल दिया। परन्तु हॉलैण्ड ने इन सिद्धान्तों को इण्डोनेशिया में लागू नहीं किया।

(4) 19वी व 20वी शताब्दी में एशिया व अफ्रीका की घटना का प्रभाव है भारत चीन, मिस्र, टर्की आदि देशो में राष्ट्रीय आंदोलन हुये इन घटनाओं का इंडोनेशिया के बुद्धिजीवी वर्ग पर अत्यधिक प्रभाव प-

(5) द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव — द्वितीय विश्व युद्ध मे भी हालैण्ड मित्र राष्ट्रों का सहयोग किया युद्ध के पश्चात उन्नति व आत्मनिर्भ पर बल दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय जर्मनी ने हॉलैण्ड पर अधिका का लिया। इसका लाभ उठाकर जापान ने इन्डोनेशिया पर अधिकार का लिया। 1945 ई. जापान द्वितीय विश्व युद्ध मे पराजीत हो गया इन्डोनेशिया से हटना पड़ा। युद्ध समाप्त होने के पश्चात हॉलैण्ड ने इन्डोनेशिया पर पुनः दावा किया। परन्तु इन्डोनेशिया ने इसका कड़ा विरोध किया

(6) इंडोनेशिया में राजनैतिक पार्टीयों का उदय — यहाँ कई राजनैतिक पार्टीयाँ बनी। 1908ई. मे Budi otomo नामक पार्टी बनी जिसका उद्देश्य सामाजिक, सांस्कृतिक व और आर्थिक विकास। था। 1912 ई. मे Sarekat Islam नामक पार्टी की स्थापना इसका उद्देश्य इस्लामिक राष्ट्र की स्थापना। 1919 ई मे कम्युनिस्ट पा 1927 ई. इंडोनेशिया की राष्ट्रीय पार्टी का गठन — डॉ. महमद सुका और मुहम्मद हत्ता इस पार्टी के सदस्य, शिक्षित वर्ग बुद्धिजीवी इन्होंने विदेशों में शिक्षा प्राप्त की और इन्डोनेशिया मे राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया।

(7) ?

* इन्डोनेशिया मे राष्ट्रीय आंदोलन उपनिवेशवादी नीति।
— 19वी व 20 की शताब्दी मे एशिया, अफ्रीका की घटनाओं का इन्डोनेशिया पर भी प्रभाव पड़ा। 1927 व 1937 मे (P.C.S) इन्डोनेशिया मे सुधारो की घोषणा की इसके अन्तर्गत शिक्षित वर्ग को दिए सरकारी नियुक्तियाँ दी गई। इस कारण से भी इन्डोनेशिया मे जन चेतना की शिथिलता आई। द्वितीय विश्व युद्ध इन्डोनेशिया के स्व. लिए एक मोड़ सिद्ध हुई। युद्ध के समय जर्मनी ने हालैण्ड पर अधिकार किया जापान ने इसका लाभ उठाकर जापान ने अधिकार कर लिया। जापान की सरकार ने इ. स्थानीय लोगों को नियुक्त किया इसने इस विरोधी आंदोलन को जन्म दिया

* जापान ने इ०डोनेशिया में राष्ट्रवादी आंदोलन को समर्थन किया
* 15 अगस्त, 1945 ई द्वितीय विश्व युद्ध औपचारिक रूप से समाप्त।
* 17 अगस्त 1945 ई इ०डोनेशिया ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी
* डॉ. अहमद सुकार्नो इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति व मुहम्मद हत्ता उपराष्ट्रपति बने।
* इण्डोनेशिया का शासन संचालन के लिए 135 सदस्य की शासन परिषद का गठन किया।
* 1947 ई. में हॉलैण्ड ने इंग्लैण्ड का सहयोग से इण्डोनेशिया पर पुनः अपना दावा पेश किया।
* परन्तु इण्डोनेशिया ने इसका विरोध किया इस प्रकार डचसरकार व इण्डोनेशिया सरकार में उपनिवेशवादी संघर्ष शुरू हुआ।
* 1947 ई० में इण्डोनेशिया व हालैण्ड के बीच समझौता हुआ। इसे "लिंगायती समझौता" कहते है।
इस समझौते के अनुसार :- हॉलैण्ड के नेतृत्व में इण्डोनेशिया को स्वाधीन राज्य के रूप में मान्यता दे दी गई।
* परन्तु इस समझौते से दोनो संतुष्ट नही थी।
* भारत और ~~आस्ट्रेलिया~~ आस्ट्रेलिया ने विवाद की संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद का ध्यान आकर्षित किया।
* अमरीका बेल्जियम, व आदि के सरकार ने दबाव डाला और दोनो पक्षो के बीच समझौता - जिसमे दोनो में सहयोग का स्वतंत्र गणतंत्र के रूप में मान्यता देदी
* हॉलैण्ड इस समझौते से असंतुष्ट हुआ। 1948 ई. मे इ०डोनेशिया हॉलैण्ड ने सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ की तथा (विरोध) ~~इण्डोनेशिया~~ पर व अधिकार (अकांती) किया व डॉ. सुकार्नो व मुहम्मद हत्ता को बंदी बना लिया
-20 जनवरी 1949 - इण्डोनेशिया - हॉलैण्ड पर विचार करने के लिए 19 राष्ट्रो का एक सम्मेलन भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित किया। इस सम्मेलन में हॉलैण्ड की इण्डोनेशिया के प्रति नीति की कड़ी आलोचना की गयी। इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव द्वारा इस विवाद को सुलझाने हेतु संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाए।

* दिल्ली सम्मेलन के प्रस्ताव के आधार पर 23 ~~मम्बर~~ अगस्त से 2 नवम्बर के बीच हेग में एक अन्तर्राष्ट्रीय ~~सम्मेल~~ सम्मेलन हुआ। 1949 ई. में हालैण्ड व इण्डोनेशिया के बीच संधि हुई व एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया – 27 दिस. 1949 ई. हालैण्ड ने इण्डोनेशिया खाली कर दिया।

* 28 दिस. 1950 ई. संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बना। इस प्रकार हिन्द चीन के उपनिवेशवादी संघर्ष का अंत हुआ।

इण्डो-चीन में उपनिवेशवादी संघर्ष

* द्वितीय विश्व-युद्ध से पूर्व इण्डो-चीन पाँच-प्रशासनिक भागों में विभक्त

(1) कोचिन-चीन, (2) Tonkin (3) कम्बोडिया (4) लाओस (5) अनाम

– कोचिन-फ्रांस के प्रत्यक्ष रूप से अधीन था तथा अन्य फ्रांस के नियंत्रण में थे

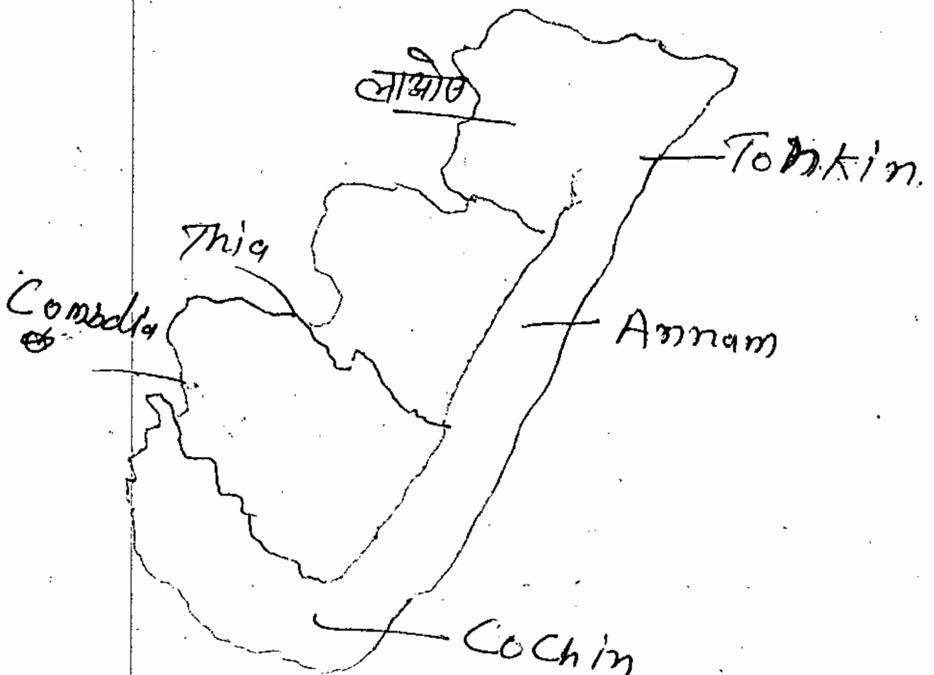

* इसका क्षेत्रफल _ _ . . इसकी जनसंख्या _ 5 करोड़ थी। इनमें से 42 हजार यूरोपियन मुख्यतः फ्रांसीसी थे। जनसंख्या का अधिकतम घनत्व लाल नदीघाटी व द. मिकांग नदी घाटी/डेल्टा था। इण्डो-चीन में दो प्रमुख नगर, हनोई व द. साईगोन, इण्डो-चीन में चाय कॉफी, रबर आदि की पैदावार की जाती थी यहां खनिज उत्पादन में लोहा, कोयला टीन टंगस्टन, क्रोमियम आदि उपलब्ध

पश्चिम के साथ सम्पर्क :-

* 16 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इण्डो-चीन पहुँचने वाले पुर्तगाली थे। इनके पश्चात डच स्पेनिश, ब्रिटीश व कुछ समय पश्चात फ्रांसीसी भी इण्डो-चीन पहुँचे। परन्तु प्रारम्भ से ही फ्रांसीसी इस क्षेत्र में सक्रीय रहे। 17 वीं शताब्दी के अंत में व 18 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बड़ी संख्या में फ्रांसीसी व्यापारी और कैथलिक पादरी इण्डो-चीन पहुंचे प्रारम्भ से ही फ्रांसीसी-कोचिन-चीन, व अन्नाम क्षेत्र में सक्रीय रहे।

* 1747 ई. में फ्रांस ने अन्नाम के साथ राजनैतिक सम्बंध स्थापित किये। इसके अनुसार फ्रांसीसियों को व्यापार करने व धर्म प्रचार करने की अनुमति दे दी गई।

* 1787 ई. में फ्रांस ने कोचिन-चीन के साथ एक संधि/समझौता किया -
* इस संधि का श्रेय - फ्रांसीसी पादरी पिगनु-डी- बेहाइन को दिया जाता है। वह एक धर्म प्रचारक कूटनीतिक व साहसी योद्धा था। इस संधि के पश्चात कोचीन-चीन में होने वाले विद्रोह के समय फ्रांस का सहयोग प्राप्त किया गया। इस प्रकार फ्रांसीसियों का कोचिन-चीन पर राजनैतिक प्रभाव स्थापित हुआ और वे निश्चिंत होकर धर्म-प्रचार का कार्य करने लगे।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अन्नाम व कोचीन-चीन में फ्रांसीसी पादरियों की गतिविधियाँ बढ़ी। इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में ईसाई विरोधी आंदोलन हुये। कई स्थानों पर हिंसक वारदातें हुई। फ्रांस की सरकार ने इसका कड़ा विरोध किया। इण्डो-चीन के स्थानीय शासकों ने फ्रांसीसी व अन्य यूरोपीय इतों के आगमन पर प्रतिबंध लागू किया। फ्रांस के सम्राट नेपोलियन-III ने इण्डो-चीन में फ्रांसीसी पादरियों पर अच्छा व्यवहार करने के लिए एक प्रस्ताव भेजा। परन्तु इण्डो-चीन के स्थानीय शासकों ने नेपोलियन तृतीय के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इस कारण से 1858 ई. में नेपोलियन तृतीय ने स्पेन के साथ मिलकर एक नौ-सैनिक बेड़ा-इण्डो-चीन भेजा। फ्रांस व स्पेन ने सामूहिक रूप से इण्डो-चीन में स्थानीय शासकों को एक संधि करने के लिए मजबूर किया। 5 जून 1862 ई. फ्रांस ने अन्नाम के साथ एक समझौता किया। जिसे साइगोन की संधि कहते हैं।

इस संधि के अनुसार : (1) Tourane ( ), Balat, व Kang-An नामक तीन बंदरगाह फ्रांस व स्पेन के खोल दिये गये।
(2) अन्नाम पर 40 लाख डालर युद्ध का हर्जाना लागू किया।
(3) कोचीन-चीन के एक बड़े भाग पर फ्रांस का राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित किया गया।
(4) ईसाई मिशनरियों को धर्म-प्रचार की अनुमति दी गई।
(5)
* अगले वर्ष 1863 ई. में फ्रांस ने कम्बोडिया को अपना संरक्षित राज्य बनाया। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण कोचीन-चीन पर फ्रांस ने अपना आधिपत्य स्थापित किया। 1873 ई. में फ्रांस ने अपनी सेना टोनकिन भेजी और 1874 ई. में टोनकिन को भी अपना संरक्षित राज्य बना दिया।
* 1884 ई. में फ्रांस ने अन्नाम के साथ और एक समझौता किया। जिसे

सैगान - फ्रांस - 1760 ई

– अन्नाम ने फ्रांस की अधीनता स्वीकार कर ली। अन्नाम राजनैतिक दृष्टि से चीन के मांचू वंश के अधीन था। किंतु मांचू वंश के लिए अन्नाम पर अपना प्रभुत्व कायम रखना कठिन था। दूसरी ओर अन्नाम की विदेश नीति पर फ्रांसीसी नियंत्रण भी स्वीकार कर लिया गया।
* 1893 ई. में फ्रांस ने मिकांग नदी के पूर्वी क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित किया। यह क्षेत्र लाओस राज्य था। जिसे फ्रांस ने थाईलैण्ड से लिया। इस प्रकार इण्डो-चीन फ्रांसीसी साम्राज्य का अंग बना।
* इण्डो-चीन की प्रशासनिक व्यवस्था :
* कोचीन-चीन प्रत्यक्ष रूप से फ्रांस के अधीन था। यहाँ का शासन संचालन के लिए फ्रांस गवर्नर-जनरल नियुक्त किये गये। शासन संचालन के लिए एक सिविल-सेवा परिषद का गठन किया गया। जिसके अधिकांश अधिकारी फ्रांस से ही थे। फ्रांस में चेम्बर ऑफ डेप्युटिज नामक सदन में सीमित प्रति निधित्व प्राप्त
* परन्तु इस प्रतिनिधित्व का चुनाव केवल फ्रांसीसियों के द्वारा चुना जाता है।
* टोनकिन, अन्नाम, लाओस और कम्बोडिया फ्रांस के संरक्षित राज्य थे यहाँ स्थानीय शासकों का शासन था। परन्तु इन चारों राज्यों पर फ्रांस का नियंत्रण था, यहाँ की ड्रेसी (प्रांतों) में फ्रांसीसी रेजीडेन्ट नियुक्त किया जाता था।
फ्रांस ने फ्रांसीसी फ्रांसीसी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। फ्रांस ने इण्डो-चीन में समाज व संस्कृति पर भी फ्रांसीसी सभ्यता व संस्कृति को थोपने का प्रयास किया।
फ्रांस की ईसाई मिशनरियों ने इण्डो-चीन में बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म का प्रचार किया। 1920 ई. में इण्डो-चीन में ईसाइयों की संख्या 1 लाख 30 हजार हो गई जो जनसंख्या का 5% लगभग-5% था।
फ्रांसीसी उद्योग पतियों ने इण्डो-चीन में बड़े उद्योग स्थापित करने के लिए धन निवेश किया। इस प्रकार लोहा, कोयला व अन्य बड़े उद्योग स्थापित किये गये। इसके अतिरिक्त चावल, व मछली पालन के व्यापार पर चीनी व्यापारियों का नियंत्रण रहा।
* हिंद-चीन में राष्ट्रवादी चेतना व उपनिवेशवादी संघर्ष :-
-इण्डो-चीन में राष्ट्रीय चेतना का उदय देर से हुआ। इसका मूल कारण सांस्कृतिक विषमता व अशिक्षा था। परन्तु 19वीं व 20 शताब्दी में एशिया व अफ्रीका की घटनाओं का इण्डो-चीन के राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव पड़ा।
⇒ राष्ट्रीय चेतना के कारण :- (1) फ्रांस की क्रांति का प्रभाव :- फ्रांस की क्रांति ने समानता, स्वतंत्रता व बंधुत्व का संदेश दिया। फ्रांसीसी शिक्षा के अन्तर्गत वाल्तेयर व रूसो के दर्शन का अध्ययन किया गया।
(2) रूसो-जापान-युद्ध का प्रभाव-(1904-05) इस युद्ध के परिणाम स्वरूप राष्ट्रवादी भावना का उदय इण्डो-चीन में हुआ। यह युद्ध एशियाई देशों के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि एशिया के राष्ट्र भी साम्राज्यवाद को चुनौती

चुनौती देने में सक्षम है।

(3) आर्थिक शोषण ; फ्रांस ने इण्डो-चीन में अपार धन सम्पदा का दोहन किया इसके अतिरिक्त स्थानीय इण्डो-चीन वासियों को द्वितीय विश्व-युद्ध के समय युद्ध मोर्चों पर भेजा गया। फ्रांस ने इण्डो-चीन के आर्थिक संसाधनों का प्रयोग द्वितीय विश्व-युद्ध में अपने हितों के लिए किया।

(4) प्रथम विश्व-युद्ध का प्रभाव :- प्रथम विश्व के समय फ्रांस मित्र-राष्ट्रों की ओर था। तथा युद्ध समाप्त होने के पश्चात प्रजातंत्र व आत्म निर्णय पर बल दिया। परन्तु फ्रांस ने इण्डो-चीन में इन सिद्धान्तों को लागू करने का विरोध किया।

(5) 19वी. व 20वी शताब्दी में एशिया व अफ्रीका में घटनाओं का प्रभाव :- एशिया व अफ्रीका में भारत, चीन, मिस्र, इजिप्ट, सूडान, टर्की आदि देशों राष्ट्रीय आंदोलन हुये।

(6) द्वितीय विश्व-युद्ध का प्रभाव :- द्वितीय विश्व युद्ध में फ्रांस ने मित्र राष्ट्रों का सहयोग दिया। 1940 ई. में, जर्मनी ने फ्रांस पर अधिकार किया। इसी वर्ष जापान ने अपनी सेना भेजकर टोनकिन पर अधिकार किया और 1941 ई. में सम्पूर्ण इण्डो-चीन पर जापान ने अधिकार कर लिया। इण्डो-चीन पर जापान का राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित हुआ। परन्तु प्रशासन को चलाने का काम फ्रांसीसी करते रहे। 1944 ई. फ्रांस जर्मनी से स्वतंत्र हुआ। 1945 ई. में जापान द्वितीय विश्व युद्ध में पराजित हुआ। व इंडो-चीन को खाली कर दिया। इसके पश्चात फ्रांस ने इण्डो-चीन पर अपना पुनः दावा किया। इसका इण्डो चीन ने विरोध किया। फ्रांस व इण्डो-चीन के बीच उपनिवेश संघर्ष जारी रहा।

(7) राजनैतिक पार्टियों का प्रभाव :- इण्डो चीन में कई छोटी-पार्टियां स्थापित हुई, परन्तु 1930 ई. में एक वियतनामी छात्र ने - हो-ची-मीन ने साम्यवादी पार्टी का गठन किया इसे वियत-मीन कहा गया। द्वितीय विश्व-युद्ध के समय इण्डो-चीन पर फ्रांस व जापान की सत्ता स्थापित होने पर हो-ची-मीन ने साम्यवादियों की सेना छिन्न का राष्ट्रवादी भावना का संचार किया।

द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात राष्ट्रीय आंदोलन व उपनिवेशवादी संघर्ष

अगस्त, 1945 ई. जापान द्वितीय-विश्व-युद्ध में पराजित हुआ जापान ने इण्डो-चीन खाली कर दिया। परन्तु जाने से पूर्व इण्डो-चीन की सत्ता अन्नाम के

ई. 1944 ई. फ्रांस को स्वतंत्रता मित्र राष्ट्रों ने दिलवाया (भारमेडी की सेना ने फ्रांस को मुक्त करवाया)

- शासक बाओदाई के हाथों में सौंप दी। परन्तु बाओदाई के लिए साम्यवादियों की बढ़ती हुई चुनौती का सामना करना कठिन था। 25 अगस्त, 1945 ई. में बाओदाई हिंद-चीन छोड़कर इंग्लैण्ड चला गया व लंदन में बस गया। इन परिस्थितियों में 2 सित. 1945 ई. हो-ची-मीन ने इण्डो-चीन में वियत-मीन्ह सरकार की स्थापना जिसे वियतनाम ~~लोकत~~ गणतंत्र सरकार कहते हैं।

*द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात फ्रांस की उपनिवेशवादी नीति :-

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात फ्रांस ~~की उपनिवेशवादी~~ ने ने इण्डो-चीन पर अपने पुनः राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। फ्रांस ने अपने उपनिवे के प्रति नयी - नीति की घोषणा की इस नीति के अनुसार —

(1) फ्रांसीसी उपनिवेशों का एक महा संघ का गठन किया गया।
(2) इण्डो-चीन को इस महासंघ का सदस्य बनाया गया।
(3) इण्डो-चीन के प्रशासन का कार्य हिंद-चीन वासियों को सौंप दिया जायें।
(4) इण्डो-चीन की विदेश नीति व रक्षा नीति पर फ्रांस का नियंत्रण स्थापित किया जाये।

* फ्रांस की इस नीति का वियत-मीन्ह सरकार ने विरोध किया। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के पश्चात इण्डो-चीन पर अधिकार करने के लिए मित्र राष्ट्रों ने इंग्लैण्ड व चीन को अधिकृत किया। इस योजना के अनुसार इंग्लैण्ड ने दक्षिण से प्रवेश कर 'साइगोन' पर अधिकार कर लिया, इसके पश्चात इंग्लैण्ड की सेना को साम्यवादी सरकार की चुनौती का सामना करना प. इस कारण से इंग्लैण्ड ने इण्डो-चीन से अपनी सेना हटा ली तथा साइ. को फ्रांस को सौंप दिया। फ्रांस की सैनिक टुकड़ी ने साइगोन पर अधिकार लिया

*हनोई समझौता (Hanoi Agreement - 6 मार्च, 1946) :- मित्र राष्ट्रों के योजनानुसार चीन को उत्तर से इण्डो-चीन में प्रवेश करना था परन्तु चीन ने इस ओर कोई कदम नहीं उठाया। इस ओर कोई कदम नहीं उठाय. इस कारण से मित्र राष्ट्रों की योजना असफल रही। इस कारण से वियत मी. सरकार के साथ हनोई समझौता किया इस समझौते के अनुसार -

(1) फ्रांस ने वियत-मीन्ह गणराज्य की सरकार को मान्यता दे दी।
(2) इण्डो-चीन में फ्रांसीसी महासंघ का सदस्य बनना स्वीकार कर लि.
(3) फ्रांस की ~~सरकार~~ की सेना को टोंकिन में प्रवेश की अनुमति दे दी।

शीत-युद्ध व उपनिवेशवादी संघर्ष :- द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात रूस और अमरीकी गुटों के बीच शीत-युद्ध प्रारम्भ हुआ। फ्रांस इण्डो-चीन में साम्यवादी सरकार को समाप्त करने के पक्ष में था। फ्रांस ने सम्पूर्ण कोचीन-चीन पर अधिकार किया। यह हनोई-समझौते के विपरीत था। साइगोन को राजधानी बनाया। व फ्रांस ने 1947 ई. में लंदन में बाओ-दाई से वार्ता प्रारम्भ की, लम्बी वार्ता के पश्चात मार्च, 1949 फ्रांस ने बाओदाई के साथ एक समझौता किया। इस समझौते के अनुसार फ्रांस के सहयोग से इण्डो-चीन में बाओदाई के नेतृत्व में सरकार की स्थापना। फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमरीका आदि मित्र राष्ट्रों ने बाओदाई सरकार को मान्यता दे दी। दूसरी ओर रूस व चीन ने वियत-मिन्ह सरकार को मान्यता दी। * इस प्रकार इण्डो-चीन में उपनिवेशवादी संघर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गयी। इस समस्या के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ पूंजीवादी व साम्यवादी राष्ट्रों की राजनीति का अखाड़ा बन गया। अंत: में इस विवाद को U.N.O. के समक्ष रखा गया व 1954 ई. में जिनेवा सम्मेलन में जिसके अन्तर्गत इण्डो-चीन को फ्रांस से मुक्त कर चार स्वतंत्र राज्यों में विभक्त किया। (1) कम्बोडिया — नोमपेन्ह (2) लाओस - राजधानी - Ventaine, (3) उत्तरी वियतनाम हनोई राजधानी - हो-ची-मीन्ह के नेतृत्व में सरकार (4) द. वियतनाम — साइगोन राजधानी। + इस प्रकार 1954 ई. में जिनेवा सम्मेलन के पश्चात इण्डो-चीन में उपनिवेशवादी संघर्ष समाप्त हुआ।

* अरब राष्ट्रवाद से स्वेज संकट *

*1931 ई. में जेरूसलम में एक इस्लामिक सम्मेलन हुआ तथा अरब राष्ट्रों में एकता की घोषणा की और इस क्षेत्र में गैर अरबी राज्य बनाने का विरोध किया। ~~और इस क्षे~~ इसके बावजूद 1948 ई. में अमरीका के सहयोग से इजराइल नया राज्य बना। अरब राष्ट्रवाद का नेतृत्व मिस्र व सूडान ने किया।

*मिस्र व सूडान में राष्ट्रवाद का उदय :-

मिस्र विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं की जन्म स्थली माना जाता है, यहा ताम्रपाषाण सभ्यता का विकास हुआ। मिस्र का प्राचीनकालीन इतिहास नील नदी से प्रभावित था। मध्यकालिन व आधुनिक मिस्र का इतिहास स्वेज नहर से प्रभावि

*7वी शताब्दी में मिस्र अरबी खलिफाओं के अधीन रहा, 1517 ई. में मिस्र ऑटोमन साम्राज्य का अंग बन गया। मिस्र के शासकों को खदीव कहा जाता और यह टर्की की राजनैतिक अधीनता स्वीकार करते थे। 1798 ई. नेपोलियन बोनापार्ट ने मिस्र पर आक्रमण जिसे नेपोलियन का मिस्र अभियान कहा जा 1799 ई. में नेपोलियन ने इस अभियान को बीच में छोड़कर फ्रांस की राजनैति गतिविधियो का नेतृत्व किया।

*स्वेज नहर निर्माण से प्रथम विश्व युद्ध के बीच मिस्र में अरब राष्ट्रवाद :-

17 Nov, 1869 ई. में स्वेज नहर को व्यापार के लिए खोल दिया गया। 1881 में अरबी-पाशा के नेतृत्व में अरब राष्ट्रवाद का उदय हुआ। अरबी पाशा ने मिस्र - मिस्र वासियों के लिए नारा दिया। और इस मिस्र में राष्ट्रीय चेतना का जागत किया। इंग्लैण्ड ने मिस्र में राष्ट्रवादी आंदोलन का दमन किया और 1882 ई. में मिस्र पर अधिकार कर लिया। 1888 ई. में फसोदा की घटना के पश्चात इंग्लैण्ड ने सूडान पर भी अधिकार कर लिया।

* दो विश्व युद्धों के बीच मिस्र व सूडान में अरब राष्ट्रवाद :- प्रथम विश्व-युद्ध में टर्की ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध जर्मनी का सहयोग दिया, दूसरी ओर मिस्र राजनैतिक दृष्टि से टर्की के अधीन था। इंग्लैण्ड के लिए मिस्र पर राजनैतिक आधिपत्य स्थापित करना अनिवार्य था। और इसे पूर्व में साम्राज्य पर आधिपत्य रखना अनिवार्य था। इंग्लैण्ड ने मिस्र के खदीव अब्बास हिलमी को पद से हटा दिया जो टर्की का समर्थक था। ~~उसके पश्चात~~ पर उसके भतीजे हुसैन कामिल को गद्दी पर बैठा दिया। 12 दिसम्बर, 1914 ई. इंग्लैण्ड ने आदेश जारी कर मिस्र को टर्की की राजनैतिक अधिकारिता से मुक्त कर दिया और प्रथम विश्व-युद्ध के समय इंग्लैण्ड ने मिस्र के सभी संसाधनों का प्रयोग इंग्लैण्ड के हितो के लिए किया। मिस्र की राष्ट्रीय आय का प्रयोग इंग्लैण्ड ने स्वयं के युद्ध में किया गया। मिस्र वासियों को

युद्ध मोर्चा पर भेजा गया। मिस्त्र मे श्रमिको को इंग्लैण्ड के सैनिक शिविरो मे कार्य करने के लिए भेजा। इसके परिणाम स्वरूप प्रथम-विश्व युद्ध समाप्त होने के पश्चात मिस्त्र मे अरब राष्ट्रवादी आंदोलन हुये। इस आंदोलन का नेतृत्व — जग्लुल पाशा ने किया। जग्लुलपाशा ने वफ्द पार्टी का गठन किया, जिसमे नई युवा क्रांतिकारियो को सम्मिलित किया गया। इस आंदोलन का मार्च, 1919 तक पुरे मिस्त्र पर प्रभाव पड़ा, कई स्थानो पर हिंसक वारदातें हुई, कई ब्रिटीश अधिकारियो की हत्या कर दी गयी। इन परिस्थितियों मे इंग्लैण्ड की सरकार मिस्त्र के साथ शांति वार्ता प्रारम्भ की। इस समय इंग्लैण्ड मे लेबरपार्टी सत्ता मे थी, उसने मिस्त्र के खदीव के साथ 28 फर. 1922 के दिन एक संधि की – शर्तें – (1) मिस्त्र को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मे मान्यता दी।

(2.) स्वेज-नहर की सुरक्षा के लिए ब्रिटीश सेना मिस्त्र मे तैनात रहेगी।

(3) विदेशी आक्रमण होने पर इंग्लैण्ड मिस्त्र का सहयोग करेगा।

(4) सूडान पर इंग्लैण्ड का अधिकार रहेगा

(5.) मिस्त्र को औपचारिक रूप से टर्की से पृथक किया गया।

खदीव फोर के नेतृत्व मे पश्चिम देशो के समान एक सदन का गठन किया गया। 1923 ई मे मिस्त्र मे आम चुनाव हुये बाद वफ्द पार्टी सत्ता मे आयी और जग्लुल पाशा मिस्त्र के प्रधान मंत्री बना। उसने 1922 की संधि परिवर्तन करने की माँग की। इंग्लैण्ड सरकार ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया इस कारण से मिस्त्र मे एक बार फिर राष्ट्रवादी आंदोलन प्रारम्भ हुये कई स्थानों पर हिंसक वारदातें हुयी। 1924 ई मे मिस्त्र की राजधानी काहिरा मे ब्रिटीश सेनापति "ली स्टॅक स्टीट" की हत्या कर दी गयी।

* मुहम्मद तोहफिक मिस्र का नया राष्ट्रपति बना उसने की 1922 की संधि पुनः घोषित की।

* 1935 ई. में इटली ने अबिसीनिया पर अधिकार किया। इस घटना के पश्चात मिस्र की ओर इंग्लैण्ड की नीति में परिवर्तन, इंग्लैण्ड ने 1936 ई. में वार्ता कर संधि की जिसे 'आंग्ल-मिस्र संधि' हुई।

- संधि के अनुसार (1) मिस्र को एक स्वतंत्र गणतंत्र रूप में मान्यता दे दी।

(2) एक ब्रिटीश राजदूत प्रतिनिधि के रूप में मिस्र में रहेगा।

(3) मिस्र से ब्रिटीश सेना हटाई जायेगी। परन्तु स्वेज नहर की सुरक्षा के लिए 10 हजार सैनिक तैनात रहेंगे।

(3) मिस्र में विदेशियों की सुरक्षा का दायित्व मिस्र सरकार का रहेगा।

(4.) मिस्र पर विदेशी आक्रमण होने पर इंग्लैण्ड उसे सहयोग करेगा।

(5) सूडान पर इंग्लैण्ड व मिस्र का सामूहिक रूप से अधिकार रहेगा।

* इस संधि को 20 वर्ष के लिए लागू किया गया। परन्तु 10 वर्ष पश्चात पुनर्मूल्यांकन किया जायेगा।

* 1937 ई. में मिस्र राष्ट्रसंघ का सदस्य बना यह मिस्र की एक बड़ी राजनैतिक विजय थी इसे मिस्र को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली।

* 1939 ई. में द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू हुआ। इस कारण से स्वेज नहर व सूडान से सम्बन्धित आगे कोई कदम नहीं उठाया जा सका।

* द्वितीय विश्व-युद्ध के ~~पश्चात्~~ समय अरब राष्ट्रवाद :

*1936ई. में खदीव फारुख मिस्र का नया शासक बना व निरंकुश शासन के पक्ष में था। उसने मिस्र की संसद को भंग कर दिया। परन्तु खदीव फारुख मिस्र में ब्रिटीश नीति के भी विरुध था। द्वितीय विश्व-युद्ध में खदीव फारुख ने मिस्र को तटस्थ रखा गया। परन्तु इंग्लैण्ड ने मिस्र का एक सैनिक अड्डे ~~का~~ के रूप में प्रयोग किया व अफ्रीका में कई विजय प्राप्त करने में सफल रहा। द्वितीय विश्व-युद्ध समाप्त होने के पश्चात खदीव फारुख ने 1936 ई. की संधि पर विचार करने के लिए प्रस्ताव रखा। परन्तु इंग्लैण्ड ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

*1947 ई. में स्वेज-नहर व सूडान विवाद को संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष रखा। ~~क~~ परन्तु इंग्लैण्ड व ~~मित्र~~ मित्र राष्ट्रों के प्रभाव से U.No ने भी ठुकरा दिया। ~~U.N~~

* U.N.O में असफल होने के पश्चात मिस्र में पुनः राष्ट्रवादी आंदोलन हुआ। इन राष्ट्रवादी आंदोलन का नेतृत्व वफ्द पार्टी व मुस्लिम ~~बद~~ ब्रदर ~~मर्थ~~ हुड पार्टी ने किया।

* ~~6~~ कई स्थानों पर हिंसक ~~वारदातें~~ वारदातें हुई। 1950 ई. में एक बार फिर आम चुनाव हुये व एक निर्वाचित सरकार का गठन किया।

*1951ई. में मिस्र की संसद ने एक अध्यादेश जारी किया। जिसके अनुसार, 1936 ई. की संधि को अवैध घोषित कर दिया। एक अन्य आदेश के अनुसार स्वेज नहर से मिस्र के श्रमिकों को हट जाने का आदेश दिया।

*इसके परिणाम स्वरुप मिस्र में अराजकता की ~~वारदातें घटित हुई~~ स्थिति पैदा हुई, व कई वारदातें हुई।

*मिस्र में सैनिक-क्रांति :- 1952 :- मिस्र में शांति स्थापित करने के लिए एक सैनिक क्रांति हुई। यह 26 जुलाई, 1952 ई. में हुई।

इसका नेतृत्व जनरल मुहम्मद नजीब व कर्नल जमाल अब्दुल नासिर ने किया। इस सेना ने मिस्र की राजधानी काहिरा पर मार्च किया व शासन सत्ता अपने हाथों में ली। जनरल नजीब मिस्र का राष्ट्रपति बना। मिस्र की जनता ने ~~और~~ इस सैनिक क्रांति का समर्थन किया। खदीव फारुख मिस्र छोड़कर चला गया। यह एक रक्तहीन क्रांति थी।

सैनिक शासन ने शासन संचालन के लिए. आर. सी. सी (R.C.C) का गठन किया। (क्रांतिकारी कमांड परिषद)। सैनिक सरकार ने मिस्र में सैनिक शांति स्थापित करने की घोषणा की। जनरल नजीब ने मिस्र में कई सामाजिक-आर्थिक सुधारों की घोषणा की। इसके पश्चात – जमाल नजीब ने स्वेज-नहर व सूडान के विवाद को सुलझाने पर ध्यान

दिया उसने सर्वप्रथम सूडान की समस्या पर ध्यान दिया व हल ढूंढा। मिस्र सूडान पर आधिपत्य स्थापित करना चाहता था। इसकी ओर इंग्लैण्ड भी इस पर अधिकार रखना चाहता था/ परन्तु सूडान इसके पक्ष में नहीं था। इन परिस्थितियों में जनरल नजीब ने 1953 ई. में सूडान के साथ समझौता किया जिसके अनुसार सूडान को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दे दी इंग्लैण्ड ने भी इस समझौते को मान्यता दे दी/ इसके परिणाम स्वरूप जनरल नजीब की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इसके पश्चात जनरल नजीब ने स्वेज-नहर के लिए वार्ता प्रारम्भ की/ परन्तु 6 मई 1953 ई. में यह वार्ता असफल हो गई। इसके पश्चात जनरल नजीब ने निर्वाचित सरकार बनाने की घोषणा की/ परन्तु कर्नल नासिर ने इसका विरोध किया/

* कर्नल नासिर का उदय – स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण / स्वेज संकट :-

- आर. सी. सी. में बहुमत कर्नल नासिर के पक्ष में था/ R.C.C ने कर्नल नासिर का समर्थन कर दिया/ जनरल नजीब ने इस्तीफा दिया/ इसके बाद कर्नल नासिर मिस्र के नये राष्ट्रपति बने। कर्नल नासिर ने (1954 ई.) तुरन्त स्वेज-नहर से सम्बन्धित वार्ता आरम्भ की इंग्लैण्ड से प्रारम्भ की/ 1954 ई. में मिस्र व इंग्लैण्ड के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते के तहत 20 महीने में ब्रिटिश सेना स्वेज नहर से हटा दी जायेगी ② मिस्र पर आक्रमण होने पर मिस्र सरकार की अनुमति पर स्वेज नहर पर इंग्लैण्ड सैनिक भेजेगा।

* स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण :- कर्नल नासिर ने मिस्र में सिंचाई के साधन बढ़ाने के उद्देश्य से नील-नदी पर आसवान बाँध परियोजना बनाने की तैयारी की/
*इस परियोजना के लिए इंग्लैण्ड व अमरीका आर्थिक सहयोग करने का वादा किया/
* 1955 ई. में मिस्र ने साम्यवादी चेकोस्लोवाकिया के साथ चावल व कपास के बदले में हथियार खरीदने का वादा किया/ इस कारण से अमरीका व इंग्लैण्ड आर्थिक सहयोग देने से पीछे हटने लगे। इसके पश्चात मिस्र ने साम्यवादी चीन की सरकार को मान्यता दे दी/ इस कारण से अब मिस्र के अमरीका व इंग्लैण्ड सम्बन्ध बिगड़ गये। 1954 ई. इजराइल ने मिस्र पर आक्रमण किया/ तथा मिस्र ने 1955 ई. में रूस के साथ सैनिक समझौता किया/ रूसी सैनिक अधि. मिस्र में सैनिक प्रशिक्षण के लिए भेजे गये।
* अमरीका ने $ 56 मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता देने से इनकार किया/
* 26 जुलाई 1956 ई. में कर्नल नासिर ने स्वेज-नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया/ — स्वेज-नहर का संचालन मिस्र की शासन-परिषद को सौंप दिया/
* इस प्रकार स्वेज-कम्पनी से होने वाली आय मिस्र को मिलने लगी/ (पहले फ्रांस व इंग्लैण्ड को 50%-50% थी/

(216) 76

*स्वेज संकट : स्वेज-नहर का राष्ट्रीयकरण इंग्लैण्ड व फ्रांस के लिए वज्रपात सिद्ध हुआ। दोनो ने मिस्र की कड़ी आलोचना की। अगस्त, 1956 ई में 22 राष्ट्रों का लंदन मे सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन मे मिस्र ने भाग लिया। ~~इसमे~~ इसमें मिस्र की कड़ी आलोचना व इस विवाद को U.NO के समक्ष रखने का प्रस्ताव रखा। Oct, 1956 ई मे इस विवाद को लेकर U.N.O मे सम्मेलन का आयोजन हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वेज-नहर के संचालन के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति गठित करने का प्रस्ताव रखा। परन्तु रूस ने इस प्रस्ताव के विरुध वीटो अधिकार प्रयोग कर ठुकरा दिया।

*इंग्लैण्ड व फ्रांस के प्रेरित करने पर 29th oct, 1956 को इजराइल ने मिस्र पर आक्रमण किया। तथा सेनाई क्षेत्र पर अधिकार कर लिया एक सप्ताह पश्चात मिस्र के विरुध इंग्लैण्ड व फ्रांस ने भी आक्रमण कर दिया।

*नम्बर। 1956 ई रूस ने इंग्लैण्ड व फ्रांस को व्हाँ से सेना हटाने को कहा अन्यथा रूस बड़े हथियारों का प्रयोग कर युद्ध मे शामिल होगा। इस विवाद को संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष रखा गया जहाँ 64:5 अनुपात मे इंग्लैण्ड व फ्रांस के पक्ष मे मत रहा। इसके पश्चात इंग्लैण्ड व फ्रांस ने मिस्र से सेना हटा ली। 1957 ई मे इजराइल ने भी मिस्र से सेना हटा ली इजराइल के सेना हटा लेने के पश्चात स्वेज-संकट समाप्त हो गया।

*1958 ई मे कर्नल नासिर ने U.A.R का गठन (यूनाइटेड अरब गणराज्य) जिसके अन्तर्गत अरबी राज्यो को सम्मिलित कर अरब राष्ट्रों मे एकता पैदा करने का प्रयास किया। स्वेज-संकट की घटना विश्व-इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना के परिणाम स्वरूप कर्नल नासिर अरब राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में उभरा।

*स्वेज-संकट की घटना प. देशो के साम्राज्यवादी नीति के लिए एक बड़ी चुनौती सिद्ध हुआ। 1970 ई. मे कर्नल नासिर की मृत्यु हो गई।